॥ श्रीः ॥

कान्ता सन्तति

बाबू देवकीनन्दन खत्री रचित

लहरी बुक डिपो

वाराणसी

१९८१

प्रकाशक—

श्री कमलापति खत्री,

लहरी बुक डिपो,

वाराणसी।

मूल्य :—

सजिल्द—१३/००

अजिल्द—९/००

मुद्रक—

भारतजीवन प्रेस,

वाराणसी।

॥ श्रीः ॥

चन्द्रकान्ता सन्तति

पहिला भाग

—:०:—

पहिला बयान

नौगढ़ के राजा सुरेन्द्रसिंह के लड़के बीरेन्द्रसिंह की शादी विजयगढ़ के महाराज जयसिंह की लड़की चन्द्रकान्ता के साथ हो गई। बारात वाले दिन तेजसिंह की आखिरी दिल्लगी के सबब चुनार के महाराज शिवदत्त को मशालची बनना पड़ा। बहुतों की यह राय हुई कि महाराज शिवदत्त का दिल अभी तक साफ नहीं हुआ इसलिए अब इनको कैद ही में रखना मुनासिब है मगर महाराज सुरेन्द्रसिंह ने इस बात को नापसन्द करके कहा कि 'महाराज शिवदत्त को हम छोड़ चुके हैं, इस वक्त जो तेजसिंह से उनकी लड़ाई हो गई यह हमारे साथ वैर रखने का सबूत नहीं हो सकता। आखिर महाराज शिवदत्त क्षत्रिय हैं, जब तेजसिंह उनकी सूरत बन बेइज्जती करने पर उतारू हो गए तो यह देख कर भी वह कैसे बर्दाश्त कर सकते थे? मैं यह भी नहीं कह सकता कि महाराज शिवदत्त का दिल हम लोगों की तरफ से बिलकुल साफ हो गया क्योंकि अगर उनका दिल साफ ही हो जाता तो इस बात को छिप कर देखने के लिए आने की जरूरत क्या थी? तो भी यह समझ कर कि तेजसिंह के साथ इनकी यह लड़ाई हमारी दुश्मनी के सबब नहीं कही जा सकती, हम फिर इनको छोड़ देते हैं। अगर अब भी ये हमारे साथ दुश्मनी करेंगे तो क्या हर्ज है, ये भी मर्द हैं और हम भी मर्द हैं देखा जाएगा'।

महाराज शिवदत्त फिर छूट कर न मालूम कहाँ चले गए। बीरेन्द्रसिंह की शादी होने के बाद महाराज सुरेन्द्रसिंह और जयसिंह की राय से चपला की शादी

तेजसिंह के साथ और चम्पा की शादी देवीसिंह के साथ की गई। चम्पा दूर के नाते में चपला की बहिन होती थी।

बाकी सब ऐयारों की शादी हुई भई थी। उन लोगों की घर गृहस्थी चुनार ही में थी, अदल बदल करने की जरूरत न पड़ी क्योंकि शादी होने के थोड़े ही दिन बाद बड़े धूमधाम के साथ कुंअर वीरेन्द्रसिंह चुनार के गद्दी पर बैठाए गए और कुंअर छोड़ राजा कहलाने लगे। तेजसिंह उनके राजदीवान मुकर्रर हुए और इसलिये सब ऐयारों को भी चुनार ही में रहना पड़ा।

सुरेन्द्रसिंह अपने लड़के को आंखों के सामने से हटाना नहीं चाहते थे, लाचार नौगढ़ को गद्दी फतेहसिंह के सुपुर्द कर वे भी चुनार ही रहने लगे, मगर राज्य का काम बिल्कुल वीरेन्द्रसिंह के जिम्मे था, हाँ कभी कभी राय दे देते थे। तेजसिंह के साथ जीतसिंह भी बड़ी आजादी के साथ चुनार में रहने लगे। महाराज सुरेन्द्रसिंह और जीतसिंह में बहुत मुहब्बत थी और वह मुहब्बत दिन दिन बढ़ती गई। असल में जीतसिंह इसी लायक थे कि उनकी जितनी कदर की जाती थोड़ी थी। शादी के दो बरस बाद चन्द्रकान्ता को लड़का पैदा हुआ। उसी साल चपला और चम्पा को भी लड़का पैदा हुआ। इसके तीन बरस बाद चन्द्रकान्ता ने दूसरे लड़के का मुख देखा। चन्द्रकान्ता के बड़े लड़के का नाम इन्द्रजीतसिंह, छोटे का नाम आनन्दसिंह, चपला के लड़के का नाम भैरोसिंह और चम्पा के लड़के का नाम तारासिंह रक्खा गया।

जब ये चारो लड़के कुछ बड़े और बातचीत करने लायक हुए तब इनके लिखने पढ़ने और तालीम का इन्तजाम किया गया और राजा सुरेन्द्रसिंह ने इन चारों लड़कों को जीतसिंह की शागिर्दी और हिफाजत में छोड़ दिया।

भैरोसिंह और तारासिंह ऐयारी के फन में बड़े तेज और चालाक निकले। इनकी ऐयारी का इम्तिहान बराबर लिया जाता था। जीतसिंह का हुक्म था कि भैरोसिंह और तारासिंह कुल ऐयारों को बल्कि अपने बाप तक को धोखा देने की कोशिश करें और इसी तरह पन्नालाल वगैरह ऐयार भी उन दोनों लड़कों को भुलावा दिया करें। धीरे धीरे ये दोनों लड़के इतने तेज और चालाक हो गये कि पन्नालाल वगैरह की ऐयारी इनके सामने दब गई।

भैरोसिंह और तारासिंह इन दोनों में चालाक ज्यादे कौन था इसके कहने की कोई जरूरत नहीं, आगे मौका पड़ने पर आप ही मालूम हो जायेगा, हाँ इतना कह देना जरूरी है कि भैरोसिंह को इन्द्रजीतसिंह केसाथ और तारासिंह को आनन्द-

सिंह के साथ ज्यादे मुहब्बत थी।

चारो लड़के होशियार हुए अर्थात् इन्द्रजीतसिंह भैरोसिंह और तारासिंह को उम्र अट्ठारह वर्ष की और आनन्दसिंह की उम्र पन्द्रह वर्ष की हुई। इतने दिनों तक चुनार राज्य में बराबर शान्ति रही बल्कि पिछली तकलीफें और महाराज शिवदत्त की शैतानी एक स्वप्न की तरह सभों के दिल में रह गई।

इन्द्रजीतसिंह को शिकार का बहुत शौक था, जहां तक बन पड़ता वे रोज शिकार खेला करते। एक दिन किसी बनरखे ने हाजिर होकर बयान किया कि इन दिनों फलाने जंगल की शोभा खूब बढ़ी चढ़ी है और शिकार के जानवर भी इतने आये हुए हैं कि अगर वहाँ महीना भर टिक कर शिकार खेला जाय तौ भी न घटे और कोई दिन खाली न जाय। यह सुन दोनों भाई बहुत खुश हुए। अपने बाप राजा वीरेन्द्रसिंह से शिकार खेलने की इजाजत मांगी और कहा कि 'हमलोगों का इरादा आठ दिन तक जंगल में रह कर शिकार खेलने का है। इसके जवाब में राजा वीरेन्द्रसिंह ने कहा कि 'इतने दिनों तक जंगल में रह कर शिकार खेलने का हुक्म मैं नहीं दे सकता—अपने दादा से पूछो अगर वे हुक्म दें तो कोई हर्ज नहीं'।

यह सुन कर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह ने अपने दादा महाराज सुरेन्द्र-सिंह के पास जाकर अपना मतलब अर्ज किया। उन्होंने खुशी से मंजूर किया और हुक्म दिया कि शिकारगाह में इन दोनों के लिए खेमा खड़ा किया जाय और जब तक ये शिकारगाह में रहें पांच सौ फौज बराबर इनके साथ रहे।

शिकार खेलने का हुक्म पा इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह बहुत खुश हुए और अपने दोनों ऐयार भैरोसिंह और तारासिंह को साथ ले मय पाँच सौ फौज के चुनार से रवाना हुए।

चुनार से पांच कोस दक्षिण एक घने और भयानक जंगल में पहुँच कर उन्होने डेरा डाला। दिन थोड़ा बाकी रह गया इसलिए यह राय ठहरी कि आज आराम करें, कल सवेरे शिकार का बन्दोबस्त किया जाय मगर बनरखों* को शेर का पता

---

* जंगलों की हिफाजत के लिए जो नौकर रहते हैं उनको बनरखे कहते हैं। शिकार खेलाने का काम बनरखों का ही है। ये लोग जंगल में घूम घूम कर और शिकारी जानवरों के पैर का निशान देख और उसी अन्दाज पर जाकर पता लगाते हैं कि शेर इत्यादि कोई शिकारी जानवर इस जंगल में है या नहीं, अगर है तो कहां है। बनरखों का काम है कि अपनी आँखों से देख आवें तब खबर करें कि फलानी जगह पर शेर चीता या भालू है।

लगाने के लिए आज ही कह दिया जायगा। भैंसा❀ बांधने की कोई जरूरत नहीं शेर का शिकार पैदल ही किया जायगा।

दूसरे दिन सबेरे बनरखों ने हाजिर होकर उनसे अर्ज किया कि इस जंगल में शेर तो हैं मगर रात हो जाने के सबब हम लोग उन्हें अपनी आँखों से न देख सके, अगर आज के दिन शिकार न खेला जाय तो हम लोग देखकर उनका पता दे सकेंगे।

आज के दिन भी शिकार खेलना बन्द किया गया। पहर भर दिन बाकी रहे इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह घोड़ों पर सवार हो अपने दोनों ऐयारों को साथ ले घूमने और दिल बहलाने के लिए डेरे से बाहर निकले और टहलते हुए दूर तक चल गए।

ये लोग धीरे धीरे टहलते और बातें करते जा रहे थे कि बाईं तरफ से शेर के गरजने की आवाज आई जिसे सुनते ही चारो अटक गये और घूम कर उस तरफ देखने लगे जिधर से आवाज आई थी।

लगभग दो सौ गज की दूरी पर एक साधू शेर पर सवार जाता दिखाई पड़ा जिसकी लम्बी लम्बी और घनी जटाएं पीछे की तरफ लटक रही थीं—एक हाथ में त्रिशूल दूसरे में शंख लिए हुए था। इसकी सवारी का शेर बहुत बड़ा था और उसके गर्दन के बाल जमीन तक लटक रहे थे।

❀ खास शेर के शिकार में भैंसा बांधा जाता है। भैंसा बांधने के दो कारण हैं। एक तो शिकार को अटकाने के लिए अर्थात् जब बनरखा आकर खबर दे कि फलाने जंगल में शेर है, उस वक्त या कई दिनों तक अगर शिकार खेलने वाले को किसी कारण शिकार खेलने की फुरसत न हुई और शेर को अटकाना चाहा तो भैंसा बांधने का हुक्म दिया जाता है। बनरखे भैंसा ले जाते हैं और जिस जगह शेर का पता लगता है उसके पास ही किसी भयानक और सायेदार जंगल या नाले में मजबूत खूंटा गाड़ कर भैंसे को बांध देते हैं। जब शेर भैंसे की बू पाता है तो वहीं आता है और भैंसे को खाकर उसी जंगल में कई दिनों तक मस्त और बेफिक्र पड़ा रहता है। इस तर्कीब से दो चार भैंसा देकर महीनों शेर को अटका लिया जाता है। शेर को जब तक खाने के लिए मिलता है वह दूसरे जंगल में नहीं जाता। शेर का पेट अगर एक दफे खूब भर जाय तो उसे सात आठ दिनों तक खाने की परवाह नहीं रहती। खुले भैंसे को शेर जल्दी नहीं मार सकता।

दूसरे जब मचान बांध कर शेर का शिकार किया चाहते हैं या एक जंगल से दूसरे जंगल में अपने सुबीते के लिए उसे ले जाया चाहते हैं तब इसी तरह भैंसे बांध कर हटाते ले जाते हैं। इसको शिकारी लोग 'मारी' भी कहते हैं।

इसके आठ दस हाथ पीछे एक शेर और जा रहा था जिसकी पीठ पर आदमी के बदले बोझ लदा हुआ नजर आया। शायद यह असबाव उन्हीं शेर सवार महात्मा का हो।

शाम हो जाने के सबब साधू की सूरत साफ मालूम न पड़ी तो भी उसे देख इन चारों को बड़ा ही ताज्जुब हुआ और कई तरह की बातें सोचने लगे।

इन्द्र०। इस तरह शेर पर सवार होकर घूमना मुश्किल है।

आनन्द०। कोई अच्छे महात्मा मालूम होते हैं।

भैरो०। पीछे वाले शेर को देखिए जिस पर असबाब लदा हुआ है, किस तरह भेंड़ की तरह सिर नीचा किये जा रहा है।

तारा०। शेरों को बस में कर लिया है।

इन्द्र०। जी चाहता है उनके पास चल कर दर्शन करें।

आनन्द०। अच्छी बात है, चलिए पास से देखें कैसा शेर है।

तारा०। बिना पास गए महात्मा और पाखण्डी में भेद न मालूम होगा।

भैरो०। शाम तो हो गई है, खैर चलिए आगे से बढ़ कर रोकें।

आनन्द०। आगे से चल कर रोकने से बुरा न मानें !

भैरो०। हम ऐयारों का पेशा ही ऐसा है कि पहिले तो उनका साधू होना ही विश्वास नहीं करते !

इन्द्र०। आप लोगों की क्या बात है जिनकी मूंछ हमेशे ही मुड़ी रहती है, खैर चलिए तो सही।

भैरो०। चलिए।

चारो आदमी आगे घूम कर बाबाजी के सामने गए जो शेर पर सवार जा रहे थे। इन लोगों को अपने पास आते देख बाबाजी रुक गए। पहिले तो इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह के घोड़े शेरों को देख कर अड़े मगर फिर ललकारने से आगे बढ़े। थोड़ी दूर जाकर दोनों भाई घोड़ों के ऊपर से उतर पड़े, भैरोसिंह और तारासिंह ने दोनों घोड़ों को पेड़ से बांध दिया, इसके बाद पैदल ही चारो आदमी महात्मा के पास पहुँचे।

बाबाजी०। (दूर ही से) आओ राजकुमार इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह—कहो कुशल तो है ?

इन्द्र०। (प्रणाम करके) आपकी कृपा से सब मंगल है।

बाबा०। (भैरोसिंह और तारासिंह की तरफ देख कर) कहो भैरो

तारा अच्छे हो ?

दोनों० । (हाथ जोड़ कर) आपकी दया से !

बाबा० । राजकुमार, मैं खुद तुम लोगों के पास जाने को था क्योंकि तुमने शेर का शिकार करने के लिए इस जंगल में डेरा डाला है । मैं गिरनार जा रहा हूँ, घूमता फिरता इस जंगल में भी आ पहुंचा । यह जंगल अच्छा मालूम होता है इसलिए दो तीन दिन तक यहां रहने का विचार है, कोई अच्छी जगह देख कर धूनी लगाऊंगा । मेरे साथ सवारी और असबाब लादने के कई शेर हैं, इसलिए कहता हूँ कि धोखे में मेरे किसी शेर को मत मारना नहीं तो मुश्किल होगी, सैकड़ों शेर पहुंच कर तुम्हारे लश्कर में हलचल मचा डालेंगे और बहुतों की जान जायगी । तुम प्रतापी राजा सुरेन्द्रसिंह* के लड़के हो इसलिए तुम्हें पहिले ही से समझा देना मुनासिब है जिसमें किसी तरह का दुख न हो ।

इन्द्र० । महाराज मैं कैसे जानूंगा कि यह आपका शेर है ? ऐसा ही है तो शिकार न खेलूंगा ।

बाबा० । नहीं तुम शिकार खेलो, मगर मेरे शेरों को मत मारो !

इन्द्र० । मगर यह कैसे मालूम होगा कि फलाना शेर आपका है ?

बाबा० । देखो मैं अपने शेरों को बुलाता हूँ पहिचान लो ।

बाबाजी ने शंख बजाया । भारी शंख की आवाज चारो तरफ जंगल में गूंज गई और हर तरफ से गुर्राहट की आवाज आने लगी । थोड़ी ही देर में इधर उधर से दौड़ते हुए पांच शेर और आ पहुँचे । ये चारो दिलावर और बहादुर थे, अगर कोई दूसरा होता तो डर से उसकी जान निकल जाती । इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह के घोड़े शेरों को देख कर उछलने कूदने लगे मगर रेशम की मजबूत बागडोर से बंधे हुए थे इससे भाग न सके । इन शेरों ने आकर बड़ी उधम मचाई—इन्द्रजीतसिंह वगैरह को देख गरजने कूदने और उछलने लगे, मगर बाबाजी के डांटते ही सब ठंडे हो सिर नीचा कर भेंड़ बकरी की तरह खड़े हो गए ।

बाबा० । देखो इन शेरों को पहिचान लो, अभी दो चार और हैं, मालूम होता है उन्होंने शंख की आवाज नहीं सुनी । खैर अभी तो मैं इसी जंगल में हूँ, उन बाकी शेरों को भी दिखला दूंगा—कल भर शिकार और बन्द रक्खो ।

भैरो० । फिर आपसे मुलाकात कहां होगी ? आपकी धूनी किस जगह लगेगी ?

बाबा० । मुझे तो यही जगह आनन्द की मालूम होती है, कल इसी जगह

* साधू महाशय भूल गए, बीरेन्द्रसिंह की जगह सुरेन्द्रसिंह का नाम ले बैठे ।

आना मुलाकात होगी।

बाबाजी शेर से नीचे उतर पड़े और जितने शेर उस जगह आए थे वे सब बाबाजी के चारो तरफ घूमने तथा मुहब्बत से उनके बदन को चाटने और सूंघने लगे। ये चारो आदमी थोड़ी देर तक वहां और अटकने के बाद बाबाजी से विदा हो खेमे में आये।

जब सन्नाटा हुआ तो भैरोसिंह ने इन्द्रजीतसिंह से कहा, "मेरे दिमाग में इस समय बहुत सी बातें घूम रही हैं। मैं चाहता हूँ कि हम लोग चारो आदमी एक जगह बैठ कुमेटी कर कुछ राय पक्की करें।"

इन्द्रजीतसिंह ने कहा, "अच्छा आनन्द और तारा को भी इसी जगह बुला लो।"

भैरोसिंह गये और आनन्दसिंह तथा तारासिंह को उसी जगह बुला लाए उस वक्त सिवाय इन चारो के उस खेमे में और कोई न रहा। भैरोसिंह ने अपने दिल का हाल कहा जिसे सभों ने बड़े गौर से सुना, इसके बाद पहर भर तक कुमेटी करके निश्चय कर लिया कि क्या करना चाहिए।

यह कुमेटी कैसी भई, भैरोसिंह का क्या इरादा हुआ और उन्होंने क्या निश्चय किया तथा रात भर ये लोग क्या करते रहे इसके कहने की कोई जरूरत नहीं, समय पर सब खुल जायगा।

सवेरा होते ही चारो आदमी खेमे के बाहर हुए और अपनी फौज के सरदार कंचनसिंह को बुला कुछ समझा बाबाजी की तरफ रवाना हुए। जब लश्कर से दूर निकल गए, आनन्दसिंह भैरोसिंह और तारासिंह तो तेजी के साथ चुनार की तरफ रवाना हुए और इन्द्रजीतसिंह अकेले बाबाजी से मिलने गये।

बाबाजी शेरों के बीच धूनी रमाये बैठे थे। दो शेर उनके चारो तरफ घूम घूम कर पहरा दे रहे थे। इन्द्रजीतसिंह ने पहुंच कर प्रणाम किया और बाबाजी ने आशीर्वाद देकर बैठने के लिए कहा।

इन्द्रजीतसिंह ने बनिस्बत कल के आज दो शेर और ज्यादे देखे। थोड़ी देर चुप रहने के बाद बातचीत होने लगी।

बाबा०। कहो इन्द्रजीतसिंह, तुम्हारे भाई और ऐयार कहां रह गए, वे नहीं आए ?

इन्द्र०। हमारे छोटे भाई आनन्दसिंह को बुखार आ गया, इस सबब से वह नहीं आ सका। उसी के हिफाजत में दोनों ऐयारों को छोड़ मैं अकेला आपके दर्शन को आया हूँ।

बाबा० । अच्छा क्या हर्ज है, आज शाम तक वह अच्छे हो जांयगे, कहो आज कल तुम्हारे राज्य में कुशल तो है ?

इन्द्र० । आपकी कृपा से सब आनन्द हैं ।

बाबा । बेचारे बीरेन्द्रसिंह ने भी बड़ा कष्ट पाया ! खैर जो हो दुनिया में उनका नाम रह जायगा । इस हजार वर्ष के अन्दर कोई ऐसा राजा नहीं हुआ जिसने तिलिस्म तोड़ा हो । एक और तिलिस्म है, असल में वही भारी और तारीफ के लायक है ।

इन्द्र० । पिताजी तो कहते हैं कि वह तिलिस्म तेरे हाथ से टूटेगा ।

बाबा० । हां ऐसा ही होगा, वह जरूर तुम्हारे हाथ से फतह होगा इसमें कोई सन्देह नहीं ।

इन्द्र० । देखें कब तक ऐसा होता है, उसकी ताली का तो कहीं पता ही नहीं लगता ।

बाबा० । ईश्वर चाहेगा तो एक ही दो दिन में तुम उस तिलिस्म को तोड़ने में हाथ लगा दोगे, उस तिलिस्म की ताली मैं हूं, कई पुश्तों से हमलोग उस तिलिस्म के दारोगा होते चले आए हैं । मेरे परदादा दादा और बाप उसी तिलिस्म के दारोगा थे, जब मेरे पिता का देहान्त होने लगा तब उन्होंने उसकी ताली मेरे सुपुर्द कर मुझे उसका दारोगा मुकर्रर कर दिया । अब वक्त आ गया है कि मैं उसकी ताली तुम्हारे हवाले करूं क्योंकि वह तिलिस्म तुम्हारे नाम पर बांधा गया है और सिवाय तुम्हारे कोई दूसरा उसका मालिक नहीं बन सकता ।

इन्द्र० । तो अब देर क्या है ?

बाबा० । कुछ नहीं, कल से तुम उसके तोड़ने में हाथ लगा दो, मगर एक बात तुम्हारे फायदे की हम कहते हैं ।

इन्द्र० । वह क्या ?

बाबा० । तुम उसके तोड़ने में अपने भाई आनन्द को भी शरीक कर लो, ऐसा करने से दौलत भी दूनी मिलेगी और नाम भी दोनों भाइयों का दुनिया में हमेशा के लिए बना रहेगा ।

इन्द्र० । उसकी तो तबीयत ही ठीक नहीं !

बाबा० । क्या हर्ज है । तुम अभी जाकर जिस तरह बने उसे मेरे पास ले आओ, मैं बात की बात में उसको चंगा कर दूंगा । आज ही तुम लोग मेरे साथ चलो जिसमें कल तिलिस्म टूटने में हाथ लग जाय, नहीं तो साल भर फिर मौका

न मिलेगा ।

इन्द्र० । बाबाजी असल तो यह है कि मैं अपने भाई की बढ़ती नहीं चाहता, मुझे यह मंजूर नहीं कि मेरे साथ उसका भी नाम हो ।

बाबा० । नहीं नहीं, तुम्हें ऐसा न सोचना चाहिए, दुनिया में भाई से बढ़ के कोई रत्न नहीं है ।

इन्द्र० । जी हां दुनिया में भाई से बढ़ के रत्न नहीं तो भाई से बढ़ के कोई दुश्मन भी नहीं, यह बात मेरे दिल में ऐसी बैठ गई है कि उसके हटाने के लिए ब्रह्मा भी आकर समझावें बुझावें तो भी कुछ नतीजा न निकलेगा ।

बाबा० । बिना उसको साथ लिये तुम तिलिस्म नहीं तोड़ सकते ।

इन्द्र० । (हाथ जोड़ कर) बस तो जाने दीजिये, माफ कीजिये, मुझे तिलिस्म तोड़ने की जरूरत नहीं !

बाबा० । क्या तुम्हें इतनी जिद्द है ?

इन्द्र० । मैं कह जो चुका कि ब्रह्मा भी मेरी राय पलट नहीं सकते ।

बाबा० । खैर तब तुम्हीं चलो, मगर इसी वक्त चलना होगा ।

इन्द्र० । हां हां, मैं तैयार हूँ, अभी चलिए ।

बाबाजी उसी समय उठ खड़े हुए । अपनी गठड़ी मुठड़ी बांध एक शेर पर लाद दिया तथा दूसरे पर आप सवार हो गए । इसके बाद एक शेर की तरफ देख कर कहा, "बच्चा गंगाराम, यहां तो आओ !" वह शेर तुरन्त इनके पास आया । बाबाजी ने इन्द्रजीतसिंह से कहा, "तुम इस पर सवार हो लो ।" इन्द्रजीतसिंह कूद कर सवार हो गये और बाबाजी के साथ साथ दक्षिण का रास्ता लिया । बाबाजी के साथी शेर भी कोई आगे कोई पीछे कोई बायें कोई दाहिने हो बाबाजी के साथ जाने लगे ।

सब शेर तो पीछे रह गये मगर दो शेर जिन पर बाबाजी और इन्द्रजीतसिंह सवार थे आगे निकल गये । दोपहर तक ये दोनों चले गये । जब दिन ढलने लगा बाबाजी ने इन्द्रजीतसिंह से कहा, "यहां ठहर कर कुछ खा पी लेना चाहिये ।" इसके जबाब में कुमार बोले, 'बाबाजी, खाने पीने की कोई जरूरत नहीं । आप महात्मा ही ठहरे, मुझे कोई भूख नहीं लगी है, फिर अटकने की क्या जरूरत है ? जिस काम में पड़े उसमें सुस्ती करना ठीक नहीं !"

बाबाजी ने कहा, "शाबास, तुम बड़े बहादुर हो, अगर तुम्हारा दिल इतना मजबूत न होता तो तिलिस्म तुम्हारे ही हाथ से टूटेगा ऐसा बड़े लोग न कह जाते,

खैर चलो।"

कुछ दिन बाकी रहा जब ये दोनों एक पहाड़ी के नीचे पहुंचे। बाबाजी ने शंख बजाया, थोड़ी ही देर में चारो तरफ से सैकड़ों पहाड़ी लुटेरे हाथ में बरछे लिये आते दिखाई पड़े और ऐसे ही बीस पचीस आदमियों को साथ लिए पूरब तरफ से आता हुआ राजा शिवदत्त नजर पड़ा जिसे देखते ही इन्द्रजीतसिंह ने ऊँची आवाज में कहा, "इनको मैं पहिचान गया, यही महाराज शिवदत्त हैं। इनकी तस्वीर मेरे कमरे में लटकी हुई है। दादाजी ने इनकी तस्वीर मुझे दिखा कर कहा था कि हमारे सबसे भारी दुश्मन यही महाराज शिवदत्त हैं। ओफ ओह, हकीकत में बाबाजी ऐयार ही निकले, जो सोचा था वही हुआ। खैर क्या हर्ज है, इन्द्रजीतसिंह को गिरफ्तार कर लेना जरा टेढ़ी खीर है!!"

शिवदत्त०। (पास पहुँच कर) मेरा आधा कलेजा तो ठंडा हुआ, मगर अफसोस तुम दोनों भाई हाथ न आये।

इन्द्रजीत०। जी इस भरोसे न रहियेगा कि इन्द्रजीतसिंह को फंसा लिया। उनकी तरफ बुरी निगाह से देखना भी काम रखता है!

ग्रन्थकर्ता०। भला इसमें भी कोई शक है!!

दूसरा बयान

इस जगह पर थोड़ा सा हाल महाराज शिवदत्त का भी बयान करना मुनासिब मालूम होता है। महाराज शिवदत्त को हर तरह से कुंअर बीरेन्द्रसिंह के मुकाबिले में हार माननी पड़ी। लाचार उसने शहर छोड़ दिया और अपने कई पुराने खैरख्वाहों को साथ ले चुनार के दक्खिन की तरफ रवाना हुआ।

चुनार से थोड़ा ही दूर दक्खिन लम्बा चौड़ा घना जंगल है। यह विंध्य के पहाड़ी जंगल का सिलसिला रावर्ट्सगंज सरगुजा और सिंगरौली होता हुआ सैकड़ों कोस तक चला गया है जिसमें बड़े बड़े पहाड़ घाटियां दर्रे और खोह पड़ते हैं। बीच में दो दो चार चार कोस के फासले पर गाँव भी आबाद हैं। कहीं कहीं पहाड़ों पर पुराने जमाने के टूटे फूटे आलीशान किले अभी तक दिखाई पड़ते हैं। चुनार से आठ दस कोस दक्षिण अहरौरा के पास पहाड़ पर पुराने जमाने के एक बर्बाद किले का निशान आज भी देखने से चित्त का भाव बदल जाता है। गौर करने से यह मालूम होता है कि जब यह किला दुरुस्त होगा तो तीन कोस से ज्यादे लम्बी चौड़ी जमीन इसने घेरी होगी, आखीर में यह किला काशी के मशहूर राजा

चेतसिंह के अधिकार में था। इन्हीं जंगलों में अपनी रानी और कई खैरख्वाहों को मय उनकी औरतों और बाल बच्चों के साथ लिए घूमते फिरते महाराज शिवदत्त ने चुनार से लगभग पचास कोस दूर जाकर एक हरी भरी सुहावनी पहाड़ी के ऊपर के एक पुराने टूटे हुए मजबूत किले में डेरा डाला और उसका नाम शिवदत्तगढ़ रक्खा जिसमें उस वक्त भी कई कमरे और दालान रहने लायक थे। यह छोटी पहाड़ी अपने चारो तरफ के ऊंचे पहाड़ों के बीच में इस तरह छिपी और दबी हुई थी कि यकायक किसी का यहां पहुँचना और कुछ पता लगाना मुश्किल था।

इस वक्त महाराज शिवदत्त के साथ सिर्फ बीस आदमी थे जिनमें तीन मुसलमान ऐयार थे जो शायद नाजिम और अहमद के रिश्तेदारों में से थे और यह समझ कर महाराज शिवदत्त के साथ हो गये थे कि इनके साथ मिले रहने से कभी न कभी राजा वीरेन्द्रसिंह से बदला लेने का मौका मिल ही जायगा, दूसरे सिवाय शिवदत्त के और कोई इस लायक नजर भी न आता था जो इन बेईमानों को ऐयारी के लिए अपने साथ रखता। नीचे लिखे नामों से तीनों ऐयार पुकारे जाते थे—बाकरअली, खुदाबक्श और यारअली। इन सब ऐयारों और साथियों ने रुपये पैसे से भी जहां तक बन पड़ा महाराज शिवदत्त की मदद की।

राजा वीरेन्द्रसिंह की तरफ से शिवदत्त का दिल साफ न हुआ मगर मौका न मिलने के सबब मुद्दत तक उसे चुपचाप बैठे रहना पड़ा। अपनी चालाकी और होशियारी से वह पहाड़ी भील और खर्वार इत्यादि जाति के आदमियों का राजा बन बैठा और उनसे मालगुजारी में गल्ला घी शहद और बहुत सी जंगली चीजें वसूल करने और उन्हीं लोगों के मारफत शहर में भेजवा और बिकवा कर रुपया बटोरने लगा। उन्हीं लोगों को होशियार करके थोड़ी बहुत फौज भी उसने बना ली। धीरे धीरे वे पहाड़ी जाति के लोग भी होशियार हो गए और खुद शहर में जाकर गल्ला वगैरह बेच रुपए इकट्ठा करने लगे। शिवदत्तगढ़ भी अच्छी तरह आबाद हो गया।

इधर बाकरअली वगैरह ऐयारों ने भी अपने कुछ साथियों को जो चुनार से इनके साथ आये थे ऐयारी के फन में खूब होशियार किया। इस बीच में एक लड़का और उसके बाद लड़की भी महाराज शिवदत्त के घर पैदा हुई। मौका पाकर अपने बहुत से आदमियों और ऐयारों को साथ ले वह शिवदत्तगढ़ के बाहर निकला और राजा बीरेन्द्रसिंह से बदला लेने की फिक्र में कई महीने तक घूमता

रहा। बस महाराज शिवदत्त का इतना ही मुख्तसर हाल लिख कर इस बयान को समाप्त करते हैं और फिर इन्द्रजीतसिंह के किस्से को छेड़ते हैं।

इन्द्रजीतसिंह के गिरफ्तार होने के बाद उन बनावटी शेरों ने भी अपनी हालत बदली और असली सूरत के ऐयार बन बैठे जिनमें यारअली बाकरअली और खुदाबख्श मुखिया थे। महाराज शिवदत्त बहुत ही खुश हुआ और समझा कि अब मेरा जमाना फिरा, ईश्वर चाहेगा तो मैं फिर चुनार की गद्दी पाऊंगा और अपने दुश्मनों से पूरा बदला लूंगा।

इन्द्रजीतसिंह को कैद कर वह शिवदत्तगढ़ को ले गया। सभों को ताज्जुब हुआ कि कुंअर इन्द्रजीतसिंह ने गिरफ्तार होते समय कुछ उत्पात न मचाया, किसी पर गुस्सा न निकाला, किसी पर हरबा न उठाया, यहां तक कि आंखों से रंज अफसोस या क्रोध भी जाहिर न होने दिया। हकीकत में यह ताज्जुब की बात थी भी कि बहादुर बीरेन्द्रसिंह का शेरदिल लड़का ऐसी हालत में चुप रह जाय और बिना हुज्जत किए बेड़ी पहिर ले, मगर नहीं इसका कोई सबब जरूर है जो आगे चल कर मालूम होगा।

तीसरा बयान

चुनारगढ़ किले के अन्दर एक कमरे में महाराज सुरेन्द्रसिंह, बीरेन्द्रसिंह जीतसिंह तेजसिंह, देवीसिंह, इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह बैठे हुए कुछ बातें कर रहे हैं।

जीत०। भैरो ने बड़ी होशियारी का काम किया कि अपने को इन्द्रजीतसिंह को सूरत बना शिवदत्त के ऐयारों के हाथ फंसाया।

सुरेन्द्र०। शिवदत्त के ऐयारों ने चालाकी तो की थी मगर...

बीरेन्द्र०। बाबाजी शेर पर सवार हो सिद्ध बने तो लेकिन अपना काम सिद्ध न कर सके।

इन्द्र०। मगर जैसे हो भैरोसिंह को अब बहुत जल्द छुड़ाना चाहिए।

जीत०। कुमार घबराओ मत, तुम्हारे दोस्त को किसी तरह की तकलीफ नहीं हो सकती, लेकिन अभी उसका शिवदत्त के यहां फंसे ही रहना मुनासिब है। वह बेवकूफ नहीं है, बिना मदद के आप ही छूट कर आ सकता है, तिस पर पन्नालाल रामनारायण चुन्नीलाल बद्रीनाथ और ज्योतिषीजी उसकी मदद को भेजे ही गये हैं, देखो तो क्या होता है। इतने दिनों तक चुपचाप बैठे रह कर शिवदत्त ने फिर अपनी खराबी कराने पर कमर बांधी है।

देवी० । कुमारों के साथ जो फौज शिकारगाह में गई है उसके लिए अब क्या हुक्म होता है ?

जीत० । अभी शिकारगाह से डेरा उठाना मुनासिब नहीं । (तेजसिंह की तरफ देख कर) क्यों तेज ?

तेज० । (हाथ जोड़ कर) जी हां, शिकारगाह में डेरा कायम रहने से हम लोग बड़ी खूबसूरती और दिल्लगी से अपना काम निकाल सकेंगे ।

सुरेन्द्र० । कोई ऐयार शिवदत्तगढ़ से लौटे तो कुछ हाल चाल मालूम हो ।

तेज० । कल तो नहीं मगर परसों तक कोई न कोई जरूर आयेगा ।

पहर भर से ज्यादे देर तक बात चीत होती रही । कुल बात को खोलना हम मुनासिब नहीं समझते बल्कि आखीरी बात का पता तो हमें भी न लगा जो मजलिस उठने के बाद जीतसिंह ने अकेले में तेजसिंह को समझाई थी । खैर जाने दीजिए, जो होगा देखा जायगा, जल्दी क्या है ।

गंगा के किनारे ऊंची बाहरदरी में इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह दोनों भाई बैठे जल की कैफियत देख रहे हैं । बरसात का मौसम है, गंगा खूब बढ़ी हुई हैं, किले के नीचे जल पहुँचा है, छोटी छोटी लहरें दीवारों में टक्कर मार रही हैं, अस्त होते हुए सूर्य की लालिमा जल में पड़ कर लहरों की शोभा दूनी बढ़ा रही हैं, सन्नाटे का आलम है, इस बारहदरी में सिवाय इन दोनों भाइयों के कोई तीसरा दिखाई नहीं देता ।

इन्द्र० । अभी जल कुछ और बढ़ेगा ।

आनन्द० । जी हां, पर साल तो गंगा आज से कहीं ज्यादे बढ़ी हुई थीं जब दादाजी ने हम लोगों को तैर कर पार जाने के लिए कहा था ।

इन्द्र० । उस दिन भी खूब ही दिल्लगी हुई, भैरोसिंह सभों में तेज रहा, बद्रीनाथ ने कितना ही चाहा कि उसके आगे निकल जांय मगर न हो सका ।

आनन्द० । हम दोनों भी कोस भर तक उस किश्ती के साथ ही गए जो हम लोगों की हिफाजत के लिए संग गई थी ।

इन्द्र० । बस वही तो हम लोगों का आखिरी इम्तिहान रहा, फिर तब से जल में तैरने की नौबत ही कहां आई ।

आनन्द० । कल तो मैंने दादाजी से कहा था कि आज कल गंगाजी खूब बढ़ी हुई हैं तैरने को जी चाहता है ।

इन्द्र० । तब क्या बोले ?

आनन्द० । कहने लगे कि बस अब तुम लोगों का तैरना मुनासिब नहीं है, हंसी होगी । तैरना भी एक इल्म है जिसमें तुम लोग होशियार हो चुके, अब क्या जरूरत है ? ऐसा ही जी चाहे तो किश्ती पर सवार होकर जाओ सैर करो ।

इन्द्र० । उन्होंने बहुत ठीक कहा, चलो किश्ती पर थोड़ी दूर घूम आयें ।

बातचीत हो ही रही थी कि चोबदार ने आकर अर्ज किया, "एक बहुत बूढ़ा जवहरी हाजिर है, दर्शन किया चाहता है ।"

आनन्द० । यह कौन सा वक्त है ?

चोबदार० । (हाथ जोड़ कर) तावेदार ने तो चाहा था कि इसस मय उसे बिदा करे मगर यह ख्याल करके ऐसा करने का हौसला न पड़ा कि एक तो लड़कपन ही से वह इस दर्बार का नमकख्वार है और महाराज की भी उस पर निगाह रहती है, दूसरे अस्सी वर्ष का बुड्ढा है, तीसरे कहता है कि अभी इस शहर में पहुँचा हूँ, महाराज का दर्शन कर चुका हूँ, सरकार के भी दर्शन हो जांय तब आराम से सराय में डेरा डालूं और हमेशे से उसका यही दस्तूर भी है ।

इन्द्र० । अगर ऐसा है तो उसे आने ही देना मुनासिब है ।

आनन्द० । अब आज किश्ती पर सैर करने का रंग नजर नहीं आता ।

इन्द्र० । क्या हर्ज है, कल सही ।

चोबदार सलाम करके चला गया और थोड़ी देर में सौदागर को लेकर हाजिर हुआ । हकीकत में वह सौदागर बहुत ही बुड्ढा था, रैयासत और शराफत उसके चेहरे से बरसती थी । जाते ही सलाम करके उसने दोनों भाइयों को दो अंगूठियां दीं और कबूल होने के बाद इशारा पाकर जमीन पर बैठ गया ।

इस बुड्ढे जवहरी की इज्जत की गई, मिजाज का हाल तथा सफर की कैफियत पूछने के बाद डेरे पर जाकर आराम करने और कल फिर हाजिर होने का हुक्म हुआ, सौदागर सलाम करके चला गया ।

सौदागर ने जो दो अंगूठियां दोनों भाइयों को नजर दी थीं उनमें आनन्दसिंह की अंगूठी पर निहायत खुशरंग मानिक जड़ा हुआ था और इन्द्रजीतसिंह की अंगूठी पर सिर्फ एक छोटी सी तस्वीर थी जिसे एक दफे निगाह भर कर इन्द्रजीतसिंह ने देखा और कुछ सोच चुप हो रहे ।

एकान्त होने पर रात को शमादान की रोशनी में फिर उस अंगूठी को देखा जिसमें नगीने की जगह एक कमसिन हसीन औरत की तस्वीर खड़ी हुई थी ।

चाहे यह तस्वीर कितनी ही छोटी क्यों न हो मगर मुसौवर ने गजब की सफाई इसमें खर्च की थी। इसे देखते देखते एक मरतबे तो इन्द्रजीतसिंह की यह हालत हो गई कि अपने को और उस औरत की तस्वीर को भूल गए, मालूम हुआ कि स्वयं वह नाजनीन इनके सामने बैठी है और यह उससे कुछ कहा चाहते हैं मगर उसके हुस्न के रुआब में आकर चुप रह जाते हैं। यकायक यह चौंक पड़े और अपनी बेवकूफी पर अफसोस करने लगे, लेकिन इससे क्या होता है ? उस तस्वीर ने तो एक ही सायत में इनके लड़कपन को धूल में मिला दिया और नौजवानी की दीवानी सूरत इनके सामने खड़ी कर दी। थोड़ी देर पहिले सवारी शिकार कसरत वगैरह के पेचीले कायदे दिमाग में घूम रहे थे, अब ये एक दूसरी ही उलझन में फंस गये और दिमाग किसी अद्वितीय रत्न के मिलने की फिक्र में गोते खाने लगा। महाराज शिवदत्त की तरफ से अब क्या ऐयारी होती है, भैरोंसिंह क्योंकर और कब कैद से छूटते हैं, देखें बद्रीनाथ वगैरह शिवदत्तगढ़ में जाकर क्या करते हैं, अब शिकार खेलने की नौबत कब तक आती है, एक ही तीर में शेर को गिरा देने का मौका कब मिलता है, किश्ती पर सवार हो दरिया की सैर करने कब जाना चाहिये इत्यादि खयालों को भूल गए। अब तो यह फिक्र पैदा हुई कि सौदागर को यह अंगूठी क्योंकर हाथ लगी ? यह तस्वीर खयाली है या असल में किसी ऐसे की है जो इस दुनिया में मौजूद है ? क्या सौदागर उसका पता ठिकाना जानता होगा ? खूबसूरती की इतनी ही हद है या और भी कुछ है ? नजाकत सुडौली और सफाई वगैरह का ख़जाना यही है या कोई और ? इसकी मोहब्बत के दरिया में हमारा बेड़ा क्योंकर पार होगा ?

कुंअर इन्द्रजीतसिंह ने आज बहाना करना भी सीख लिया और घड़ी ही भर में उस्ताद हो गए। पेट फूला है भोजन न करेंगे, सर में दर्द है, किसी का बोलना बुरा मालूम होता है, सन्नाटा हो तो शायद नींद आए, इत्यादि बहानों से उन्होंने अपनी जान बचाई और तमाम रात चारपाई पर करवटें बदल बदल कर इस फिक्र में काटी कि सवेरा हो तो सौदागर को बुला कर कुछ पूछें।

सवेरे उठते ही जवहरी को हाजिर करने का हुक्म दिया, मगर घण्टे भर के बाद चोबदार ने वापस आकर अर्ज किया कि सराय में सौदागर का पता नहीं लगता।

इन्द्र०। उसने अपना डेरा कहां पर बतलाया था ?

चोब०। ताबेदार को तो उसकी जुबानी यही मालूम हुआ था कि सराय में उतरेगा, मगर वहां दरियाफ्त करने से मालूम हुआ कि यहां कोई सौदागर नहीं उ

इन्द्र० । किसी दूसरी जगह उतरा होगा, पता लगाओ ।

"बहुत खूब" कह कर चोबदार तो चला गया मगर इन्द्रजीतसिंह कुछ तरद्दुद में पड़ गये । सिर नीचा करके सोच रहे थे कि किसी के पैर की आहट ने चौंका दिया, सिर उठा कर देखा तो कुंअर आनन्दसिंह ।

आनन्द० । स्नान का तो समय हो गया ।

इन्द्र० । हां, आज कुछ देर हो गई ।

आनन्द० । तबीयत कुछ सुस्त मालूम होती है ?

इन्द्र० । रात भर सर में दर्द था ।

आनन्द० । अब कैसा है ?

इन्द्र० । अब तो ठीक है ।

आनन्द० । कल कुछ झलक सी मालूम पड़ी थी कि उस अंगूठी में कोई तस्वीर जड़ी हुई है जो उस जौहरी ने नजर की थी ।

इन्द्र० । हां थी तो ।

आनन्द० । कैसी तस्वीर है ?

इन्द्र० । न मालूम वह अंगूठी कहां रख दी कि मिलती ही नहीं । मैंने भी सोचा था कि दिन को अच्छी तरह देखूंगा मगर...

ग्रन्थकर्ता० । सच है, इसकी गवाही तो मैं भी दूंगा !

अगर भेद खुल जाने का डर न होता तो कुंअर इन्द्रजीतसिंह सिवा "ओफ" करने और लम्बी लम्बी सांसें लेने के कोई दूसरा काम न करते मगर क्या करें लाचारी से सभी मामूली काम और अपने दादा के साथ बैठ कर भोजन भी करना पड़ा, हां शाम को इनकी बेचैनी बहुत बढ़ गई जब सुना कि तमाम शहर छान डालने पर भी उस जवहरी का कहीं पता न लगा और यह भी मालूम हुआ कि उस जवहरी ने बिल्कुल झूठ कहा था कि महाराज का दर्शन कर आया हूँ अब कुमार के दर्शन हो जांय तब आराम से सराय में डेरा डालूं, वह वास्तव में महाराज सुरेन्द्रसिंह और बीरेन्द्रसिंह से नहीं मिला था ।

तीसरे दिन इनको बहुत ही उदास देख आनन्दसिंह ने किश्ती पर सवार होकर गंगाजी की सैर करने और दिल बहलाने के लिए जिद्द की, लाचार उनकी बात माननी ही पड़ी ।

एक छोटी सी खूबसूरत और तेज जाने वाली किश्ती पर सवार हो इन्द्रजीत-ह ने चाहा कि किसी को साथ न ले जांय सिर्फ दोनों भाई ही सवार हों और

खे कर दरिया की सैर करें। किसकी मजाल थी जो इनकी बात काटता, मगर एक पुराने खिदमतगार ने जिसने कि बीरेन्द्रसिंह को गोद में खिलाया था और अब इन दोनों के साथ रहता था ऐसा करने से रोका और जब दोनों भाइयों ने न माना तो वह खुद किश्ती पर सवार हो गया। पुराना नौकर होने के खयाल से दोनों भाई कुछ न बोले, लाचार साथ ले जाना ही पड़ा।

आनन्द०। किश्ती को धारा में ले जाकर बहाव पर छोड़ दीजिये—फिर खेकर ले आवेंगे।

इन्द्र०। अच्छी बात है।

सिर्फ दो घण्टे दिन बाकी था जब दोनों भाई किश्ती पर सवार हो दरिया की सैर करने को गए क्योंकि लौटती समय चाँदनी रात का भी आनन्द लेना मंजूर था।

चुनार से दो कोस पश्चिम गंगा के किनारे पर एक छोटा सा जंगल था। जब किश्ती उसके पास पहुँची, वंशी की और साथ ही गाने की बारीक सुरीली आवाज इन लोगों के कानों में पड़ी। संगीत एक ऐसी चीज है कि हर एक के दिल को चाहे वह कैसा ही नासमझ क्यों न हो अपनी तरफ खींच लेती है, यहाँ तक कि जानवर भी इसके वश में होकर अपने को भूल जाता है। दो तीन दिन से कुंअर इन्द्रजीतसिंह का दिल चुटीला हो रहा था, दरिया की बहार देखना तो दूर रहा इन्हें अपने तनोबदन की भी सुध न थी, ये तो अपनी प्यारी तस्वीर की धुन में सर झुकाए बैठे कुछ सोच रहे थे, इनके हिसाब चारो तरफ सन्नाटा था, मगर इस सुरीली आवाज ने इनकी गर्दन घुमा दी और उस तरफ देखने को मजबूर किया जिधर से वह आ रही थी।

किनारे की तरफ देखने से यह तो मालूम न हुआ कि वंशी बजाने या गाने वाला कौन है मगर इस बात का अन्दाज जरूर मिल गया कि वे लोग बहुत दूर नहीं हैं जिनके गाने की आवाज सुनने वालों पर जादू का सा असर कर रही है।

इन्द्र०। आहा, क्या सुरीली आवाज है!

आनन्द०। दूसरी आवाज आई। बेशक कई औरतें मिल कर गा बजा रही हैं।

इन्द्रजीत०। (किश्ती का मुंह किनारे की तरफ फेर कर) ताज्जुब है कि इन लोगों ने गाने बजाने और दिल बहलाने के लिए ऐसी जगह पसन्द की। जरा देखना चाहिए।

आनन्द०। क्या हर्ज है चलिए।

बूढ़े खिदमतगार ने किनारे किश्ती लगाने और उतरने के लिए मना किया

और बहुत समझाया मगर इन दोनों ने न माना, किश्ती किनारे लगाई और उतर कर उस तरफ चले जिधर से आवाज आ रही थी। जंगल में थोड़ी ही दूर जाकर दस पन्द्रह नौजवान औरतों का झुंड नजर पड़ा जो रंग बिरंगी पोशाक और कीमती जेवरों से अपने हुस्न को दूना किए ऊँचे पेड़ से लटकते हुए एक झूले को झुला रही थीं। कोई वंशी कोई मृदंगी वजाती, कोई हाथ से ताल दे देकर गा रहीं थी। उस हिंडोले पर सिर्फ एक ही औरत गंगा की तरफ रुख किए बैठी थी। ऐसा मालूम होता था मानों परियाँ साक्षात् किसी देवकन्या को झूला झुला और गा बजा कर इसलिए प्रसन्न कर रही हैं कि खूबसूरती बढ़ने और नौजवानी के स्थिर रहने का वरदान पावें। मगर नहीं, उनके भी दिल की दिल ही में रही और कुंअर इन्द्रजीतसिंह तथा आनन्दसिंह को आते देख हिंडोले पर बैठी हुई नाजनीन को अकेली छोड़ न जाने क्यों भाग ही जाना पड़ा।

आनन्द०। भैया, वह सब तो भाग गईं!

इन्द्र०। हाँ, मैं इस हिंडोले पास जाता हूँ, तुम देखो वे औरतें किधर गईं?

आनन्द०। बहुत अच्छा।

चाहे जो हो मगर कुंअर इन्द्रजीतसिंह ने उसे पहिचान ही लिया जो हिंडोले पर अकेली रह गई थी। भला यह क्यों न पहिचानते? जवहरी की नजर दी हुई अंगूठी पर उसकी तस्वीर देख चुके थे, उनके दिल में उसकी तस्वीर खुद गई थी, अब तो मुंहमांगी मुराद पाई, जिसके लिए अपने को मिटाना मंजूर था उसे बिना परिश्रम पाया, फिर क्या चाहिए।

आनन्दसिंह पता लगाने के लिए उन औरतों के पीछे गए मगर वे ऐसा भागीं कि झलक तक दिखाई न दी, लाचार आधे घण्टे तक हैरान होकर फिर उस हिंडोले के पास पहुँचे, हिंडोले पर बैठी हुई औरत को कौन कहे अपने भाई को भी वहाँ न पाया। घबड़ा कर इधर उधर ढूंढ़ने और पुकारने लगे, यहाँ तक कि रात हो गई और यह सोच कर किश्ती के पास पहुँचे कि शायद वहाँ चले गये हों, लेकिन वहाँ भी सिवाय उस बूढ़े खिदमतगार के किसी दूसरे को न देखा। जी बेचैन हो गया, खिदमतगार को सब हाल बता कर बोले, "जब तक अपने प्यारे भाई का पता न लगा लूंगा घर न जाऊंगा, तू जाकर यहाँ का हाल सभों को खबर कर दे।"

खिदमतगार ने हर तरह से आनन्दसिंह को समझाया और घर चलने के लिए कहा मगर कुछ फायदा न निकला। लाचार उसने किश्ती उसी जगह छोड़ी और पैदल रोता कलपता किले की तरफ रवाना हुआ क्योंकि यहाँ जो कुछ हो चुका

था उसका हाल राजा वीरेन्द्रसिंह से कहना भी उसने आवश्यक समझा।

चौथा बयान

खिदमतगार ने किले में पहुँच कर और यह सुन कर कि इस समय दोनों एक ही जगह बैठे हैं कुंअर इन्द्रजीतसिंह के गायब होने का हाल और सबब जो कुंअर आनन्दसिंह की जुबानी सुना था महाराज सुरेन्द्रसिंह और वीरेन्द्रसिंह के पास हाजिर होकर अर्ज किया। इस खबर के सुनते ही उन दोनों के कलेजे में चोट सी लगी। थोड़ी देर तक घबराहट के सबब कुछ सोच न सके कि क्या करना चाहिए। रात भी एक पहर से ज्यादे जा चुकी थी। आखिर जीतसिंह तेजसिंह और देवीसिंह को बुला कर खिदमतगार की जुबानी जो कुछ सुना था कहा और पूछा कि अब क्या करना चाहिए ?

तेजसिंह०। उस जंगल में इतनी औरतों का इकट्ठे होकर गाना बजाना और इस तरह धोखा देना वेसबब नहीं है।

सुरेन्द्र०। जब से शिवदत्त के उभरने की खबर सुनी है एक खटका सा बना रहता है, मैं समझता हूँ यह भी उसी की शैतानी है।

वीरेन्द्र०। दोनों लड़के ऐसे कमजोर तो नहीं हैं कि जिसका जी चाहे पकड़ ले।

सुरेन्द्र०। ठीक है मगर आनन्द का भी वहाँ रह जाना बुरा ही हुआ।

तेज०। बेचारा खिदमतगार जबरदस्ती साथ हो गया था नहीं तो पता भी न लगता कि दोनों कहाँ चले गये। खैर उनके बारे में जो कुछ सोचना है सोचिये मगर मुझे जल्द इजाजत दीजिये कि हजार सिपाहियों को साथ लेकर वहाँ जाऊँ और इसी वक्त उस छोटे से जंगल को चारो तरफ से घेर लूं, फिर जो कुछ होगा देखा जायगा।

सुरेन्द्र०। (जीतसिंह से) क्या राय है ?

जीत०। तेज ठीक कहता है, इसे अभी जाना चाहिए।

हुक्म पाते ही तेजसिंह दीवानखाने के ऊपर बुर्ज पर चढ़ गए जहाँ बड़ा सा नक्कारा और उसके पास ही एक भारी चोब इस लिए रक्खा हुआ था कि वक्त बेवक्त जब कोई जरूरत आ पड़े और फौज को तुरन्त तैयार करना हो तो इस नक्कारे पर चोब मारी जाय। इसकी आवाज भी निराले ढंग की थी जो किसी नक्कारे की आवाज से मिलती न थी और इसके बजाने के लिए तेजसिंह ने कई इशारे भी मुकर्रर किये हुए थे।

तेजसिंह ने चोब उठा कर जोर से एक दफे नक्कारे पर मारा जिसकी आवाज तमाम शहर में बल्कि दूर दूर तक गूंज गई। चाहे इसका सबब किसी शहर वाले की समझ में न आया हो मगर सेनापति समझ गया कि इसी वक्त हजार फौजी सिपाहियों की जरूरत है जिसका इन्तजाम उसने बहुत जल्द किया।

तेजसिंह अपने सामान से तैयार हो किले के बाहर निकले और हजार सिपाही तथा बहुत से मशालचियों को साथ ले उस छोटे से जंगल की तरफ रवाना होकर बहुत जल्दी ही वहां जा पहुँचे।

थोड़ी थोड़ी दूर पर पहरा मुकर्रर करके चारो तरफ से उस जंगल को घेर लिया। इन्द्रजीतसिंह तो गायब हो ही चुके थे, आनन्दसिंह के मिलने की बहुत तर्कीब की गई मगर उनका भी पता न लगा। तरद्दुद में रात बिताई, सवेरा होते ही तेजसिंह ने हुक्म दिया कि एक तरफ से इस जंगल को तेजी के साथ काटना शुरू करो जिसमें दिन भर में तमाम जंगल साफ हो जाय।

इसी समय महाराज सुरेन्द्रसिंह और जीतसिंह भी वहां आ पहुँचे। जंगल का काटना इन्होंने भी पसन्द किया और बोले कि 'बहुत अच्छा होगा अगर हम लोग इस जंगल से एकदम ही निश्चिन्त हो जायें'।

इस छोटे जंगल को काटते देर ही कितनी लगनी थी, तिस पर महाराज की मुस्तैदी के सबब यहां कोई भी ऐसा नजर नहीं आता था जो पेड़ों की कटाई में न लगा हो। दोपहर होते होते जंगल कट के साफ हो गया मगर किसी का कुछ पता न लगा यहां तक कि इन्द्रजीसिंह की तरह आनन्दतसिंह के भी गायब हो जाने का निश्चय करना पड़ा। हां, इस जंगल के अन्त में एक कमसिन नौजवान हसीन और वेशकीमत गहने कपड़े से सजी हुई औरत की लाश पाई गई जिसके सिर का पता न था।

यह लाश महाराज सुरेन्द्रसिंह के पास लाई गई। अब सभों की परेशानी और बढ़ गई और तरह तरह के ख्याल पैदा होने लगे। लाचार उस लाश को साथ ले शहर की तरफ लौटे। जीतसिंह ने कहा, "हम लोग जाते हैं, तारासिंह को भेज सब ऐयारों को जो शिवदत्त की फिक्र में गए हुए हैं बुलवा कर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह की तलाश में भेजेंगे, मगर तुम इसी वक्त उनकी खोज में जहां तुम्हारा दिल गवाही दे जाओ।"

तेजसिंह अपने सामान से तैयार ही थे, उसी वक्त सलाम कर एक तरफ को रवाना हो गए, और महाराज रूमाल से आंखों को पोछते हुए चुनार की तरफ विदा हुए।

उदास और पोतों की जुदाई से दुःखी महाराज सुरेन्द्रसिंह घर पहुँचे। दोनों लड़कों के गायब होने का हाल चन्द्रकान्ता ने भी सुना। वह बेचारी दुनिया के दुःख सुख को अच्छी तरह समझ चुकी थी इसलिए कलेजा मसोस कर रह गई, जाहिर में रोना चिल्लाना उसने पसन्द न किया, मगर ऐसा करने से उसके नाजुक दिल पर और भी सदमा पहुँचा, घड़ी भर में ही उसकी सूरत वदल गई। चपला और चंम्पा को चन्द्रकान्ता से कितनी मुहब्बत थी इसको आप लोग खूब जानते हैं लिखने की कोई जरूरत नहीं, दोनों लड़कों के गायब होने का गम इन दोनों को चन्द्रकान्ता से ज्यादे हुआ और दोनों ने निश्चय कर लिया कि मौका पाकर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह का पता लगाने की कोशिश करेंगी।

महाराज सुरेन्द्रसिंह के आने की खबर पाकर वीरेन्द्रसिंह मिलने के लिए उनके पास गए। देवीसिंह भी वहां मौजूद थे। बीरेन्द्रसिंह के सामने ही महाराज ने सब हाल देवीसिंह से कह कर पूछा कि 'अब क्या करना चाहिये' ?

देवी०। मैं पहिले उस लाश को देखना चाहता हूँ जो उस जंगलमें पाई गई थी।

सुरेन्द्र०। हां तुम उसे जरूर देखो।

जीत०। (चोवदार से) उस लाश को जो जंगल में पाई गई थी इसी जगह लाने के लिए कहो।

"बहुत अच्छा" कह कर चोवदार बाहर चला गया मगर थोड़ी ही देर में वापस आकर बोला, "महाराज के साथ आते आते न मालूम वह लाश कहां गुम हो गई। कई आदमी उसकी खोज में परेशान हैं मगर पता नहीं लगता !"

वीरेन्द्र०। अब फिर हम लोगों को होशियारी से रहने का जमाना आ गया। जब हजारों आदमियों के बीच से लाश गुम हो गई तो मालूम होता है अभी बहुत कुछ उपद्रव होने वाला है।

जीत०। मैंने तो समझा था कि अब जो कुछ थोड़ी सी उम्र रह गई है आराम से कटेगी मगर नहीं, ऐसी उम्मीद किसी को कुछ भी न रखनी चाहिए।

सुरेन्द्र०। खैर जो होगा देखा जायगा, इस समय क्या करना मुनासिब है इसे सोचो।

जीत०। मेरा विचार था कि तारासिंह को बद्रीनाथ वगैरह के पास भेजवै जिसमें वे लोग भैरोसिंह को छुड़ा कर और किसी कार्रवाई में न फंसें और सीधे यहां चले आवें, मगर ऐसा करने को भी जी नहीं चाहता। आज भर आप और सब्र करें, अच्छी तरह सोच कर कल मैं अपनी राय दूंगा।

पाचवां बयान

पण्डित बद्रीनाथ पन्नालाल रामनारायण चुन्नीलाल और जगन्नाथ ज्योतिषी भैरोसिंह ऐयार को छुड़ाने के लिए शिवदत्तगढ़ की तरफ गए। हुक्म के मुताबिक कंचनसिंह सेनापति ने शेर वाले बाबाजी के पीछे जासूस भेज कर पता लगा लिया था कि भैरोसिंह ऐयार शिवदत्तगढ़ किले के अन्दर पहुँचाए गए हैं, इसलिए इन ऐयारों को पता लगाने की जरूरत न पड़ी, सीधे शिवदत्तगढ़ पहुँचे और अपनी अपनी सूरत बदल कर शहर में घूमने लगे, पांचों ने एक दूसरे का साथ छोड़ दिया मगर यह ठीक कर लिया था कि सब लोग घूम फिर कर फलानी जगह इकट्ठे हो जायेंगे।

दिन भर घूम फिर कर भैरोसिंह का पता लगाने बाद कुल ऐयार शहर के बाहर एक पहाड़ी पर इकट्ठे हुए और रात भर सलाह करके राय कायम करने में काटी, दूसरे दिन ये लोग फिर सूरत बदल बदल कर शिवदत्तगढ़ में पहुँचे। रामनारायण और चुन्नीलाल ने अपनी सूरत उसी जगह के चोबदारों की सी बनाई और वहां पहुँचे जहां भैरोसिंह कैद थे। कई दिनों तक कैद रहने के सबब उन्होंने अपने को जाहिर कर दिया था और असली सूरत में एक कोठरी के अन्दर जिसके तीन तरफ लोहे का जंगला लगा हुआ था बन्द थे। उसी कोठरी के बगल में उसी तरह की कोठरी और थी जिसमें गद्दी लगाए बूढ़ा दारोगा बैठा और कई सिपाही नंगी तलवार लिए घूम घूम कर पहरा दे रहे थे। रामनारायण और चुन्नीलाल उस कोठरी के दर्वाजे पर जाकर खड़े हुए और बूढ़े दारोगा से बातचीत करने लगे।

राम०। आपको महाराज ने याद किया है।

बूढ़ा०। क्यों क्या काम है? भीतर आओ, बैठो चलते हैं।

रामनारायण और चुन्नीलाल कोठरी के अन्दर गए और बोले—

राम०। मालूम नहीं क्यों बुलाया है मगर ताकीद की है कि जल्द बुला लाओ।

बूढ़ा०। अभी घंटे भर भी नहीं हुआ जब किसी ने आके कहा था कि महाराज खुद आने वाले हैं, क्या वह बात झूठ थी?

राम०। हां महाराज आने वाले थे मगर अब न आवेंगे।

बूढ़ा०। अच्छा आप दोनों आदमी इसी जगह बैठें और कैदी की हिफाजत करें मैं जाता हूँ।

राम० । बहुत अच्छा ।

रामनारायण और चुन्नीलाल को कोठरी के अन्दर बैठा कर बूढ़ा दारोगा बाहर आया और चालाकी से झट उस कोठरी का दर्वाजा बन्द करके बाहर से बोला, "बन्दगी ! मैं दोनों को पहिचान गया कि ऐयार हौ ! कहिये अब हमारे कैद में आप फंसे या नहीं ? मैंने भी क्या मजे में पता लगा लिया । पूछा कि अभी तो मालूम हुआ था कि महाराज खुद आने वाले हैं, आपने भी झट कबूल कर लिया और कहा कि 'हां आने वाले थे मगर अब न आवेंगे ।' यह न समझें कि मैं धोखा देता हूँ । इसी अक्ल पर ऐयारी करते हौ ? खैर आप लोग भी अब इसी कैदखाने की हवा खाइये और जान लीजिए कि मैं बाकरअली ऐयार आप लोगों को मजा चखाने के लिए इस जगह बैठाया गया हूँ ।"

बूढ़े की बात सुन रामनारायण और चुन्नीलाल चुप हो गए बल्कि शर्मा कर सिर नीचा कर लिया । बूढ़ा दारोगा वहां से रवाना हुआ और शिवदत्त के पास पहुँच इन दोनों ऐयारों के गिरफ्तार करने का हाल कहा । महाराज ने खुश होकर बाकरअली को इनाम दिया और खुशी खुशी खुद रामनारायण और चुन्नीलाल को देखने आये ।

बद्रीनाथ पन्नालाल और ज्योतिषीजी को भी मालूम हो गया कि हमारे साथियों में से दो ऐयार पकड़े गए । अब तो एक की जगह तीन आदमियों के छुड़ाने की फिक्र करनी पड़ी ।

कुछ रात गए ये तीनों ऐयार घूम फिर कर शहर के बाहर की तरफ जा रहे थे कि पीछे से एक आदमी काले कपड़े से अपना तमाम बदन छिपाये लपकता हुआ उनके पास आया और लपेटा हुआ एक छोटा सा कागज उनके सामने फेंक और अपने साथ आने के लिये हाथ से इशारा करके तेजी से आगे बढ़ा ।

बद्रीनाथ ने उस पुर्जे को उठा कर सड़क के किनारे एक बनिये की दूकान पर जलते हुए चिराग की रोशनी में पढ़ा, सिर्फ इतना ही लिखा था—"भैरोसिंह" । बद्रीनाथ समझ गए कि भैरोसिंह किसी तरकीब से निकल भागा है और यही जा रहा है । बद्रीनाथ ने भैरोसिंह के हाथ का लिखा भी पहिचाना ।

भैरोसिंह पुर्जा फेंक कर इन तीनों को हाथ के इशारे से बुला गया था और दस बारह कदम आगे बढ़ कर अब इन लोगों के आने की राह देख रहा था ।

बद्रीनाथ वगैरह खुश हो कर आगे बढ़े और उस जगह पहुँचे जहां भैरोसिंह काले कपड़े से बदन को छिपाये सड़क के किनारे आड़ देख कर खड़ा था । बात-

चीत करने का मौका न था, आगे आगे भैरोसिंह और पीछे पीछे बद्रीनाथ पन्नालाल और ज्योतिषीजी तेजी से कदम बढ़ाते शहर के बाहर हो गये।

रात अंधेरी थी। मैदान में जाकर भैरोसिंह ने काला कपड़ा उतार दिया। इन तीनों ने चन्द्रमा की रोशनी में भैरोसिंह को पहिचाना—खुश होकर बारी बारी से तीनों ने उसे गले लगाया और तब एक पत्थर की चट्टान पर बैठ कर बातचीत करने लगे।

बद्री०। भैरोसिंह, इस वक्त तुम्हें देख कर तबीयत बहुत ही खुश हुई!

भैरो०। मैं तो किसी तरह छूट आया मगर रामनारायण और चुन्नीलाल बेढब जा फंसे हैं।

ज्योतिषी०। उन दोनों ने भी क्या ही धोखा खाया!

भैरो०। मैं उनके छुड़ाने की भी फिक्र कर रहा हूँ।

पन्ना०। वह क्या?

भैरो०। सो सब कहने सुनने का मौका तो रात भर है मगर इस समय मुझे भूख बड़े जोर से लगी है, कुछ हो तो खिलाओ।

बद्री०। दो चार पेड़े हैं, जी चाहे तो खा लो।

भैरो०। इन दो चार पेड़ों से क्या होगा? खैर पानी का तो बन्दोबस्त होना चाहिये।

बद्री०। फिर क्या करना चाहिये!

भैरो०। (हाथ से इशारा करके) यह देखो शहर के किनारे जो चिराग जल रहा है अभी देखते आये हैं कि वह हलवाई की दूकान है और वह ताजी पूरियां बना रहा है, बल्कि पानी भी उसी हलवाई से मिल जायगा।

पन्ना०। अच्छा मैं जाता हूँ।

भैरो०। हम लोग भी साथ चलते हैं, सभों का इकट्ठा ही रहना ठीक है, कहीं ऐसा न हो कि आप फंस जांय और हमलोग राह ही देखते रहें।

पन्ना०। फंसना क्या खिलवाड़ हो गया!

भैरो०। खैर हर्ज ही क्या है अगर हम लोग साथ ही चलें? तीन आदमी किनारे खड़े हो जांयगे, एक आदमी आगे बढ़ कर सौदा ले लेगा।

बद्री०। हां हां यही ठीक होगा, चलो हमलोग एक साथ चलें।

चारो ऐयार एक साथ वहां से रवाना हुए और उस हलवाई के पास पहुँचे जिसकी अकेली दूकान शहर के किनारे पर थी। बद्रीनाथ ज्योतिषीजी और भैरो-

सिंह कुछ इधर ही खड़े रहे और पन्नालाल सौदा खरीदने दूकान पर गये। जाने के पहिले ही भैरोसिंह ने कहा, "मिट्टी के बर्तन में पानी भी देने का एकरार हलवाई से पहिले कर लेना नहीं तो पीछे हुज्जत करेगा।"

पन्नालाल हलवाई की दूकान पर गए और दो सेर पूरी तथा सेर भर मिठाई मांगी। हलवाई ने खुद पूछा कि 'पानी भी चाहिए या नहीं' ?

पन्ना०। हां हां पानी जरूर देना होगा।

हल०। कोई वर्तन है ?

पन्ना०। वर्तन तो है मगर छोटा है, तुम्हीं किसी मिट्टी के ठलिए में जल दे दो।

हल०। एक घड़ा जल के लिए आठ आने और देने पड़ेंगे।

पन्ना०। इतना अन्धेर—खैर हम देंगे।

पूरी मिठाई और एक घड़ा जल लेकर चारो ऐयार वहां से चले, मगर यह खबर किसी को भी न थी कि कुछ दूर पीछे दो आदमी साथ लिये छिपता हुआ हलवाई भी आ रहा है। मैदान में एक बड़े पत्थर की चट्टान पर बैठ चारो ने भोजन किया जल पिया और हाथ मुंह धो निश्चिन्त हो धीरे धीरे आपुस में बातचीत करने लगे। आधा घण्टा भी न वीता होगा कि चारो बेहोश होकर चट्टान पर लेट गये और दोनों आदमियों को साथ लिये हलवाई इनकी खोपड़ी पर आ मौजूद हुआ।

हलवाई के साथ आये दोनों आदमियों ने बद्रीनाथ ज्योतिषीजी और पन्नालाल की मुश्कें कस डालीं और कुछ सुंघा भैरोसिंह को होश में लाकर बोले, "वाह जी अजायबसिंह—आपकी चालाकी तो खूब काम कर गई ! अब तो शिवदत्तगढ़ में आए हुए पांचों नालायक हमारे हाथ फंसे ! महाराज से सबसे ज्यादे इनाम पाने का काम तो आप ही ने किया !!"

छठवां बयान

बहुत सी तकलीफें उठा कर महाराज सुरेन्द्रसिंह और बीरेन्द्रसिंह तथा इन्हीं के बदौलत चन्द्रकान्ता चपला चम्पा तेजसिंह और देवीसिंह वगैरह ने थोड़े दिन खूब सुख लूटा मगर अब वह जमाना न रहा। सच है, सुख और दुख का पहरा बराबर बदलता रहता है। खुशी के दिन बात की बात में निकल गये कुछ मालूम न पड़ा, यहां तक कि मुझे भी कोई बात उन लोगों की लिखने लायक न मिली, लेकिन अब उन लोगों को मुसीबत की घड़ी काटे नहीं कटती। कौन जानता था कि गया गुजरा शिवदत्त फिर बला की तरह निकल आवेगा ? किसे खबर थी कि

बेचारी चन्द्रकान्ता की गोद से पले पलाए दोनों होनहार लड़के यों अलग कर दिए जाएंगे ? कौन साफ कह सकता था कि इन लोगों की वंशावली और राज्य में जितनी तरक्की होगी, यकायक उतनी ही ज्यादे आफतें आ पड़ेंगी ? खैर खुशी के दिन तो उन्होंने काटे, अब मुसीबत की घड़ी कौन झेले ? हां बेचारे जगन्नाथ ज्योतिषी ने इतना जरूर कह दिया था कि वीरेन्द्रसिंह के राज्य और वंश की बहुत कुछ तरक्की होगी, मगर मुसीबत को लिए हुए। खैर आगे जो कुछ होगा देखा जाएगा पर इस समय तो सबके सब तरद्दुद में पड़े हैं। देखिए अपने एकान्त के कमरेमें महाराज सुरेन्द्रसिंह कैसी चिन्तामें बैठे हैं और बाईं तरफ गद्दी का कोना दबाए राजा बीरेन्द्रसिंह अपने सामने बैठे हुए जीतसिंह की सूरत किस बेचैनी से देख रहे हैं। दोनों बाप बेटा अर्थात् देवीसिंह और तारासिंह अपने पास ऊपर के दर्जे पर बैठे हुए बुजुर्ग और गुरु के समान जीतसिंह की तरफ झुके हुए इस उम्मीद में बैठे हैं कि देखें अब आखिरी हुक्म क्या होता है। सिवाय इन लोगों के इस कमरे में और कोई भी नहीं है, एकदम सन्नाटा छाया हुआ है। न मालूम इसके पहिले क्या क्या बातें हो चुकी हैं मगर इस वक्त तो महाराज सुरेन्द्रसिंह ने इस सन्नाटे को सिर्फ इतना ही कह के तोड़ा, "खैर चम्पा और चपला की भी बात मान लेनी चाहिए।"

जीत०। जो मर्जी, मगर देवीसिंह के लिए क्या हुक्म होता है ?

सुरेन्द्र०। और तो कुछ नहीं सिर्फ इतना ही खयाल है कि चुनार की हिफाजत ऐसे वक्त क्योंकर होगी ?

जीत०। मैं समझता हूं कि यहाँ की हिफाजत के लिए तारा बहुत है और फिर वक्त पड़ने पर इस बुढ़ौती में भी मैं कुछ कर गुजरूंगा।

सुरेन्द्र०। (कुछ मुस्कुरा कर और उम्मीद भरी निगाहों से जीतसिंह की तरफ देख कर) खैर, जो मुनासिब समझो।

जीत०। (देवीसिंह से) लीजिए साहब, अब आपको भी पुरानी कसर निकालने का मौका दिया जाता है, देखें आप क्या करते हैं। ईश्वर इस मुस्तैदी को पूरा करें।

इतना सुनते ही देवीसिंह उठ खड़े हुए और सलाम कर कमरेके बाहर चले गए।

सातवां बयान

अपने भाई इन्द्रजीतसिंह की जुदाई से व्याकुल हो उसी समय आनन्दसिंह उस जंगल के बाहर हुए और मैदान में खड़े हो इधर उधर निगाह दौड़ाने लगे।

पश्चिम तरफ दो औरतें घोड़ों पर सवार धीरे धीरे जाती हुई दिखाई पड़ीं। ये तेजी के साथ उस तरफ बढ़े और उन दोनों के पास पहुँचने की उम्मीद में दो कोस तक पीछा किए चले गये मगर उम्मीद पूरी न हुई क्योंकि पहाड़ी के नीचे पहुँच कर वे दोनों रुकीं और अपने पीछे आते हुए आनन्दसिंह की तरफ देख घोड़ों को एक दम तेज कर पहाड़ी के बगल से घुमाती हुई गायब हो गईं।

खूब खिली हुई चाँदनी रात होने के सबब से आनन्दसिंह को ये दोनों औरतें दिखाई पड़ीं और इन्होंने इतनी हिम्मत भी की, पर पहाड़ी के पास पहुँचते ही उन दोनों के भाग जाने से इनको बड़ा ही रंज हुआ। खड़े होकर सोचने लगे कि अब क्या करना चाहिए। इनको हैरान और सोचते हुए छोड़ कर निर्दयी चन्द्रमा ने भी धीरे धीरे अपने घर का रास्ता लिया और अपने दुश्मन को जाते देख मौका पाकर अंधेरे ने चारो तरफ हुकूमत जमाई। आनन्दसिंह और भी दुखी हुए। क्या करें? कहां जायें? किससे पूछें कि इन्द्रजीतसिंह को कौन ले गया?

दूर से एक रोशनी दिखाई पड़ी। गौर करने से मालूम हुआ कि किसी झोपड़ी के आगे आग जल रही है। आनन्दसिंह उसी तरफ चले और थोड़ी ही देर में कुटी के पास पहुँच कर देखा कि पत्तों की बनाई हुई हरी झोपड़ी के आगे आठ दस आदमी जमीन पर फर्श बिछाये बैठे हैं जो कि दाढ़ी और पहिरावे से साफ मुसलमान मालूम पड़ते हैं। बीच में दो मोमी शमादान जल रहे हैं। एक आदमी फारसी के शेर पढ़ कर सुना रहा है, और वाकी सब 'वाह वाह' की धुन लड़ा रहे हैं। एक तरफ आग जल रही है और दो तीन आदमी कुछ खाने की चीजें पका रहे हैं। आनन्दसिंह फर्श के पास जाकर खड़े हो गए।

आनन्दसिंह को देखते ही सब के सब उठ खड़े हुए और बड़ी इज्जत से उनको फर्श पर बैठाया। उस आदमी ने जो फारसी के शेर पढ़ पढ़ कर सुना रहा था खड़े हो अपने रंगीली भाषा में कहा, "खुदा का शुक्र है कि शाहजादये चुनार ने इस मजलिस में पहुँच कर हम लोगों की इज्जत को फल्के हफ्तुम* तक पहुँचाया। इस जंगल वियाबान में हमलोग क्या खातिर कर सकते हैं सिवाय इसके कि इनके कदमों को अपनी आंखों पर जगह दें और इत्र व इलायची पेशकश करें!!"

केवल इतना ही कह कर इत्रदान और इलायची की डिब्बी उनके आगे ले गया। पढ़े लिखे भले आदमियों की खातिर जरूरी समझ कर आनन्दसिंह ने इत्र

---

* मुसलमानों की किताबों में सात दर्जे आसमान के लिखे हैं, सबसे ऊपर वाले दर्जे का नाम फल्के हफ्तुम है।

सूंघा और इलायची ले लिया, इसके बाद इनसे इजाजत लेकर वह फिर फारसी कविता पढ़ने लगा। दूसरे आदमियों ने दो एक तकिए इनके अगल बगल में रख दिए।

इत्र की विचित्र खुशबू नें इनको मस्त कर दिया, इनकी पलकें भारी हो गईं और बेहोशी ने धीरे धीरे अपना असर जमा कर इनको फर्श पर सुला दिया। दूसरे दिन दोपहर को आँख खुलने पर इन्होंने अपने को एक दूसरे ही मकान में मसहरी पर पड़े हुए पाया। घबड़ा कर उठ बैठे और इधर उधर देखने लगे।

पाँच कमसिन और खूबसूरत औरतें सामने खड़ी हुई दिखाई दीं जिनमें से एक सर्दारी की तरह पर कुछ आगे बढ़ी हुई थी। उसके हुस्न और अदा को देख आनन्दसिंह दंग हो गये। उसकी बड़ी बड़ी आंखों और बांकी चितवन ने उन्हें आपे से बाहर कर दिया, उसकी जरा सी हंसी ने इनके दिल पर बिजली गिराई, और आगे बढ़ हाथ जोड़ इस कहने ने तो और भी सितम ढाया कि—'क्या आप मुझसे खफा हैं' ?

आनन्दसिंह भाई की जुदाई, रात की बात, ऐयारों के धोखे में पड़ना, सब कुछ बिल्कुल भूल गए और उसकी मुहब्बत में चूर हो बोले—"तुम्हारी सी परीजमाल से और रंज !!"

वह औरत पलंग पर बैठ गई और आनन्दसिंह के गले में हाथ डाल के बोली, "खुदा की कसम खाकर कहती हूँ कि साल भर से आपके इश्क ने मुझे बेकार कर दिया ? सिवाय आपके ध्यान के खाने पीने की बिल्कुल सुध न रही, मगर मौका न मिलने से लाचार थी।"

आनन्द०। (चौंक कर) हैं ! क्या तुम मुसल्मान हो जो खुदा की कसम खाती हो ?

औरत०। (हंस कर) हां, क्या मुसल्मान बुरे होते हैं ?

आनन्दसिंह यह कह कर उठ खड़े हुए—"अफसोस अगर तुम मुसल्मान न होतीं तो मैं तुम्हें जी जान से प्यार करता, मगर एक औरत के लिए अपना मजहब नहीं बिगाड़ सकता।

औरत०। (हाथ थाम कर) देखो बेमुरौवती मत करो ! मैं सच कहती हूँ कि अब तुम्हारी जुदाई मुझसे न सही जायगी !!

आनन्द०। मैं भी सच कहता हूँ कि मुझसे किसी तरह की उम्मीद मत रखना।

औरत०। (भौं सिकोड़ कर) क्या यह बात दिल से कहते हो ?

आनन्द०। हाँ, बल्कि कसम खाकर !

औरत०। पछताओगे और मुझ सी चाहने वाली कभी न पाओगे।

आनन्द० । (अपना हाथ छुड़ा कर) लानत है ऐसी चाह पर !

औरत० । तो तुम यहाँ से चले जाओगे ?

आनन्द० । जरूर !

औरत० । मुमकिन नहीं ।

आनन्द० । क्या मजाल कि तुम मुझको रोको !

औरत० । ऐसा ख्याल भी न करना ।

"देखें मुझे कौन रोकता है !" कह कर आनन्दसिंह उस कमरे के बाहर हुए और उसी कमरे की एक खिड़की जो दीवार में लगी हुई थी खोल वे औरतें वहाँ से निकल गईं ।

आनन्दसिंह इस उम्मीद में चारो तरफ घूमने लगे कि कहीं रास्ता मिले तो बाहर हो जांय मगर उनकी उम्मीद किसी तरह पूरी न हुई ।

यह मकान बहुत लम्बा चौड़ा न था । सिवाय इस कमरे और एक सहन के और कोई जगह इसमें न थी । चारो तरफ ऊंची ऊंची दीवारों के सिवाय बाहर जाने के लिए कहीं कोई दर्वाजा न था । हर तरह से लाचार और दुःखी हो फिर उसी पलंग पर आ लेटे और सोचने लगे—

"अब क्या करना चाहिए ! इस कम्बख्त से किस तरह जाने बचे ? यह तो हो ही नहीं सकता कि मैं इसे चाहूँ या प्यार करूं । राम राम, मुसलमानिन से और इश्क! यह तो सपने में भी नहीं होने का । तब फिर क्या करूं ? लाचारी है, जब किसी तरह छुट्टी न देखूंगा तो इस खञ्जर से जो मेरी कमर में है अपनी जान दे दूंगा ।"

कमर से खञ्जर निकालना चाहा, देखा तो कमर खाली है । फिर सोचने लगे—

"गजब हो गया, इस हरामजादी ने तो मुझे किसी लायक न रक्खा । अगर कोई दुश्मन आ जाय तो मैं क्या कर सकूंगा ? बेहया अगर मेरे पास आवे तो गला दबा कर मार डालूं । नहीं नहीं वीर पुत्र होकर स्त्री पर हाथ उठाना ! यह मुझसे न होगा, तब क्या भूखे प्यासे जान दे देना पड़ेगा ? मुसलमानिन के घर में अन्न जल कैसे ग्रहण करूंगा ! हाँ ठीक है, एक सूरत निकल सकती है । (दीवार की तरफ देख कर) इसी खिड़की से वे लोग बाहर निकल गई हैं । अबकी अगर यह खिड़की खुले और वह कमरे में आवे तो मैं जबर्दस्ती इसी राह से बाहर हो जाऊंगा ।"

भूखे प्यासे दिन बीत गया, अंधेरा हुआ चाहता था कि वही छोटी सी खिड़की खुली और चारो औरतों को साथ लिए वह पिशाची आ मौजूद हुई । एक औरत हाथ में रोशनी दूसरी पानी तीसरी तरह तरह की मिठाइयों से भरा चांदी का

थाल उठाए हुए और चौथी पान का जड़ाऊ डब्बा लिए साथ मौजूद थी।

आनन्दसिंह पलंग से उठ खड़े हुए और बाहर निकल जाने की उम्मीद में उस खिड़की के अन्दर घुसे। उन औरतों ने इन्हें बिल्कुल न रोका क्योंकि वे जानती थीं कि सिर्फ इस खिड़की ही के पार चले जाने से उनका काम न चलेगा।

खिड़की के पार तो हो गए मगर आगे अंधेरा था। इस छोटी सी कोठरी में चारो तरफ घूमे मगर रास्ता न मिला, हां एक तरफ बन्द दर्वाजा मालूम हुआ जो किसी तरह खुल न सकता था, लाचार फिर उसी कमरे में लौट आए।

उस औरत ने हंस कर कहा, "मैं पहिले ही कह चुकी हूँ कि आप मुझसे अलग नहीं हो सकते। खुदा ने मेरे ही लिए आपको पैदा किया है। अफसोस कि आप मेरी तरफ खयाल नहीं करते और मुफ्त में अपनी जान गंवाते हैं! बैठिए, खाइए पीजिए आनन्द कीजिए, किस सोच में पड़े हैं!"

आनन्द०। मैं तेरा छुआ खाऊं?

औरत०। क्यों हर्ज क्या है? खुदा सबका है, उसी ने हमको भी पैदा किया आपको भी पैदा किया, जब एक ही बाप के सब लड़के हैं तो आपुस में छूत कैसी!

आनन्द०। (चिढ़ कर) खुदा ने हाथी भी पैदा किया, गदहा भी पैदा किया, कुत्ता भी पैदा किया, सूअर भी पैदा किया, मुर्गा भी पैदा किया—जब एक ही बाप के सब लड़के हैं तो परहेज काहे का!

औरत०। खैर खुशी आपकी, न मानिएगा पछताइयेगा अफ़सोस कीजिएगा और आखिर झक मार कर फ़िर वही कीजिएगा जो मैं कहती हूँ। भूखे प्यासे जान देना मुश्किल बात है—लो मैं जाती हूँ।

खाने पीने का सामान और रोशनी वहीं छोड़ चारो लौंडियें उस खिड़की के अन्दर घुस गईं। आनन्दसिंह ने चाहा कि जब यह शैतान खिड़की के अन्दर जाय तो मैं भी जबर्दस्ती साथ हो लूं—या तो पार ही हो जाऊंगा या इसे भी न जाने दूंगा, मगर उनका यह ढंग भी न लगा।

वह मदमाती औरत खिड़की में अन्दर की तरफ पैर लटका कर बैठ गई और इनसे बात करने लगी।

औरत०। अच्छा आप मुझसे शादी न करें इसी तरह मुहब्बत रक्खें।

आनन्द०। कभी नहीं, चाहे जो हो!

औरत०। (हाथ का इशारा करके) अच्छा उस औरत से शादी करेंगे जो आपके पीछे खड़ी है? वह तो हिन्दुआनी है!

"मेरे पीछे दूसरी औरत कहाँ से आई !" ताज्जुब से पीछे फिर आनन्दसिंह ने देखा। उस नालायक को मौका मिला, खिड़की के अन्दर हो झट किवाड़ बन्द कर दिया।

आनन्दसिंह पूरा धोखा खा गए, हर तरह से हिम्मत टूट गई—लाचार फिर उसी पलंग पर लेट गये। भूख से आंखें निकली आती थीं, खाने पीने का सामान मौजूद था मगर वह जहर से भी कई दर्जे बढ़ के था, दिल में समझ लिया कि अब जान गई। कभी उठते, कभी बैठते, कभी दालान के बाहर निकल कर टहलते, आधी रात जाते जाते भूख की कमजोरी ने उन्हें चलने फिरने लायक न रक्खा, फिर पलंग पर आकर लेट गये और ईश्वर को याद करने लगे।

यकायक बाहर धम्माके की आवाज आई, जैसे कोई कमरे की छत पर से कूदा हो। आनन्दसिंह उठ बैठे और दर्वाजे की तरफ देखने लगे।

सामने से एक आदमी आता हुआ दिखाई पड़ा जिसकी उम्र लगभग चालीस वर्ष की होगी। सिपाहियानी पोशाक पहिरे, ललाट में त्रिपुण्ड लगाये, कमर में नीमचा खञ्जर और ऊपर से कमन्द लपेटे, बगल में मुसाफिरी का झोला, हाथ में दूध से भरा लोटा लिए आनन्दसिंह के सामने आ खड़ा हुआ और बोला—

"अफसोस, आप राजकुमार होकर वह काम करना चाहते हैं जो ऐयारों जासूसों या अदने सिपाहियों के करने लायक हो ! नतीजा यह निकला कि इस चाण्डालिन के यहां फंसना पड़ा। इस मकान में आए आपको कै दिन हुए ! घबराइये मत, मैं आपका दोस्त हूँ दुश्मन नहीं !

इस सिपाही को देख आनन्दसिंह ताज्जुब में आ गए और सोचने लगे कि यह कौन है जो ऐसे वक्त में मेरी मदद को पहुँचा ! खैर जो भी हो बेशक यह हमारा खैरख्वाह है बदख्वाह नहीं।

आनन्द०। जहां तक खयाल करता हूँ यहां आये दूसरा दिन है।

सिपाही०। कुछ अन्न जल तो न किया होगा !

आनन्द०। कुछ नहीं।

सिपाही०। हाय राजा वीरेन्द्रसिंह के प्यारे लड़के की यह दशा !! लीजिए मैं आपको खाने पीने के लिए देता हूँ !

आनन्द०। पहिले मुझे मालूम होना चाहिए कि आपकी जाति उत्तम है और मुझे धोखा देकर अधर्मी करने की नीयत नहीं है।

सिपाही०। (दांत के नीचे जुबान दबा कर) राम राम, ऐसा स्वप्न में भी

खयाल न कीजिएगा कि मैं धोखा देकर आपको अजाति करूंगा। मैंने पहिले ही सोचा था कि आप शक करेंगे इसीलिये ऐसी चीजें लाया हूँ जिनके खाने पीने में आप उज्र न करें। पलंग पर से उठिए बाहर आइए।

आनन्दसिंह उसके साथ बाहर गए। सिपाही ने लोटा जमीन पर रख दिया और झोले में से कुछ मेवा निकाल उनके हाथ में देकर बोला, "लीजिए इसे खाइए और (लोटे की तरफ इशारा करके) यह दूध है पीजिए।"

आनन्दसिंह की जान में जान आ गई, प्यास और भूख से दम निकला जाता था, ऐसे समय में थोड़े मेवे और दूध का मिल जाना क्या थोड़ी खुशी की बात है ? मेवा खाया, दूध पीया, जी ठिकाने हुआ, इसके बाद उस सिपाही को धन्यवाद देकर बोले, अब मुझे किसी तरह इस मकान के बाहर कीजिए।"

सिपाही०। मैं आपको इस मकान के बाहर ले चलूंगा मगर इसकी मजदूरी भी तो मुझे मिलनी चाहिए।

आनन्द०। जो कहि दूंगा।

सिपाही०। आपके पास क्या है जो मुझे देंगे ?

आनन्द०। इस वक्त भी हजारों रुपये का माल मेरे बदन पर है।

सिपाही०। मैं यह सब कुछ नहीं चाहता।

आनन्द०। फिर।

सिपाही०। उसी कम्बख्त के बदन पर जो कुछ जेवर हैं मुझे दीजिए और एक हजार अशर्फी।

आनन्द०। यह कैसे हो सकेगा ? वह तो यहां मौजूद नहीं है और हजार अशर्फी भी कहां से आवे ?

सिपाही०। उसी से लेकर दीजिए।

आनन्द०। क्या वह मेरे कहने से देगी ?

सिपाही०। (हंस कर) वह तो आपके लिए जान देने को तैयार है, इतनी रकम की क्या बिसात है।

आनन्द०। तो क्या आज मुझे यहां से न छुड़ावेंगे !

सिपाही०। नहीं, मगर आप कोई चिन्ता न करें, आपका कोई कुछ बिगाड़ नहीं सकता, कल जब वह रांड़ आवे तो उससे कहिए कि तुमसे मुहब्बत तब करूंगा जब अपने बदन का कुल जेवर और एक हजार अशर्फी यहां रख दो, उसके दूसरे दिन आओ तो जो कहोगी मैं मानूंगा। वह तुरत अशर्फी मंगा देगी और कुल जेवर

भी उतार देगी। नालायक बड़ी मालदार है, उसे कम न समझिये।

आनन्द०। खैर जो कहोगे करूंगा।

सिपाही०। जब तक आप यह न करेंगे मैं आपको इस कैद से न छुड़ाऊंगा। आप यह न सोचिये कि उसे धोखा देकर या जबर्दस्ती उस राह से चले जांयगे जिधर से वह आती जाती है। यह कभी नहीं हो सकेगा, उसके आने जाने के लिए कई रास्ते हैं।

आनन्द०। अगर वह तीन चार दिन न आवे तब ?

सिपाही०। क्या हर्ज है, मैं आपकी बराबर ही सुध लेता रहूँगा और खाने पीने को पहुँचाया करूंगा।

आनन्द०। अच्छा ऐसा ही सही।

वह सिपाही कमन्द लगा कर छत पर चढ़ा और दीवार फांद मकान के बाहर हो गया।

थोड़ी रात बच गई थी जो आनन्दसिंह ने इसी सोच विचार में काटी कि यह कौन है जो ऐसे वक्त में मेरी मदद को पहुँचा। इसे लालच बहुत है, कोई ऐयार मालूम पड़ता है। ऐयारों का जितना ज्यादे खर्च होता है उतना ही लालच भी करते हैं। खैर कोई हो, अब तो जो कुछ उसने कहा है करना ही पड़ेगा।

रात बीत गई, सवेरा हुआ। वह औरत फिर उन्हीं चारों लौंडियों को लिए आ पहुँची। देखा कि आनन्दसिंह पलंग पर पड़े हैं और खाने पीने का सामान ज्यों का त्यों उसी जगह रक्खा है जहां वह रख गई थी।

औरत०। आप क्यों जिद करके भूखे प्यासे अपनी जान देते हैं।

आनन्द०। इसी तरह मर जाऊंगा मगर तुमसे मुहब्बत न करूंगा, हां अगर एक बात मेरी मानो तो तुम्हारा कहा करूं।

औरत०। (खुश होकर और उनके पास बैठ कर) जो कहो मैं करने को तैयार हूँ मगर मुझसे जिद्द न करो।

आनन्द०। अपने बदन पर से कुल जेवर उतार दो और एक हजार अशर्फी मंगा दो।

औरत०। (आनन्दसिंह के गले में हाथ डाल कर) बस इतने ही के लिए ! लो मैं अभी देती हूँ !!

एक हजार अशर्फी लाने के लिए उसने दो लौंडियों को कहा और अपने बदन से कुल जेवर उतार दिए। थोड़ी ही देर में वे दोनों लौंडियां अशर्फियों का तोड़ा

लिए आ मौजूद हुईं।

औरत०। लीजियें, अब आप खुश हुए? अब तो उज्र नहीं?

आनन्द०। नहीं, मगर एक दिन की और मोहलत मांगता हूँ? कल इसी वक्त तुम आओ, बस मैं तुम्हारा हो जाऊंगा।

औरत०। अब यह ढकोसला क्या निकाला? आज भी भूखे प्यासे काटोगे तो तुम्हारी क्या दशा होगी?

आनन्द०। इसकी फिक्र न करो, मुझे कई दिनों तक भूखे प्यासे रहने की आदत है।

औरत०। लाचार, खैर यह भी सही, ठहरिये मैं आती हूँ।

इतना कह कर आनन्दसिंह को उसी जगह छोड़ चारो लौंडियों को साथ ले वह कमरे के बाहर चली गई। घन्टा भर बीतने पर भी वह न लौटी तो आनन्दसिंह उठे और कमरे के बाहर जा उसे ढूंढ़ने लगे मगर कहीं पता न लगा। बाहर की दीवार में छोटी छोटी दो आलमारियां लगी हुई दिखाई दीं। अन्दाज कर लिया कि शायद उस खिड़की की तरह यह भी बाहर जाने का कोई रास्ता हो और इधर ही से वे लोग निकल गई हों।

सोच और फिक्र में तमाम दिन बिताया, पहर रात जाते जाते कल की तरह वही सिपाही फिर पहुँचा और मेवा दूध आनन्दसिंह को दिया।

आनन्द०। लीजिए आपकी फर्माइश तैयार है।

सिपाही०। तो बस अब आप भी इस मकान के बाहर चलिये। एक रोज के कष्ट में इतनी रकम हाथ आई क्या बुरा हुआ!

सब कुछ सामान अपने कब्जे में करने के बाद सिपाही कमरे के बाहर निकला और सहन में पहुँच कमन्द के जरिये से आनन्दसिंह को मकान के बाहर निकालने के बाद आप भी बाहर हो गया। मैदान की हवा लगने से आनन्दसिंह का जी ठिकाने हुआ। समझे कि अब जान बची। बाहर से देखने पर मालूम हुआ कि यह मकान एक पहाड़ी के अन्दर है, कारीगरों ने पत्थर तोड़ कर इसे तैयार किया है। इस मकान के अगल बगल में कई सुरंगें भी दिखाई पड़ीं।

आनन्दसिंह को लिये हुए वह सिपाही कुछ दूर चला गया जहां कसे कसाये दो घोड़े पेड़ से बंधे थे। बोला, "लीजिये एक पर आप सवार होइये दूसरे पर मैं चढ़ता हूँ, चलिए आपको घर तक पहुँचा आऊं।"

आनन्द०। चुनार यहां से कितनी दूर और किस तरफ है?

सिपाही०। चुनार यहां से बीस कोस है। चलिये मैं आपके साथ चलता हूं, इन घोड़ों में इतनी ताकत है कि सवेरा होते होते हम लोगों को चुनार पहुंचा दें। आप घर चलिये, इन्द्रजीतसिंह के लिए कुछ फिक्र न कीजिये, उनका पता भी बहुत जल्द लग जायगा, आपके ऐयार लोग उनकी खोज में निकले हुए हैं।

आनन्द०। ये घोड़े कहां से लाये ?

सिपाही०। कहीं से चुरा लाए, इसका कौन ठिकाना है ?

आनन्द०। खैर यह तो बताओ तुम कौन हो और तुम्हारा नाम क्या है ?

सिपाही०। यह मैं नहीं बता सकता और न आपको इसके बारे में कुछ पूछना मुनासिब ही है !

आनन्द०। खैर अगर कहने में कुछ हर्ज है तो....

आनन्दसिंह अपना पूरा मतलब कहने भी न पाये थे कि कोई चौंकाने वाली चीज इन्हें नजर आई। स्याह कपड़ा पहिरे हुए किसी को अपनी तरफ आते देखा। सिपाही और आनन्दसिंह दोनों एक पेड़ की आड़ में हो गये, और वह आदमी इनके पास ही से कुछ बड़बड़ाता हुआ निकल गया जिसे यह गुमान भी न था कि इस जगह पर कोई छिपा हुआ मुझे देख रहा है।

उसकी बड़बड़ाहट इन दोनों ने सुनी, यह कहता जाता था—"अब मेरा कलेजा ठण्डा हुआ, अब मैं घर जाकर बेशक सुख की नींद सोऊंगी और उस हरामजादे की लाश को गीदड़ और कौवे कल दिन भर में खा जांयगे जिसने मुझे औरत जान कर दबाना चाहा था और यह न समझा था कि इस औरत का दिल हजार मर्दों से भी बढ़ कर है !"

आनन्दसिंह और सिपाही दोनों उसकी तरफ टकटकी लगाये देखते रहे जिसकी बकवाद से मालूम हो गया था कि कोई औरत है, वह देखते देखते नजरों से गायब हो गई।

सिपाही०। बेशक इसने कोई खून किया है।

आनन्द०। और वह भी इसी जगह कहीं पास में, खोजने से जरूर पता लगेगा।

दोनों आदमी इधर उधर ढूंढ़ने लगे, बहुत तकलीफ करने की नौबत न आई और दस ही कदम पर एक तड़पती हुई लाश पर इन दोनों की नजर पड़ी।

सिपाही ने अपने बगल से एक थैली निकाली और चकमक पत्थर से आग झाड़ मोमबत्ती जला उस तड़पती लाश को देखा। मालूम हुआ कि किसी ने कटार या

खञ्जर इसके कलेजे के पार कर दिया है, खून बराबर बह रहा है, जख्मी पैर पटकता और बोलने की कोशिश करता है मगर बोला नहीं जाता।

सिपाही ने अपनी थैली से एक छोटी बोतल निकाली जिसमें किसी तरह का अर्क भरा हुआ था। इसमें से थोड़ा अर्क जख्मी के मुंह में डाला। गले के नीचे उतरते ही उसमें कुछ बोलने की ताकत आई और बहुत ही धीमी आवाज से उसने नीचे-लिखे हुए कई टूटे फूटे शब्द अपने मुंह से निकालने के साथ ही दम तोड़ दिया—

"अ...सोस, यह खूबसूरत पिशाची....तेजसिंह....की...जान मेरी तरह उसके फन्दे में....हाय !....इन्द्रजीतसिंह...!!"

उस बेचारे मरने वाले के मुंह से निकले हुए ये दो चार शब्द कैसे ही बेजोड़ क्यों न हों मगर इन दोनों सुनने वालों के दिलों को तड़पा देने के लिए काफी थे। आनन्दसिंह से ज्यादे उस सिपाही को बेचैनी हुई जो अपने में बहुत कुछ कर गुजरने की कुदरत रखता था और जानता था कि इस वक्त अगर कोई हाथ कुंअर इन्द्रजीतसिंह और तेजसिंह की मदद को बढ़ सकता है तो वह सिर्फ मेरा ही हाथ है।

सिपाही०। कुमार अब आप घर जाइए। इन टूटी फूटी बेजोड़ मगर मतलब से भरी बातों को जो इस मरने वाले के मुँह से अनायास निकल पड़ी हैं सुन कर निश्चय हो गया कि आपके बड़े भाई और ऐयारों के सिरताज तेजसिंह किसी आफत में जो बहुत जल्द तबाह कर देने की कुदरत रखती है, फंस गये हैं। ऐसी हालत में मैं जो बहुत कुछ कर गुजरने का हौसला रखता हूँ किसी तरह नहीं अटक सकता और मेरा मतलब तभी सिद्ध होगा जब उस औरत को खोज निकालूंगा जो अभी यह आफत कर गई और आगे कई तरह के फसाद करने वाली है।

आनन्द०। तुम्हारा कहना बहुत सही है मगर क्या तुम कह सकते हो कि ऐसी खबर पा कर मैं चुपचाप घर चले जाना पसन्द करूंगा और जान से ज्यादे प्यारों की मदद से जी चुराऊंगा ?

सिपाही०। (कुछ सोच कर) अच्छा तो ज्यादे बात करने का मौका नहीं है, चलिए। हां सुनिये तो, आपके पास कोई हर्बा तो है नहीं, काम पड़ने पर क्या कर सकेंगे ? मेरे पास एक खंजर और एक नीमचा है, दोनों में जो चाहें एक आप ले लें।

आनन्द०। बस नीमचा मेरे हवाले कीजिए और चलिये !

आनन्दसिंह ने नीमचा अपनी कमर में लगाया और सिपाही के साथ पैदल ही उस तरफ को बढ़ते चले जिधर वह खूनी औरत बकती हुई चली गई थी।

ये दोनों ठीक उसी पगडण्डी रास्ते को पकड़े हुए थे जिस पर वह औरत गई

थी। थोड़ी थोड़ी दूर पर सांस रोक कर इधर उधर की आहट लेते, जब कुछ मालूम न होता तो फिर तेजी के साथ बढ़ते जाते थे।

कोस भर के बाद पहाड़ी उतरने की नौबत पहुँची, वहां ये दोनों फिर रुके और चारो तरफ देखने लगे। छोटी सी घंटी बजने की आवाज आई। घंटी किसी खोह या गड़हे के अन्दर बजाई गई थी जो वहां से बहुत करीब था जहां ये दोनों बहादुर खड़े हो इधर उधर देख रहे थे।

ये दोनों उसी तरफ मुड़े जिधर से घंटी की आवाज आई थी। फिर आवाज आई, अब तो ये दोनों उस खोह के मुंह पर पहुँच गये जो पहाड़ी की कुछ ढाल उतर कर पगडंडी रास्ते से बाईं तरफ हट कर थी और जिसके अन्दर से घंटी की आवाज आई थी। वेधड़क दोनों आदमी खोह के अन्दर घुस गये। अब फिर एक बार घंटी बजने की आवाज आई और साथ ही एक रोशनी भी चमकती हुई दिखाई दी जिसकी वजह से उस खोह का रास्ता साफ मालूम होने लगा, बल्कि उन दोनों ने देखा कि कुछ दूर आगे एक औरत खड़ी है जो रोशनी होते ही बाईं तरफ हट कर किसी दूसरे गड़हे में उतर गई जिसका रास्ता बहुत छोटा बल्कि एक ही आदमी के जाने लायक था। इन दोनों को विश्वास हो गया कि यह वही औरत है जिसकी खोज में हम लोग इधर आये हैं।

रोशनी गायब हो गई मगर अन्दाज से टटोलते हुए ये दोनों भी उस गड़हे के मुँह पर पहुँच गये जिसमें वह औरत उतर गई थी। उस पर एक पत्थर अटकाया हुआ था लेकिन उस अनगढ़ पत्थर के अगल बगल छोटे छोटे ऐसे कई सूराख थे जिनके ज़रिये से गड़हे के अन्दर का हाल ये दोनों बखूबी देख सकते थे।

दोनों उसी जगह बैठ गये और सूराखों की राह से अन्दर का हाल देखने लगे। भीतर रोशनी बखूबी थी। सामने की तरफ चट्टान पर बैठी वही औरत दिखाई पड़ी जिसने अभी तक अपने मुंह से नकाब नहीं उतारी थी और थकावट के सबब लम्बी सांस ले रही थी। उसके पास ही एक कमसिन खूबसूरत हब्शी छोकरी बड़ा सा छूरा हाथ में लिए खड़ी थी, दूसरी तरफ एक बदसूरत हब्शी कुदाल से जमीन खोद रहा था, बीच में छत के सहारे एक उल्टी लाश लटक रही थी, एक तरफ कोने में जल से भरा हुआ मिट्टी का घड़ा, एक लोटा और कुछ खाने का सामान पड़ा हुआ था। उस गड़हे में इतना ही कुछ था जो लिख चुके हैं।

कुछ देर बाद उस औरत ने अपने मुंह से नकाब उतारी। अहा, क्या खूबसूरत गुलाब सा चेहरा है मगर गुस्से से आंखें ऐसी सुर्ख और भयानक हो रही हैं

कि देखने से डर मालूम पड़ता है। वह औरत उठ खड़ी हुई और अपने पास वाली छोकरी के हाथ से छूरा ले उस लटकती हुई लाश के पास पहुँची और दो अंगुल गहरी एक लकीर उसके पीठ पर खींची।

हाय हाय, ऐसी हसीन और इतनी संगदिली ! इतनी बेदर्दी ! अभी अभी एक खून किये चली आती है और यहां पहुँच कर फिर अपने राक्षसीपन का नमूना दिखला रही है ! यह लाश किसकी है ? कहीं यह भी कोई चुनार का खैरख्वाह या हमारे उपन्यास का पात्र न हो।

पीठ पर जख्म खाते ही लाश फड़की। अब मालूम हुआ कि वह मुर्दा नहीं है कोई जीता आदमी तकलीफ देने के लिए लटकाया गया है। जख्म खाकर लटका हुआ वह आदमी तड़पा और आह भर के बोला—

"हाय; मुझे क्यों तकलीफ देती हो, मैं कुछ नहीं जानता !"

औरत०। नहीं तुझे बताना ही होगा ? तू खूब जानता है। (पीठ पर फिर गहरी छुरी चला कर) बता बता ?

उलटा आदमी०। हाय, मुझे एक ही दफे क्यों नहीं मार डालतीं ? मैं किसी का हाल क्या जानूं, मुझे इन्द्रजीतसिंह से वास्ता ?

औरत०। (फिर छुरी से काट कर) मैं खूब जानती हूँ, तू बड़ा पाजी है, तुझे सब कुछ मालूम है। बता नहीं तो गोश्त काट काट कर जमीन पर गिरा दूँगी।

उल्टा आदमी०। हाय, इन्द्रजीतसिंह की बदौलत मेरी यह दशा !

अभी तक कुंअर आनन्दसिंह और वह सिपाही छिपे छिपे सब कुछ देख रहे थे, मगर जब उस उलटे हुए आदमी के मुँह से यह निकला कि 'हाय, इन्द्रजीतसिंह की बदौलत मेरी यह दशा' ! तब मारे गुस्से के उनकी आंखों में खून उतर आया। पत्थर हटा दोनों आदमी बेधड़क अन्दर चले गये और उस बेदर्द छुरी चलाने वाली औरत के सामने पहुँच आनन्दसिंह ने ललकारा—"खबरदार ! रख दे छुरा हाथ से !!"

औरत०। (चौंक कर) हैं तुम यहां क्यों चले आये ? खैर अगर आ ही गये तो चुपचाप खड़े होकर तमाशा देखो। यह न समझो कि तुम्हारे धमकाने से मैं डर जाऊंगी। (सिपाही की तरफ देख कर) तुम्हारी आंखों में भी क्या धूल पड़ गई है ? अपने हाकिम को नहीं पहिचानते ?

सिपाही०। (खूब गौरसे देखकर)हां ठीक है, तुम्हारी सभी बातें अनोखी होती हैं।

औरत०। अच्छा तो आप दोनों आदमी यहां से जाइये और मेरे काम में हर्ज न डालिए।

सिपाही॰। (आनन्दसिंह से) चलिए, इन्हें छोड़ दीजिए। जो चाहे सो करें आपको क्या।

आनन्द॰। (कमर से नीमचा निकाल कर) वाह, क्या कहना है! मैं बिना इस आदमी को छुड़ाए कब टलने वाला हूं!!

औरत॰। (हंस कर) मुंह धो रखिये!

बहादुर बीरेन्द्रसिंह के बहादुर लड़के आनन्दसिंह को ऐसी बातों के सुनने की ताकत कहां? वह दो चार आदमियों को समझते ही क्या थे? 'मुंह धो रखिए' इतना सुनते ही जोश चढ़ आया। उछल कर एक हाथ नीमचे का लगाया जिससे वह रस्सी कट गई जो उस आदमी के पैर से बंधी हुई थी और जिसके सहारे वह लटक रहा था, साथ ही फुर्ती से उस आदमी को सम्हाला और जोर से जमीन पर गिरने न दिया।

अब तो वह सिपाही भी आनन्दसिंह का दुश्मन बन बैठा और ललकार कर बोला, "यह क्या लड़कपन है!"

हम ऊपर लिख चुके हैं कि इस सुरंग में दो औरतें और एक हब्शी गुलाम हैं। अब वह सिपाही भी उनके साथ मिल गया और चारो ने आनन्दसिंह को पकड़ लिया, मगर वाह रे आनन्दसिंह, एक झटका दिया कि चारो दूर जा गिरे। इतने में बाहर से आवाज आई—

"आनन्दसिंह खबरदार! जो किया सो ठीक किया, अब आगे कुछ हौसला न करना नहीं तो सजा पाओगे!!"

आनन्दसिंह ने घबड़ा कर बाहर की तरफ देखा तो एक योगिनी नजर पड़ी जो जटा बढ़ाये भस्म लगाये गेरुआ वस्त्र पहिरे दाहिने हाथ में त्रिशूल और बाएं हाथ में आग से भरा धधकता हुआ खप्पर जिसमें कोई खुशबूदार चीज जल रही थी और बहुत धूआं निकल रहा था लिए हुए आ मौजूद हुई।

ताज्जुब में आकर सभी उसकी सूरत देखने लगे। थोड़ी देर में उस खप्पर से निकला हुआ धूआं सुरङ्ग की कोठरी मे भर गया और उसके असर से जितने वहां थे सभी बेहोश होकर जमीन पर गिर पड़े। बस अकेली वही योगिनी होश में रही जिसने सभों को बेहोश देख कोने में पड़े हुए घड़े से जल निकाल खप्पर की आग बुझा दी।

आठवां बयान

अब थोड़ा सा हाल शिवदत्तगढ़ का भी लिख देना मुनासिब मालूम होता है। यह हम पहिले लिख चुके हैं कि महाराज शिवदत्त को एक लड़का और एक लड़की

मी हुई थी। इस समय लड़के की उम्र जिसका नाम भीमसेन है अट्ठारह वर्ष की हो गई थी, पर लड़की किशोरी की उम्र अभी पन्द्रह वर्ष से ज्यादे न होगी। इस समय बेचारी किशोरी शिवदत्तगढ़ में मौजूद नहीं है क्योंकि महाराज शिवदत्त ने रंज होकर उसे उसके ननिहाल भेज दिया है। रंज होने का कारण हम यहां पर नहीं लिखते क्योंकि यह बहुत पेचीली बात है, खुलते खुलते खुल जायगी।

भीमसेन शिवदत्तगढ़ में मौजूद हैं। उसे सिपहगिरी से बहुत शौक है, बदन में ताकत भी अच्छी है। तलवार खंजर नेजा तीर गदा इत्यादि चलाने में होशियार औ राजकाज के मामले में भी तेज है मगर अपने पिता महाराज शिवदत्त की चाल को पसंद नहीं करता, पर फिर भी महाराज शिवदत्त को उससे बहुत ही ज्यादा प्रेम है।

एक दिन भीमसेन मामूली तौर पर बीस हमजोलियों को साथ ले घोड़े पर सवार हो शिकार खेलने के लिये शिवदत्तगढ़ के बाहर निकला और एक ऐसे जंगल में गया जिसमें बनैले सूअर बहुत थे। उसका इरादा भी यही था कि घोड़ा दौड़ा कर बरछे से बनैले सूअर को मारे।

जंगल में घूमने फिरने लगे। एक ताकतवर और मजबूत सूअर भीमसेन की बगल से होता हुआ पूरब की तरफ भागा। भीमसेन ने भी उसके पीछे घोड़ा दौड़ाया, मगर वह बहुत तेजी के साथ भागा जा रहा था इसलिए बहुत दूर निकल गया, उसके संगी साथी सब पीछे छूट गये। यकायक भीमसेन ने देखा कि सामने की तरफ जिधर सूअर भागा जाता है एक औरत घोड़े पर सवार हाथ में बरछी लिए इस ताक में खड़ी है कि सूअर पास आवे तो बरछी से मार ले।

जब सूअर ऐसे ठिकाने पहुँचा जहां से वह औरत इतनी दूर रह गई जितनी दूर उसके पीछे भीमसेन था वह बाईं तरफ को मुड़ा और पहिले से ज्यादा तेजी के साथ भागा। भीमसेन और वह औरत दोनों ही ने उसके पीछे घोड़ा फेंका मगर भीमसेन से पहिले उस औरत ने पहुँच कर बरछी मारी जिसके लगते ही वह सूअर गिरा।

अपना शिकार एक औरत के हाथ से मरते देख भीमसेन को क्रोध चढ़ आया और आंखें लाल हो गईं। ललकार कर औरत से बोला—"तूने मेरे शिकार पर क्यों बरछी चलाई!"

औरत०। क्या शिकार पर तुम्हारा नाम खुदा हुआ था?

भीम०। क्यों नहीं! मेरा जंगल मेरा शिकार, इतनी देर से मैं इसके पीछे चला आ रहा हूँ!!

औरत०। वाह रे तेरा जंगल और वाह रे तेरा शिकार ! तीन कोस से दौड़े चले आते हैं, एक सूअर न माग गया ! शर्म तो आती नहीं उल्टे लाल आंखें कर मर्दानगी दिखा रहे हैं !!

भीम०। क्या कहूँ, तेरी खूबसूरती पर रहम आता है, औरत समझ कर छोड़ देता हूँ नहीं तो जरूर मजा चखा देता।

औरत०। मैं भी छोकरा समझ कर छोड़ देती हूँ नहीं तो दोनों कान पकड़ कर उखाड़ लेती !

भीम०। (दांत पीस कर) बस अब सहा नहीं जाता। जुबान सम्हाल !

औरत०। नहीं सहा जाता तो अपने हाथ से अपना मुँह पीट ! यहां तो जुबान हमेशे यों ही चलती रही है और चलती रहेगी !

इस औरत की खूबसूरती, सवारी का ढंग, बदन की सुडौली और फुर्ती यहां तक चढ़ी बढ़ी थी कि आदमी घण्टों देखा करे और जी न भरे मगर इसकी जली कटी बातों ने भीमसेन को आपे से बाहर कर दिया। आंखों के आगे अंधेरा छा गया, बिना कुछ सोचे विचारे उस औरत पर बरछी का वार किया। औरत ने बड़ी फुर्ती से बर्छी ढाल पर रोका और हंस कर कहा, "और जो कुछ हौसला रखता हो ला !"

घंटे भर तक दोनों में बरछी की लड़ाई हुई। इस समय अगर कोई इस फन का उस्ताद होता तो उस औरत की फुर्ती देख बेशक खुश हो जाता और 'वाह वाह' या 'शाबाश' कहे बिना न रहता। आखिर उस औरत की बरछी जिसका फल जहर से बुझाया हुआ था भीमसेन की जांघ में लगी जिसके लगते ही तमाम बदन में जहर फैल गया और वह बदहवास होकर जमीन पर गिर पड़ा।

नौवां बयान

भीमसेन के साथियों ने बहुत खोजा मगर भीमसेन का पता न लगा, लाचार कुछ रात जाते जाते लौट आये और उसी समय महाराज शिवदत्त के पास जाकर अर्ज किया कि आज शिकार खेलने के लिए कुमार जंगल में गये थे, एक बनैले सूअर के पीछे घोड़ा फेंकते हुए न मालूम कहां चले गये, बहुत तलाश किया मगर पता न लगा।

अपने लड़के के गायब होने का हाल सुन महाराज शिवदत्त बहुत घबड़ा गये। थोड़ी देर तक तो उन लोगों पर खफा होते रहे जो भीमसेन के साथ थे, आखिर कई जासूसों को बुला कर भीमसेन का पता लगाने के लिए चारो तरफ रवाना किया और ऐयारों को भी हर तरह की ताकीद की, मगर तीन दिन बीत जाने पर

भी भीमसेन का पता न लगा।

एक दिन लड़के की जुदाई से व्याकुल हो अपने कमरे में अकेले बैठे तरह तरह की बातें सोच रहे थे कि एक खास खिदमतगार ने वहां पहुँच अपने पैर की धमक से उन्हें चौंका दिया। जब वे उस खिदमतदार की तरफ देखने लगे तो उसने एक लिफाफा दिखा कर कहा, "चोबदार ने यह लिफाफा हुजूर में देने के लिए मुझे सौंपा है। उसी चोबदार की जुबानी मालूम हुआ कि कोई ऊपरी आदमी यह लिफाफा देकर चला गया, चोवदारों ने उसे रोकना चाहा था मगर वह फुर्ती से निकल गया।"

महाराज शिवदत्त ने वह लिफाफा लेकर खोला। अपने लड़के भीमसेन के हाथ का लेख पहिचान वहुत खुश हुए, मगर चीठी पढ़ लेने से तरद्दुद की निशानी उनके चेहरे पर झलकने लगी। चीठी का मतलब यह था :—

'यह जान कर आपको वहुत रंज होगा कि मुझे एक औरत ने वहादुरी से गिरफ्तार कर लिया, मगर क्या करूं लाचार हूँ, इसका हाल हाजिर होने पर अर्ज करूंगा, इस समय मेरी छुट्टी तभी हो सकती है अब आप बीरेन्द्रसिंह के कुल ऐयारों को जो आपके यहां कैद हैं छोड़ दें और वे खुशी राजी से अपने घर पहुंच जाएं। मेरा पता लगाना व्यर्थ है, मैं बहुत ही वेढब जगह कैद किया गया हूं।

आपका आज्ञाकारी पुत्र—

भीम।"

चीठी पढ़ कर महाराज शिवदत्त की अजब हालत हो गई। सोचने लगे, "क्या भीम को एक औरत ने पकड़ लिया? वह बड़ा होशियार ताकतवर और शस्त्र चलाने में निपुण था। नहीं नहीं उस औरत ने जरूर कोई धोखा दिया होगा। पर अब तो उन ऐयारों को छोड़ना ही पड़ा जो मेरी कैद में हैं! हाय, किस मुश्किल से ये ऐयार गिरफ्तार हुए थे और अब क्या सहज ही में छूटे जाते हैं। खैर लाचारी है, क्या करें।"

बहुत देर तक सोच विचार कर महाराज शिवदत्त ने वाकरअली ऐयार को बुला कर कहा, "बीरेन्द्रसिंह के ऐयारों को छोड़ दो, जब तक वे अपने घर नहीं पहुँचते हमारा लड़का एक औरत की कैद से नहीं छूटता।"

बाकर०। (ताज्जुब से) यह क्या बात हुजूर ने कही? मेरी समझ में कुछ न आया!

शिव०। भीमसेन को एक औरत ने गिरफ्तार करलि या है। वह कहती है कि जब तक बीरेन्द्रसिंह के ऐयार न छोड़ दिये जायेंगे तुम भी घर जाने न पाओगे।

बाकर० । यह कैसे मालूम हुआ ?

शिवदत्त० । (चीठी दिखा कर) यह देखो खास भीमसेन के हाथ का लिखा हुआ है, इस चीठी पर किसी तरह का शक नहीं हो सकता ।

बाकर० । (पढ़ कर) ठीक है, इतने दिनों तक कुमार का पता न लगना ही कहे देता था कि उन्हें किसी ने धोखा देकर फंसा लिया, अब यह भी मालूम हो गया कि किसी औरत ने मर्दों के कान काटे हैं ।

शिवदत्त० । ताज्जुब है, एक औरत ने बहादुरी से भीम को कैसे गिरफ्तार कर लिया ! खैर इसका खुलासा हाल तभी मालूम होगा जब भीम से मुलाकात होगी और जब तक बीरेन्द्रसिंह के ऐयार चुनार नहीं पहुँच जाते भीम की सूरत देखने को तरसते रहेंगे । तुम जाके उन ऐयारों को अभी छोड़ दो, मगर यह मत कहना कि तुम लोग फलानी वजह से छोड़े जाते हो बल्कि यह कहना कि हमसे और बीरेन्द्रसिंह से सुलह हो गई, तुम जल्द चुनार जाओ । ऐसा कहने से वे कहीं न रुक कर सीधे चुनार चले जाएंगे ।

बाकरअली महाराज शिवदत्त के पास से उठा और वहां पहुँचा जहां बद्रीनाथ वगैरह ऐयार कैद थे । सभों को कैदखाने से बाहर किया और कहा—"अब आप लोगों से हमसे कोई दुश्मनी नहीं, आप लोग अपने घर जाइए क्योंकि हमारे महाराज से और राजा बीरेन्द्रसिंह से सुलह हो गई ।"

बद्रीनाथ० । बहुत अच्छी बात है, बड़ी खुशी का मौका है, पर अगर आपका कहना ठीक है तो हमारे ऐयारी के बटुए और खंजर भी दे दीजिए ।

बाकर० । हां हां लीजिये, इसमें क्या उज्र है, अभी मंगाये देता हूँ बल्कि मैं खुद जाकर ले आता हूँ ।

दो तीन ऐयारों को साथ ले इन ऐयारों के बटुए वगैरह लेने के लिए बाकरअली अपने मकान की तरफ गया, इधर पंडित बद्रीनाथ और पन्नालाल वगैरह निराला पाकर आपुस में बातें करने लगे ।

पन्ना० । क्यों यारो, यह क्या मामला है जो आज हम लोग छोड़े जाते हैं ?

राम० । सुलह वाली बात तो हमारी तबीयत में नहीं बैठती ।

चुन्नी० । अजी कैसी सुलह और कहां का मेल ! जरूर कोई दूसरा ही मामला है ।

ज्योतिषी० । बेशक शिवदत्त लाचार होकर हम लोगों को छोड़ रहा है ।

बद्री० । क्यों साहब भैरोंसिंह, आप इस बारे में क्या सोचते हैं ?

भैरो०। सोचेंगे क्या? असल जो बात है मैं समझ गया।

बद्री०। भला कहिये तो सही क्या समझे!

भैरो०। इसमें कोई शक नहीं कि हमारे साथियों में से किसी ने यहां किसी मुढ को पकड़ पाया है और इनको कहला भेजा है कि जब तक हमारे ऐयार चुनार न पहुँच जांयगे उसको न छोड़ेंगे, बस इसी से ये बातें बनाई जा रही हैं जिसमें हम लोग जल्दी चुनार पहुँचें।

बद्री०। शाबाश, बहुत ठीक सोचा इसमें कोई शक नहीं। मैं समझता हूं कि शिवदत्त की जोरू लड़का या लड़की पकड़ी गई है तभी वह इतना कर रहा है नहीं तो दूसरे की वह परवाह करने वाला नहीं है, तिस पर हम लोगों के मुकाबिले में।

भैरो०। बस बस यही बात है, और अब हम लोग सीधे चुनार क्यों जाने लगे जब तक कुछ दक्षिणा न ले लें।

बद्री०। देखो तो क्या दिल्लगी मचाता हूं।

भैरो०। (हंस कर) मैं तो शिवदत्त से साफ कहूंगा कि मेरे पैरों में दर्द है तीन महीने में भी चुनार नहीं पहुँच सकता, घोड़े पर सवार होना मुश्किल है, बैल की सवारी से कसम खा चुका हूं, पालकी पर घायल बीमार या अमीर लोग चढ़ते हैं, बस विना हाथी के मेरा काम नहीं चलता, सो भी विना हौदे के चढ़ने की आदत नहीं। तेजसिंह दीवान का लड़का, विना चांदी सोने के हौदे पर चढ़ नहीं सकता।

चुन्नी०। भाई बाकर ने मुझे बेढब छकाया है। मैं तो जब तक बाकर की आधा माशे नाक न ले लूंगा यहां से टलने वाला नहीं चाहे जान रहे या जाय।

चुन्नीलाल की बात सुन कर सभी हंस पड़े और देर तक इसी तरह की बातचीत करते रहे, तब तक बाकरअली भी इन सभों के बटुए और खंजर लिए हुए आ पहुँचा।

बाकर०। लो साहबो ये आपके बटुए और खंजर हाजिर हैं।

बद्री०। क्यों यार कुछ चुराया तो नहीं। और तो खैर बस, मुझे अपनी अशर्फियों का धोखा है, हमलोगों के बटुए में खूब मजेदार चमकती हुई अशर्फियां थीं।

बाकर०। अब लगे झूठ मूठ का बखेड़ा मचाने।

राम०। (मुंह बना कर) हैं, सच कहना! इन बातों से तो मालूम होता है अशर्फियां डकार गये। (पन्नालाल वगैरह की तरफ देख कर) लो भाइयों, अपनी चीजें देख लो!

पन्ना०। देखें क्या? हम लोग जब चुनार से चले थे तो सौ सौ अशर्फियां

सभों को खर्च के लिए मिली थीं। वे सब ज्यों की त्यों बटुए में मौजूद थीं।

भैरो०। भाई मेरे पास तो अशर्फियां नहीं थीं, हां एक छोटी सी पुटरी जवाहिरात की जरूर थी सो गायब है, अब कहिए इतनी बड़ी रकम कैसे छोड़ कर चुनार जांय।

बद्री०। अच्छी दिल्लगी है!. दोनों राजों में सुलह हो गई और इस खुशी में लुट गए हम लोग! चलो एक दफे महाराज शिवदत्त से अर्ज करें, अगर सुनेंगे तो बेहतर है नहीं तो इसी जगह अपना गला काट कर रख जायेंगे, धन दौलत लुटा कर चुनार जाना हमें मंजूर नहीं!

बाकरअली हैरान कि इन लोगों ने अजब ऊधम मचा रक्खा है, कोई कहता है मेरी अशर्फियां गायब हैं, कोई कहता है मेरी जवाहिरात की गठरी गुम हो गई, कोई कहता है हम लुट गए, अब क्या किया जाय? हम तो इस फिक्र में हैं कि जिस तरह हो ये लोग जल्द चुनार पहुँचें जिसमें भीमसेन की जान बचे, मगर ये लोग तो खमीरी आंटे की तरह फैले ही जाते हैं। खैर एक दफे इनको धमकी देनी चाहिए।

बाकर०। देखो तुम लोग बदमाशी करोगे तो फिर कैद कर लिए जाओगे!

बद्री०। जी हां! मैं भी यही सोच रहा हूँ।

पन्ना०। ठीक है, जरूर कैद कर लिए जायंगे, क्योंकि अपनी जमा मांग रहे हैं। चुपचाप चले जांय तो बेहतर है, जिसमें बखूबी रकम पचा जाओ और कोई सुनने न पावे!

भैरो०। यह धमकी तो आप अपने घर में खर्च कीजियेगा, भलमनसी इसी में है कि हम लोगों की जमा बाएं हाथ से रख दीजिये, और नहीं तो चलिये राजा साहब के पास, जो कुछ होगा उन्हीं के सामने निपट लेंगे।

बाकर०। अच्छी बात है चलिये।

सब कोई०। चलिये चलिये!!

यह मसखरों का झुण्ड बाकरअली के साथ महाराज शिवदत्त के पास पहुँचा।

बाकर०। महाराज, देखिए ये लोग झगड़ा मचाते हैं!

भैरो०। जी हां, कोई अपनी जमा मांगे तो कहिये झगड़ा मचाते हैं!

शिव०। क्या मामला है?

भैरो०। महाराज मुझसे सुनिये, जब हमारे सरकार से और आपसे सुलह हो गई और हम लोग छोड़ दिये गए तो हम लोगों की वे चीजें भी मिल जानी चाहियें जो कैद होते समय जप्त कर ली गई थीं।

शिव० । क्यों नहीं मिलेंगी !

भैरो० । ईश्वर आपको सलामत रक्खे, क्या इन्साफ किया है ! आगे सुनिए, जब हम लोगों ने अपनी चीजें मियां बाकर से मांगीं तो बस बटुआ और खंजर तो दे दिया मगर बटुए में जो कुछ रकम थी गायब कर गए । दो दो चार चार अशर्फियां और दस दस बीस बीस रुपये तो छोड़ दिये बाकी अपने कब्र में गाड़ आये ! अब इन्साफ आपके हाथ है !

शिव० । (बाकर से) क्यों जी यह क्या मामला है !

बाकर० । महाराज ये सब झूठे हैं ।

भैरो० । जी हां हम सबके सब झूठे हैं और आप अकेले सच्चे हैं ?

शिव० । (भैरो से) खैर जाने दो, तुम लोगों का जो कुछ गया है हमसे लेकर अपने घर जाओ, हम बाकर से समझ लेंगे ।

भैरो० । महाराज सौ सौ अशर्फियां तो इन लोगों की गई हैं और एक गठरी जवाहिरात की मेरी गई है । अब बहुत बखेड़ा कौन करे बस एक हजार अशर्फियां मंगवा दीजिये हम लोग अपने घर का रास्ता लें, रकम तो ज्यादे गई है मगर आपका क्या कसूर !

बाकर० । यारों गजब मत करो !

भैरो० । हां साहब हम लोग गजब करते हैं, खैर लीजिए अब एक पैसा न मांगेंगे, जी में समझ लेंगे खैरात किया, अब चुनार भी न जांयगे (उठना चाहता है)।

शिव० । अजी घबराते क्यों हो, जो कुछ तुमने कहा है हम देते हैं । (बाकर से) क्या तुम्हारी शामत आयी है !

महाराज शिवदत्त ने बाकरअली को ऐसी डांट बताई कि बेचारा चुपके से दूर जा खड़ा हुआ । हजार अशर्फियां मंगवा कर भैरोसिंह के आगे रख दी गई, ये लोग अपने अपने बटुए में रख उठ खड़े हुए, यह भी न पूछा कि तुम्हारा कौन कैद हो गया जिसके लिए इतना सह रहे हो, हां शिवदत्तगढ़ के बाहर होते होते इन लोगों ने पता लगा ही लिया कि भीमसेन किसी ऐयार के पंजे में पड़ गया है।

शिवदत्तगढ़ के बाहर हो सीधे चुनार का रास्ता लिया । दूसरे दिन शाम को जब चुनार पन्द्रह कोस बाकी रह गया सामने से एक सवार घोड़ा फेंकता हुआ इसी तरफ आता दिखाई पड़ा । पास आने पर भैरोसिंह ने पहिचाना कि शिवदत्त का लड़का भीमसेन है ।

भीमसेन ने इन ऐयारों के पास पहुंच कर घोड़ा रोका और हंस कर भैरोसिंह

की तरफ देखा जिसे वह बखूबी पहिचानता था।

भैरो०। क्यों साहब आपको छुट्टी मिली? (अपने साथियों की तरफ देख कर) महाराज शिवदत्त के पुत्र कुमार भीमसेन यही हैं।

भीम०। आप ही लोगों की रिहाई पर मेरी छुट्टी वदी थी, आप लोग चले आये तो मैं क्यों रोका जाता?

भैरो०। हमारे किस साथी ने आपको गिरफ्तार किया?

भीम०। सो मुझे मालूम नहीं, शिकार खेलते समय घोड़े पर सवार एक औरत ने पहुँच कर नेजे से मुझे जख्मी किया, जब मैं बेहोश हो गया मुश्कें बांध एक खोह में ले गई और इलाज करके आराम किया, आगे का हाल आप जानते हैं, मुझे यह न मालूम हुआ कि वह औरत कौन थी मगर इसमें शक नहीं कि थी वह औरत ही।

भैरो०। खैर अब आप अपने घर जाइये, मगर देखिए आपके पिता ने व्यर्थ हम लोगों से वैर बांध रक्खा है। जब वे राजकुमार बीरेन्द्रसिंह के कैदी हो गये थे उस वक्त हमारे महाराज सुरेन्द्रसिंह ने उन्हें बहुत तरह से समझा कर कहा कि आप हम लोगों से वैर छोड़ चुनार में रहें, हम चुनार की गद्दी आपको फेर देते हैं। उस समय तो हजरत को फकीरी सूझी थी, योगाभ्यास की धुन में प्राण की जगह बुद्धि को ब्रह्माण्ड में चढ़ा ले गये थे लेकिन अब फिर गुदगुदी मालूम होने लगी। खैर हमें क्या, उनकी किस्मत में जन्म भर दुःख ही भोगना बदा है तो कोई क्या करे, इतना ही नहीं सोचते कि जब चुनार के मालिक थे तब तो कुंअर बीरेन्द्रसिंह से जीते नहीं, अब न मालूम क्या कर लेंगे!

भीम०। मैं सच कहता हूँ कि उनकी बातें मुझे पसन्द नहीं मगर क्या करूं, पिता के विरुद्ध होना धर्म नहीं।

भैरो०। ईश्वर करे इसी तरह आपकी धर्म में बुद्धि बनी रहे, अच्छा जाइये।

भीमसेन ने अपने घर का रास्ता लिया और हमारे चोखे ऐयारों ने चुनार की सड़क नापी।

दसवां बयान

अब हम अपने पाठकों को फिर उसी खोह में ले चलते हैं जिसमें कुंअर आनन्दसिंह को बेहोश छोड़ आये हैं अथवा जिस खोह में जान बचाने वाले सिपाही के साथ पहुँच कर उन्होंने एक औरत को छूरे से लाश काटते देखा था और योगिनी ने पहुँच कर सभों को बेहोश कर दिया था।

थोड़ी देर के बाद आनन्दसिंह को छोड़ योगिनी बाकी सभों को कुछ सुंघा कर होश में लाई। बेहोश आनन्दसिंह उठाकर एक किनारे रख दिए गए और फिर वही काम अर्थात् लटकते हुए आदमी को छूरे से काट काट कर पूछना कि 'इन्द्रजीतसिंह के बारे में जो कुछ जानता है बता' जारी हुआ। सिपाही ने भी उन लोगों का साथ दिया। मगर वह आदमी भी कितना जिद्दी था! बदन के टुकड़े टुकड़े हो गए मगर जब तक होश में रहा यही कहता गया कि हम कुछ नहीं जानते। हब्शी ने पहले ही से कब्र खोद रखी थी, दम निकल जाने पर वह आदमी उसी में गाड़ दिया गया।

इस काम से छुट्टी पा योगिनी ने सिपाही की तरफ देख कर कहा, "बाहर जंगल से लकड़ी काट काम चलाने लायक एक छोटी सी डोली बना लो, उस पर आनन्दसिंह को रख तुम और हब्शी मिल कर उठा ले जाओ, चुनार के किले के पास इनको रख देना जिसमें होश आने पर अपने घर पहुँच जांय, तकलीफ न हो, बल्कि होश में लाने की तर्कीब करके तब तुम इनसे अलग होना और जहां जी चाहे चले जाना, हम लोगों से अगर मिलने की जरूरत हो तो इसी जगह आना।"

सिपाही०। मेरी भी यही राय थी, आनन्दसिंह को तकलीफ क्यों होने लगी, क्या मुझको इसका खयाल नहीं है!

योगिनी०। क्यों नहीं, बल्कि मुझसे ज्यादे होगा। अच्छा तुम जाओ जिस तरह बने इस काम को कर लो, हम लोग अब अपने काम पर जाती हैं। (दूसरी औरत की तरफ देख कर जिसने छूरी से उस लाश को काटा था) चलो बहन चलें, इस छोकरी को इसी जगह छोड़ दो मजे में रहेगी, फिर बूझा जायगा।

इन दोनों औरतों का अभी बहुत कुछ हाल हमें लिखना है इसलिए जब तक इन दोनों का असल भेद और नाम न मालूम हो जाय तब तक पाठकों के समझने के लिए कोई फर्जी नाम जरूर रख देना चाहिए। एक का नाम तो योगिनी रख ही दिया गया दूसरी का बनचरी समझ लीजिए। योगिनी और बनचरी दोनों खोह के बाहर निकलीं और कुछ दक्खिन झुकते हुए पूरब का रास्ता लिया, इस समय रात बीत चुकी थी और सुबह की सुफेदी के साथ लुपलुपाते हुए दो चार तारे आसमान पर दिखाई दे रहे थे।

पहर दिन चढ़े तक ये दोनो बराबर चली गईं, जब धूप कुछ कड़ी हुई जंगल में एक जगह बेल के पेड़ों की घनी छांह देख कर टिक गईं जिसके पास ही पानी का झरना बह रहा था। दोनों ने कमर से बटुआ खोला और कुछ मेवा निकाल कर खाने तथा पानी पीने के बाद जमीन पर नरम नरम पत्ते बिछा कर सो रहीं।

ये दोनों तमाम रात की जगी हुई थीं, लेटते ही नींद आ गई। दोपहर तक खूब सोईं। जब पहर दिन बाकी रहा उठ बैठीं और चश्मे के पानी से हाथ मुह धो फिर चल पड़ीं। इस तरह मौके मौके पर टिकती हुई ये दोनों कई दिन तक बराबर चली गईं। एक दिन आधी रात तक बराबर चले जाने के बाद एक तालाब के किनारे पहुँचीं जो बगल वाली पहाड़ी के नीचे सटा हुआ था।

इस लम्बे चौड़े संगीन और निहायत खूबसूरत तालाब के चारो तरफ पत्थर की सीढ़ियां और छोटी छोटी बारहदरियां इस तौर पर बनी हुई थीं जो बिल्कुल जल के किनारे ही पड़ती थीं। तालाब के ऊपर भी चारों तरफ पत्थर का फर्श और बैठने के लिए हर एक तरफ सिंहासन की तरह चार चार चबूतरे निहायत खूबसूरत मौजूद थे। ताज्जुब की बात यह थी कि इस तालाब के बीच का जाट लकड़ो की जगह पीतल का इतना मोटा बना हुआ था कि दोनों तरफ दो आदमी खड़े होकर हाथ नहीं मिला सकते थे। जाट के ऊपर लोहे का एक बदसूरत आदमी का चेहरा बैठाया हुआ था।

तालाब के ऊपर चारो तरफ बड़े बड़े सायेदार दरख्त ऐसे घने लगे हुए थे कि सभों की डालियां आपुस में गुथ रही थीं। दोनों उस तालाब पर खड़े होकर उसकी शोभा देखने लगीं। थोड़ी देर बाद एक चबूतरे पर बैठ गईं मगर मुंह तालाब ही की तरफ किये हुए थीं।

यकायक जाट के पास का पानी खलबलाया और एक आदमी तैरता हुआ जल के ऊपर दिखाई दिया। इन दोनों को टकटकी उसी तरफ बंध गई, वह आदमी किनारे आया और ऊपर की सीढ़ी पर खड़ा हो चारो तरफ देखने लगा। अब मालूम हो गया कि वह औरत है। योगिनी और बनचरी ने चबूतरे के नीचे होकर अपने को छिपा लिया मगर उस औरत की तरफ बराबर देखती रहीं।

उस औरत की उम्र बहुत कम मालूम होती थी जो अभी अभी तालाब से बाहर हो इधर उधर सन्नाटा देख हवा में अपनी धोती सुखा रही थी। थोड़ी ही देर में साड़ी सूख गयी जिसे पहिन कर उसने एक तरफ का रास्ता लिया।

मालूम होता है योगिनी और बनचरी इसी की ताक में बैठी थीं क्योंकि जैसे ही वह औरत वहां से चल खड़ी हुई वैसे ही ये दोनों उस पर लपकीं और जबर्दस्ती गिरफ्तार कर लेना चाहा, मगर वह कमसिन औरत इन दोनों को अपनी तरफ आते देख और इन दोनों के मुकाबले अपनी जीत न समझ कर लौट पड़ी और फुर्ती के साथ उन दरख्तों में से एक पर चढ़ गई जो उस तालाब के चारो तरफ लगे हुए थे। योगिनी और बनचरी दोनों उस दरख्त के नीचे पहुँचीं, योगिनी खड़ी रहा और

बनचरी उसे पकड़ने के लिये ऊपर चढ़ी।

हम ऊपर लिख आये हैं कि यह दरख्त इतने पास पास लगे हुए थे कि समों की डालियां आपुस में गुथ रही थीं। बनचरी को पेड़ पर चढ़ते देख वह जलचरी ऊपर ही ऊपर दूसरे पेड़ पर कूद गई। यह देख योगिनी ने उसके आगे वाले तीसरे पेड़ को जा घेरा, जिसमें वह बीच ही में फंसी रह जाय और आगे न जाने पावे, मगर यह चालाकी भी न लगी। जब उस औरत ने अपने बगल वाले पेड़ को दुश्मनों से घिरा हुआ पाया, पेड़ के नीचे उतर आई और तालाब की सीढ़ियों को तै करते हुए धम्म से जल में कूद पड़ी। योगिनी और बनचरी भी साथ ही पेड़ से उतरीं और उसके पीछे जाकर इन दोनों ने भी अपने को जल में डाल दिया।

ग्यारहवां बयान

सूर्य भगवान अस्त होने के लिए जल्दी कर रहे हैं। शाम की ठण्डी हवा अपनी चाल दिखा रही है। आस्मान साफ है क्योंकि अभी अभी पानी बरस चुका है और पछुवा हवा ने रूई के पहल की तरह जमे हुए बादलों को तूम तूम कर उड़ा दिया है। अस्त होते हुए सूर्य की लालिमा ने आस्मान पर अपना दखल जमा लिया है और निकले हुए इन्द्रधनुष पर जिला दे उसके रंगदार जौहर को अच्छी तरह उभाड़ रक्खा है। बाग की रविशों पर जिन पर कुदरती भिश्ती अभी घंटे भर हुआ छिड़काव कर गया है, घूम घूम कर देखने से धुले धुलाये रंग बिरंगे पत्तों की कैफियत और उन सफेद कलियों की बहार दिल और जिगर को क्या ही ताकत दे रही है जिनके एक तरफ का रंग तो असली मगर दूसरा हिस्सा अस्त होते हुए सूर्य की लालिमा पड़ने से ठीक सुनहला हो रहा है। उस तरफ से आये हुए खूशबू के झपेटे कहे देते हैं कि अभी तक तो आप दृष्टान्त ही में अनहोनी समझ कर कहा सुना करते थे मगर आज 'सोने और सुगन्ध' वाली कहावत देखिए आपनी आंखों के सामने मौजूद ये अधखिली कलियां सच किए देती हैं। चमेली की टट्टियों में नाजुक नाजुक सफेद फूल तो खिले हुए हुई हैं मगर कहीं कहीं पत्तियों में से छन कर आई हुई सूर्य की आखिरी किरणें धोखे में डालती हैं। यह समझ कर कि आज इन्हीं सुफेद चमेलियों में जर्द चमेली भी खिली हुई है शौक भरा हाथ बिना बढ़े नहीं रहता। सामने को बनाई हुई सब्जी जिसकी दूब सावधानी से काट कर मालियों ने सब्ज मखमली फर्श का नमूना दिखला दिया है, आंखों को क्या ही तरावट दे रही है। देखिये उसी के चारों तरफ सजे हुए गमलों में खुशरंग पत्तों वाले छोटे छोटे जंगली पौधे अपने हुस्न और जमाल के घमंड में कैसे ऐंठे जाते हैं। हर एक

रविशों और क्यारियों के किनारे गुलमेंहदी के पेड़ ठीक पल्टनों की कतार की तरह खड़े दिखाई देते हैं, क्योंकि छुटपने ही से उनकी फैली हुई डालियां काट कर मालियों ने मनमानी सूरतें बना डाली हैं। कहने ही को सूरजमुखी का फूल सूर्य की तरफ घूमा रहता है मगर नहीं यहां तो देखिये सामने सूर्यमुखी के कितने ही पेड़ लगे हैं जिनके बड़े बड़े फूल अस्त होते हुए दिवाकर की तरफ पीठ किए हसरत भरी निगाहों से देखती हुई उस हसीन नाजनीन के अलौकिक रूप की छटा देख रहे हैं जो इस बाग के बीचोबीच बने हुए कमरे की छत पर खड़ी उसी तरफ देख रही है जिधर सूर्य भगवान अस्त होते दिख रहे हैं। उधर ही से बाग में आने का रास्ता है, मालूम होता है किसी आने वाले की राह देख रही है, तभी तो सूर्य की किरणों को सह कर भी एक टक उधर ही ध्यान लगाये है।

इस कमसिन परीजमाल का चेहरा पसीने से भर गया मगर किसी आने वाले की सूरत न देख पड़ी। घबरा कर बायें हाथ अर्थात् दक्खिन तरफ मुड़ी और उस बनावटी छोटे से पहाड़ को देख कर दिल बहलाना चाहा जिसमें रंग बिरंग के खुशनुमा पत्तों वाले करोटन कौलियस बरबिना बिगूनिया मौस इत्यादि पहाड़ों पर के छोटे छोटे पौधे बहुत ही कारीगरी से लगाये हुए थे. और बीच में मौके मौके से घुमा फिरा कर पेड़ों को तरी पहुँचाने और पहाड़ी की खूबसूरती को बढ़ाने के लिए नहर काटी हुई थी, ऊपर ढांचा खड़ा करके निहायत खूबसूरत रेशमी जाल इसलिए डाला हुआ था कि हर तरह की बोलियों से दिल खुश करने वाली उन रंग बिरंगी नाजुक चिड़ियों के उड़ जाने का खौफ न रहे जो उनके अन्दर छोड़ी हुई हैं और इस समय शाम होते देख अपने घोसलों में जो पत्तों के गुच्छों में बनाए हैं जा बैठने के लिए उतावली हो रही हैं।

हाय इस पहाड़ी की खूबसूरती से भी उसका परेशान और किसी की जुदाई में व्याकुल दिल न बहला, लाचार छत के ऊपर की तरफ खड़ी हो उन तरह तरह के नक्शों वाली क्यारियों को देख अपने घबड़ाये हुए दिल को फुसलाना चाहा, जिनमें नीले पीले हरे लाल चौरंगे नाजुक मौसमी फूलों के छोटे छोटे तख्ते सजाये हुए थे जिनके देखने से बेशकीमत गालीचे का गुमान हो रहा था और उसी के बीच में एक चक्करदार फौवारा छूट रहा था जिसके बारीक धारों का जाल दूर दूर तक फैल रहा था। रंग बिरंगी तितलियां उड़ उड़ कर उन रंगीन फूलों पर इस तरह बैठती थीं कि फूलों में और उनमें बिल्कुल फर्क नहीं मालूम पड़ता था जब तक कि वे फिर से उड़ कर किसी दूसरे फूलों के गुच्छों पर न जा बैठतीं।

इन फूलों और फौवारों के छीटों ने भी उसके मन की कली न खिलाई,

लाचार वह पूरब तरफ आई और अपनी उन सखियों की कारंवाई देखने लगी जो चुन चुन कर खुशबूदार फूलों के गजरों और गुच्छों के बनाने में अपने नाजुक हाथों को तकलीफ दे रही थीं। कोई अंगूर की टट्टियों में घुस कर लाल पके हुए अंगूरों की ताक में थी, कोई पके हुए आम तोड़ने की धुन में उन पेड़ों की डालियों तक लग्घे पहुँचा रही थी जिनके नीचे चारो तरफ गड़हे खुदवा कर इसलिए जल से भरवा दिये गये थे कि पेड़ से गिरे हुए आम चुटीलें न होने पावें।

अब सूर्य की लालिमा बिल्कुल जाती रही और धीरे धीरे अंधेरा होने लगा। वह बेचारी किसी तरह अपने दिल को न बहला सकी बल्कि अंधेरे में बाग के चारो तरफ के बड़े बड़े पेड़ोंकी सूरत डरावनी मालूम होने लगी, दिल की धड़कन बढ़ती हो गई, लाचार वह छत के नीचे उतर आई और एक सजे सजाये कमरे में चली गई।

इस कमरे की सजावट मुख्तसर ही थी, एक झाड़ और दस बारह हांडियां छत से लटक रही थीं, चारो तरफ दुशाखी दीवारगीरों में मोमबत्तियां जल रही थीं, जमीन पर फर्श बिछा हुआ था और एक तरफ गद्दी लगी हुई थी जिसके आगे दो फर्शी झाड़ अपनी चमक दमक दिखा रहे थे, उनके बगल ही में एक मसहरी थी जिस पर थोड़े से खुशबूदार फूल और दो तीन गजरे दिखाई दे रहे थे। अच्छे अच्छे कपड़ों और गहनों से दिमागदार बनी हुई दस बारह कमसिन छोकरियां भी इधर उधर घूम घूम कर ताकों (आलों) पर रक्खे हुए गुलदस्तों में फूलों के गुच्छे सजा रही थीं।

वह नाजनीन जिसका नाम किशोरी था कमरे में आई मगर गद्दी पर न बैठ कर मसहरी पर जा लेटी और आंचल से मुँह ढांप न मालूम क्या सोचने लगी। उन्हीं छोकरियों में से एक पंखा झलने लगी, बाकी अपने मालिक को उदास देख सुस्त खड़ी हो गईं मगर निगाहें सभी की मसहरी की तरफ ही थीं।

थोड़ी देर तक इस कमरे में सन्नाटा रहा, इसके बाद किसी आने वाले की आहट मालूम हुई। सभी की निगाह सदर दरवाजे की तरफ घूम गई, किशोरी ने भी मुँह फेरा और उसी तरफ देखने लगी। एक नौजवान लड़का सिपाहियाना ठाठ से कमरे में आ पहुँचा जिसे देखते ही किशोरी घबरा कर उठ बैठी और बोली—

"कमला, मैं कब से राह देख रही हूँ! तैंने इतने दिन क्यों लगाये?"

पाठक समझ गये होंगे कि यह सिपाहियाना ठाठ से आने वाला नौजवान लड़का असल में मर्द नहीं है बल्कि कमला के नाम से पुकारी जाने वाली कोई ऐयारा है।

कमला०। यही सोच के मैं चली आई कि तुम घबरा रही होगी नहीं तो दो दिन का काम और था।

किशोरी०। क्या अभी पूरा हाल मालूम नहीं हुआ ?

कमला०। नहीं।

किशोरी०। चुनार में तो हलचल खूब मची होगी !

कमला०। इसका क्या पूछना है ! मुझे भी जो कुछ थोड़ा बहुत हाल मिला वह चुनार ही में।

किशोरी०। अच्छा क्या मालूम हुआ ?

कमला०। बूढ़े सौदागर की सूरत बन जब मैं तुम्हारी तस्वीर जड़ी अंगूठी दे आई उसी समय से उनकी सूरत शक्ल, बातचीत और चालढाल में फर्क पड़ गया, दूसरे दिन मेरी (सौदागर की) बहुत खोज की गई।

किशोरी०। इसमें कोई शक नहीं कि मेरी आह ने अपना असर किया ! हां फिर क्या हुआ ?

कमला०। उसके दूसरे या तीसरे दिन उन्हें उदास देख आनन्दसिंह किश्ती पर हवा खिलाने ले गये, साथ में एक बूढ़ा नौकर भी था। वहाव की तरफ कोस डेढ़ कोस जाने के बाद किनारे के जंगल से गाने बजाने की आवाज आई, उन्होंने किश्ती किनारे लगाई और उतर कर देखने लगे। वहां तुम्हारी सूरत बन माधवी ने पहिले ही जाल फैला रक्खा था, यहां तक कि उसने अपना मतलब साध लिया और न मालूम किस ढंग से उन्हें लेकर गायब हो गई। उस बूढ़े नौकर की जुबानी जो उनके साथ गया था मालूम हुआ कि माधवी के साथ कई औरतें भी थीं जो इन दोनों भाइयों को देखते ही भागीं। आनन्दसिंह उन औरतों के पीछे लपके लेकिन वे भुलावा देकर निकल गईं और आनन्दसिंह ने लौट कर आने पर अपने भाई को भी न पाया, तब गंगा किनारे पहुँच डोंगी पर बैठे हुए खिदमतगार से सब हाल कहा।

किशोरी०। यह कैसे मालूम हुआ कि माधवी ने मेरी सूरत बन कर धोखा दिया ?

कमला०। लौटती समय जब मैं उस जंगल के कुछ इधर निकल आई जो अब बिलकुल साफ हो गया है, तो जमीन पर पड़ी हुई एक जड़ाऊ 'कंकनी' नजर आई। उठा कर देखा। मैं उस कंकनी को खूब पहिचानती थी, कई दफे माधवी के हाथ में देख चुकी थी, बस मुझे पूरा यकीन हो गया कि यह काम इसी का है, आखिर उसके घर पहुँची और उसकी हमजोलियों के बातचीत से निश्चय कर लिया।

किशोरी०। देखो रांड़ ने मेरे ही साथ दगाबाजी की !

कमला०। कैसी कुछ !

किशोरी०। तो इन्द्रजीतसिंह अब उसी के घर में होंगे !

कमला० । नहीं, अगर वहां होते तो क्या मैं इस तरह खाली लौट आती ?

किशोरी० । फिर उन्हें कहां रक्खा है !

कमला० । इसका पता नहीं लगा, मैंने चाहा था कि खोज लगाऊं मगर तुम्हारी तरफ खयाल करके दौड़ी आई ।

किशोरी० । (ऊंची सांस लेकर) हाय, उस शैतान की बच्ची ने मेरा ध्यान उनके दिल से निकाल दिया होगा !!

इतना कह किशोरी रोने लगी, यहां तक कि हिचकी बंध गई । कमला ने उसे बहुत समझाया और कसम खाकर कहा कि मैं अन्न उसी दिन खाऊंगी जिस दिन इन्द्रजीतसिंह को तुम्हारे पास ला बैठाऊंगी ।

पाठक इस बात के जानने की इच्छा रखते होंगे कि यह किशोरी कौन है ? इस का नाम हम पहिले लिख आये हैं और अब फिर कहे देते हैं कि यह महाराज शिवदत्त की लड़की है, मगर यह किसी दूसरे मौके से मालूम होगा कि किशोरी शिवदत्तगढ़ के बाहर क्यों कर दी गई या बापका घर छोड़ अपने ननिहाल में क्यों दिखाई देती है ।

थोड़ी देर सन्नाटा रहने बाद फिर किशोरी और कमला में बातचीत होने लगी ।

किशोरी० । कमला, तू अकेली क्या कर सकेगी ?

कमला० । मैं तो वह कर सकूंगी जो चपला और चम्पाके किये भी न हो सकेगा।

किशोरी० । तो क्या आज तू फिर जायगी ?

कमला० । हां जरूर जाऊंगी, मगर दो एक बातों का फैसला आज ही तुमसे कर लूंगी, नहीं तो पीछे बदनामी देने को तैयार होओगी ।

किशोरी० । बहिन, ऐसी क्या बात है जो मैं तुझी पर बदनामी देने पर उतारू हो जाऊंगी ? एक तू ही तो मेरी दुःख सुख की साथी है ।

कमला० । यह सब सच है, मगर आपुस का मामला बहुत टेढ़ा होता है ।

किशोरी० । खैर कुछ कह तो सही ?

कमला० । कुमार इन्द्रजीतसिंह को तुम चाहती हो, इसी सबब से उनके कुटुम्ब भर की भलाई तुम अपना धर्म समझती हो, मगर तुम्हारे पिता से और उस घराने से पूरा वैर बंध रहा है, ताज्जुब नहीं कि तुम्हारी और इन्द्रजीतसिंह की भलाई करते करते मेरे सबब से तुम्हारे पिता को तकलीफ पहुंचे, मगर ऐसा हुआ तो बेशक तुम्हें रंज होगा ?

किशोरी० । इन बातों को न सोच, मैंने तो उसी दिन अपने घर को इस्तीफा दे दिया जिस दिन पिता ने मुझे निकाल बाहर किया, अगर ननिहाल में मेरा ठिकाना न होता या मेरे नाना का उनको खौफ न होता तो शायद वे उसी दिन

मुझे वैकुण्ठ पहुँचा देते। अब मुझे उस घर से रत्ती भर मुहब्बत नहीं है। पर बहिन, तूने यह बड़ा काम किया कि उस दुष्टा को वहां से निकाल लाई और मेरे हवाले किया। जब मैं गम की मारी घबड़ा जाती हूँ तभी उस पर दिल का बुखार निकालती हूँ जिससे कुछ ढाढ़स हो जाती है।

कमला०। मुझे तो अभी तक उसके ऊपर गुस्सा निकालने का मौका ही न मिला, कहो तो आज चलते चलते मैं भी कुछ बुखार निकाल लूं ?

किशोरी०। क्या हर्ज है, जा ले आ।

कमला कमरे के बाहर चली गई। उसके पीछे आधे घंटे तक किशोरी को चुपचाप कुछ सोचने का मौका मिला। उसकी सहेलियां वहां मौजूद थीं मगर किसी को बोलने का हौसला नहीं पड़ा।

आधे घंटे बाद कमला एक कैदी औरत को लिए हुए फिर उस कमरे में दाखिल हुई।

इस औरत की उम्र तीस वर्ष से कम न होगी, चेहरे मोहरे और रंगत से दुरुस्त थी, कह सकते हैं कि अगर इसे अच्छे कपड़े और गहने पहिराये जायें तो बेशक हसीनों की पंक्ति में बैठाने लायक हो, पर न मालूम इसकी ऐसी दुर्दशा क्यों कर रक्खी है और किस कसूर पर कैदी बना डाला है।

इस औरत को देखते ही किशोरी का चेहरा लाल हो गया और मारे गुस्से के तमाम बदन थर थर कांपने लगा। कमला ने उसकी यह दशा देख अपने काम में जल्दी की और उन सहेलियों में से जो उस कमरे में मौजूद सब कुछ देख रही थीं एक की तरफ कुछ इशारा करके हाथ बढ़ाया। वह दूसरे कमरे में चली गई और एक बेंत लाकर उसने कमला के हाथ में दे दिया।

कई औरतों ने मिल कर उस कैदी औरत के हाथ पैर एक साथ ही मजबूत बांधे और उसे गेंद की तरह लुढ़का दिया।

यहां तक तो किशोरी चुपचाप देखती रही मगर जब कमला कमर कस कर खड़ी हो गई तो किशोरी का कोमल कलेजा दहल गया और इसके आगे जो कुछ होने वाला था देखने की ताब न लाकर वह दो सहेलियों को साथ ले कमरे के बाहर निकल बाग की रविशों पर टहलने लगी।

किशोरी चाहे बाहर चली गई मगर कमरे के अन्दर से आती हुई चिल्लाने की आवाज बराबर उसके कानों में पड़ती रही। थोड़ी देर बाद कमला किशोरी के पास पहुँची जो अभी तक बाग में टहल रही थी।

किशोरी०। कहो उसने कुछ बताया या नहीं ?

कमला० । कुछ नहीं, खैर कहां जाती है, आज नहीं कल, कल नहीं परसों, आखिर बतावेगी ही । अब मुझे रुखसत करो क्योंकि बहुत कुछ काम करना है !

किशोरी० । अच्छा जा, मैं भी अब घर जाती हूँ नहीं तो नानी इसी जगह पहुँच कर रंज होने लगेंगी । (कमला के गले मिल कर) देख अब मैं तेरे ही भरोसे पर जो रही हूँ !

कमला० । जब तक दम में दम है तब तक तेरे काम से बाहर नहीं हूँ ।

कमला वहां से रवाना हुई । उसके जाने के बाद किशोरी भी अपनी सखियों को साथ ले वहां से चली और थोड़ी ही दूर पर एक बड़ी हवेली के अन्दर जा पहुँची।

बारहवां बयान

अब हम आपको एक दूसरी सरजमीन में ले चल कर एक दूसरे ही रमणीक स्थान की सैर करा तथा इसके साथ ही साथ बड़े बड़े ताज्जुब के खेल और अद्‌भुत बातों को दिखा कर अपने किस्से का सिलसिला दुरुस्त किया चाहते हैं। मगर यहां एक जरूरी बात लिख देने की इच्छा होती है जिसके जानने से आगे चल कर आपको कुछ ज्यादे आनन्द मिलेगा ।

इस जगह बहुत सी अद्‌भुत बातों को पढ़ कर आप ऐसा न समझ लें कि यह तिलिस्म है और इसमें ऐसी बातें हुआ ही करती हैं, बल्कि उसे दुरुस्त और होने वाली समझ कर खूब गौर करें क्योंकि अभी यह पहिला ही हिस्सा है । इस सन्तति के चार हिस्सों में तो हम तिलिस्म का नाम भी न लेंगे, आगे चल कर देखा जायगा।

आप ध्यान कर लें कि एक अच्छे रमणीक स्थान में पहुँच कर सैर कर रहे हैं । यह जमीन जो लगभग हजार गज के चौड़ी और इतनी ही लम्बी होगी चारो तरफ की चार खूबसूरत पहाड़ियों से घिरी हुई है । बीच की सब्जी और गुलबूटों की बहार देखने ही लायक है । इस कुदरती बागीचे में जंगली फूलों के पेड़ ज्यादे दिखाई देते हैं, उन्हीं में मिले जुले गुलाबों के पेड़ भी बेशुमार हैं और कोई भी ऐसा नहीं कि जिसमें सुन्दर कलियां और फूल न दिखाई देते हों । बीच में बड़े बड़े तीन झरने भी खूबसूरती से बह रहे हैं । बरसात का मौसिम है, चारो तरफ से पहाड़ों पर से गिरा हुआ जल इन झरनों में जोश मार रहा है । पूरब तरफ पहाड़ी के नीचे पहुँच कर ये तीनों झरने एक हो गए हैं और अन्दाज से ज्यादे आया हुआ जल गड़हे में गिर कर न मालूम कहां निकल जाता है । यहां की आबहवा ऐसी उत्तम है कि अगर वर्षों का बीमार भी आवे तो दो दिन में तन्दुरुस्त हो जाय और यहां की सैर से कभी जी न घबराए ।

बीचोबीच में एक आलीशान इमारत बनी हुई है, मगर चाहे उसमें हर तरह

की सफाई क्यों न हो फिर भी किसी पुराने जमाने की मालूम होती है। उसी इमारत के सामने एक छोटी सी खूबसूरत बावली बनी हुई है जिसके चारो तरफ की जमीन कुछ ज्यादा खूबसूरत मालूम पड़ती है और फूल पत्ते भी मौके से लगाए हुए हैं।

यह इमारत सूनसान और उदास नहीं है, इसमें पन्द्रह बीस नौजवान खूबसूरत औरतों का डेरा है। देखिए इस शाम के सुहावने समय में वे सब घर से निकल कर चारो तरफ मैदान में घूम घूम कर जिन्दगी का मजा ले रही हैं। सभी खुश, सभी की मस्तानी चाल, सभी फूलों को तोड़ तोड़ कर आपस में गेंद-बाजी कर रही हैं। हमारे नौजवान नायक कुंअर इन्द्रजीतसिंह भी एक हसीन नाजनीन के हाथ में हाथ दिये बावली के पूरब तरफ टहल रहे हैं, बात बात में हंसी दिल्लगी-हो रही है, दीन दुनिया की सुध भूले हुए हैं।

लीजिए वे दोनों थक कर बावली के किनारे एक खूबसूरत संगमर्मर की चट्टान पर बैठ गये और बातचीत होने लगी—

इन्द्र०। माधवी, मेरा शक किसी तरह नहीं जाता। क्या सचमुच तुम वही हो जो उस दिन गंगा किनारे जंगल में झूला झूल रही थीं?

माधवी०। आप रोज मुझसे यही सवाल करते हैं और मैं कसम खाकर इसका जवाब दे चुकी हूं, मगर अफसोस कि मेरी बात पर विश्वास नहीं करते।

इन्द्र०। (अंगूठी की तरफ देख कर) इस तस्वीर से कुछ फर्क मालूम होता है।

माधवी०। यह दोष मुसौवर का है।

इन्द्र०। खैर जो हो फिर भी तुमने मुझे अपने वश में कर रक्खा है।

माधवी०। जी हां ठीक है, मुझसे मिलने का उद्योग तो आप ही ने किया था!

इन्द्र०। अगर मैं उद्योग न करता तो क्या तुम मुझे जबर्दस्ती ले आतीं?

माधवी०। खैर जाने दीजिए, मैं कबूल करती हूं कि आपने मेरे ऊपर एहसान किया, बस!

इन्द्र०। (हंस कर) बेशक तुम्हारे ऊपर अहसान किया कि दिल और जान तुम्हारे हवाले किये।

माधवी०। (शर्मा कर और सिर नीचा करके) बस रहने दीजिये, ज्यादे सफाई न दीजिये!

इन्द्र०। अच्छा इन बातों को छोड़ो और अपने वादे को याद करो? आज कौन दिन है? बस आज तुम्हारा पूरा हाल सुने बिना न मानूंगा चाहे जो हो, मगर देखो फिर उन भारी कसमों की याद दिलाता हूं जो मैं कई दफे तुम्हें दे चुका, मुझसे झूठ कभी न बोलना नहीं तो अफसोस करोगी।

माधवी० । (कुछ देर तक सोच कर) अच्छा आज भर मुझे और माफ कीजिए, आपसे बढ़ कर मैं दुनिया में किसी को नहीं समझती और आप ही की शपथ खाकर कहती हूँ कि कल जो पूछेंगे सब ठीक ठीक कह दूँगी, कुछ न छिपाऊंगी। (आसमान की तरफ देख कर) अब समय हो गया, मुझे दो घण्टे की फुरसत दीजिये।

इन्द्र० । (लम्बी सांस लेकर) खैर कल ही सही, जाओ मगर दो घण्टे से ज्यादे न लगाना।

माधवी उठी और मकान के अन्दर चली गई। उसके जाने के बाद इन्द्रजीतसिंह अकेले रह गये और सोचने लगे कि यह माधवी कौन है? इसका कोई बड़ा बुजुर्ग भी है या नहीं! यह अपना हाल क्यों छिपाती है! सुबह शाम दो दो तीन तीन घण्टे के लिए कहां और किससे मिलने जाती है? इसमें तो कोई शक नहीं कि यह मुझसे मुहब्बत करती है मगर ताज्जुब है कि मुझे यहां क्यों कैद कर रक्खा है। चाहे यह सरज़मीन कैसी ही सुन्दर और दिल लुभाने वाली क्यों न हो, फिर भी मेरी तबीयत यहां से उचाट हो रही है। क्या करें कोई तर्कीब नहीं सूझती, बाहर का कोई रास्ता नहीं दिखाई देता, यह तो मुमकिन ही नहीं कि पहाड़ चढ़ कर कोई पार हो जाय, और यह भी दिल नहीं कबूल करता कि इसे किसी तरह रंजकरूं और अपना मतलब निकालूं, क्योंकि मैं अपनी जान इस पर न्यौछावर कर चुका हूँ।

ऐसी ऐसी बहुत सी बातों को सोचते इनका जी बेचैन हो गया, घबड़ा कर उठ खड़े हुए और इधर उधर टहल कर दिल बहलाने लगे। चश्मे का जल निहायत साफ था, बीच की छोटी छोटी खुशरंग कंकरियां और तेजी के साथ दौड़ती हुई मछलियां साफ दिखाई पड़ती थीं, इसी की कैफियत देखते किनारे किनारे जाकर दूर निकल गए और वहां पहुँचे जहां तीनों चश्मों का संगम हो गया था और अन्दाज से ज्यादा आया हुआ जल पहाड़ी के नीचे एक गड़हे में गिर रहा था।

एक बारीक आवाज इनके कान में आई। सर उठा कर पहाड़ की तरफ देखने लगे। ऊपर पन्द्रह बीस गज की दूरी पर एक औरत दिखाई पड़ी जिसे अब तक इन्होंने इस हाते के अन्दर कभी नहीं देखा था। उस औरत ने हाथ के इशारे से ठहरने के लिए कहा तथा ढोकों की आड़ में जहां तक बन पड़ा अपने को छिपाती हुई नीचे उतर आई और आड़ देकर इन्द्रजीतसिंह के पास इस तरह खड़ी हो गई जिसमें उन नौजवान छोकरियों में से कोई इसे देखने न पावे जो यहां की रहने वालियां चारो तरफ घूम कर चुहलबाजी में दिल बहला रही हैं और जिनका कुछ हाल हम ऊपर लिख आये हैं।

उस औरत ने एक लपेटा हुआ कागज इन्द्रजीतसिंह के हाथ में दिया। इन्होंने कुछ पूछना चाहा मगर उसने यह कह कर कुमार का मुंह बन्द कर दिया कि

'बस जो कुछ है इसी चीठी से आपको मालूम हो जायगा, मैं जुबानी कुछ कहा नहीं चाहती और न यहां ठहरने का मौका है, क्योंकि कोई देख लेगा तो हम आप दोनों ऐसी आफत में फंस जायंगे कि जिससे छुटकारा मुश्किल होगा। मैं उसी की लौंडी हूँ जिसने यह चीठी आपके पास भेजी है' !

उसकी बात का इन्द्रजीतसिंह क्या जवाब देंगे इसका इन्तजार न करके वह औरत पहाड़ी पर चढ़ गई और चालीस पचास हाथ जा एक गड़हे में घुस कर न मालूम कहां लोप हो गई। इन्द्रजीतसिंह ताज्जुब में आकर खड़े आधी घड़ी तक उस तरफ देखते रहे मगर फिर वह नजर न आई। लाचार इन्होंने कागज खोला और बड़े गौर से पढ़ने लगे, यह लिखा था :—

"हाय, मैंने तस्वीर बन कर अपने को आपके हाथ में सौंपा, मगर आपने मेरी कुछ भी खबर न ली, बल्कि एक दूसरी ही औरत के फन्दे में फंस गये जिसने मेरी सूरत बन आपको पूरा धोखा दिया। सच है, वह परीजमाल जब आपके बगल में बैठी है तो फिर मेरी सुध क्यों आने लगी !

"आपको मेरी ही कसम है, पढ़ने के बाद इस चीठी के इतने टुकड़े कर डालिये कि एक अक्षर भी दुरुस्त न बचने पावे।

आपकी दासी—किशोरी।"

इस चीठी के पढ़ते ही कुमार के कलेजे में एक धड़कन सी पैदा हुई। घबड़ा कर एक चट्टान पर बैठ गये और सोचने लगे—"मैंने पहिले ही कहा था कि इस तस्वीर से उसकी सूरत नहीं मिलती। चाहे यह कितनी ही हसीन और खूबसूरत क्यों न हो मगर मैंने तो अपने को उसी के हाथ बेच डाला है जिसकी तस्वीर खुशकिस्मती से अब तक मेरे हाथ में मौजूद है। तब क्या करना चाहिए ? यका-यक इससे तकरार करना भी मुनासिब नहीं। अगर यह इसी जगह मुझे छोड़ कर चली जाय और अपनी सहेलियों को भी लेती जाय तो मैं क्या करूंगा ? घबड़ा कर सिवाय प्राण दे देने के और क्या कर सकता हूँ, क्योंकि यहां से निकलने का रास्ता मालूम नहीं। यह भी नहीं हो सकता कि इन दोनों पहाड़ियों पर चढ़कर पार हो जाऊं, क्योंकि सिवाय ऊंची सीधी चट्टानों के चढ़ने लायक रास्ता कहीं भी नहीं मालूम पड़ता। खैर जो हो, आज मैं जरूर उसके दिल में कुछ खुटका पैदा करूंगा। नहीं नहीं आज भर और चुप रहना चाहिये, कल उसने अपना हाल कहने का वादा किया ही है आखिर कुछ न कुछ झूठ जरूर कहेगी, बस उसी समय टोकूंगा। एक बात और है। (कुछ रुक कर) अच्छा देखा जायगा। यह औरत जो मुझे चीठी दे गई है यहां किस तरह पहुँची ? (पहाड़ी की तरफ देख कर) जितनी

दूर ऊंचे उसे मैंने देखा था वहां तक तो चढ़ जाने का रास्ता मालूम होता है, शायद इतनी दूर तक लोगों की आमदरफ्त होती होगी। खैर ऊपर चल कर देखूं तो सही कि बाहर निकल जाने के लिये कोई सुरंग तो नहीं है।"

इन्द्रजीतसिंह उस पहाड़ी पर वहां तक चढ़ गये जहां वह औरत नजर पड़ी थी। ढूंढ़ने से एक सुरंग ऐसी नजर आई जिसमें आदमी बखूबी घुस सकता था। इन्हें विश्वास हो गया कि इसी राह से वह आई थी और वेशक हम भी इसी राह से वाहर हो जांयगे। खुशी खुशी उस सुरंग में घुसे। दस वारह कदम अंधेरे में गए होंगे कि पैर के नीचे जल मालूम पड़ा। ज्यों ज्यों आगे जाते थे जल ज्यादे जान पड़ता था, मगर यह भी हौसला किये बराबर चले ही गये। जब गले बरावर जल में जा पहुंचे और मालूम हुआ कि आगे ऊपर चट्टान जल के साथ मिली हुई है, तैर कर भी कोई नहीं जा सकता और रास्ता बिल्कुल नीचे की तरफ झुकता अर्थात ढालवां हो मिलता जाता है, लाचार होकर लौट आए मगर इन्हें विश्वास हो गया कि वह औरत जरूर इसी राह से आई थी क्योंकि उसे गीले कपड़े पहिने इन्होंने देखा भी था।

वे औरतें जो पहाड़ी के बीच वाले दिलचस्प मैदान में घूम रही थीं इन्द्रजीतसिंह को कहीं न देख घबरा गईं और दौड़ती हुई उस हवेली के अन्दर पहुंचीं जिसका जिक्र हम ऊपर कर आये हैं। तमाम मकान छान डाला, जब पता न लगा तो उन्हीं में से एक बोली, "बस अब सुरंग के पास चलना चाहिए, जरूर उसी जगह होंगे।" आखिर वे सब औरतें वहां पहुंचीं जहां सुरंग के बाहर निकल कर गीले कपड़े पहिरे इन्द्रजीतसिंह खड़े कुछ सोच रहे थे।

इन्द्रजीतसिंह को सोच विचार करते और सुरंग में आते जाते दो घण्टे लग गये। रात हो गई थी, चन्द्रमा पहिले ही से निकले हुए थे जिसकी चांदनी ने दिलचस्प जमीन में फैल कर अजाब समा जमा रक्खा था। दो घण्टे बीत जाने पर माधवी भी लौट आयी थी मगर उस मकान में या उसके चारो तरफ अपनी किसी लौंडी या सहेली को न देख घवरा गई और उस समय तो उसका कलेजा और भी दहलने लगा जब उसने देखा कि अभी तक घर में चिराग तक नहीं जला। उसने भी इधर उधर ढूंढना नापसन्द किया और सीधे उसी सुरंग के पास पहुंची। अपनी सब सखियों और लौंडियों को भी वहां पाया और यह भी देखा कि इन्द्रजीतसिंह गीले कपड़े पहिने सुरंग के मुहाने से नीचे की तरफ आ रहे हैं।

क्रोध में भरी माधवी ने अपनी सखियों कीतरफ देख कर धीरे से कहा, "लानत है तुम लोगों की गफलत पर। इसीलिए तुम हरामखोरनों को मैंने यहां रक्खा

था !" गुस्सा ज्यादा चढ़ आया था और होंठ कांप रहे थे इससे कुछ और ज्यादे न कह सकी, फिर भी इन्द्रजीतसिंह के नीचे आने तक बड़ी कोशिश से माधवी ने अपने गुस्से को पचाया और बनावटी तौर पर हंस कर इन्द्रजीतसिंह से पूछा, "क्या आप उस नहर के अन्दर गये थे ?"

इन्द्र० । हां ।

माधवी० । भला यह कौन सी नादानी थी ! न मालूम इसके अन्दर कितने कीड़े मकोड़े और बिच्छू होंगे । हम लोगों का तो डर के मारे कभी यहां खड़े होने का भी हौसला नहीं पड़ता ।

इन्द्र० । घूमते फिरते चश्मे का तमाशा देखते यहां तक आ पहुंचे, जी में आया कि देखें यह गुफा कितनी दूर तक चली गई है । जब अन्दर गये तो पानी में भींग कर लौटना पड़ा ।

माधवी० । खैर चलिए कपड़े बदलिए ।

कुंअर इन्द्रजीतसिंह का खयाल और भी मजबूत हो गया । वह सोचने लगे कि इस सुरंग में जरूर कोई भेद है, तभी तो ये सब घबड़ाई हुई यहां आ जमा हुईं ।

इन्द्रजीतसिंह आज तमाम रात सोच विचार में पड़े रहे । इनके रंग ढंग से माधवी का भी माथा ठनका और वह भी रात भर चारों तरफ खयाल दौड़ाती रही ।

तेरहवां बयान

दूसरे दिन खा पी कर निश्चिन्त होने बाद दोपहर को जब दोनों एकान्त में बैठे तो इन्द्रजीतसिंह ने माधवी से कहा—

"अब मुझसे सब्र नहीं हो सकता, आज तुम्हारा ठीक ठीक हाल सुने बिना कभी न मानूंगा और इससे बढ़ कर निश्चिन्ती का समय भी दूसरा न मिलेगा ।"

माधवी० । जी हां, आज मैं जरूर अपना हाल कहूँगी ।

इन्द्रजीत० । तो बस कह चलो, अब देर काहे की है ? पहिले यह बताओ कि तुम्हारे मां बाप कहां हैं और यह सरजमीन किस इलाके में है जिसके अन्दर मैं बेहोश करके लाया गया ?

माधवी० । यह इलाका गयाजी का है, यहां के राजा की मैं लड़की हूं, इस समय मैं खुद मालिक हूँ, मां बाप को मरे पांच वर्ष हो गये ।

इन्द्र० । ओफ ओह, तो मैं गयाजी के इलाके में आ पहुँचा ! (कुछ सोच कर) तो तुम मेरे लिए चुनार गई थीं ?

माधवी० । जी हां, मैं चुनार गई थी और यह अंगूठी जो आपके हाथ में है सौदागर की मार्फत मैंने ही आपके पास भेजी थी ।

इन्द्र० । हां ठीक है, तो मालूम पड़ता है किशोरी भी तुम्हारा ही नाम है।

किशोरी के नाम ने माधवी को चौंका दिया और घबराहट में डाल दिया। मालूम हुआ जैसे उसकी छाती में किसी ने बड़े जोर से मुक्का मारा हो। फौरन उसका खयाल उस सुरंग पर गया जिसके अन्दर से गीले कपड़े पहिरे हुए इन्द्रजीतसिंह निकले थे। वह सोचने लगी, "इनका उस सुरंग के अन्दर जाना बेसबब नहीं था, या तो कोई मेरा दुश्मन आ पहुँचा या फिर मेरी सखियों में से किसी ने भंडा फोड़ा।" इसी वक्त से इन्द्रजीतसिंह का खौफ भी उसके कलेजे में बैठ गया और वह इतना घबराई कि किसी तरह अपने को सम्हाल न सकी, बहाना करके उनके पास से उठ खड़ी हुई और बाहर दालान में जाकर टहलने लगी।

इन्द्रजीतसिंह भी चेहरे के चढ़ाव उतार से उसके चित्त का भाव समझ गये और बहाना करके बाहर जाती समय उसे रोकना मुनासिब न समझ कर चुप रहे।

आधे घण्टे तक माधवी उस दालान में टहलती रही, जब उसका जी कुछ ठिकाने हुआ तब उसने टहलना बन्द किया और एक दूसरे कमरे में चली गई जिसमें उसकी दो सखियों का डेरा था जिन्हें वह जान से ज्यादा मानती थी और जिनका बहुत कुछ भरोसा भी रखती थी। ये दोनों सखियां भी जिनका नाम ललिता और तिलोत्तमा था उसे बहुत चाहती थीं और ऐयारी विद्या को भी अच्छी तरह जानती थीं।

माधवी को कुसमय आते देख उसकी दोनों सखियां जो इस वक्त पलंग पर लेटी हुई कुछ बातें कर रही थीं घबरा कर उठ बैठीं और तिलोत्तमा ने आगे बढ़ कर पूछा, "बहिन क्या है जो इस वक्त यहां आई हो? तुम्हारे चेहरे पर तरद्दुद की निशानी पाई जाती है!"

माधवी० । क्या कहूँ बहिन, इस समय वह बात हुई है जिसकी कभी उम्मीद न थी!

ललिता० । सो क्या, कुछ कहो तो!

माधवी० । चलो बैठो कहती हूँ, इसीलिए तो आई हूँ।

बैठने के बाद कुछ देर तक तो माधवी चुप रही, इसके बाद इन्द्रजीतसिंह से जो कुछ बातचीत हुई थी कह कर बोली, "इसमें कोई शक नहीं कि किशोरी का कोई दूत यहां आ पहुँचा और उसी ने यह सब भेद खोला है। मैं तो उसी समय खटकी थी जब उनको गीले कपड़े पहिरे सुरंग के मुंह पर देखा था। बड़ी ही मुश्किल हुई, मैं इनको यहां से बाहर अपने महल में भी नहीं ले जा सकती, क्योंकि वह चाण्डाल सुनेगा तो पूरी दुर्गत कर डालेगा, और मैं उस पर किसी तरह का दबाव

भी नहीं डाल सकती क्योंकि राज्य का काम बिल्कुल उसी के हाथ में है, जब चाहे चौपट कर डाले ! जब राज्य ही नष्ट हुआ तो फिर यह सुख कहां ? अभी तक तो इन्द्रजीतसिंह का हाल उसे बिल्कुल नहीं मालूम है मगर अब क्या होगा सो नहीं कह सकती !"

माधवी घण्टे भर तक अपनी चालाक सखियों से राय मिलाती रही, आखिर जो कुछ करना था उसे निश्चय कर वहां से उठी और उस कमरे में पहुँची जिसमें इन्द्रजीतसिंह को छोड़ आई थी।

जब तक माधवी अपनी सखियों के साथ बैठी बात चीत करती रही तब तक हमारे इन्द्रजीतसिंह भी अपने ध्यान में डूबे रहे। अब माधवी के साथ उन्हें कैसा बर्ताव करना चाहिए और किस चालाकी से अपना पल्ला छुड़ाना चाहिए सो अब उन्होंने सोच लिया और उसी ढंग पर चलने लगे।

जब माधवी इन्द्रजीतसिंह के पास आई तो उन्होंने पूछा, "क्यों एकदम घबड़ा कर कहां चली गई थीं ?"

माधवी०। न मालूम क्यों जी मिचला गया था, इसीलिए दौड़ी चली गई। कुछ गरमी भी मालूम होने लगी, जाकर एक कै की तब होश ठिकाने हुए।

इन्द्र०। अब तबीयत कैसी है ?

माधवी०। अब तो अच्छी है।

इसके बाद इन्द्रजीतसिंह ने कुछ छेड़ छाड़ न की और हंसी खुशी में दिन बिता दिया, क्योंकि जो कुछ करना था वह तो दिल में था जाहिर में तकरार कर माधवी के दिल में शक पैदा करना मुनासिब न समझा।

माधवी का तो मामूल ही था कि वह शाम को चिराग जले बाद इन्द्रजीतसिंह से पूछ कर दो घन्टे के लिए न मालूम किस राह से कहीं जाया करती थी, आज भी अपने वक्त पर उसने जाने का इरादा किया और इन्द्रजीतसिंह ने छुट्टी मांगी।

इन्द्र०। न मालूम क्यों तुमसे कुछ ऐसी मोहब्बत हो गई है कि एक पल को भी आंखों के सामने से दूर जाने देने को जी नहीं चाहता, मुझे उम्मीद है कि तुम मेरी बात मान लोगी और कहीं जाने का इरादा न करोगी।

माधवी०। (खुश होकर) शुक्र है कि आपको मेरा इतना ध्यान है, अगर ऐसी मर्जी है तो मैं बहुत जल्द लौट आऊंगी !

इन्द्र०। आज तो नहीं जाने देंगे। अहा, देखो कैसी घटा उठी आ रही है, वाह इस समय भी तुम्हारे जी में कुछ रस नहीं पैदा होता !

इस समय इन्द्रजीतसिंह ने दो एक बातें जिस ढंग से माधवी से कीं इसके पहिले

नहीं की थीं इसलिए उसके जी की कली खिली जाती थी, मगर वह ऐसे फेर में पड़ी हुई थी कि जी ही जानता होगा, न तो इन्द्रजीतसिंह को नाखुश करना चाहती थी और न अपने मामूली काम में ही बाधा डालने की ताकत रखती थी। आखिर कुछ सोच विचार कर इस समय इन्द्रजीतसिंह का हुक्म मानना ही उसने मुनासिब समझा और हंसी खुशी में दिल बहलाया। आज चारपाई पर लेटे हुए इन्द्रजीतसिंह के पास रह कर उनको अपने जाल में फंसाने के लिए उसने क्या क्या काम किए इसे हम अपनी सीधी साधी लेखनी से लिखना पसन्द नहीं करते, हमारे मनचले पाठक बिना समझे भी न रहेंगे। माधवी को इस बात का बिल्कुल खयाल न था कि शादी होने पर ही किसी से हंसना-बोलना मुनासिब है। वह जी का आ जाना ही शादी समझती थी। चाहे वह अभी तक कुंआरी ही क्यों न हो मगर मेरा जी नहीं चाहता कि मैं उसे कुंआरी लिखूं, क्योंकि उसकी चाल चलन ठीक न थी। यह सभी कोई जानते हैं कि खराब चालचलन रहने का नतीजा बहुत बुरा होता है मगर माधवी के दिल में इसका गुमान भी न था।

इन्द्रजीतसिंह के रोकने से माधवी अपने मामूली तौर पर जहां वह रोज जाती थी आज न गई मगर इस सबब से आज उसका जी बेचैन था। आधी रात के बाद जब इन्द्रजीतसिंह गहरी नींद में सो रहे थे वह अपनी चारपाई से उठी और जहां रोज जाती थी चली गई, हां आने में उसे आज बहुत देर लगी। इसी बीच में इन्द्रजीतसिंह की आंख खुली और माधवी का पलंग खाली देख उन्हें निश्चय हो गया कि आज भी वह अपने मामूली ठिकाने पर जरूर गई।

वह कौन ऐसी जगह है जहां बिना गये माधवी का जी नहीं मानता और ऐसा करने से वह एक दिन भी अपने को क्यों नहीं रोक सकती? इसी सोच विचार में इन्द्रजीतसिंह को फिर नींद न आई और वह बराबर जागते ही रह गये। जब माधवी आई तब वह जाग रहे थे मगर इस तरह खुर्राटे लेने लगे कि माधवी को उनके जागते रहने का जरा सी गुमान न हुआ।

इसी सोच विचार और दांव घात में कई दिन बीत गये और इन्द्रजीतसिंह ने उसका शाम का जाना बिल्कुल रोक दिया। वह अब भी आधी रात को बराबर जाया करती और सुबह होने के पहिले ही लौट आती।

एक दिन रात को इन्द्रजीतसिंह खूब होशियार रहे और किसी तरह अपनी आंखों में नींद को न आने दिया, एक बारीक कपड़े से मुंह ढंके चारपाई पर लेटे धीरे धीरे खुर्राटे लेते रहे।

आधी रात के बाद माधवी अपने पलंग पर से उठी और धीरे धीरे इन्द्रजीत-

सिंह के पास आकर कुछ देर तक देखती रही। जब उसे निश्चय हो गया कि वह सो रहे हैं तब उसने अपने आंचल के साथ बंधी तालो से एक आलमारी खोली और उसमें से एक लम्बी चाभी निकाल फिर इन्द्रजीतसिंह के पास आई तथा कुछ देर तक खड़ी रह कर वह सो रहे हैं इस बात का निश्चय कर लिया। इसके बाद उसने वह शमादान गुलकर दिया जो एक तरफ खूबसूरत चौकीके ऊपर जल रहा था।

माधवी की यह सब कारंवाई इन्द्रजीतसिंह देख रहे थे। जब उसने शमादान गुल किया और कमरे के बाहर जाने लगी वह अपनी चारपाई से उठ खड़े हुए और दबे कदम तथा अपने को हर तरह से छिपाते हुए उसके पीछे रवाना हुए।

सोने वाले कमरे से बाहर निकल माधवी एक दूसरी कोठरी के पास पहुँची और उसी चाभी से जो उसने आलमारी में से निकालो थी उस कोठरी का ताला खोला मगर अन्दर जाकर फिर बन्द कर लिया। कुंअर इन्द्रजीतसिंह इससे ज्यादे कुछ न देख सके और अफसोस करते हुए उसी कमरे की तरफ लौटे जिसमें उनका पलंग था।

अभी कमरे के दर्वाजे तक पहुँचे भी न थे कि पीछे से किसी ने उनके मोढ़े पर हाथ रक्खा। वे चौंके और पीछे फिर कर देखने लगे। एक औरत नजर पड़ी मगर उसे किसी तरह पहिचान न सके। उस औरत ने हाथ के इशारे से उन्हें मैदान की तरफ चलने के लिए कहा और इन्द्रजीतसिंह भी बेखटके उसके पीछे मैदान में दूर तक चले गये। वह औरत एक जगह खड़ी हो गई और बोली, "क्या तुम मुझे पहिचान सकते हो ?" इसके जवाब में इन्द्रजीतसिंह ने कहा, "नहीं, तुम्हारी सी काली औरत तो आज तक मैंने देखी ही नहीं !"

समय अच्छा था, आसमान पर बादल के टुकड़े इधर उधर घूम रहे थे, चन्द्रमा निकला हुआ था जो कभी कभी बादलों में छिप जाता और थोड़ी ही देर में फिर साफ दिखाई देता था। वह औरत बहुत ही काली थी और उसके कपड़े भी गीले थे। इन्द्रजीतसिंह उसे पहिचान न सके, तब उसने अपना बाजू खोला और एक जख्म का दाग उन्हें दिखा कर फिर पूछा, "क्या अब भी तुम मुझे नहीं पहिचान सकते ?"

इन्द्र०। (खुश हो कर) क्या मैं तुम्हें चाची कह कर पुकार सकता हूँ ?

औरत०। हां बेशक पुकार सकते हो।

इन्द्र०। अब मेरी जान बची, अब मैं समझा कि यहां से निकल भागूंगा।

औरत०। अब तो तुम यहां से बखूबी निकल जा सकते हो क्योंकि जिस राह से माधवी जाती है वह तुमने देख हो लिया है और उस जगह को भी बखूबी जान गये होगे जहां वह ताली रखती है, मगर खाली निकल भागने में मजा नहीं है। मैं चाहती हूँ कि इसके साथ ही कुछ फायदा भी हो। आखिर मेरा यहां आना ही

किस काम का होगा और उस मेहनत का नतीजा भी क्या निकलेगा जो तुम्हारा पता लगाने के लिए हम लोगों ने की है ? सिवाय इसके तुम यह भी क्योंकर जान सकते हो कि माधवी कहां जाती है या क्या करती है ?

इन्द्र० । हां बेशक, इस तरह तो सिवाय निकल भागने के और कोई फ़ायदा नहीं हो सकता, फिर जो हुक्म करो मैं तैयार हूँ।

औरत० । जब माधवी उस राह से बाहर जाय तो उसके पीछे हो जाने से उसका सब हाल मालूम होगा और हमारा काम भी निकलेगा ।

इन्द्र० । मगर यह कैसे हो सकेगा ? वह तो कोठरी के अन्दर जाते ही ताला बन्द कर लेती है ।

औरत० । हां सो ठीक है, मगर तुमने देखा होगा कि उस दर्वाजे के बीचो-बीच में ताला जड़ा है जिसे खोल कर वह अन्दर गई और फिर उसी ताले को भीतर से बन्द कर लिया ।

इन्द्र० । मैंने अच्छी तरह ख़याल नहीं किया ।

औरत० । मैं बख़ूबी देख चुकी हूँ, उस ताले में बाहर भीतर दोनों तरफ से ताली लगती है ।

इन्द्र० । खैर इससे मतलब ?

औरत० । मतलब यही है कि अगर इसी तरह की एक ताली हमारे पास भी हो तो उसके पीछे जाने का अच्छा मौका मिले ।

इन्द्र० । अगर ऐसा हो तो क्या बात है !

औरत० । यह कोई बड़ी बात नहीं है, जहां वह ताली रखती है वह जगह तो तुम्हें मालूम ही होगी ?

इन्द्र० । हां मालूम हैं ।

औरत० । बस तो मुझे वह जगह बता दो और तुम आराम करो, मैं कल आकर उस ताली का सांचा ले जाऊंगी और परसों उसी तरह की दूसरी ताली बना लाऊंगी ।

जहां ताली रहती थी उस जगह का पता पूछ कर वह काली औरत चली गई और इन्द्रजीतसिंह अपने पलंग पर जा कर सो रहे ।

चौदहवां बयान

इन्द्रजीतसिंह ने दूसरे दिन पुनः मामूली समय पर माधवी को जाने न दिया, आधी रात तक हंसी दिल्लगी ही में काटी, इसके बाद दोनों अपने अपने पलंग पर सो रहे । कुमार को तो खुटका लगा ही हुआ था कि आज वह काली औरत

आवेगी इसलिए उन्हें नींद न आई, बारीक चादर से मुँह ढांके पड़े रहे, मगर माधवी थोड़ी ही देर में सो गई।

वह काली औरत भी अपने मौके पर आ पहुँची। पहिले तो उसने दर्वाजे पर खड़े होकर झांका, जब सन्नाटा मालूम हुआ अन्दर चली आई और दर्वाजा धीरे से बन्द कर लिया। इन्द्रजीतसिंह उठ बैठे। उसने अपने मुँह पर उंगली रख चुप रहने का इशारा किया और माधवी के पास पहुँच कर उसे देखा, मालूम हुआ कि वह अच्छी तरह सो रही है।

काली औरत ने अपने बटुए में से बेहोशी की बुकनी निकाली और धीरे से माधवी को सुंघा दिया। थोड़ी देर तक खड़ी रहने के बाद माधवी की नब्ज देखी, जब विश्वास हो गया कि वह बेहोश हो गई तब उसके आंचल से ताली खोल ली और आलमारी में से सुरंग (जिस राह से माधवी आती जाती थी) की ताली निकाल मोम पर उसका साँचा लिया और फिर उसी तरह ताली आलमारी में रख ताला बन्द कर आलमारी की ताली पुनः माधवी के आंचल में बांध इन्द्रजीतसिंह के पास आकर बोली, "मैं सांचा ले चुकी, अब जाती हूँ, कल दूसरी ताली बना कर लाऊंगी, तुम माधवी को रात भर इसी तरह बेहोश पड़ी रहने दो। आज वह अपने ठिकाने न जा सकी इसीलिए सवेरे देखना कैसा घबड़ाती है।"

सुबह को कुछ दिन चढ़े माधवी की आँख खुली, घबड़ा कर उठ बैठी। उसने अपने दिल का भाव बहुत कुछ छिपाया मगर उसके चेहरे पर बदहवासी बनी रही जिससे इन्द्रजीतसिंह समझ गये कि रात इसकी आंख न खुली और मामूली जगह पर न जा सकी इसका इसे बहुत रंज है। दूसरे दिन आधी रात बीतने पर इन्द्रजीतसिंह को सोता समझ माधवी अपने पलंग पर से उठी, शमादान बुझा कर आलमारी में से ताली निकाली और कमरे के बाहर हो उसी कोठरी के पास पहुँची, ताला खोल अन्दर गई और भीतर से फिर ताला बन्द कर लिया। इन्द्रजीतसिंह भी छिपे हुए माधवी के साथ ही साथ कमरे के बाहर निकले थे, जब वह कोठरी के अन्दर चली गई तो यह इधर उधर देखने लगे, उस काली औरत को भी पास ही मौजूद पाया।

माधवी के जाने के आधी घड़ी बाद काली औरत ने उसी नई ताली से कोठरी का दर्वाजा खोला जो बमूजिब सांचे के आज वह बना कर लाई थी। इन्द्रजीतसिंह को साथ ले अन्दर जाकर फिर वह ताला बन्द कर दिया। भीतर बिल्कुल अंधेरा था इसलिए काली औरत को अपने बटुए से सामान निकाल मोमबत्ती जलानी पड़ी जिससे मालूम हुआ कि इस छोटी सी कोठरी में केवल बीस पचीस सीढ़ियां

नीचे उतरने के लिए बनी हैं, अगर विना रोशनी किये ये दोनों आगे बढ़ते तो बेशक नीचे गिर कर अपने सर मुंह या पैर से हाथ धोते।

दोनों नीचे उतरे, वहां एक बन्द दर्वाजा और मिला, वह भी उसी ताली से खुल गया। अब एक बहुत लम्बी सुरंग में दूर तक जाने की नौबत पहुँची। गौर करने से साफ मालूम होता था कि यह सुरंग पहाड़ी के नीचे नीचे तैयार की गई है, क्योंकि चारो तरफ सिवाय पत्थर के ईंट चूना या लकड़ी दिखाई नहीं पड़ती थी। यह सुरंग अन्दाज में दो सौ गज लम्बी होगी। इसे तै करने के बाद फिर बन्द दरवाजा मिला। उसे खोलने पर यहां भी ऊपर चढ़ने के लिए वैसी ही सीढ़ियां मिलीं जैसे शुरू में पहिली कोठरी खोलने पर मिली थीं। काली औरत समझ गई कि अब यह सुरंग खतम हो गई और इस कोठरी का दर्वाजा खुलने से हम लोग जरूर किसी मकान या कमरे में पहुँचेंगे, इसलिए उसने कोठरी को अच्छी तरह देख भाल कर मोमवत्ती गुल कर दी।

हम ऊपर लिख आये हैं और फिर याद दिलाते हैं कि सुरंग में जितने दर्वाजे हैं सभी में इसी किस्म के ताले लगे हैं जिनमें बाहर भीतर दोनों तरफ से ताली लगती है, इस हिसाब से ताला लगाने का सूराख इस पार से उस पार तक ठहरा, अगर दर्वाजे के उस तरफ अंधेरा न हो तो उस सूराख में आंख लगा कर उधर की चीज बखूबी देखने में आ सकती है।

जब काली औरत मोमबत्ती गुल कर चुकी तो उसी ताली के सूराख से आती हुई एक बारीक रोशनी कोठरी के अन्दर मालूम पड़ी। उस ऐयारा ने सूराख में आंख लगा कर देखा। एक बहुत बड़ा आलीशान कमरा बड़े तकल्लुफ से सजा हुआ नजर पड़ा, उसी कमरे में वेशकीमत मसहरी पर एक अधेड़ आदमी के पास बैठी कुछ बातचीत और हंसी दिल्लगी करती हुई माधवी भी दिखाई पड़ी। अब विश्वास हो गया कि इसी से मिलने के लिए माधवी रोज आया करती है। इस मर्द में किसी तरह की खूबसूरती न थी तिस पर भी माधवी न मालूम इसकी किस खूबी पर जी जान से मर रही थी और यहां आने में अगर इन्द्रजीतसिंह विघ्न डालते थे तो क्यों इतना परेशान हो जाती थी।

उस काली औरत ने इन्द्रजीतसिंह को भी उधर का हाल देखने के लिए कहा। कुमार बहुत देर तक देखते रहे। उन दोनों में क्या बातचीत हो रही थी सो तो मालूम न हुआ मगर उनके हाव भाव में मुहब्बत की निशानी पाई जाती थी। थोड़ी देर के बाद दोनों पलंग पर सो रहे। उसी समय कुँअर इन्द्रजीतसिंह ने चाहा कि ताला खोल कर उस कमरे में पहुँचें और उन दोनों नालायकों को कुछ सजा

दें मगर काली औरत ने ऐसा करने से उन्हें रोका और कहा, "खबरदार, ऐसा इरादा भी न करना नहीं तो हमारा बना बनाया खेल बिगड़ जायगा और बड़े बड़े हौसलों के पहाड़ मिट्टी में मिल जायेंगे, बस इस समय सिवाय वापस चलने के और कुछ मुनासिब नहीं है।"

काली औरत ने जो कुछ कहा लाचार इन्द्रजीतसिंह को मानना और वहां से लौटना ही पड़ा। उसी तरह ताला खोलते और बन्द करते बराबर चले आये और उस कमरे के दर्वाजे पर पहुंचे जिसमें इन्द्रजीतसिंह सोया करते थे। कमरे के अन्दर न जाकर काली औरत इन्द्रजीतसिंह को मैदान में ले गई और नहर के किनारे एक पत्थर की चट्टान पर बैठने के बाद दोनों में यों बातचीत होने लगी :—

इन्द्र०। तुमने उस कमरे में जाने से व्यर्थ ही मुझे रोक दिया।

औरत०। ऐसा करने से क्या फायदा होता! यह कोई गरीब कंगाल का घर नहीं है बल्कि ऐसे की अमलदारी है जिसके यहां हजारों बहादुर और एक से एक लड़ाके मौजूद हैं, क्या बिना गिरफ्तार हुए तुम निकल जाते! कभी नहीं। तुम्हारा यह सोचना भी ठीक नहीं है कि जिस राह से मैं आती जाती हूं उसी राह से तुम भी इस सरजमीन के बाहर हो जाओगे क्योंकि वह राह सिर्फ हमीं लोगों के आने जाने लायक है, तुम उससे किसी तरह नहीं जा सकते, फिर जान बूझ कर अपने को आफत में फंसाना कौन बुद्धिमानी थी।

इन्द्र०। क्या जिस राह से तुम आती जाती हो उससे मैं नहीं जा सकता?

औरत०। कभी नहीं, इसका खयाल भी न करना।

इन्द्र०। सो क्यों?

औरत०। इसका सबब भी जल्दी ही मालूम हो जाएगा।

इन्द्र०। खैर तो अब क्या करना चाहिए?

औरत०। अब तुम्हें सब्र करके दस पन्द्रह दिन और इसी जगह रहना मुनासिब है।

इन्द्र०। अब मैं किस तरह उस बदकारा के साथ रह सकूंगा।

औरत०। जिस तरह भी हो सके!

इन्द्र०। खैर फिर इसके बाद क्या होगा?

औरत०। इसके बाद यह होगा कि तुम सहज ही में सिर्फ इस खोह के बाहर ही न हो जाओगे बल्कि एकदम से यहां का राज्य ही तुम्हारे कब्जे में आ जाएगा।

इन्द्र०। क्या वह कोई राजा था जिसके पास माधवी बैठी थी!

औरत०। नहीं, यह राज्य माधवी का है और वह इसका दीवान था।

इन्द्र०। माधवी तो अपने राज्य को कुछ भी नहीं देखती!

औरत०। अगर वह इस लायक होती तो दीवान की खुशामद क्यों करती!

इन्द्र०। इस हिसाब से तो दीवान ही को राजा कहना चाहिए।

औरत०। बेशक!

इन्द्र०। खैर, अब तुम क्या करोगी?

औरत०। इसके बताने की अभी कोई जरूरत नहीं, दस बारह दिन बाद मैं तुमसे मिलूंगी और जो कुछ इतने दिनों में कर सकूंगी उसका हाल कहूँगी, बस अब मैं जाती हूँ, दिल को जिस तरह हो सके सम्हालो और माधवी पर किसी तरह यह मत जाहिर होने दो कि उसका भेद तुम पर खुल गया या तुम उससे कुछ रंज हो, इसके बाद देखना कि इतना बड़ा राज्य कैसे सहज ही में हाथ लगता है जिसका मिलना हजारों सिर कटने पर भी मुश्किल है।

इन्द्र०। खैर यह तमाशा भी जरूर ही देखने लायक होगा।

औरत०। अगर बन पड़ा तो इस वादे के बीच में एक दो दफे आकर तुम्हारी सुध ले जाऊंगी।

इन्द्र०। जहां तक हो सके जरूर आना।

इसके बाद वह काली औरत चली गई और इन्द्रजीतसिंह अपने कमरे में आकर सो रहे।

पाठक समझते होंगे कि इस काली औरत या इन्द्रजीतसिंह ने जो कुछ किया या कहा सुना किसी को मालूम नहीं हुआ, मगर नहीं वह भेद उसी वक्त खुल गया और काली औरत के काम में बाधा डालने वाला भी कोई पैदा हो गया बल्कि उसने उसी वक्त से छिपे छिपे अपनी कार्रवाई भी शुरू कर दी जिसका हाल माधवी तक को मालूम न हो सका।

पन्द्रहवां बयान

अब इस जगह थोड़ा सा हाल इस राज्य का और साथ ही इसके माधवी का भी लिख देना जरूरी है।

किशोरी की मां अर्थात् शिवदत्त की रानी दो बहिनें थीं। एक जिसका नाम कलावती था शिवदत्त के साथ ब्याही थी, और दूसरी मायावती गया के राजा चन्द्रदत्त से ब्याही थी। इसी मायावती की लड़की यह माधवी थी जिसका हाल हम ऊपर लिख आये हैं।

माधवी को दो वर्ष की छोड़ कर उसकी मां मर गई थी, मगर माधवी का बाप चन्द्रदत्त होशियार होने पर माधवी को गद्दी देकर मरा था। अब आप समझ गये होंगे कि माधवी और किशोरी दोनों आपुस में मौसेरी बहिनें थीं।

माधवी का बाप चन्द्रदत्त बहुत ही शौकीन और ऐयाश आदमी था। अपनी रानी को जान से ज्यादा मानता था, खास राजधानी गयाजी छोड़ कर प्रायः राजगृह में रहा करता था जो गया से दो मंजिल पर एक बड़ा भारी मशहूर तीर्थ है। यह दिलचस्प और खुशनुमा पहाड़ी उसे कुछ ऐसी भायी कि साल में दस महीने इसी जगह रहा करता। एक आलीशान मकान भी बनवा लिया। यह खुशनुमा और दिलचस्प जमीन जिसमें कुमार इन्द्रजीतसिंह बेबस पड़े हैं कुदरती तौर पर पहिले ही की बनी हुई थी मगर इसमें आने जाने का रास्ता और यह मकान चन्द्रदत्त ही ने बनवाया था।

माधवी के मां बाप दोनों ही शौकीन थे। माधवी को अच्छी शिक्षा देने का उन लोगों को जरा भी ध्यान न था। वह दिन रात लाड़ प्यार ही में पला करती थी और एक खूबसूरत और चंचल दाई की गोद में रह कर अच्छी बातों के बदले हावभाव हा सीखने में खुश रहती थी, इसी सबब से इसका मिजाज लड़कपन ही से खराब हो रहा था। बच्चों की तालीम पर यदि उनके मां बाप ध्यान न दे सकें तो मुनासिब है कि उन्हें किसी ज्यादे उम्र वाली और नेकचलन दाई की गोद में दे दें, मगर माधवी के मां बाप को इसका कुछ भी ख्याल न था और आखिर इसका नतीजा बहुत ही बुरा निकला।

माधवी के समय में इस राज्य में तीन आदमी मुखिया थे, बल्कि यों कहना चाहिए कि इस राज्य का आनन्द ये ही तीनों ले रहे थे और तीनों दोस्त एक-दिल हो रहे थे। इनमें से एक तो दीवान अग्निदत्त था, दूसरा कुबेरसिंह सेनापति, और तीसरा धर्मसिंह जो शहर की कोतवाली करता था।

अब हम अपने किस्से की तरफ झुकते हैं और उस तालाब पर पहुँचते हैं जिसमें एक नौजवान औरत को पकड़ने के लिए योगिनी और बनचरी कूदी थीं। आज इस तालाब पर हम अपने कई ऐयारों को देखते हैं जो आपुस में बातचीत और सलाह करके कोई भारी आफत मचाने की तर्कीब जमा रहे हैं।

पण्डित बद्रीनाथ भैरोसिंह और तारासिंह तालाब के ऊपर पत्थर के चबूतरे पर बैठे यों बातचीत कर रहे हैं :—

भैरो०। कुमार को वहां से निकाल ले आना तो कोई बड़ी बात नहीं है।

तारा०। मगर उन्हें भी तो कुछ सजा देना चाहिए जिनकी बदौलत कुमार इतने दिनों से तकलीफ उठा रहे हैं।

भैरो०। जरूर, बिना सजा दिए जी कब मानेगा।

बद्री०। जहां तक हम समझते हैं कल वाली राय बहुत अच्छी है।

भैरो०। उससे बढ़ कर कोई राय नहीं हो सकती, ये लोग भी क्या कहेंगे कि किसी से काम पड़ा था !

बद्री०। यहां तो बस ललिता और तिलोत्तमा ही शैतानी की जड़ हैं, सुनते हैं उनकी ऐयारी भी बहुत बढ़ी चढ़ी है।

तारा०। पहिले उन्हीं दोनों की खबर ली जाएगी।

भैरो०। नहीं नहीं इसकी कोई जरूरत नहीं। उन्हें गिरफ्तार किये बिना ही हमारा काम चल जायगा, व्यर्थ कई दिन बर्बाद करने का मौका नहीं है।

तारा०। हां यह ठीक है, हमें उसकी इतनी जरूरत भी नहीं है, और क्या ठिकाना जब तक हम लोग अपना काम करें तब तक वे चाची के फंदे में आ फंसें।

भैरो०। बेशक ऐसा ही होगा, क्योंकि उन्होंने कहा भी था कि तुम लोग इस काम को करो तब तक बन पड़ेगा तो मैं ललिता और तिलोत्तमा को भी फांस लूंगी।

बद्री०। खैर जो होगा देखा जाएगा, अब हम लोग अपने काम में क्यों देर कर रहे हैं ?

भैरो०। देर की जरूरत क्या है उठिए, हां पहिले अपना अपना शिकार बांट लीजिए।

बद्री०। दीवान साहब को मेरे लिए छोड़िये।

भैरो०। हां, आपका उनका वजन बराबर है, अच्छा मैं सेनापति की खबर लूंगा।

तारा०। तो वह चाण्डाल कोतवाल मेरे बांटे पड़ा ! खैर यही सही।

भैरो०। अच्छा अब यहां से चलो।

ये तीनों ऐयार वहां से उठे ही थे कि दाहिनी तरफ से छींक की आवाज आई।

बद्री०। धत्तेरे की, क्या तेरे छींकने का कोई दूसरा समय न था ?

तारा०। क्या आप छींक से डर गये ?

बद्री०। मैं छींक से नहीं डरा मगर छींकने वाले से जी खटकता है।

भैरो०। हमारे काम में विघ्न पड़ता दिखाई देता है।

बद्री०। इस दुष्ट को पकड़ा चाहिए, बेशक यह चुपके चुपके हमारी बातें सुनता रहा।

तारा०। छींक नहीं बदमाशी है !

बद्रीनाथ ने इधर उधर बहुत ढूंढ़ा मगर छींकने वाले का पता न लगा। लाचार तरद्दुद ही में तीनों वहां से रवाना हुए।

❀ पहिला भाग समाप्त ❀

३८ वां संस्करण] १९८१ ई० [२२०० प्रति

भारतजीवन प्रेस, वाराणसी।

* श्रीः *

चन्द्रकान्ता सन्तति

दूसरा भाग

पहिला बयान

घण्टा भर दिन बाकी है। किशोरी अपने उसी बाग में जिसका कुछ हाल ऊपर लिख चुके हैं कमरे की छत पर सात आठ सखियों के बीच में उदास तकिए के सहारे बैठी आसमान की तरफ देख रही है। सुगन्धित हवा के झोंके उसे खुश किया चाहते हैं मगर वह अपनी धुन में ऐसी उलझी हुई है कि दीन दुनिया की खबर नहीं है। आसमान पर पश्चिम की तरफ लालिमा छाई है। श्याम रंग के बादल ऊपर की तरफ उठ रहे हैं, जिनमें तरह तरह की सूरतें बात की बात में पैदा होती और देखते देखते बदल कर मिट जाती हैं। अभी यह बादल का टुकड़ा खण्ड पर्वत की तरह दिखाई देता था, अभी उसके ऊपर शेर की मूरत नजर आने लगी, लीजिए, शेर की गर्दन इतनी बढ़ी कि साफ ऊंट की शक्ल बन गई और लहमे भर में हाथी का रूप धर सूंड़ दिखाने लगी, उसी के पीछे हाथ में बन्दूक लिए एक सिपाही की शक्ल नजर आई लेकिन यह बन्दूक छोड़ने के पहिले खुद ही धूआं हो कर फैल गया।

बादलों की यह ऐयारी इस समय न मालूम कितने आदमी देख देख कर खुश होंगे होते मगर किशोरी के दिल की धड़कन इसे देख देख कर बढ़ती ही जाती है। कभी तो उसका सर पहाड़ सा भारी हो जाता है, कभी माधवी बाघिन की सूरत ध्यान में आती है, कभी बाकरअली शुतुरमुहार की बदमाशी याद आती है, कभी हाथ में बन्दूक लिए हर दम जान लेने को तैयार बाप की याद तड़पा देती है।

कमला को गए कई दिन हुए, आज तक वह लौट कर नहीं आई, इस सोच

ने किशोरी को और भी दुःखी कर रक्खा है। धीरे धीरे शाम हो गई, सखियां सब पास बैठी ही रहीं मगर सिवाय ठंडी ठंडी सांस लेने के किशोरी ने किसी से बातचीत न की और वे सब भी दम न मार सकीं।

कुछ रात जाते जाते बादल अच्छी तरह से घिर आये, आंधी भी चलने लगी। किशोरी छत पर से नीचे उतर आई और कमरे के अन्दर मसहरी पर जा लेटी, थोड़ी ही देर बाद कमरे के सदर दर्वाजे का पर्दा हटा और कमला अपनी असली सूरत में आती दिखाई पड़ी।

कमला के न आने से किशोरी उदास हो रही थी, उसे देखते ही पलंग पर से उठी, आगे बढ़ कर कमला को गले से लगा लिया और गद्दी पर अपने पास ला बैठाया, कुशल मंगल पूछने के बाद बातचीत होने लगी—

किशोरी०। कहो बहिन तुमने इतने दिनों में क्या क्या काम किया? उनसे मुलाकात भी हुई या नहीं?

कमला०। मुलाकात क्यों न होती? आखिर मैं गई थी किस लिए!

किशोरी०। कुछ मेरा हालचाल भी पूछते थे?

कमला०। तुम्हारे लिए तो जान देने को तैयार हैं क्या हाल चाल भी न पूछेंगे? बस दो ही एक दिन में तुमसे मुलाकात हुआ चाहती है।

किशोरी०। (खुश होकर) हां! तुम्हें मेरी ही कसम, मुझसे झूठ न बोलना!

कमला०। क्या तुम्हें विश्वास है कि मैं तुमसे झूठ बोलूंगी?

किशोरी०। नहीं नहीं, मैं ऐसा नहीं समझती हूं, लेकिन इस ख्याल से कहती हूं कि कहीं दिल्लगी न सूझी हो।

कमला०। ऐसा कभी मत सोचना।

किशोरी०। खैर यह कहो माधवी की कैद से उन्हें छुट्टी मिली या नहीं और अगर मिली तो क्योंकर?

कमला०। इन्द्रजीतसिह को माधवी ने उसी पहाड़ी के बीच वाले मकान में रक्खा था जिसमें पार साल मुझे और तुम्हें दोनों की आंखों में पट्टी बांध कर ले गई थी।

किशोरी०। बड़े बेढब ठिकाने छिपा रक्खा था।

कमला०। मगर वहां भी उनके ऐयार लोग पहुंच गये!

किशोरी०। भला वे लोग क्यों न पहुंचेंगे, हां तब क्या हुआ?

कमला०। (किशोरी की सखियों और लौंडियों की तरफ देख के) तुम लोग जाओ अपना काम करो।

किशोरी० । हां, अभी काम नहीं है, फिर बुलावेंगे तो आना ।

सखियों और लौंड़ियों के चले जाने पर कमला ने देर तक बातचीत करने के बाद कहा—

"माधवी का और अग्निदत्त दीवान का हाल भी चालाकी से इन्द्रजीतसिंह ने जान लिया, आजकल उनके कई ऐयार वहां पहुंचे हुए हैं, ताज्जुब नहीं कि दस पांच दिन में वे लोग उस राज्य ही को गारत कर डालें ।"

किशोरी० । मगर तुम तो कहती हो कि इन्द्रजीतसिंह वहां से छूट गये !

कमला० । हां, इन्द्रजीतसिंह तो वहां से छूट गये मगर उनके ऐयारों ने अभी तक माधवी का पीछा नहीं छोड़ा, इन्द्रजीतसिंह के छुड़ाने का बन्दोबस्त तो उनके ऐयारों ही ने किया था मगर आखीर में मेरे ही हाथ से उन्हें छुट्टी मिली । मैं उन्हें चुनार पहुंचा कर तब यहां आई हूं और जो कुछ मेरी जुबानी उन्होंने तुम्हें कहला भेजा है उसे कहना तथा उनकी बात मानना ही मुनासिब समझती हूं ।

किशोरी० । उन्होंने क्या कहा है ?

कमला० । यों तो वे मेरे सामने बहुत कुछ बक गये मगर असल मतलब उनका यही है कि तुम चुपचाप चुनार उनके पास बहुत जल्द पहुंच जाओ ।

किशोरी० । (देर तक सोच कर) मैं तो अभी चुनार जाने को तैयार हूं मगर इसमें बड़ी हंसाई होगी ।

कमला० । अगर तुम हंसाई का ख्याल करोगी तो बस हो चुका, क्योंकि तुम्हारे मां बाप इन्द्रजीतसिंह के पूरे दुश्मन हो रहे हैं, जो तुम चाहती हो उसे वे खुशी से कभी मन्जूर न करेंगे । आखिर जब तुम अपने मन की करोगी तभी लोग हंसेंगे, ऐसा ही है तो इन्द्रजीतसिंह का ध्यान दिलसे दूर करो या फिर बदनामीकबूलकरो।

किशोरी० । तुम सच कहती हो, एक न एक दिन बदनामी होनी ही है क्योंकि इन्द्रजीतसिंह को मैं किसी तरह भूल नहीं सकती । आखिर तुम्हारी क्या राय है ?

कमला० । सखी, मैं तो यही कहूंगी कि अगर तुम इन्द्रजीतसिंह को नहीं भूल सकतीं तो उनसे मिलने के लिये इससे बढ़कर कोई दूसरा मौका तुम्हें न मिलेगा । चुनार में जाकर बैठ रहोगी तो कोई भी तुम्हारा कुछ बिगाड़ न सकेगा, आज कौन ऐसा है जो महाराज बीरेन्द्रसिंह से मुकाबला करने का साहस रखता हो ? तुम्हारे पिता अगर ऐसा करते हैं तो यह उनकी भूल है । आज सुरेन्द्रसिंह के खान्दान का सितारा बड़ी तेजी से आस्मान पर चमक रहा है और उनसे दुश्मनी का दावा करना अपने को मिट्टी में मिला देना है ।

किशोरी० । ठीक है, मगर इस तरह वहां चले जाने से इन्द्रजीतसिंह के बड़े लोग कब खुश होंगे ?

कमला० । नहीं नहीं ऐसा मत सोचो, क्योंकि तुम्हारी और इन्द्रजीतसिंह की मुहब्बत का हाल वहां किसी से छिपा नहीं है। सभी लोग जानते हैं कि इन्द्रजीतसिंह तुम्हारे बिना जी नहीं सकते, फिर उन लोगों को इन्द्रजीतसिंह की कितनी मुहब्बत है यह तुम खुद जानती हो, अस्तु ऐसी दशा में वे लोग तुम्हारे जाने से कब नाखुश हो सकते हैं । दूसरे, दुश्मन की लड़की अपने घर में आ जाने से वे लोग अपनी जीत समझेंगे । मुझे महारानी चन्द्रकान्ता ने खुद कहा था कि जिस तरह बने तुम समझा बुझा कर किशोरी को ले आओ, बल्कि उन्होंने अपनी खास सवारी का रथ और कई लौंडी गुलाम भी मेरे साथ भेजे हैं !

किशोरी ० । (चौंक कर) क्या उन लोगों को अपने साथ लाई हो !

कमला० । हां, जब महारानी चन्द्रकान्ता की इतनी मुहब्बत तुम पर देखी तभी तो मैं भी वहां चलने के लिये राय देती हूं ।

किशोरी० । अगर ऐसा है तो मैं किसी तरह रुक नहीं सकती, अभी तुम्हारे साथ चली चलूंगी, मगर देखो सखी तुम्हें बराबर मेरे साथ रहना पड़ेगा ।

कमला० । भला मैं कभी तुम्हारा साथ छोड़ सकती हूं !

किशोरी० । अच्छा तो यहां किसी से कुछ कहना सुनना तो है नहीं ?

कमला० । किसी से कुछ कहने की जरूरत नहीं, बल्कि तुम्हारी इन सखियों और लौंडियों को भी कुछ पता न लगना चाहिए जिनको मैंने इस समय यहां से हटा दिया है ।

किशोरी० । वह रथ कहां खड़ा है ?

कमला० । इसी बगल वाली आम की बारी में रथ और चुनार से आये हुए लौंडी गुलाम सब मौजूद हैं ।

किशोरी० । खैर चलो, देखा जायगा, राम मालिक हैं ।

किशोरी को साथ ले कमला चुपके से कमरे के बाहर निकली और पेड़ों में छिपती हुई बाग से निकल कर बहुत जल्द उस आम की बारी में जा पहुंची जिसमें रथ और लौंडी गुलामों के मौजूद रहने का पता दिया था। वहां किशोरी ने कई लौंडी गुलामों और उस रथ को भी मौजूद पाया जिसमें बहुत तेज चलने वाले ऊंचे काले रंग के नागौरी बैलों की जोड़ी जुती हुई थी। किशोरी और कमला दोनों सवार हुई और रथ तेजी के साथ रवाना हुआ ।

इधर घण्टा भर बीत जाने पर भी जब किशोरी ने अपनी सखियों और लौंडियों को आवाज न दी तब वे लाचार होकर बिना बुलाये उस कमरे में पहुंचीं जिसमें कमला और किशोरी को छोड़ गई थीं मगर वहां दोनों में से किसी को भी मौजूद न पाया। घबरा कर इधर उधर ढूंढ़ने लगीं, कहीं पता न चला। तमाम बाग छान डाला पर किसी की सूरत दिखाई न पड़ी। सभों में खलबली मच गई मगर क्या हो सकता था!

आधी रात तक कोलाहल मचा रहा। उसी समय कमला भी वहां आ मौजूद हुई। सभों ने उसे चारो तरफ से घेर लिया और पूछा, "हमारी किशोरी कहां हैं?"

कमला०। यह क्या मामला है जो तुम लोग इस तरह घबड़ा रही हो? क्या किशोरी कहीं चली गईं?

एक०। चली नहीं गईं तो कहां हैं! तुम उन्हें कहां छोड़ आईं?

कमला०। क्या किशोरी को मैं अपने साथ ले गई थी जो मुझसे पूछती हो? वह कब से गायब हैं?

एक०। पहर भर से तो हम लोग ढूंढ़ रही हैं! तुम दोनों इसी कमरे में बातें कर रही थीं, हम लोगों को हट जाने के लिए कहा, फिर न मालूम क्या हुआ कहां चली गईं।

कमला०। बस बस अब मैं समझ गई, तुम लोगों ने धोखा खाया, मैं तो अभी चली ही आती हूं। हाय, यह क्या हुआ! बेशक दुश्मन अपना काम कर गए और हम लोगों को आफत में डाल गए। हाय, अब मैं क्या करूं, कहां जाऊं, किससे पूछूं कि मेरी प्यारी किशोरी को कौन ले गया।

दूसरा बयान

किशोरी खुशी खुशी रथ पर सवार हुई और रथ तेजी से जाने लगा। वह कमला भी उसके साथ थी, इन्द्रजीतसिंह के विषय में तरह तरह की बातें कह कर उसका दिल बहलाती जाती थी। किशोरी भी बड़े प्रेम से उन बातों को सुनने में लीन हो रही थी। कभी सोचती कि जब इन्द्रजीतसिंह के सामने जाऊंगी तो किस तरह खड़ी होऊंगी क्या कहूंगी? अगर वे पूछ बैठेंगे कि तुम्हें किसने बुलाया तो क्या जवाब दूंगी? नहीं नहीं, वे ऐसा कभी न पूछेंगे क्योंकि मुझ पर प्रेम रखते हैं। मगर उनके घर की औरतें मुझे देख कर अपने दिल में क्या कहेंगी। वे जरूर समझेंगी कि किशोरी बड़ी बेहया औरत है। इसे अपनी इज्जत

और प्रतिष्ठा का कुछ भी ध्यान नहीं है। हाय, उस समय तो मेरी बड़ी ही दुर्गति होगी, जिन्दगी जंजाल हो जायगी, किसी को मुंह न दिखा सकूंगी ?

ऐसी ही बातों को सोचती, कभी खुश होती कभी इस तरह बेसमझे बूझे चल पड़ने पर अफसोस करती थी। कृष्ण पक्ष की सप्तमी थी, अंधेरे ही में रथ के बैल बराबर दौड़े जा रहे थे। चारो तरफ से घेर कर चलने वाले सवारों के घोड़ों के टापों की बढ़ती हुई आवाज दूर दूर तक फैल रही थी। किशोरी ने पूछा, "क्यों कमला, क्या लौंडियां भी घोड़ों ही पर सवार होकर साथ साथ चल रही हैं ?" जिसके जवाब में कमला सिर्फ 'जी हां' कह कर चुप हो रही।

अब रास्ता खराब और पथरीला आने लगा, पहियों के नीचे पत्थर के छोटे छोटे ढोंकों के पड़ने से रथ उछलने लगा, जिसकी धमक से किशोरी के नाजुक बदन में दर्द पैदा हुआ।

किशोरी०। ओफ ओह, अब तो बड़ी तकलीफ होने लगी।

कमला०। थोड़ी दूर तक रास्ता खराब है, आगे हम अच्छी सड़क पर जा पहुंचेंगे।

किशोरी०। मालूम होता है हम लोग सीधी और साफ सड़क छोड़ किसी दूसरी ही तरफ से जा रहे हैं।

कमला०। जी नहीं।

किशोरी०। नहीं क्या ? जरूर ऐसा ही है।

कमला०। अगर ऐसा भी है तो क्या बुरा हुआ ? हम लोगों की खोज में जो निकलें वे पा तो न सकेंगे।

किशोरी०। (कुछ सोच कर) खैर जो किया अच्छा किया, मगर रथ का पर्दा तो उठा जरा हवा लगे और इधर उधर की कैफियत देखने में आवे, रात का तो समय है।

लाचार होकर कमला ने रथ का पर्दा उठा दिया और किशोरी ताज्जुब भरी निगाहों से दोनों तरफ देखने लगी।

अब तक तो रात अंधेरी थी, मगर अब विधाता ने किशोरी को यह बताने के लिए कि देख तू किस बला में फंसी हुई है, तेरे रथ को चारो तरफ से घेर कर चलने वाले सवार कौन हैं, तू किस राह से जा रही है, यह पहाड़ी जंगल कैसा भयानक है—आसमान पर माहताबी जलाई। चन्द्रमा निकल आया और धीरे धीरे ऊंचा होने लगा जिसकी रोशनी में किशोरी ने कुल सामान देख लिए

और एकदम चौंक उठी। चारो तरफ की भयानक पहाड़ी और जंगल ने उसका कलेजा दहला दिया। उसने उन सवारों की तरफ अच्छी तरह देखा जो रथ घेरे हुए साथ साथ जा रहे थे। वह बखूबी समझ गई कि इन सवारों में, जैसा कि कहा गया था, कोई भी औरत नहीं सब मर्द ही हैं। उसे निश्चय हो गया कि वह आफत में फंस गई है और घबराहट में नीचे लिखे कई शब्द उसकी जुबान से निकल पड़े :—

"चुनार तो पूरब है, मैं दक्खिन तरफ क्यों जा रही हूं? इन सवारों में तो एक भी लौंडी नजर नहीं आती। बेशक मुझे धोखा दिया गया। मैं निश्चय कह सकती हूं कि मेरी प्यारी कमला कोई दूसरी ही है, अफसोस!"

रथ में बैठी हुई कमला किशोरी के मुंह से इन बातों को सुन कर होशियार हो गई और झट रथ के नीचे कूद पड़ी, साथ ही बहलवान ने भी बैलों को रोका और सवारों ने बहुत पास आकर रथ का घेर लिया।

कमला ने चिल्ला कर कुछ कहा जिसे किशोरी बिलकुल न समझ सकी, हां एक सवार घोड़े के नीचे उतर पड़ा और कमला उसी घोड़े पर सवार हो तेजी के साथ पीछे की तरफ लौट गई।

अब किशोरी को अपने धोखा खाने और आफत में फंस जाने का पूरा विश्वास हो गया और वह एक दम चिल्ला कर बेहोश हो गई।

तीसरा बयान

सुबह का सुहावना समय भी बड़ा ही मजेदार होता है। जबर्दस्त भी परले सिरे का है। क्या मजाल कि इसकी अमलदारी में कोई धूम तो मचावे, इसके आने की खबर दो घण्टे पहिले ही से हो जाती है। वह देखिए आसमान के जगमगाते हुए तारे कितनी बेचैनी और उदासी के साथ हसरत भरी निगाहों से जमीन की तरफ देख रहे हैं जिनकी सूरत और चलाचली की बेचैनी देख बागों की सुन्दर कलियों ने भी मुस्कुराना शुरू कर दिया है, अगर यही हालत रही तो सुबह होते तक जरूर खिलखिला कर हंस पड़ेंगी।

लीजिए अब दूसरा ही रंग बदला। प्रकृति की न मालूम किस ताकत ने आसमान की स्याही को धो डाला और इसकी हुकूमत की रात बीतते देख उदास तारों को भी विदा होने का हुक्म सुना दिया। इधर बेचैन तारों की घबराहट देख अपने हुस्न और जमाल पर भूली हुई खिलखिला कर हंसने वाली कलियों

को सुबह की ठण्डी ठण्डी हवा ने खूब ही आड़े हाथों लिया और मारे थपेड़ों के उनके उस बनाव को बिगाड़ना शुरू कर दिया जो दो ही घण्टे पहिले प्रकृति की किसी लौंडी ने दुरुस्त कर दिया था।

मोतियों से ज्यादे आबदार ओस की बूंदों को बिगाड़ते और हंसती हुई कलियों का शृंगार मिटते देख उनकी तरफदार खुशबू से न रहा गया, झट फूलों से अलग हो सुबह की ठण्डी हवा से उलझ पड़ीं और इधर उधर फैल धूम मचाना शुरू कर दिया। अपनी फरियाद सुनाने के लिए उन नौजवानों के दिमागों में घुस घुस कर उन्हें उठाने की फिक्र करने लगीं जो रात भर जाग जाग कर इस समय खूबसूरत पलंगड़ियों पर सुस्त पड़ रहे थे। जब उन्होंने कुछ न सुना और करवट बदल कर रह गये तो मालियों को जा घेरा। वे झट उठ बैठे और कमर कस कर उस जगह पहुंचे जहां फूलों और उमंग भरे हवा के झपेटों से कहा सुनी हो रही थी। कम्बख्त छोटे लोगों का यह दिमाग कहां कि ऐसों का फैसला करें, बस फूलों को तोड़ तोड़ कर चंगेर भरने लगे। चलो छुट्टी हुई, न रहे बांस न बाजे बांसुरी। क्या अच्छा झगड़ा मिटाया है! इसके बदले में वे बड़े बड़े दरख्त खुश हो हवा की मदद से झुक झुक कर मालियों को सलाम करने लगे जिनकी टहनियों में एक भी फूल दिखाई नहीं देता था। ऐसा क्यों न करें? उनमें था ही क्या जो दूसरों को महक देते, अपनी सूरत सभों को भाती है और अपना सा होते देख सभी खुश होते हैं।

लीजिए उन परीजमालों ने भी पलंग का पीछा छोड़ा और उठते ही आईने के मुकाबिल हो बैठीं जिनके बनाव को चाहने वालों ने रात भर में बिथोर कर रख दिया था। झटपट अपनी सम्बुली जुल्फों को सुलझा, माहताबी चेहरों को गुलाबजल से साफ कर, अलबेली चाल से अठखेलियां करती, चम्पई दुपट्टा संभालती, रविशों पर घूमने और फूलों के मुकाबिले में रुक रुक कर पूछने लगीं कि 'कहिये आप अच्छे या हम'? जब जवाब न पाया हाथ बढ़ा तोड़ लिया और बालियों में झुमकी की जगह रख आगे बढ़ीं। गुलाब की पटरी तक पहुंची थीं कि कांटों ने आंचल पकड़ा और इशारे से कहा, "जरा ठहर जाइए, आपके इस तरह लापरवाह जाने से उलझन होती है, और नहीं तो चार आंखें ही करते और आंसू पोंछते जाइए!"

जाने दीजिए ये सब घमण्डी हैं। हमें तो कुछ उन लोगों की कुलबुलाहट भली मालूम होती है जो सुबह होने के दो घण्टे पहिले ही उठ, हाथ मुंह धो, जरूरी कामों से छुट्टी पा बगल में धोती दबा गंगाजी की तरफ लपके जाते हैं और वहां पहुंच स्नान कर, भस्म का चन्दन लगा, पटरों पर बैठ संध्या करते

करते सुबह के सुहावने समय का आनन्द पतित पावनी श्रीगंगाजी की पाप-नाशिनी तरंगों से ले रहे हैं। इधर गुप्ती में घुसी उंगलियों ने प्रेमानन्द में मग्न मनराज की आज्ञा से गिरिजापति का नाम ले एक दाना पीछे हटाया और उधर तरनतारिनी भगवती जान्हवी की लहरें तख्तों ही से छू छू कर दस बीस जन्म का पाप बहा ले गईं। सुगन्धित हवा के झपेटे कहते फिरते हैं—"जरा ठहर जाइये, अर्घा न उठाइये, अभी भगवान् सूर्यदेव के दर्शन देर में होंगे, तब तक आप कमल के फूलों को खोल कर इस तरह पर श्रीगंगाजी को चढ़ाइये कि लड़ी टूटने न पावे, फिर देखिये देवता उसे खुद बखुद मालाकार बना देते हैं या नहीं !!"

ये सब तो सत्पुरुषों के काम हैं जो यहां भी आनन्द ले रहे हैं और वहां भी मजा लूटेंगे। आप जरा मेरे साथ चल कर उन दो दिलजलों की सूरत देखिये जो रात भर जागते और इधर उधर दौड़ते रहे हैं और सुबह के सुहावने समय में एक पहाड़ की चोटी पर चढ़ चारो तरफ देखते हुए सोच रहे हैं कि किधर जांय, क्या करें ? चाहे वे कितने ही बेचैन क्यों न हों मगर पहाड़ों से टक्कर खाते हुए सुबह की ठण्डी ठण्डी हवा के झोकों के डपटने और हिला कर जताने से उन छोटे छोटे जंगली फूलों के पौधों की तरफ नजर डाल ही देते हैं जो दूर तक कतार बांधे मस्ती से झूम रहे हैं, उन क्यारियों की तरफ ताक ही देते हैं जिनके फूल ओस के बोझ से तंग हो टहनियां छोड़ पत्थर के ढोकों का सहारा ले रहे हैं, उन साखू और शीशम के पत्तों की घनघनाहट सुन ही लेते हैं जो दक्खिन से आती हुई सुगन्धित हवा को रोक, रहे सहे जहर को चूस, गुनकारी बना उन तक आने का हुक्म देते हैं।

इन दो आदमियों में से एक तो लगभग बीस वर्ष की उम्र का बहादुर सिपाही है जो ढाल तलवार के इलावे हाथ में तीर कमान लिए बड़ी मुस्तैदी से खड़ा है, मगर दूसरे के बारे में हम कुछ नहीं कह सकते कि वह कौन या किस दर्जे और इज्जत का आदमी है। इसकी उम्र चाहे पचास से ज्यादे क्यों न हो मगर अभी तक इसके चेहरे पर बल का नाम निशान नहीं है, जवानों की तरह खूबसूरत चेहरा दमक रहा है, बेशकीमत पौशाक और हरबों की तरफ खयाल करने से तो यही कहने को जी चाहता है कि किसी फौज का सेनापति है, मगर नहीं, उसका रोआबदार और गम्भीर चेहरा इशारा करता है कि यह कोई बहुत ही ऊंचे दर्जे का है जो कुछ देर से खड़ा एकटक वायुकोण की तरफ देख रहा है।

सूर्य की किरणों के साथ ही साथ लाल वर्दी के बेशुमार फौजी आदमी उत्तर

से दक्खिन की तरफ जाते दिखाई पड़े जिससे इस बहादुर का चेहरा जोश में आक्र और भी दमक उठा और यह धीरे से बोला, "लो हमारी फौज भी आ पहुंची।"

थोड़ी ही देर में वह फौज इस पहाड़ी के नीचे आकर रुक गई जिस पर वे दोनों खड़े थे और एक आदमी पहाड़ के उपर चढ़ता हुआ दिखाई दिया जो बहुत जल्द इन दोनों के पास पहुंच कर सलाम कर खड़ा हो गया।

इस नये आये हुए आदमी की उम्र भी पचास से कम न होगी। इसके सर और मूंछों के बाल चौथाई सुफेद हो चुके थे। कद के साथ साथ खूबसूरत चेहरा भी कुछ लम्बा था। इसका रंग सिर्फ गोरा ही न था बल्कि अभी तक रगों में दौड़ती हुई खून की सुर्खी इसके गालों पर अच्छी तरह उभड़ रही थी, बड़ी बड़ी स्याह और जोश भरी आंखों में गुलाबी डोरियां बहुत भली मालूम होती थीं। इसकी पौशाक ज्यादे कीमत की या कामदार न थी, मगर कम दाम की भी न थी। उम्दे और मोटे स्याह मखमल की इतनी चुस्त थी कि उसके अंगों को सुडौली कपड़े के ऊपर से जाहिर हो रही थी। कमर में सिर्फ एक खंजर और लपेटा हुआ कमन्द दिखाई देता था, बगल में सुर्ख मखमल का एक बटुआ भी लटक रहा था।

पाठकों को ज्यादे देर तक हैरानी में न डाल कर साफ साफ कह देना ही पसन्द करते हैं कि यह तेजसिंह हैं और इनके पहिले पहुंचे हुए दोनों आदमियों में एक राजा बीरेन्द्रसिंह और दूसरे उनके छोटे लड़के कुंअर आनन्दसिंह हैं, जिनके लिए हमें ऊपर बहुत कुछ फजूल बक जाना पड़ा।

राजा बीरेन्द्रसिंह और तेजसिंह कुछ देर तक सलाह करते रहे, इसके बाद तीनों बहादुर पहाड़ी के नीचे उतर अपनी फौज में मिल गये और दिल खुश करने के सिवाय बहादुरों को जोश में भर देने वाले बाजे की आवाज के तालों पर एक साथ कदम रखती हुई वह फौज दक्खिन की तरफ रवाना हुई।

चौथा बयान

हम ऊपर लिख आये हैं कि माधवी के यहां तीन आदमी अर्थात् दीवान अग्निदत्त, कुबेरसिंह सेनापति और धर्मसिंह कोतवाल मुखिया थे और तीनों मिल कर माधवी के राज्य का आनन्द लेते थे।

इन तीनों में अग्निदत्त का दिन बहुत मजे में कटता था क्योंकि एक तो वह दीवान के मर्तबे पर था, दूसरे माधवी ऐसी खूबसूरत औरत उसे मिली थी।

कुवेरसिंह और धर्मसिंह इसके दिली दोस्त थे, मगर कभी कभी जब उन दोनों को माधवी का ध्यान आ जाता तो चित्त की वृत्ति बदल जाती और जी में कहते कि 'अफसोस, माधवो मुझे न मिली'!

पहिले इन दोनों को यह खबर न थी कि माधवी कैसी है। बहुत कहने सुनने से एक दिन दीवान साहब ने इन दोनों को माधवी को देखने का मौका दिया था। उसी दिन से इन दोनों ही के जी में माधवी की सूरत चुभ गई थी और उसके बारे में बहुत कुछ सोचा करते थे।

आज हम आधी रात के समय दीवान अग्निदत्त को अपने सुनसान कमरे में अकेले चारपाई पर लेटे किसी सोच में डूबे हुए देखते हैं। न मालूम वह क्या सोच रहा है या किस फिक्र में पड़ा है, हां एक दफे उसके मुंह से यह आवाज जरूर निकली—"कुछ समझ में नहीं आता! इसमें तो कोई सन्देह नहीं कि उसने अपना दिल खुश करने का कोई सामान वहां पैदा कर लिया है। तो मैं बेफिक्र क्यों बैठा हूं? खैर पहिले अपने दोस्तों से तो सलाह कर लूं।" यह कहने के साथ ही वह चारपाई से उठ बैठा और कमरे में धीरे धीरे टहलने लगा, आखिर उसने खूंटी से लटकती हुई अपनी तलवार उतार ली और मकान के नीचे उतर आया।

दर्वाजे पर बहुत से सिपाही पहरा दे रहे थे। दीवान साहब को कहीं जाने के लिए तैयार देख ये लोग भी साथ चलने को तैयार हुए, मगर दीवान साहब के मना करने से उन लोगों को लाचार हो उसी जगह अपने काम पर मुस्तैद रहना पड़ा।

अकेले दीवान साहब वहां से रवाना हुए और बहुत जल्द कुबेरसिंह सेनापति के मकान पर जा पहुंचे जो इनके यहां से थोड़ी ही दूर पर एक सुन्दर सजे हुए मकान में बड़े ठाठ के साथ रहता था।

दीवान साहब को विश्वास था कि इस समय सेनापति अपने ऐशमहल में आनन्द से सोता होगा, वहां से बुलवाना पड़ेगा, मगर नहीं दर्वाजे पर पहुंचते ही पहरे वालों से पूछने पर मालूम हुआ कि सेनापति साहब अभी तक अपने कमरे में बैठे हैं, बल्कि कोतवाल साहब भी इस समय उन्हीं के पास हैं।

अग्निदत्त यह सोचता हुआ ऊपर चढ़ गया कि आधी रात के समय कोतवाल यहां क्यों आया है और ये दोनों इस समय क्या सलाह विचार कर रहे हैं। कमरे में पहुंचते ही देखा कि सिर्फ वे ही दोनों एक गद्दी पर तकिये के सहारे लेटे हुए कुछ बात कर रहे हैं जो यकायक दीवान साहब को अन्दर पैर रखते देख उठ खड़े हुए और सलाम करने के बाद सेनापति साहब ने ताज्जुब में आकर पूछा—

"यह आधी रात के समय आप घर से क्यों निकले ?"

दीवान०। ऐसा ही मौका आ पड़ा, लाचार सलाह करने के लिए आप दो से मिलने की जरूरत हुई।

कोत०। आइए बैठिए, कुशल तो है ?

दीवान०। हां कुशल ही कुशल है, मगर कई खुटकों ने जी बेचैन क रक्खा है।

सेनापति०। सो क्या ? कुछ कहिए भी तो !

दीवान०। हां कहता हूं, इसीलिए तो आया हूं, मगर पहिले (कोतवाल की तरफ देख कर) आप तो कहिए इस समय यहां कैसे पहुंचे ?

कोत०। मैं तो यहां बहुत देरसे हूं, सेनापति साहब को विचित्र कहानी ने ऐसा उलझा रक्खा था कि बस क्या कहूं, हां आप अपना हाल कहिए जी बेचैन हो रहा है

दीवान०। मेरा कोई नया हाल नहीं है, केवल माधवी के विषय में कुछ सोचने विचारने आया हूं।

सेनापति०। माधवी के विषय में किस नये सोच ने आपको आ घेरा ? कुछ तकरार की नौबत तो नहीं आई !

दीवान०। तकरार की नौबत आई तो नहीं मगर आना चाहती है।

सेनापति०। सो क्यों ?

दीवान०। उसके रंग ढंग आज कल बेढब नजर आते हैं, तभी तो देखिए इस समय मैं यहां हूं, नहीं तो पहर रात के बाद क्या कोई मेरी सूरत देख सकता था?

कोत०। इधर तो कई दिन आप अपने मकान ही पर रहे हैं।

दीवान०। हां, इन दिनों वह अपने महल में कम आती है, उसी गुप्त पहाड़ी में रहती है, कभी कभी आधी रात के बाद आती है और मुझे उसकी राह देखनी पड़ती है।

कोत०। वहां उसका जी कैसे लगता है ?

दीवान०। यही तो ताज्जुब है, मैं सोचता हूं कि कोई मर्द वहां जरूर है क्योंकि वह कभी अकेले रहने वाली नहीं ?

दीवान०। पता लगाना चाहिए।

दीवान०। पता लगाने के उद्योग में मैं कई दिन से लगा हूं मगर कुछ हो न सका। जिस दर्वाजे को खोल कर वह आती जाती है उसकी ताली भी इसीलिए बनवाई कि धोखे में वहां तक जा पहुंचू, मगर काम न चला, क्योंकि जाती समय

अन्दर से वह न मालूम ताले में क्या कर जाती है कि चामी नहीं लगती।

कोतवाल०। तो दर्वाजा तोड़ के वहां पहुंचना चाहिए।

दीवान०। ऐसा करने से बड़ा फसाद मचेगा।

कोतवाल०। फसाद करके कोई क्या कर लेगा! राज्य तो हम तीनों की मुट्ठी में है?

इतने ही में बाहर किसी आदमी के पैर की चाप मालूम हुई। तीनों देर तक उसी तरफ देखते रहे मगर कोई न आया। कोतवाल यह कहता हुआ कि 'कहीं कोई छिप के बातें सुनता न हो' उठा और कमरे के बाहर जाकर इधर उधर देखने लगा, मगर किसी का पता न चला, लाचार फिर कमरे में चला आया और बोला, "कोई नहीं है, खाली धोखा हुआ।"

इस जगह विस्तार से यह लिखने की कोई जरूरत नहीं कि इन तीनों में क्या क्या बातचीत होती रही या इन लोगों ने कौन सी सलाह पक्की की, हां इतना कहना जरूरी है कि बातों ही बातों में इन तीनों ने रात बिता दी और सबेरा होते ही अपने अपने घर का रास्ता लिया।

दूसरे दिन पहर रात जाते जाते कोतवाल साहब के घर में एक विचित्र बात हुई। वे अपने कमरे में बैठे कचहरी के कुछ जरूरी कागजों को देख रहे थे कि इतने ही में शोरगुल की आवाज उनके कानों में आई। गौर करने से मालूम हुआ कि बाहर दर्वाजे पर लड़ाई हो रही है। कोतवाल साहब के सामने जो मोमी शमादान जल रहा था उसी के पास एक घण्टी पड़ी हुई थी, उठा कर बजाते ही एक खिदमतगार दौड़ा दौड़ा सामने आया और हाथ जोड़ कर खड़ा हो गया। कोतवाल साहब ने कहा, "दरियाफ्त करो बाहर कैसा कोलाहल मचा हुआ है?"

खिदमतगार दौड़ा बाहर गया और तुरत लौट कर बोला, "न मालूम कहां से दो आदमी आपुस में लड़ते हुए आये हैं, फरियाद करने के लिए बेधड़क भीतर धंसे आते थे। पहरे वालों ने रोका तो उन्हीं से झगड़ा करने लगे।

कोतवाल०। उन दोनों की सूरत शक्ल कैसी है?

खिद०। दोनों भले आदमी मालूम पड़ते हैं, अभी मूछें नहीं निकली हैं, बड़े ही खूबसूरत हैं, मगर खून से तर बतर हो रहे हैं।

कोत०। अच्छा कहो उन दोनों को हमारे सामने हाजिर करें।

हुक्म पाते ही खिदमतगार फिर बाहर गया और थोड़ी ही देर में कई सिपाही उन दोनों को लिए हुए कोतवाल के सामने हाजिर हुए। नौकर की बात बिल्कुल

सच निकली। वे दोनों कम उम्र और बहुत ही खूबसूरत थे, बदन पर लिबास भी बेशकीमत था, कोई हर्बा उनके पास न था मगर खून से उन दोनों का कपड़ा तर हो रहा था।

कोत०। तुम लोग आपस में क्यों लड़ते हो और हमारे आदमियों से फसाद करने पर उतारू क्यों हुए ?

एक०। (सलाम करके) हम दोनों भले आदमी हैं, सरकारी सिपाहियों ने बदजुबानी की, लाचार गुस्सा तो चढ़ा ही हुआ था, बिगड़ गई।

कोतवाल०। अच्छा इसका फैसला पीछे होता रहेगा, पहिले तुम यह कहो कि आपस में क्यों खूनखरावी कर बैठे और तुम दोनों का मकान कहां है।

दूसरा०। जी हम दोनों आपकी रैयत हैं और गयाजी में रहते हैं, दोनों सगे भाई हैं, एक औरत के पीछे लड़ाई हो रही है जिसका फैसला आपसे चाहते हैं, बाकी हाल इतने आदमियों के सामने कहना हम लोग पसन्द नहीं करते।

कोतवाल साहब ने सिर्फ उन दोनों को वहां रहने दिया बाकी सभों को वहां से हटा दिया, निराला होने पर फिर उन दोनों से लड़ाई का सबब पूछा।

एक०। हम दोनों भाई सरकार से कोई मौजा ठीका लेने के लिए यहां आ रहे थे। यहां से तीन कोस पर एक पहाड़ी है, कुछ दिन रहते ही हम दोनों वहां पहुंचे और थोड़ा सुस्ताने की नीयत से उतर पड़े, घोड़ों को चरने के लिए छोड़ दिया और एक पेड़ के नीचे पत्थर की चट्टान पर बैठ बातचीत करने लगे....

दूसरा०। (सिर हिला कर) नहीं कभी नहीं।

पहिला०। सरकार इसे हुक्म दीजिये कि चुप रहे, मैं कह लूं तो जो कुछ इसके जी में आये कहे।

कोत०। (दूसरे को डांट कर) बेशक ऐसा ही करना होगा!

दूसरा०। बहुत अच्छा।

पहिला०। थोड़ी ही देर बैठे थे कि पास ही किसी औरत के रोने की बारीक आवाज आई जिसके सुनने से कलेजा पानी हो गया।

दूसरा०। ठीक, बहुत ठीक।

कोत०। (लाल आंखें करके) क्यों जी, तुम फिर बोलते हो ?

दूसरा०। अच्छा अब न बोलूंगा!

पहिला०। हम दोनों उठ कर उसके पास गए। आह, ऐसी खूबसूरत औरत तो आज तक किसी ने न देखी होगी, बल्कि मैं जोर देकर कहता हूं कि दुनिया में

ऐसी खूबसूरत कोई दूसरी न होगी। वह अपने सामने एक तस्वीर को जो चौखटे में जड़ी हुई थी, रक्खे बैठी थी और उसे देख फूट फूट कर रो रही थी।

कोत०। वह तस्वीर किसकी थी, तुम पहिचानते हो ?

पहिला०। जी हां पहिचानता हूं, वह मेरी तस्वीर थी।

दूसरा०। झूठ झूठ, कभी नहीं, बेशक वह तस्वीर आपकी थी ! मैं इस समय बैठा उस तस्वीर से आपकी सूरत मिलान कर गया, बिल्कुल आपसे मिलती है इसमें कोई शक नहीं ! आप इसके हाथ में गंगाजल देकर पूछिये किसकी तस्वीर थी ?

कोत०। (ताज्जुब में आकर) क्या मेरी तस्वीर थी ?

दूसरा०। बेशक आपकी तस्वीर थी, आप इससे कसम देकर पूछिये तो सही।

कोत०। (पहिले से) क्यों जी, तुम्हारा भाई क्या कहता है ?

पहिला०। जी ई ई........

कोत०। (जोर से) कहो साफ साफ, सोचते क्या हो ?

पहिला०। जी बात तो यही ठीक है, आप ही की तस्वीर थी।

कोत०। फिर झूठ क्यों बोले ?

पहिला०। बस यही एक बात झूठ मुंह से निकल गई, अब कोई बात झूठ न कहूंगा, माफ कीजिये।

कोतवाल बचारा ताज्जुब में आकर सोचने लगा कि उस औरत को मुझसे क्योंकर मुहब्बत हो गई जिसकी खूबसूरती की ये लोग इतनी तारीफ कर रहे हैं ? थोड़ी देर बाद फिर पूछा—

कोत०। हां तो आगे क्या हुआ ?

पहिला०। (अपने भाई की तरफ इशारा करके) बस यह उस पर आशिक हो गया और उसे तंग करने लगा।

दूसरा०। यह भी उस पर आशिक होकर उसे छेड़ने लगा।

पहिला०। जी नहीं, उसने मुझे कबूल कर लिया और मुझसे शादी करने पर राजी पर हो गई बल्कि उसने यह भी कहा कि मैं दो दिन तक यहां रह कर तुम्हारा आसरा देखूंगी, अगर तुम पालकी लेकर आओगे तो तुम्हारे साथ चली चलूंगी।

दूसरा०। जी नहीं, यह बड़ा भारी झूठा है, जब यह उसकी खुशामद करने लगा तब उसने कहा कि मैं उसी के लिए जान देने को तैयार हूं जिसकी तस्वीर मेरे सामने है। जब इसने उसकी बात न सुनी तो उसने अपनी तलवार से इसे जख्मी किया और मुझसे बोली कि तुम जाकर मेरे दोस्त को जहां हो ढूंढ़ निकालो और

कह दो कि मैं तुम्हारे लिए वर्बाद हो गई अब भी तो सुध लो, जब मैंने इसे मना किया तो यह मुझसे झगड़ पड़ा। असल में यही लड़ाई का सबब हुआ।

पहिला०। जी नहीं, यह सन्देशा उसने मुझे दिया क्योंकि यही उसे दुःख दे रहा था।

दूसरा०। नहीं यह झूठ बोलता है।

पहिला०। नहीं यह झूठा है, मैं ठीक ठीक कहता हूं।

कोत०। अच्छा मुझे उस औरत के पास ले चलो, मैं खुद उससे पूंछ लूंगा कि कौन झूठा है और कौन सच्चा है।

पहिला०। क्या अभी तक वह उसी जगह होगी ?

दूसरा०। जरूर वहां होगी, यह बहाना करता है क्योंकि वहां जाने से यह झूठा साबित हो जाएगा।

पहिला०। (अपने भाई की तरफ देख कर) झूठा तू साबित होगा। अफसोस तो इतना ही है कि अब मुझे वहां का रास्ता भी याद नहीं।

दूसरा०। (पहिले की तरफ देख कर) आप रास्ता भूल गये तो क्या हुआ मुझे तो याद है, मैं जरूर आपको वहां ले चल कर झूठा साबित करूंगा। (कोतवाल साहब की तरफ देखकर) चलिए मैं आपको वहां ले चलता हूं।

कोत०। चलो।

कोतवाल साहब तो खुद बेचैन हो रहे थे और चाहते थे कि जहां तक हो वहां जल्द पहुंच कर देखना चाहिए कि वह औरत कैसी है जो मुझ पर आशिक हो तस्वीर सामने रख याद किया करती है। एक पिस्तौल भरी भराई कमर में रख उन दोनों भाइयों को साथ मकान के नीचे उतरे। उनको बाहर जाने के लिए मुस्तैद देख कई सिपाही साथ चलने को तैयार हुए। उन्होंने अपनी सवारी का घोड़ा मंगवाया और उस पर सवार हो सिर्फ अर्दली के दो सिपाही साथ ले उन दोनों भाइयों के पीछे पीछे रवाना हुए। दो घन्टे बराबर चले जाने के बाद एक छोटी सी पहाड़ी के नीचे पहुंच वे दोनों भाई रुके और कोतवाल साहब को घोड़े से उतरने के लिए कहा।

कोत०। क्या घोड़ा आगे नहीं जा सकता ?

पहिला०। घोड़ा आगे जा सकता है मगर मैं दूसरी ही बात सोच कर आपको उतरने के लिए कहता हूं।

कोत०। वह क्या ?

पहिला० । जिस औरत के पास आप आये हैं वह इसी जगह है, दो ही कदम आगे बढ़ने से आप उसे बखूबी देख सकते हैं, मगर मैं चाहता हूं कि सिवाय आपके ये दोनों प्यादे उसे देखने न पावें । इसके लिए मैं किसी तरह जोर नहीं दे सकता मगर इतना जरूर कहूंगा कि आप आगे बढ़ झांक कर उसे देख लें फिर अगर जी चाहे तो इन दोनों को भी साथ ले जांय, क्योंकि वह अपने को गया की रानी बताती है ।

कोत० । (ताज्जुब से) अपने को गया की रानी बताती है ?'

दूसरा० । जी हां ।

अब तो कोतवाल साहब के दिल में कोई दूसरा ही शक पैदा हुआ । वह तरह तरह की बातें सोचने लगे । "गया की रानी तो हमारी माधवी है, यह दूसरी कहां से पैदा हुई ? क्या वह माधवी तो नहीं है ? नहीं नहीं, वह भला यहां क्यों आने लगी ! उससे मुझसे क्या सम्बन्ध ? वह तो दीवान साहब की हो रही है । मगर वह आई भी हो तो कोई ताज्जुब नहीं, क्योंकि एक दिन हम तीनों दोस्त एक साथ महल में बैठे थे और रानी माधवी वहां पहुंच गई थी, मुझे खूब याद है कि उस दिन उसने मेरी तरफ वेढब तरह से देखा था और दीवान साहब की आंखें बचा घड़ी घड़ी देखती थी, शायद उसी दिन से मुझ पर आशिक हो गई हो ! हाय वह अनोखी चितवन कभी न भूलेगी ! अहा, अगर यहां वही हो, और मुझे विश्वास हो कि मुझसे प्रेम रखती है तो क्या बात है ! मैं ही राजा हो जाऊं और दीवान साहब को तो बात की बात में खपा डालूंगा ! मगर ऐसी किस्मत कहां ? खैर जो हो इनकी बात मान जरा झांक कर देखना तो जरूर चाहिए, शायद ईश्वर ने दिन फेरा ही हो !" ऐसी ऐसी बहुत सी बातें सोचते विचारते कोतवाल साहब घोड़े से उतर पड़े और उन दोनों भाइयों के कहे मुताबिक आगे बढ़े ।

यहां से पहाड़ियों का सिलसिला बहुत दूर तक चला गया था । जिस जगह कोतवाल साहब खड़े थे वहां दो पहाड़ियां इस तरह आपस में मिली हुई थीं कि बीच में कोसों तक लम्बी दरार मालूम पड़ती थी जिसके बीच में बहता हुआ पानी का चश्मा और दोनों तरफ छोटे छोटे दरख्त बहुत भले मालूम पड़ते थे । इधर उधर बहुत सी कन्दराओं पर निगाह पड़ने से यही विश्वास होता था कि ऋषियों और तपस्वियों के प्रेमी अगर यहां आवें तो अवश्य उनके दर्शन से अपना जन्म कृतार्थ कर सकेंगे ।

दरार के कोने पर पहुंच कर दोनों भाइयों ने कोतवाल साहब को बाईं तरफ झांकने के लिए कहा । कोतवाल साहब ने झांक कर देखा, साथ ही एक

दम चौंक पड़े और मारे खुशी के भरे हुए गले से चिल्ला कर बोले, "अहा हा, मेरी किस्मत जागी ! बेशक यह रानी माधवी ही तो है !"

पांचवां बयान

कमला को विश्वास हो गया कि किशोरी को कोई धोखा देकर ले भागा। वह उस बाग में बहुत देर तक न ठहरी, ऐयारी के सामान से दुरुस्त थी ही, एक लालटेन हाथ में लेकर वहां से चल पड़ी और बाग से बाहर हो चारो तरफ घूम घूम कर किसी ऐसे निशान को ढूंढ़ने लगी जिससे यह मालूम हो कि किशोरी किस सवारी पर यहां से गई है, मगर जब तक वह उस आम की बारी में न पहुंची तब तक सिवाय पैरों के चिन्ह के और किसी तरह का कोई निशान जमीन पर दिखाई न पड़ा।

बरसात का दिन था और जमीन अच्छी तरह पर नम हो गई थी इसलिए आम की बारी में घूम घूम कर कमला ने मालूम कर लिया कि किशोरी यहां से रथ पर सवार होकर गई है और उसके साथ में कई सवार भी हैं क्योंकि रथ के पहियों का दोहरा निशान और बैलों के खुर जमीन पर साफ मालूम पड़ते थे, इसी तरह घोड़ों के टापों के निशान भी अच्छी तरह दिखाई देते थे।

कमला कई कदम उस निशान की तरफ चली गयी जिधर रथ गया था और बहुत जल्द मालूम कर लिया कि किशोरी को ले जाने वाले किस तरफ गये हैं। इसके बाद वह पीछे लौटी और सीधे अस्तबल में पहुंच एक तेज घोड़े पर बहुत जल्द चारजामा कसने का हुक्म दिया।

कमला का हुक्म ऐसा न था कि कोई उससे इन्कार करता। घोड़ा बहुत जल्द कस कर तैयार किया गया और कमला उस पर सवार हो तेजी के साथ उस तरफ रवाना हुई जिधर रथ पर सवार होकर किशोरी के जाने का उसे विश्वास हो गया था।

पांच कोस बराबर चले जाने के बाद कमला एक चौराहे पर पहुंची जहां से बाएं तरफ का रास्ता चुनार को गया था, दाहिने तरफ की सड़क रीवां होते हुए गयाजी तक पहुंची थी, तथा सामने का रास्ता एक भयानक जंगल से होता हुआ कई तरफ को फूट गया था।

इस चौमुहानी पर पहुंच कर कमला रुकी और सोचने लगी कि किधर जाऊं। अगर चुनार वाले किशोरी को ले गये होंगे, तो इसी बाईं तरफ से गये होंगे और किशोरी की दुश्मन माधवी ने उसे फंसाया होगा तो रथ दाहिनी तरफ से गयाजी

को गया होगा, सामने की सड़क से रथ ले जाने वाला तो कोई ख्याल में नहीं आता क्योंकि यह जंगल का रास्ता बहुत ही खराब और पथरीला है।

चन्द्रमा निकल आया था और रोशनी अच्छी तरह फैल चुकी थी। कमला घोड़े से नीचे उतर बाईं और दाहिनी तरफ जमीन पर रथ के पहिये का दाग ढूंढ़ने लगी मगर कुछ मालूम न हुआ, लाचार घोड़े पर सवार हो सोचने लगी किधर जाऊं क्या करूं।

हम पहिले लिख आये हैं कि रथ पर जाते जाते जब किशोरी ने जान लिया कि वह धोखे में डाली गई है तब उसके मुंह से कई शब्द ऐसे निकले जिन्हें सुन नकली कमला होशियार हो गई और रथ के नीचे कूद एक घोड़े पर सवार हो पीछे की तरफ लौट गई।

लौटी हुई नकली कमला ठीक उसी समय घोड़ा दौड़ाती हुई उस चौराहे पर पहुंची जिस समय असली कमला वहां पहुंच कर सोच रही थी कि किधर जाऊं, क्या करूं ? असली कमला ने सामने से तेजी के साथ आते हुए एक सवार को देख घोड़ा रोकने के लिए ललकारा मगर वह क्यों रुकने लगी थी, हां उसे असली कमला के दाहिनी तरफ वाली राह पर जाने के लिये घूमना था इसलिए अपने घोड़े की तेजी उसे कम करनी ही पड़ी।

जब असली कमला ने देखा कि सामने से आया हुआ सवार उसके ललकारने से भी किसी तरह नहीं रुकता और दाहिनी सड़क से निकल जाया चाहता है तो झट कमर से दुनाली पिस्तौल निकाल उसने घोड़े पर वार किया। गोली लगते ही घोड़ा नकली कमला को लिए जमीन पर गिरा, मगर घोड़े के गिरते ही वह बहुत ही जल्द सम्हल कर उठ खड़ी हुई और उसने भी कमर से दुनाली पिस्तौल निकाल असली कमला पर गोली चलाई।

असली कमला तो पहिले ही सम्हली हुई थी, गोली की मार से बच गई, फिर दूसरी गोली आई पर वह भी न लगी। लाचार नकली कमला ने अपनी पिस्तौल फिर भरने का इरादा किया मगर असली कमला ने उसे यह मौका न दिया। दोनों गोली बेकार जाते देख वह समझ गयी कि उसकी पिस्तौल खाली हो गई है, हाथ में पिस्तौल लिए हुए झट उसके कल्ले पर पहुंच गई और ललकार कर बोली, "खबरदार जो पिस्तौल भरने का इरादा किया है, देख मेरी पिस्तौल में दूसरी गोली अभी मौजूद है !" नकली कमला भी यह सोच कर चुपचाप खड़ी रह गई कि अब वह अपने दुश्मन का कुछ नहीं बिगाड़ सकती क्योंकि पिस्तौल की दोनों

गोलियां बर्बाद हो चुकी थीं और घोड़ा उसका मर चुका था।

पिस्तौल के अलावे दोनों की कमर में खंजर भी था मगर उसकी जरूरत न पड़ी। असली कमला ने ललकार कर पूछा,"सच बता तू कौन है ?"

नकली कमला को जान दे देना कबूल था मगर अपने मुंह से यह बताना मंजूर न था कि वह कौन है। असली कमला ने यह देख अपने घोड़े का ऐसा चपेटा दिया कि वह किसी तरह सम्हल न सकी और जमीन पर गिर पड़ी। जब तक वह होशियार होकर उठना चाहे तब तक असली कमला झट घोड़े से कूद उसकी छाती पर सवार दिखाई देने लगी।

असली कमला ने जबर्दस्ती उसकी नाक में बेहोशी की दवा ठूंस दी और जब वह बेहोश हो गई तो उसकी छाती पर से उतर कर अलग खड़ी हो गई।

असली कमला जब उसकी छाती पर सवार हुई तो उसे अपनी ही सूरत का पाया, इसलिए समझ गई कि यह कोई ऐयार या ऐयारा है, सिवाय इसके किशोरी की सखियों की जुबानी उसने मालूम कर ही लिया था कि कोई उसी की सूरत का किशोरी को ले गया है, अब उसे विश्वास हो गया कि किशोरी को इसी ने धोखा दिया है।

थोड़ी देर बाद कमला ने अपने बटुए में से पानी भरी छोटी सी बोतल निकाली और नकली कमला का मुंह धोकर साफ किया, इसके बाद चकमक से आग निकाल बत्ती जला कर पहचानना चाहा कि वह कौन है मगर बिना ऐसा किए वह केवल चन्द्रमा की ही मदद से पहिचान ली गयी कि माधवी की सखी ललिता है, क्योंकि कमला उसे अच्छी तरह जानती थी और वर्षों साथ रहने के सिवाय बराबर मिला जुला भी करती थी।

कमला को विश्वास तो हो ही गया कि किशोरी को धोखा देकर ले जाने वाली यही ललिता है मगर इस बात का ताज्जुब बना ही रहा कि वह सामने से लौट कर आती हुई क्यों दिखाई पड़ी! कमला यह भी जानती थी कि चाहे जान चली जाय मगर ललिता असल भेद कभी न बतावेगी, इसलिए उसकी जुबानी पता लगाने का उद्योग करना उसने व्यर्थ समझा और अपने साथ ललिता को घोड़े पर लाद कर घर की तरफ पलट पड़ी।

रात बिल्कुल बीत चुकी थी बल्कि कुछ दिन निकल आया था जब ललिता को लादे हुए कमला घर पहुंची। यहां किशोरी के गायब होने से बड़ा ही हाहाकार मचा हुआ था। उसकी खोज में कई आदमी चारो तरफ जा चुके थे। किशोरी

का नाना रणधीरसिंह भारी जमींदार होने के सिवाय बड़ा ही दिमागदार और जबर्दस्त आदमी था। उसने यही समझ रक्खा था कि शिवदत्त के दुश्मन वीरेन्द्र-सिंह की तरफ से यह कारंवाई की गई है। मगर जब ललिता को लिए हुए कमला पहुंची और उसकी जुबानी सब हाल मालूम हुआ तब माधवी की बदमाशी पर बहुत बिगड़ा। वह माधवी की चाल चलन पर पहिले ही से रंज था मगर कुछ जोर न चलने से लाचार था। आज गुस्से के मारे इस बात का बिल्कुल ध्यान न रहा कि माधवी एक भारी राज्य की मालिक है और जबदंस्त फौज रखती है, उसने कमला के मुंह से सब हाल सुनते ही तलवार हाथ में ले कसम खा ली कि 'जिस तरह हो सकेगा अपने हाथ से माधवी का सिर काट कलेजा ठण्डा करूंगा'।

ललिता एक अंधेरी कोठरी में कैद की गई और रणधीरसिंह की आज्ञा पा कमला अपने बड़े भाई हरनामसिंह को साथ ले किशोरी की मदद को पैदल ही रवाना हुई।

कमला आज भी उसी कल वाले रास्ते पर रवाना हुई और दोपहर होते होते उसी चौराहे पर पहुंची जहां कल ललिता मिली थी। वे दोनों बेधड़क सामने वाली सड़क पर चले।

चौराहे के आगे लगभग तीन कोस चले जाने के बाद खराब और पथरीली राह मिली जिसे देख हरनामसिंह ने कहा, "इस राह से रथ ले जाने में जरूर तकलीफ हुई होगी।"

कमला०। बेशक ऐसा ही हुआ होगा, और मुझे तो अभी तक निश्चय ही नहीं हुआ कि किशोरी इसी राह से गई है।

हरनाम०। मगर मैं तो यही समझता हूं कि रथ इसी राह से गया और किशोरी का साथ छोड़ कोई दूसरी कार्रवाई करने के लिए ललिता लौटी थी।

कमला०। शायद ऐसा ही हो।

और थोड़ी दूर जाने के बाद पैर की एक पाजेब जमीन पर पड़ी हुई दिखाई दी। हरनामसिंह ने उसे देखते ही उठा लिया और कहा, "बेशक किशोरी इसी राह से गई है, इस पाजेब को मैं खूब पहिचानता हूं।"

कमला०। अब तो मुझे भी निश्चय हो गया कि किशोरी इधर ही से गई है।

हरनाम०। हां, जब उसे मालूम हो गया कि उसने धोखा खाया और दुश्मनों के फन्दे में पड़ गई तब उसने यह पाजेब चुपके से जमीन पर फेंक दी।

कमला०। इसलिए कि वह जानती थी कि उसकी खोज में बहुत से आदमी

निकलेंगे और इधर आकर इस पाजेब को देखेंगे तो जान जायेंगे कि किशोरी इधर ही गई है।

हरनाम०। मैं खयाल करता हूं कि आगे चल कर किशोरी की फेंकी हुई और भी कोई चीज हम लोग जरूर देखेंगे।

कमला०। बेशक ऐसा ही होगा।

कुछ आगे जाकर दूसरी पाजेब और उससे थोड़ी दूरी पर किशोरी के और कई गहने इन लोगों ने पाये। अब कमला को किशोरी के इसी राह से जाने का पूरा विश्वास हो गया और वे दोनों बेधड़क कदम बढ़ाते हुए राजगृह की तरफ रवाना हुए।

छठवां बयान

कुंअर इन्द्रजीतसिंह अभी तक उस रमणीक स्थान में विराज रहे हैं। चाहे जी कितना ही बेचैन क्यों न हो मगर उन्हें लाचार माधवी के साथ दिन काटना ही पड़ता है। खैर जो होगा देखा जायेगा मगर इस समय तो पहर दिन बाकी रहने पर भी कुंअर इन्द्रजीतसिंह कमरे के अन्दर सुनहले पावों की चारपाई पर आराम कर रहे हैं और एक लौंडी धीरे धीरे पंखा झल रही है। हम ठीक नहीं कह सकते कि उन्हें नींद दबाये हुए है या जान बूझ कर वहठियाये पड़े हैं और अपनी बदकिस्मती के जाल को सुलझाने की तरकीब सोच रहे हैं। खैर इन्हें इसी तरह पड़े रहने दीजिए और आप जरा तिलोत्तमा के कमरे में चल कर देखिए कि वह माधवी के साथ किस तरह की बातचीत कर रही है। माधवी का हंसता हुआ चेहरा कहे देता है कि बनिस्बत और दिनों के आज वह खुश है, मगर तिलोत्तमा के चेहरे से किसी तरह की खुशी नहीं मालूम होती।"

माधवी ने तिलोत्तमा का हाथ पकड़ कर कहा, "सखी, आज तुझे उतना खुश नहीं पाती हूं जितना मैं खुद हूं।"

तिलो०। तुम्हारा खुश होना बहुत ठीक है!

माधवी०। तो क्या तुम्हें इस बात की खुशी नहीं है कि किशोरी मेरे फन्दे में फंस गई और एक कैदी की तरह मेरे यहां तहखाने में बन्द है!

तिलो०। इस बात की तो मुझे भी खुशी है।

माधवी०। तो रंज किस बात का है? हां समझ गई, अभी तक ललिता के लौट कर न आने का बेशक तुम्हें दुःख होगा।

तिलो०। ठीक है, मैं ललिता के बारे में भी बहुत कुछ सोच रही हूं। मुझे

तो विश्वास हो गया है कि उसे कमला ने पकड़ लिया।

माधवी०। तो उसे छुड़ाने को फिक्र करना चाहिए।

तिलो०। मुझे इतनी फुरसत नहीं है कि उसे छुड़ाने के लिए जाऊं क्योंकि मेरे हाथ पैर किसी दूसरे ही तरद्दुद ने बेकार कर दिये हैं जिसकी तुम्हें जरा भी खबर नहीं, अगर खबर होती तो आज तुम्हें भी अपनी ही तरह उदास पाती।

तिलोत्तमा की इस बात ने माधवी को चौंका दिया और वह घबड़ा कर तिलोत्तमा का मुंह देखने लगी।

तिलो०। मुंह क्या देखती है, मैं झूठ नहीं कहती। तू तो अपने ऐश आराम में ऐसी मस्त हो रही है कि दीन दुनिया की खबर नहीं। तू जानती ही नहीं कि दो ही चार दिन में तुझ पर कैसी आफत आने वाली है। क्या तुझे विश्वास हो गया कि किशोरी तेरी कैद में रह जायगी, कुछ बाहर की भी खबर है कि क्या हो रहा है? क्या बदनामी ही उठाने के लिए तू गया का राज्य कर रही है? मैं पचास दफे तुझे समझा चुकी कि अपनी चालचलन को दुरुस्त कर मगर तैंने एक न सुनी, लाचार तुझे तेरी मर्जी पर छोड़ दिया और प्रेम के सबब तेरा हुक्म मानती आई मगर अब मेरे सम्हाले नहीं सम्हलता!

माधवी०। तिलोत्तमा, आज तुझे क्या हो गया है जो इतना कूद रही है? ऐसी कौन सी आफत आ गई है जिसने तुझे बदहवास कर दिया है? क्या तू नहीं जानती कि दीवान साहब इस राज्य का इन्तजाम कैसी अच्छी तरह कर रहे हैं और सेनापति तथा कोतवाल अपने काम में कितने होशियार हैं? क्या इन लोगों के रहते हमारे राज्य में कोई विघ्न डाल सकता है?

तिलो०। यह जरूर ठीक है कि इन तीनों के रहते कोई इस राज्य में विघ्न नहीं डाल सकता, लेकिन तुझे तो इन्हीं तीनों की खबर नहीं! कोतवाल साहब जहन्नुम में चले ही गये, दीवान साहब और सेनापति साहब भी आजकल में जाया चाहते हैं बल्कि चले भी गए हों तो ताज्जुब नहीं।

माधवी०। यह तू क्या कह रही है!

तिलो०। जी हां, मैं बहुत ठीक कहती हूं। बिना परिश्रम ही यह राज्य बीरेन्द्रसिंह का हुआ चाहता है। इसीलिए कहती थी कि इन्द्रजीतसिंह को अपने यहां मत फंसा, उनके एक एक ऐयार आफत के परकाले हैं। मैं कई दिनों से उन लोगों की कार्रवाई देख रही हूं। उन लोगों को छेड़ना ऐसा है जैसा आतिशबाजी की चरखी में आग लगा देना।

माधवी० । क्या बीरेन्द्रसिंह को पता लग गया कि उनका लड़का यहां कैद है।

तिलो० । पता नहीं लगा तो इसी तरह उनके ऐयार सब यहां पहुंच कर उधम मचा रहे हैं ?

माधवी० । तो तूने मुझे खबर क्यों न की ?

तिलो० । क्या खबर करती, तुझे इस खबर को सुनने की छुट्टी भी है!

माधवी० । तिलोत्तमा, ऐसी जली कटी बातों का कहना छोड़ दे और मुझे ठीक ठीक बता कि क्या हुआ और क्या हो रहा है ? सच पूछ तो मैं तेरे ही भरोसे कूद रही हूं। मैं खूब जानती हूं कि सिवाय तेरे मेरी रक्षा करने वाला कोई नहीं। मुझे विश्वास था कि इन चार पहाड़ियों के बीच में जब तक मैं हूं मुझ पर किसी तरह की आफत न आवेगी, मगर अब तेरी बातों से यह उम्मीद बिल्कुल जाती रही।

तिलो० । ठीक है, तुझे अब ऐसा भरोसा न रखना चाहिए। इसमें कोई शक नहीं कि मैं तेरे लिए जान देने को तैयार हूं, मगर तू ही बता कि बीरेन्द्रसिंह के ऐयारों के सामने मैं क्या कर सकती हूं, एक बेचारी ललिता मेरी मददगार थी, सो वह भी किशोरी को फंसाने में आप पकड़ी गई, अब अकेली मैं क्या क्या करूं?

माधवी० । तू सब कुछ कर सकती है हिम्मत मत हार, हां यह तो बता कि बीरेन्द्रसिंह के ऐयार यहां क्योंकर आये और अब क्या कर रहे हैं ?

तिलो० । अच्छा सुन मैं सब कुछ कहती हूं। यह तो मैं नहीं जानती कि पहले पहिल यहां कौन आया, हां जब से चपला आई है तब से मैं थोड़ा बहुत हाल जानती हूं।

माधवी० । (चौंक कर) क्या चपला यहां पहुंच गई ?

तिलो० । हां पहुंच गई, उसने यहां पहुंच कर उस सुरंग की दूसरी ताली भी तैयार कर ली जिस राह से तू आती जाती है और जिसमें तैंने किशोरी को कैद कर रक्खा है। एक दिन रात को जब तू इन्द्रजीतसिंह को सोता छोड़ दीवान साहब से मिलने के लिए गई तो वह चपला भी इन्द्रजीतसिंह को साथ ले अपनी ताली से सुरंग का ताला खोल तेरे पीछे पीछे चली गई और छिप कर तेरी और दीवान साहब की कैफ़ियत इन दोनों ने देख ली, यह न समझ कि इन्द्रजीतसिंह बेचारे सीधे सादे हैं और तेरा हाल नहीं जानते, वे सब कुछ जान गये।

माधवी० । (कुछ देर तक सोच में डूबी रहने बाद) तैंने चपला को कैसे देखा ?

तिलो० । मेरा बल्कि ललिता का भी कायदा है कि रात को तीन चार दफे उठ कर इधर उधर घूमा करती हूं । उस समय मैं अपने दालान में खम्भे की आड़ में खड़ी इधर उधर देख रही थी जब चपला और इन्द्रजीतसिंह तेरा हाल देख कर सुरंग से लौटे थे । इसके बाद वे दोनों बहुत देर तक नहर के किनारे खड़े बात-चीत करते रहे, बस उसी समय से मैं होशियार हो गई और अपनी कार्रवाई करने लगी ।

माधवी० । इसके बाद भी कुछ हुआ ?

तिलो० । हां बहुत कुछ हुआ, सुनो मैं कहती हूं । दूसरे दिन मैं ललिता को साथ ले उस तालाब पर पहुंची, देखा कि बीरेन्द्रसिंह के कई ऐयार वहां बैठे बात-चीत कर रहे हैं । मैंने छिप कर उनकी बातचीत सुनी । मालूम हुआ कि वे लोग दीवान साहब सेनापति और कोतवाल साहब को गिरफ्तार किया चाहते हैं । मुझे उस समय एक दिल्लगी सूझी । जब ये लोग राय पक्की करके वहां से जाने लगे, मैंने वहां से कुछ दूर हट कर एक छींक मारी और दूर भाग गई ।

माधवी० । (मुस्कुरा कर) वे लोग घबड़ा गये होंगे !

तिलो० । बेशक घबड़ाये होंगे, उसी समय गाली गुफ्ता करने लगे, मगर हम दोनों ने वहां ठहरना पसन्द नहीं किया ।

माधवी० । फिर क्या हुआ ?

तिलो० । मैंने तो सोचा था कि वे लोग मेरी छींक से डर कर अपनी कार्रवाई रोकेंगे मगर ऐसा न हुआ ! दो ही दिन की मेहनत में उन लोगों ने कोतवाल को गिरफ्तार कर लिया, भैरोंसिंह और तारासिंह ने उन्हें बुरा धोखा दिया ।

इसके बाद तिलोत्तमा ने कोतवाल साहब के गिरफ्तार होने का पूरा हाल जैसा हम ऊपर लिख आए हैं माधवी से कहा, साथ ही उसने यह भी कह दिया कि दीवान साहब को भी गुमान हो गया कि तूने किसी मर्द को यहां लाकर रक्खा है और उसके साथ आनन्द कर रही है ।

तिलोत्तमा की जुबानी सब हाल सुन कर माधवी सोच सागर में गोते खाने लगी और आधे घण्टे तक उसे तनोबदन की सुध न रही, इसके बाद उसने अपने को सम्हाला और फिर तिलोत्तमा से बातचीत करना आरम्भ किया ।

माधवी० । खैर जो हुआ सो हुआ, यह बता कि अब क्या करना चाहिए ?

तिलोत्तमा० । मुनासिब तो यही है कि इन्द्रजीतसिंह और किशोरी को छोड़ दो, तब फिर तुम्हारा कोई कुछ न बिगाड़ेगा ।

माधवी० । (तिलोत्तमा के पैरों पर गिर कर और रो कर) ऐसा न कहो, अगर मुझ पर तुम्हारा सच्चा प्रेम है तो ऐसा करने के लिए जिद्द न करो, अगर मेरा सिर चाहो तो काट लो मगर इन्द्रजीतसिंह को छोड़ने के लिए मत कहो।

तिलो० । अफसोस कि इन बातों की खबर दीवान साहब को भी नहीं कर सकती, बड़ी मुश्किल है, अच्छा मैं उद्योग करती हूं मगर निश्चय नहीं कर सकती कि क्या होगा ?

माधवी० । तुम चाहोगी तो सब काम हो जायगा ।

तिलो० । पहिले तो मुझे ललिता को छुड़ाना मुनासिब है ।

माधवी० । अवश्य ।

तिलो० । हां एक काम इसके भी पहिले करना चाहिए नहीं तो किशोरी दो ही दिन में यहां से गायब हो जायगी और ताज्जुब नहीं कि धड़धड़ाते हुए बीरेन्द्रसिंह के कई ऐयार यहां पहुंच जांय और मनमानी धूम मचावें ।

माधवी० । शायद तुम्हारा मतलब उस पानी वाली सुरंग को बन्द कर देने से हो ?

तिलो० । हां ।

माधवी० । मैं भी यही मुनासिब समझती हूं । मैं सोचती हूं कि जरूर कोई ऐयार उस रोज उसी पानी वाली सुरंग की राह से यहां आया था जिसकी देखा देखी इन्द्रजीतसिंह उस सुरंग में घुसे थे, मगर बेचारे पानी में आगे न जा सके और लौट आये, तुम जरूर उस सुरंग को अच्छी तरह बन्द कर दो जिसमें कोई ऐयार उस राह से आने जाने न पावे । तुम लोगों के लिए वह रास्ता हई है जिधर से मैं आती हूं । हां एक बात और है, तुम अपने पिता को मेरी मदद के लिए क्यों नहीं ले आतीं, उनसे और मेरे पिता से बड़ी दोस्ती थी मगर अफसोस, आजकल वे मुझसे बहुत रञ्ज हैं !

तिलो० । मैं कल उनके पास गई थी पर वे किसी तरह नहीं मानते, तुमसे बहुत ही ज्यादे रंज हैं, मुझ पर बहुत बिगड़ते थे, अगर मैं तुरत न चली आती तो बेइज्जती के साथ निकलवा देते, अब मैं उनके पास कभी न जाऊंगी ।

माधवी० । खैर जो कुछ किस्मत में है भोगूंगी । अच्छा अब तो सभों की आमदरफ्त इसी सुरंग से होगी, तो किशोरी को वहां से निकाल किसी दूसरी जगह रखना चाहिए ।

तिलोत्तमा० । उस सुरंग से बढ़ कर कौन सी ऐसी जगह है जहां उसे

रक्खोगी, दीवान साहब का भी तो डर है!

थोड़ी देर तक इन दोनों में बातचीत होती रही इसके बाद इन्द्रजीतसिंह के सो कर उठने की खबर आई। शाम भी हो चुकी थी, माधवी उठ कर उनके पास गई और तिलोत्तमा पानी वाली सुरंग को बन्द करने की फिक्र में लगी।

पाठक, इस जगह मामला बड़ा ही गोलमाल हो गया। तिलोत्तमा ने चालाकी से बीरेन्द्रसिंह के ऐयारों की कारंवाई देख ली। माधवी और तिलोत्तमा की बात चीत से आप यह भी जान गये होंगे कि बेचारी किशोरी उसी सुरंग में कंद की गई है जिसकी ताली चपला ने बनाई थी या जिस सुरंग की राह चपला और कुंअर इन्द्रजीतसिंह ने माधवी के पीछे जाकर यह मालूम कर लिया था कि वह कहां जाती है। उस सुरंग की दूसरी ताली तो मौजूद ही थी, किशोरी को छुड़ाना चपला के लिए कोई बड़ी बात न थी, अगर तिलोत्तमा होशियार होकर उस आने जाने वाली राह अर्थात् पानी वाली सुरंग को जिसमें इन्द्रजीतसिंह गये थे और आगे जलमय देख कर लौट आये थे पत्थर के ढोकों से मजबूती के साथ बन्द न कर देती। कुंअर इन्द्रजीतसिंह को मालूम हो ही गया था कि हमारे ऐयार लोग इसी राह से आया जाया करते हैं, अब उन्होंने अपनी आंखों से यह भी देख लिया कि यह सुरंग बखूबी बन्द कर दी गई। उनकी नाउम्मीदी हर तरह से बढ़ने लगी, उन्होंने समझ लिया कि अब चपला से मुलाकात न होगी और बाहर हमारे छुड़ाने के लिए क्या क्या तरकीब हो रही है इसका पता भी बिल्कुल न लगेगा। सुरंग की नई ताली जो चपला ने बनाई थी वह उसी के पास थी, तो भी इन्द्रजीतसिंह ने हिम्मत न हारी, उन्होंने जी में ठान लिया कि अब जबर्दस्ती से काम लिया जाएगा, जितनी औरतें यहां मौजूद हैं सभों की मुश्कें बांध नहर के किनारे डाल देंगे और सुरंग की असली ताली माधवी के पास से लेकर सुरंग की राह माधवी के महल में पहुंच कर खून खराबी मचावेंगे। आखिर क्षत्रियों को इससे बढ़ कर लड़ने भिड़ने और जान देने का कौन सा समय हाथ लगेगा। मगर ऐसा करने के लिए सबसे पहिले सुरंग की ताली अपने कब्जे में कर लेना मुनासिब है, नहीं तो मुझे बिगड़ा हुआ देख जब तक मैं दो चार औरतों की मुश्कें बांधूंगा सब सुरंग की राह भाग जांयगी, फिर मेरा मतलब जैसा मैं चाहता हूं सिद्ध न होगा।

इन्द्रजीतसिंह ने सुरंग की ताली लेने के लिए बहुत कोशिश की मगर न ले सके क्योंकि अब वह ताली उस जगह से जहां पहिले रहती थी हटा कर किसी दूसरी जगह रख दी गई थी।

सातवां बयान

आपस में लड़ने वाले दोनों भाइयों के साथ जाकर सुबह को सुफेदी निकलने के साथ ही कोतवाल ने माधवी की सूरत देखी और यह समझ कर कि दीवान साहब को छोड़ महारानी अब मुझसे प्रेम रक्खा चाहती हैं, बहुत खुश हुआ। कोतवाल साहब के गुमान में भी न था कि वे ऐयारों के फेर में पड़े हैं। उनको इन्द्रजीतसिंह के कैद होने और बीरेन्द्रसिंह के ऐयारों के यहां पहुंचने की खबर ही न थी। वह तो जिस तरह हमेशा रिआया लोगों के घर अकेले पहुंच कर तहकीकात किया करते थे उसी तरह आज भी सिर्फ दो अर्दली के सिपाहियों को साथ ले इन दोनों ऐयारों के फेर में पड़ घर से निकल पड़े थे।

कोतवाल साहब ने जब माधवी को पहिचाना तो अपने सिपाहियों को उसके सामने ले जाना मुनासिब न समझा और अकेले ही माधवी के पास पहुंचे। देखा कि हकीकत में उन्हीं की तस्वीर सामने रक्खे माधवी उदास बैठी है।

कोतवाल साहब को देखते ही माधवी उठ खड़ी हुई और मुहब्बत भरी निगाहों से उनकी तरफ देख कर बोली—

"देखो मैं तुम्हारे लिए कितनी बेचैन हो रही हूं पर तुम्हें जरा भी खबर नहीं!"

कोत०। अगर मुझे यकायक इस तरह अपनी किस्मत के जागने की खबर होती तो क्या मैं लापरवाह बैठा रहता? कभी नहीं, मैं तो आप ही दिन रात आपसे मिलने की उम्मीद में अपना खून सुखा रहा था।

माधवी०। (हाथ का इशारा करके) देखो ये दोनों आदमी बड़े ही बदमाश हैं, इनको यहां से चले जाने के लिए कहो तो फिर हमसे तुमसे बातें होंगी।

इतना सुनते ही कोतवाल साहब ने उन दोनों भाइयों की तरफ जो हकीकत में भैरोसिंह और तारासिंह थे, कड़ी निगाह से देखा और कहा, "तुम दोनों अभी अभी यहां से भाग जाओ नहीं तो बोटी बोटी काट कर रख दूंगा।"

भैरोसिंह और तारासिंह वहां से चलते बने। इधर चपला जो माधवी की सूरत बनी हुई थी कोतवाल को बातों में फंसाये हुए वहां से दूर एक गुफा के मुहाने पर ले गई और बैठ कर बातचीत करने लगी।

चपला माधवी की सूरत तो बनी मगर उसकी और माधवी की उम्र में बहुत कुछ फर्क था। कोतवाल भी बड़ा धूर्त और चालाक था। सूर्य की चमक

में जब उसने माधवी की सूरत अच्छी तरह देखी और बातों में भी कुछ फर्क पाया फौरन उसे खटका पैदा हुआ और वह बड़े गौर से उसे सिर से पैर तक देख अपनी निगाह के तराजू में तौलने और जांचने लगा। चपला समझ गई कि अब कोतवाल को शक पैदा हो गया, देर करना मुनासिब न जान उसने जफील (सीटी) बजाई। उसी समय गुफा के अन्दर से देवीसिंह निकल आये और कोतवाल साहब से तलवार रख देने के लिए कहा।

कोतवाल ने भी जो सिपाही और शेरदिल आदमी था बिना लड़े भिड़े अपने को कैदी बना देना पसन्द न किया और म्यान से तलवार निकाल देवीसिंह पर हमला किया। थोड़ी ही देर में देवीसिंह ने उसे अपने खंजर से जख्मी किया और जमीन पर पटक उसकी मुश्कें बांध डालीं।

कोतवाल साहब का हुक्म पा भैरोसिंह और तारासिंह जब उनके सामने से चले गये तो वहां पहुंचे जहां कोतवाल के साथी दोनों सिपाही खड़े अपने मालिक के लौट आने की राह देख रहे थे। इन दोनों ऐयारों ने उन सिपाहियों को अपनी मुश्कें बंधवाने के लिए कहा मगर उन्होंने इन दोनों को साधारण समझ मंजूर न किया और लड़ने भिड़ने को तैयार हो गये ? उन दोनों की मौत आ चुकी थी, आखिर भैरोसिंह और तारासिंह के हाथ से मारे गये, मगर उसी समय बारीक आवाज में किसी ने इन दोनों ऐयारों को पुकार कर कहा, "भैरोसिंह और तारासिंह, अगर मेरी जिन्दगी है तो बिना इसका बदला लिये न छोड़ूंगी !"

भैरोसिंह ने उस तरफ देखा जिधर से आवाज आई थी। एक लड़का भागता हुआ दिखाई पड़ा। ये दोनों उसके पीछे दौड़ मगर पा न सके क्योंकि उस पहाड़ी की छोटी छोटी कन्दराओं और खोहों में न मालूम कहां छिप उसने इन दोनों के हाथ से अपने को बचा लिया।

पाठक समझ गये होंगे कि इन दोनों ऐयारों को पुकार कर चिताने वाली वही तिलोत्तमा है जिसने बात करते करते माधवी से इन दोनों ऐयारों के हाथ कोतवाल के फंस जाने का समाचार कहा था।

आठवां बयान

इस जगह हम उस तालाब का हाल लिखते हैं जिसका जिक्र कई दफे ऊपर आ चुका है, जिसमें एक औरत को गिरफ्तार करने के लिए योगिनी और बनचरी कूदी थीं, या जिसके किनारे बैठ हमारे ऐयारों ने माधवी के दीवान कोतवाल और

सेनापति को पकड़ने के लिये राय पक्की की थी।

यही तालाब उस रमणीक स्थान में पहुंचने का रास्ता था जिसमें कुंअर इन्द्रजीतसिंह कैद हैं। इसका दूसरा मोहाना वही पानी वाली सुरंग थी जिसमें कुंअर इन्द्रजीतसिंह घुसे थे और कुछ दूर जाकर जलमयी देख लौट आए थे और जिसको तिलोत्तमा ने अब पत्थर के ढोकों से बन्द करा दिया है।

जिस पहाड़ी के नीचे यह तालाब था उसी पहाड़ी के दूसरी तरफ वह गुप्त स्थान था जिसमें इन्द्रजीतसिंह कैद थे। इस राह से हर एक का आना मुश्किल था, हां ऐयार लोग अलबत्ता जा सकते थे जिनका दम खूब सधा हुआ था और तैरना बखूबी जानते थे, पर इस तालाब की राह से वहां तक पहुंचने के लिये कारीगरों ने एक सुबीता भी किया था। उस सुरंग से इस तालाब की जाट (लाट) तक भीतर भीतर एक मजबूत जंजीर लगी हुई थी जिसे थाम कर वहां तक पहुंचने में बड़ा ही सुबीता होता था।

कोतवाल साहब को गिरफ्तार करने के बाद कई दफे चपला ने चाहा कि इस तालाब की राह इन्द्रजीतसिंह के पास पहुंच कर इधर के हाल चाल की खबर करें मगर ऐसा न कर सकी क्योंकि तिलोत्तमा ने सुरंग का मुंह बन्द कर दिया था। अब हमारे ऐयारों को निश्चय हो गया कि दुश्मन सम्हल बैठा और उसको हम लोगों की खबर हो गई। इधर कोतवाल साहब के गिरफ्तार होने से और उनके सिपाहियों की लाश मिलने पर शहर में हलचल मच रही थी। दीवान साहब वगैरह इस खोज में परेशान हो रहे थे कि हम लोगों का दुश्मन ऐसा कौन आ पहुंचा जिसने कोतवाल साहब को गायब कर दिया।

कई रोज के बाद एक दिन आधी रात के समय भैरोसिंह तारासिंह पण्डित बद्रीनाथ देवीसिंह और चपला इस तालाब पर बैठे आपुस में सलाह कर रहे थे और सोच रहे थे कि अब कुंअर इन्द्रजीतसिंह के पास किस तरह पहुंचा चाहिये और उनके छुड़ाने की क्या तरकीब करनी चाहिये।

चपला०। अफसोस, मैंने जो ताली तैयार की थी वह अपने साथ लेती आई, नहीं तो इन्द्रजीतसिंह उस ताली से जरूर कुछ न कुछ काम निकालते। अब हम लोगों का वहां तक पहुंचना बहुत मुश्किल हो गया।

बद्री०। इस पहाड़ी के उस पार ही तो इन्द्रजीतसिंह हैं! चाहे यह पहाड़ी कैसी ही बेढब क्यों न हो मगर हमलोग उस पार पहुंचने के लिये चढ़ने उतरने की जगह बना ही सकते हैं।

भैरो० । मगर यह काम कई दिनों का है ।

तारा० । सब से पहले इस बात की निगरानी करनी चाहिये कि माधवी ने जहां इन्द्रजीतसिंह को कैद कर रक्खा है वहां कोई ऐसा मर्द न पहुंचने पावे जो उन्हें सता सके, औरतें यदि पांच सौ भी होंगी तो कुछ कर न सकेंगी ।

देवी० । कुंअर इन्द्रजीतसिंह ऐसे बोदे नहीं हैं कि यकायक किसी के फन्दे में आ जावें, मगर फिर भी हम लोगों को होशियार रहना चाहिये, आज कल में उन तक पहुंचने का मौका न मिलेगा तो हम इस घर को उजाड़ कर डालेंगे और दीवान साहब वगैरह को जहन्नुम में मिला देंगे ।

भैरोसिंह० । अगर कुमार को यह मालूम हो गया कि हम लोगों के आने जाने का रास्ता बन्द कर दिया गया तो वे चुप न बैठे रहेंगे, कुछ न कुछ फसाद जरूर मचावेंगे ।

तारा० । बेशक ।

इसी तरह की बहुत सी बातें वे लोग कर रहे थे कि तालाब के उस पार जल में उतरता हुआ एक आदमी दिखाई पड़ा । ये लोग टकटकी बांध उसी तरफ देखने लगे । वह आदमी जल में कूदा और जाट के पास पहुंच कर गोता मार गया, जिसे देख भैरोसिंह ने कहा, "बेशक यह कोई ऐयार है जो माधवी के पास जाना चाहता है।"

चपला० । मगर यह माधवी का ऐयार नहीं है, अगर माधवी की तरफ का होता तो रास्ता बन्द होने का हाल इसे मालूम होता ।

भैरो० । ठीक है ।

तारासिंह० । अगर माधवी की तरफ का नहीं तो हमारे कुमार का पक्षपाती होगा ।

देवी० । वह लौटे तो अपने पास बुलाना चाहिये ।

थोड़ी ही देर बाद वह आदमी जाट के पास जाकर निकला और जाट थाम जरा सुस्ताने लगा, कुछ देर बाद किनारे पर चला आया और तालाब के ऊपर वाले चौंतरे पर बैठ कुछ सोचने लगा ।

भैरोसिंह अपने ठिकाने से उठे और धीरे धीरे उस आदमी की तरफ चले । जब उसने अपने पास किसी को आते देखा तो उठ खड़ा हुआ, साथ ही भैरोसिंह ने आवाज दी, "डरो मत, जहां तक मैं समझता हूं तुम भी उसी की मदद किया चाहते हो जिसके छुड़ाने की फिक्र में हम लोग हैं ।"

भैरोसिंह के इतना कहते ही उस आदमी ने खुशी भरी आवाज से कहा,

"वाह वाह वाह, आप भी यहां पहुंच गये ! सच पूछो तो यह सब फसाद तुम्हारा ही खड़ा किया हुआ है !"

भैरो० । जिस तरह मेरी आवाज तूने पहिचान ली उसी तरह तेरी मुहब्बत ने मुझे भी कह दिया कि तू कमला है ।

कमला० । बस बस, रहने दीजिये, आप लोग बड़े मुहब्बती हैं इसे मैं खूब जानती हूं ।

भैरो० । जानती हीं हो तो ज्यादे क्या कहूं ?

कमला० । कहने का मुंह भी तो हो ?

भैरो० । कमला, मैं तो यही चाहता हूं कि तुम्हारे पास बैठा बातें ही करता रहूं मगर इस समय मौका नहीं है क्योंकि (हाथ का इशारा करके) पंण्डित बद्रीनाथ देवीसिंह तारासिंह और मेरी मां वहीं बैठी हुई हैं, तुमको तालाब में जाते और नाकाम लौटते हम लोगों ने देख लिया और इसी से हम लोगों ने मालूम कर लिया कि तुम माधवी की तरफदार नहीं हो, अगर होती तो सुरंग के बन्द किए जाने का हाल तुम्हें जरूर मालूम होता ।

कमला० । क्या तुम्हें सुरंग बन्द करने का हाल मालूम है ?

भैरो० । हां, हम जानते हैं ।

कमला० । फिर अब क्या करना चाहिए ?

भैरो० । तुम वहां चली चलो जहां हम लोगों के संगी साथी हैं, उसी जगह मिल जुल के सलाह करेंगे ।

भैरोसिंह कमला को लिए हुए अपनी मां चपला के पास पहुंचे और पुकार कर कहा, "मां, यह कमला है, इसका नाम तो तुमने सुना ही होगा ।"

"हां हां, मैं इसे बखूबी जानती हूं ।" यह कह चपला ने उठ कर कमला को गले लगा लिया और कहा, "बेटी तू अच्छी तरह तो है ? मैं तेरी बड़ाई बहुत दिनों से सुन रही हूं, भैरो ने तेरी बड़ी तारीफ की थी, मेरे पास बैठ और कह किशोरी कैसी है ?"

कमला० । (बैठ कर) किशोरी का हाल क्या पूछती हैं ? वह बेचारी तो माधवी की कैद में पड़ी है, ललिता कुंअर इन्द्रजीतसिंह के नाम का धोखा देकर उसे ले आई ।

भैरो० । (चौंक कर) हैं, क्या यहां तक नौबत पहुंच गई ?

कमला० । जी हां, मैं वहां मौजूद न थी नहीं तो ऐसा न होने पाता !

भैरो० । खुलासा हाल कहो क्या हुआ ?

कमला ने सब हाल किशोरी के धोखा खाने और ललिता के पकड़ लेने का सुना कर कहा, "यह बखेड़ा (भैरोंसिंह की तरफ इशारा करके) इन्हीं का मचाया हुआ है, न ये इन्द्रजीतसिंह बन कर शिवदत्तगढ़ जाते न बेचारी किशोरी की यह दशा होती।"

चपला० । हां मैं सुन चुकी हूं । इसी कसूर पर बेचारी को शिवदत्त ने अपने यहां से निकाल दिया । खैर तूने यह बड़ा काम किया कि ललिता को पकड़ लिया, अब हम लोग अपना काम सिद्ध कर लेंगे ।

कमला० । आप लोगों ने क्या किया और अब यहां क्या करने का इरादा है ?

चपला ने भी अपना और इन्द्रजीतसिंह का सब हाल कह सुनाया । थोड़ी देर तक बातचीत होती रही । सुबह की सुफेदी निकला ही चाहती थी कि ये लोग वहां से उठ खड़े हुए और एक पहाड़ी की तरफ चले गए ।

नौवां बयान

कुंअर इन्द्रजीतसिंह अब जबर्दस्ती करने पर उतारू हुए और इस ताक में लगे कि माधवी सुरंग का ताला खोल दीवान से मिलने के लिए महल में जाय तो मैं अपना रंग दिखाऊं । तिलोत्तमा के होशियार कर देने से माधवी भी चेत गई थी और दीवान साहब के पास आना जाना उसने बिल्कुल बन्द कर दिया था, मगर जब से पानी वाली सुरंग बन्द की गई तब से तिलोत्तमा इसी दूसरी सुरंग की राह आने जाने लगी और इस सुरंग की ताली जो माधवी के पास रहती थी अपने पास रखने लगी, पानी वाली सुरंग के बन्द होते ही इन्द्रजीतसिंह जान गये कि अब इन औरतों की आमदरफ्त इसी सुरंग से होगी, मगर माधवी ही की ताक में लगे रहने से कई दिनों तक उनका मतलब सिद्ध न हुआ ।

अब कुंअर इन्द्रजीतसिंह उस दालान में ज्यादे टहलने लगे जिसमें सुरंग के दरवाजे वाली कोठरी थी । एक दिन आधी रात के समय माधवी का पलंग खाली देख इन्द्रजीतसिंह ने जाना कि वह बेशक दीवान से मिलने गई है । वह भी पलंग से उठ खड़े हुए और खूंटी से लटकती हुई एक तलवार उतारने के बाद बलते शमादान को बुझा उसी दालान में पहुंचे जहां इस समय बिल्कुल अंधेरा था और उसी सुरंग वाले दर्वाजे के बगल में छिप कर बैठ रहे । जब पहर भर रात बाकी रही उस सुरंग का दर्वाजा भीतर से खुला और एक औरत ने इस तरफ निकल

कर फिर ताला बन्द करना चाहा मगर इन्द्रजीतसिंह ने फुर्ती से उसकी कलाई पकड़ ताली छीन ली और कोठरी के अन्दर जा भीतर से ताला बन्द कर लिया।

वह औरत माधवी थी जिसके हाथ से इन्द्रजीतसिंह ने ताली छीनी थी, वह अंधेरे में इन्द्रजीतसिंह को पहिचान न सकी, हां उसके चिल्लाने से कुमार जान गए कि यह माधवी है।

इन्द्रजीतसिंह एक दफे उस सुरंग में जा ही चुके थे, उसके रास्ते और सीढ़ियों को वे बखूबी जानते थे, इसलिए अंधेरे में उनको बहुत तकलीफ न हुई और वे अन्दाज से टटोलते हुए तहखाने की सीढ़ियां उतर गये। नीचे पहुंच के जब उन्होंने दूसरा दर्वाजा खोला तो उन्हें सुरंग के अन्दर कुछ दूर पर रोशनी मालूम हुई जिसे देख उन्हें ताज्जुब हुआ और बहुत धीरे धीरे आगे बढ़ने लगे, जब उस रोशनी के पास पहुंचे एक औरत पर नजर पड़ी जो हथकड़ी और बेड़ी के सबब उठने बैठने से बिल्कुल लाचार थी। चिराग की रोशनी में इन्द्रजीतसिंह ने उस औरत को और उसने इनको अच्छी तरह देखा और दोनों ही चौंक पड़े।

ऊपर जिक्र आ जाने से पाठक समझ ही गये होंगे कि यह किशोरी है जो तकलीफ के सबब बहुत ही कमजोर और सुस्त हो रही थी। इन्द्रजीतसिंह के दिल में उसकी तस्वीर मौजूद थी और इन्द्रजीतसिंह उसकी आंखों में पुतली की तरह डेरा जमाये हुए थे। एक ने दूसरे को बखूबी पहिचान लिया और ताज्जुब मिली हुई खुशी के सबब देर तक एक दूसरे की सूरत देखते रहे, इसके बाद इन्द्रजीतसिंह ने उसकी हथकड़ी और बेड़ी खोल डाली और बड़े प्रेम से हाथ पकड़ कर कहा, "किशोरी! तू यहां कैसे आ गई!"

किशोरी०। (इन्द्रजीतसिंह के पैरों पर गिर कर) अभी तक तो मैं यही सोचती थी कि मेरी बदकिस्मती मुझे यहां ले आई मगर नहीं, अब मुझे कहना पड़ा कि मेरी खुशकिस्मती ने मुझे यहां पहुंचाया और ललिता ने मेरे साथ बड़ी नेकी की जो मुझे लेकर आई, नहीं तो न मालूम कब तक तुम्हारी सूरत........।

इससे ज्यादा बेचारी किशोरी कुछ कह न सकी और जार जार रोने लगी। इन्द्रजीतसिंह भी बराबर रो रहे थे। आखिर उन्होंने किशोरी को उठाया और दोनों हाथों से उसकी कलाई पकड़े हुए बोले—

"हाय, मुझे कब उम्मीद थी कि मैं तुम्हें यहां देखूंगा। मेरी जिन्दगी में आज की खुशी याद रखने लायक होगी। अफसोस दुश्मन ने तुम्हें बड़ा ही कष्ट दिया!"

किशोरी०। बस अब मुझे किसी तरह की आरजू नहीं है। मैं ईश्वर से

यही मांगती थी कि एक दिन तुम्हें अपने पास देख लूं सो मुराद आज पूरी हो गई, अब चाहे माधवी मुझे मार भी डाले तो मैं खुशी से मरने को तैयार हूं।

इन्द्र०। जब तक मेरे दम में दम है किसकी मजाल है जो तुम्हें दुःख दे, अब तो किसी तरह इस सुरंग की ताली मेरे हाथ में लग गई जिससे हम दोनों को निश्चय समझना चाहिए कि इस कैद से छुट्टी मिल गई। अगर जिन्दगी है तो मैं माधवी से समझ लूंगा, यह जाती कहां है।

इन दोनों को यकायक इस तरह के मिलाप से कितनी खुशी हुई यह वे ही जानते होंगे। दीन दुनिया की सुध भूल गये। यह याद ही नहीं रहा कि हम कहां जाने वाले थे, कहां हैं, क्या कर रहे हैं और क्या करना चाहिए, मगर यह खुशी बहुत ही थोड़ी देर के लिए थी, क्योंकि इसी समय हाथ में मोमबत्ती लिए एक औरत उसी तरफ से आती हुई दिखाई दी जिधर इन्द्रजीतसिंह जाने वाले थे और जिसको देख ये दोनों ही चौंक पड़े।

वह औरत इन्द्रजीतसिंह के पास पहुंची और बदन का दाग दिखला बहुत जल्द जाहिर कर दिया कि वह चपला है।

चपला०। इन्द्रजीत हैं, तुम यहां कैसे आये !! (चारो तरफ देख कर) मालूम होता है बेचारी किशोरी को तुमने इसी जगह पाया है।

इन्द्र०। हां, यह इसी जगह कैद थी मगर मैं नहीं जानता था। मैं तो माधवी के हाथ से जबर्दस्ती ताली छीन इस सुरंग में चला आया और उसे चिल्लाता ही छोड़ आया।

चपला०। माधवी तो अभी इसी सुरंग की राह से वहां गई थी।

इन्द्र०। हां, और मैं दर्वाजे के पास छिपा खड़ा था। जैसे ही वह ताला खोल अन्दर पहुंची वैसे ही मैंने पकड़ लिया और ताली छीन इधर आ भीतर से ताला बन्द कर दिया।

चपला०। तुमने बहुत बुरा किया, इतनी जल्दी कर जाना मुनासिब न था। अब तुम दो रोज भी माधवी के पास नहीं गुजार सकते, क्योंकि वह बड़ी ही बदकार और चाण्डालिन की तरह बेदर्द है, अब वह तुम्हें पावे तो किसी न किसी तरह धोखा दे बिना जान लिए कभी न छोड़े।

इन्द्र०। आखिर मैं ऐसा न करता तो क्या करता ? उधर जिस राह से तुम आयी थीं अर्थात् पानी वाली सुरंग का मुहाना मेरे देखते देखते बिल्कुल बन्द कर दिया गया जिससे मुझे मालूम हो गया कि तुम्हारे आने जाने की खबर उस

शैतान की बच्ची को लग गई और तुम्हारे मिलने या किसी तरह के मदद पहुंचने की उम्मीद बिल्कुल जाती रही, पर नामर्दों की तरह मैं अपने को कब तक बनाये रहता, और अब मुझे माधवी के पास लौट जाने की जरूरत ही क्या है ?

चपला० । बेशक हम लोगों की खबर माधवी को लग गई, मगर तुम बिल्कुल नहीं जानते कि तिलोत्तमा ने कितना फसाद मचा रक्खा है और इधर महल की तरफ कितनी मजबूती कर रक्खी है । तुम किसी तरह इधर से नहीं निकल सकते । अफसोस, अब हम लोग भारी खतरे में पड़ गये ।

इन्द्र० । रात का तो समय है, लड़ भिड़ कर निकल जायंगे ।

चपला० । तुम दिलावर हो, तुम्हारा ऐसा ख्याल करना बहुत मुनासिब है मगर (किशोरी की तरफ इशारा करके) इस बेचारी की क्या दशा होगी ? इसके सिवाय अब सवेरा हुआ ही चाहता है ।

इन्द्र० । फिर क्या किया जाय ?

चपला० । (कुछ सोच कर) क्या तुम जानते हो इस समय तिलोत्तमा कहां है?

इन्द्र० । जहां तक मैं खयाल करता हूं इस खोह के बाहर है ।

चपला० । यह और मुश्किल है, वह बड़ी ही चालाक है, इस समय भी जरूर किसी धुन में लगी होगी, वह हमलोगों का ध्यान दम भर के लिये भी नहीं भुलाती ।

इन्द्र० । इस समय हमारी मदद के लिये इस महल में और भी कोई मौजूद है या अकेली तुम ही हो ?

चपला० । देवीसिंह भैरोसिंह और पण्डित बद्रीनाथ तो महल के बाहर इधर उधर लुके छिपे मौजूद हैं, मगर सूरत बदले हुए कमला इस सुरंग के मुहाने पर अर्थात् बाहर वाले कमरे में खड़ी है, मैं उसे अपनी हिफाजत के लिए वहां छोड़ आई हूं ।

किशोरी० । (चौंक कर) कमला कौन ?

चपला० । तुम्हारी सखी ।

किशोरी० । वह यहां कैसे आई ?

चपला० । इसका हाल तो बहुत लम्बा चौड़ा है इस समय कहने का मौका नहीं, मुख्तसर यह है कि तुमको धोखा देने वाली ललिता को उसने पकड़ लिया और खुद तुमको छुड़ाने के लिये आई है, यहां हम लोगों से भी मुलाकात हो गई । (इन्द्रजीतसिंह की तरफ देख कर) बस अब यहां ठहर कर अपने को इस सुरंग के अन्दर ही फंसा कर मार डालना मुनासिब नहीं ।

इन्द्र०। बेशक यहां ठहरना ठीक न होगा चले चलो, जो होगा देखा जायगा।

तीनों वहां से चल पड़े और सुरंग के दूसरे मुहाने अर्थात् उस कमरे में पहुंचे जिसमें माधवी को दीवान साहब के साथ बैठे हुए इन्द्रजीतसिंह ने देखा था। वहां इस समय सूरत बदले हुए कमला मौजूद थी और रोशनी बखूबी हो रही थी। इन तीनों को देखते ही कमला चौंक पड़ी और किशोरी को गले लगा लिया मगर तुरन्त ही अलग होकर चपला से बोल', "सुबह की सुफेदी निकल आई यह बहुत ही बुरा हुआ।"

चपला०। जो हो, अब कर ही क्या सकते हैं!

कमला०। खैर जो होगा देखा जायगा, जल्दी नीचे उतरो।

इस खुशनुमा और आलीशान मकान के चारो तरफ बाग था जिसके चारों तरफ चहारदीवारियां बनी हुई थीं। बाग के पूरब तरफ बहुत बड़ा फाटक था जहां बारी बारी से बीस आदमी नंगी तलवार लिये घूम घूम कर पहरा देते थे। चपला और कमला कमन्द के सहारे बाग की पिछली दीवार लांघ कर यहां पहुंची थीं और इस समय भी ये चारो उसी तरह निकल जाया चाहते थे।

हम यह कहना भूल गये कि बाग के चारो कोनों में चार गुमटियां बनी हुई थीं जिनमें सौ सिपाहियों का डेरा था और आज कल तिलोत्तमा के हुक्म से वे सभी हरदम तैयार रहते थे। तिलोत्तमा ने उन लोगों को यह भी कह रक्खा था कि जिस समय मैं अपने बनाये हुए बम के गोले को जमीन पर पटकूं और उसकी भारी आवाज तुम लोग सुनो, फौरन हाथ में नंगी तलवारें लिए बाग के चारो तरफ फैल जाओ, जिस आदमी को आते जाते देखो तुरन्त गिरफ्तार कर लो।

चारो आदमी सुरंग का दर्वाजा खुला छोड़ नीचे उतरे और कमरे के बाहर हो बाग के पिछली दीवार की तरफ जैसे ही चले कि तिलोत्तमा पर नजर पड़ी। चपला यह खयाल करके कि अब बहुत ही बुरा हुआ, तिलोत्तमा की तरफ लपकी और उसे पकड़ना चाहा मगर वह शैतान लोमड़ी की तरह चक्कर मार निकल ही गई और एक किनारे पहुंच मसाले से भरा हुआ एक गेंद जमीन पर पटका जिसकी भारी आवाज चारो तरफ गूंज गई और उसके कहे मुताबिक सिपाहियों ने होशियार होकर के चारो तरफ से बाग को घेर लिया।

तिलोत्तमा के भाग कर निकल जाते ही चारो आदमी जिनके आगे आगे हाथ में नंगी तलवार लिए इन्द्रजीतसिंह थे बाग की पिछली दीवार की तरफ न जाकर सदर फाटक की तरफ लपके, मगर वहां पहुंचते ही पहरे वाले सिपाहियों से रोके गये और मार काट शुरू हो गई। इन्द्रजीतसिंह ने तलवार तथा चपला और कमला

ने खञ्जर चलाने में अच्छी बहादुरी दिखाई।

हमारे ऐयार लोग भी बाग के बाहर चारो तरफ लुके छिपे खड़े थे, तिलोत्तमा के चलाये हुए गोले की आवाज सुन कर और किसी भारी फसाद का होना खयाल कर फाटक पर आ जुटे और खंजर निकाल माधवी के सिपाहियों पर टूट पड़े। बात की बात में माधवी के बहुत से सिपाहियों की लाशें जमीन पर दिखाई देने लगीं और बहुत बहादुरी के साथ लड़ते भिड़ते हमारे बहादुर लोग किशोरी को लिए निकल ही गए।

ऐयार लोग तो दौड़ने भागने में तेज होते ही हैं, इन लोगों का भाग जाना कोई आश्चर्य न था, मगर गोद में किशोरी को उठाये इन्द्रजीतसिंह उन लोगों के बराबर में कब दौड़ सकते थे और ऐयार लोग भी ऐसी अवस्था में उनका साथ कैसे छोड़ सकते थे। लाचार जैसे बना उन दोनों को भी साथ लिए हुए मैदान का रास्ता लिया। इस समय पूरब की तरफ सूर्य की लालिमा अच्छी तरह फैल चुकी थी।

माधवी के दीवान अग्निदत्त का मकान इस बाग से बहुत दूर न था और वह बड़े सवेरे उठा करता था। तिलोत्तमा के चलाये हुए गोले की आवाज उसके कान में पहुंच ही चुकी थी, बाग के दर्वाजे पर लड़ाई होने की खबर भी उसे उसी समय मिल गई। वह शैतान का बच्चा बहुत ही दिलेर और लड़ाका था, फौरन ढाल तलवार ले मकान के नीचे उतर आया और अपने यहां रहने वाले कई सिपाहियों को साथ ले बाग के दर्वाजे पर पहुंचा। देखा कि बहुत से सिपाहियों की लाशें जमीन पर पड़ी हुई हैं और दुश्मन का पता नहीं है।

बाग के चारो तरफ फैले हुए सिपाही भी फाटक पर आ जुटे थे और गिनती में एक सौ से ज्यादे थे। अग्निदत्त ने सभों को ललकारा और साथ ले इन्द्रजीतसिंह का पीछा किया। थोड़ी ही दूर पर उन लोगों को पा लिया और चारों तरफ से घेर मार काट शुरू कर दी।

अग्निदत्त की निगाह किशोरी पर जा पड़ी। अब क्या पूछना था? सब तरफ का खयाल छोड़ इन्द्रजीतसिंह के ऊपर टूट पड़ा। बहुत से आदमियों से लड़ते हुए इन्द्रजीतसिंह किशोरी को सम्हाल न सके और उसे छोड़ तलवार चलाने लगे, अग्निदत्त को मौका मिला, इन्द्रजीतसिंह के हाथ से जख्मी होने पर भी उसने दम न लिया और किशोरी को गोद में उठा ले भागा। यह देख इन्द्रजीतसिंह की आंखों में खून उतर आया। इतनी भीड़ को काट कर उसका पीछा तो न कर सके मगर अपने ऐयारों को ललकार कर इस तरह की लड़ाई की कि उन सौ में से आधे

बेदम होकर जमीन पर गिर पड़े और बाकी अपने सर्दार को चला गया देख जान बचा भाग गये। इन्द्रजीतसिंह भी बहुत से जख्मों के लगने से बेहोश होकर जमीन पर गिर पड़े। चपला और भैरोसिंह वगैरह बहुत ही बेदम हो रहे थे तो भी वे लोग बेहोश इन्द्रजीतसिंह को उठा वहां से निकल गये और फिर किसी की निगाह पर न चढ़े।

दसवां बयान

जख्मी इन्द्रजीतसिंह को लिए हुए उनके ऐयार लोग वहां से दूर निकल गए और बेचारी किशोरी को दुष्ट अग्निदत्त उठा कर अपने घर ले गया। यह सब हाल देख तिलोत्तमा वहां से चलती बनी और बाग के अन्दर कमरे में पहुंची। देखा कि सुरंग का दर्वाजा खुला हुआ है और ताली भी उसी जगह जमीन पर पड़ी है। उसने ताली उठा ली और सुरंग के अन्दर जा किवाड़ बन्द करती हुई माधवी के पास पहुंची। माधवी की अवस्था इस समय बहुत ही खराब हो रही थी। दीवान साहब पर बिल्कुल भेद खुल गया होगा यह समझ मारे डर के वह घबड़ा गई और उसे निश्चय हो गया कि अब किसी तरह कुशल नहीं है क्योंकि बहुत दिनों की लापरवाही में दीवान साहब ने तमाम रिआया और फौज को अपने कब्जे में कर लिया था। तिलोत्तमा ने वहां पहुंचते ही माधवी से कहा—

तिलो०। अब क्या सोच रही है और क्यों रोती है। मैंने पहिले ही कहा था कि इन बखेड़ों में मत फंस, इसका नतीजा अच्छा न होगा! वीरेन्द्रसिंह के ऐयार लोग बला की तरह जिसके पीछे पड़ते हैं उसका सत्यानाश कर डालते हैं, पर तूने मेरी बात न मानी, अब यह दिन देखने की नौबत पहुंची।

माधवी०। वीरेन्द्रसिंह का कोई ऐयार यहां नहीं आया इन्द्रजीतसिंह जबर्दस्ती मेरे हाथ से ताली छीन कर चले गये, मैं कुछ न कर सकी।

तिलो०। आखिर तू उनका कर ही क्या सकती थी?

माधवी०। अब उन लोगों का क्या हाल है?

तिलो०। वे लोग लड़ते भिड़ते तुम्हारे सैकड़ों आदमियों को यमलोक पहुंचाते निकल गये। किशोरी को आपके दीवान साहब उठा ले गये। जब उनके हाथ किशोरी लग गई तब उन्हें लड़ने भिड़ने की जरूरत ही क्या थी? किशोरी की सूरत देख कर तो आसमान की चिड़ियाएं भी नीचे उतर आती हैं फिर दीवान साहब क्या चीज हैं? अब तो वह दुष्ट इस धुन में होगा कि तुम्हें मार पूरी तरह

से राजा बन जाय और किशोरी को रानी बनाये, तुम उसका कर ही क्या सकती हो।

माधवी० । हाय, मेरे बुरे कर्मों ने मुझे मिट्टी में मिला दिया । अब मेरी किस्मत में राज्य नहीं है, अब तो मालूम होता है कि मैं भिखमंगिनों की तरह मारी मारी फिरूंगी ।

तिलो० । हां अगर किसी तरह यहां से जान बचा कर निकल जाओगी तो भीख मांग कर भी जान बचा लोगी नहीं तो बस यह भी उम्मीद नहीं है ।

माधवी० । क्या दीवान साहब मुझसे इस तरह की बेमुरौवती करेंगे ?

तिलो० । अगर तुझे उन पर भरोसा है तो रह और देख कि क्या होता है, पर मैं तो अब एक दम टिकने वाली नहीं ।

माधवी० । अगर किशोरी उसके हाथ न पड़ गई होती तो मुझे किसी तरह की उम्मीद होती और कोई बहाना भी कर सकती थी मगर अब तो....

इतना कह माधवी बेतरह रोने लगी, यहां तक कि हिचकी बंध गई और वह तिलोत्तमा के पैर पर गिर कर बोली—

"तिलोत्तमा, मैं कसम खाती हूं कि आज से तेरे हुक्म के खिलाफ कोई काम न करूंगी।"

तिलो० । अगर ऐसा है तो मैं भी कसम खाकर कहती हूं कि तुझे फिर इसी दर्जे पर पहुंचाऊंगी और बीरेन्द्रसिंह के ऐयारों और दीवान साहब से भी ऐसा बदला लूंगी कि वे भी याद करेंगे ।

माधवी० । बेशक मैं तुम्हारा हुक्म मानूंगी और जो कहोगी सो करूंगी ।

तिलो० । अच्छा तो आज रात को यहां से निकल चलना और जहां तक जमा पूंजी अपने साथ ले चलते बने ले लेना चाहिए !

माधवी० । बहुत अच्छा मैं तैयार हूं जब चाहे चलो, मगर यह तो कहो कि मेरी इन सखी सहेलियों की क्या दशा होगी ?

तिलो० । बुरों का संगत करने से जो फल सब भोगते हैं सो ये भी भोगेंगी। मैं इसका कहां तक ख्याल करूंगी ? जब अपने पर आ बनती है तो कोई किसी की खबर नहीं लेता ।

दीवान अग्निदत्त किशोरी को लेकर भागे तो सीधे अपने घर में आ घुसे । ये किशोरी की सूरत पर ऐसे मोहित हुए कि तनोबदन की सुध जाती रही । सिपाहियों ने इन्द्रजीतसिंह और उनके ऐयारों को गिरफ्तार किया या नहीं अथवा उनकी बदौलत सभों की क्या दशा हुई इसकी परवाह तो उन्हें जरा न रही, असल तो

यह है कि इन्द्रजीतसिंह को वे पहिचानते भी न थे।

बेचारी किशोरी की क्या दशा थी और वह किस तरह रो रोकर अपने सिर के बाल नोच रही थी इसके बारे में इतना ही कहना बहुत है कि अगर दो दिन तक उसकी यही दशा रही तो किसी तरह जीती न बचेगी और 'हा इन्द्रजीतसिंह, हा इन्द्रजीतसिंह' कहते कहते प्राण छोड़ देगी।

दीवान साहब के घर में उनकी जोरू और किशोरी ही के बराबर की एक कुंआरी लड़की थी जिसका नाम कामिनी था और वह जितनी खूबसूरत थी उतनी ही स्वभाव की भी अच्छी थी। दीवान साहब की स्त्री का भी स्वभाव और चालचलन अच्छा था, मगर वह बेचारी अपने पति के दुष्ट स्वभाव और बुरे व्यवहारों से बराबर दुःखी रहा करती थी और डर के मारे कभी किसी बात में कुछ रोक टोक न करती, तिस पर भी आठ दस दिन पीछे वह अग्निदत्त के हाथ से जरूर मार खाया करती।

बेचारी किशोरी को अपनी जोरू और लड़की के हवाले कर हिफ़ाजत करने के अतिरिक्त समझाने बुझाने की भी ताकीद कर दीवान साहब बाहर चले आये और अपने दीवानखाने में बैठ सोचने लगे कि किशोरी को किस तरह राजी करना चाहिए। यह औरत कौन और किसकी लड़की है, जिन लोगों के साथ यह थी वे लोग कौन हैं, और यहां आकर धूम फसाद मचाने की उन्हें क्या जरूरत थी? चाल ढाल और पोशाक से तो वे लोग ऐयार मालूम पड़ते थे मगर यहां उन लोगों के आने का क्या सबब था? इसी सब सोच विचार में अग्निदत्त को आज स्नान तक करने की नौबत न आई। दिन भर इधर उधर घूमते तथा लाशों को ठिकाने पहुंचाते और तहकीकात करते बीत गया मगर किसी तरह इस बखेड़े का ठीक पता न लगा, हां महल के पहरे वालों ने इतना कहा कि 'दो तीन दिन से तिलोत्तमा हम लोगों पर सख्त ताकीद रखती थी और हुक्म दे गई थी कि जब मेरे चलाये बम के गोले की आवाज तुम लोग सुनो तो फौरन मुस्तैद हो जाओ और जिसको आते देखो गिरफ्तार कर लो'।

अब दीवान साहब का शक माधवी और तिलोत्तमा के ऊपर हुआ और देर तक सोचने विचारने के बाद उन्होंने निश्चय कर लिया कि इस बखेड़े का हाल बेशक ये दोनों पहिले ही से जानती थीं मगर यह भेद मुझसे छिपाये रखने का कोई विशेष कारण अवश्य है।

चिराग जलने के बाद अग्निदत्त अपने घर पहुंचा। किशोरी के पास न जाकर

निराले में अपनी स्त्री को बुला कर उसने पूछा, "उस औरत की जुबानी उसका कुछ हाल चाल तुम्हें मालूम हुआ या नहीं ?"

अग्निदत्त की स्त्री ने कहा, "हां उसका हाल मालूम हो गया। वह महाराज शिवदत्त की लड़की है और उसका नाम किशोरी है। राजा बीरेन्द्रसिंह के लड़के इन्द्रजीतसिंह पर रानी माधवी मोहित हो गई थी और उनको अपने यहां किसी तरह से फंसा लाकर खोह में रख छोड़ा था। इन्द्रजीतसिंह का प्रेम किशोरी पर था इसलिए उसने ललिता को भेज कर धोखा दे किशोरी को भी अपने फन्दे में फंसा लिया था। वह भी कई दिनों से यहां कैद थी और बीरेन्द्रसिंह के ऐयार लोग भी कई दिनों से इसी शहर में टिके हुए थे। किसी तरह मौका मिलने पर इन्द्रजीतसिंह किशोरी को ले खोह से बाहर निकल आए और यहां तक नौबत आ पहुंची।"

राजा बीरेन्द्रसिंह और उनके ऐयारों का नाम सुन मारे डर के अग्निदत्त कांप उठा, बदन के रोंगटे खड़े हो गए, घबड़ाया हुआ बाहर निकल आया और अपने दीवानखाने में पहुंच मसनद के ऊपर गिर भूखा प्यासा आधी रात तक यही सोचता रह गया कि अब क्या करना चाहिए !

अग्निदत्त समझ गया कि कोतवाल साहब को जरूर बीरेन्द्रसिंह के ऐयारों ने पकड़ लिया है और अब किशोरी को अपने यहां रखने से किसी तरह जान न बचेगी, तिस पर भी वह किशोरी को छोड़ना नहीं चाहता था और सोचते विचारते जब उसका जी ठिकाने आता तब यही कहता कि 'चाहे जो हो, किशोरी को कभी न छोड़ूंगा'।

किशोरी को अपने यहां रख कर सलामत रहने की सिवाय इसके उसे कोई तर्कीब न सूझी कि वह माधवी को मार डाले और स्वयं राजा हो बैठे। आखिर इसी सलाह को उसने ठीक समझा और अपने घर से निकल माधवी से मिलने के लिए महल की तरफ रवाना हुआ, मगर वहां पहुच कर बिल्कुल बातें मामूल के खिलाफ देख और भी ताज्जुब में हो गया। उसे उम्मीद थी कि खोह का दर्वाजा बन्द होगा मगर नहीं, खोह का दर्वाजा खुला हुआ था और माधवी की कुल सखियां जो खोह के अन्दर रहती थीं, महल में ऊपर नीचे चारों तरफ फैली हुई थीं और रोती हुई इधर उधर माधवी को खोज रही थीं।

रात आधी से ज्यादे जा चुकी थी, बाकी रात भी दीवान साहब ने माधवी की सखियों का इजहार लेने में बिता दी और दिन रात का पूरा अखण्ड व्रत किये रहे। देखना चाहिये इसका फल उन्हें क्या मिलता है।

शुरू से लेकर माधवी के भाग जाने तक का हाल उसकी सखियों ने दीवान

साहब को कह सुनाया। आखीर में कहा, "सुरंग की ताली माधवी अपने पास रखती थी इसलिए हम लोग लाचार थीं, यह सब हाल आपसे कह न सकीं।"

अग्निदत्त दांत पीस कर रह गया। आखिर यह निश्चय किया कि कल दशहरा (विजयदशमी) है, गद्दी पर खुद बैठ राजा बन और किशोरी को रानी बना नजरें लूंगा, फिर जो होगा देखा जायगा। सुबह को वह जब अपने घर पहुंचा और पलंग पर जाकर लेटना चाहा वैसे ही तकिए के पास एक तह किये हुए कागज पर उसकी नजर पड़ी। खोल कर देखा तो उसी की तस्वीर मालूम पड़ी, छाती पर चढ़ा हुआ एक भयानक सूरत का आदमी उसके गले पर खंजर फेर रहा था! इसे देखते ही वह चौंक पड़ा। डर और चिन्ता ने उसे ऐसा पटका कि बुखार चढ़ आया, मगर थोड़ी ही देर में चंगा हो घर के बाहर निकल फिर तहकीकात करने लगा।

ग्यारहवां बयान

हम ऊपर के बयान में सुबह की सीनरी लिख कर कह आये हैं कि राजा बीरेन्द्रसिंह कुंअर आनन्दसिंह और तेजसिंह सेना सहित किसी तरफ को जा रहे हैं। पाठक तो समझ ही गये होंगे कि इन्होंने जरूर किसी तरफ चढ़ाई की है और बेशक ऐसा ही है भी। राजा बीरेन्द्रसिंह ने यकायक माधवी के गयाजी पर धावा कर दिया जिसका लेना इस समय उन्होंने बहुत ही सहज समझ रक्खा था, क्योंकि माधवी के चाल चलन की खबर उन्हें बखूबी लग गई थी। वे जानते थे कि राज-काज पर ध्यान न दे दिन रात ऐश में डूबे रहने वाले राजा का राज्य कितना कमजोर हो जाता है। रैयत को ऐसे राजा से कितनी नफरत हो जाती है और किसी दूसरे नेक धर्मात्मा के आ पहुंचने के लिए वे लोग कितनी मिन्नतें मानते रहते हैं।

बीरेन्द्रसिंह का ख्याल बहुत ही ठीक था। गया दखल करने में उनको जरा भी तकलीफ न हुई, किसी ने उनका मुकाबला न किया। एक तो उनका चढ़ा बढ़ा प्रताप ही ऐसा था कि कोई मुकाबला करने का साहस भी नहीं कर सकता था, दूसरे बेदिल रियाया और फौज तो चाहती ही थी कि बीरेन्द्रसिंह के ऐसा कोई यहां का भी राजा हो। चाहे दिन रात ऐश में डूबे और शराब के नशे में चूर रहने वाले मालिकों को कुछ भी खबर न हो पर बड़े बड़े जमींदारों और राज-कर्मचारियों को माधवी और कुंअर इन्द्रजीतसिंह के खिचाखिची की खबर लग चुकी थी और उन्हें मालूम हो चुका था कि आजकल बीरेन्द्रसिंह के ऐयार लोग राजगृही में विराज रहे हैं।

राजा बीरेन्द्रसिंह ने वेरोक टोक शहर में पहुंच कर अपना दखल जमा लि और अपने नाम की मुनादी करवा दी। वहां के दो एक राज कर्मचारी जो दी अग्निदत्त के दोस्त और खैरख्वाह थे रंग कुरंग देख कर भाग गये, बाकी अफसरों और रैयतों ने उनकी अमलदारी खुशी से कबूल कर ली, जिसका राजा बीरेन्द्रसिंह को इसी से मालूम हो गया कि उन लोगों ने दर्बार में बे और हंसते हुए पहुंच कर मुबारकबादी के साथ नजरें गुजारीं।

विजयादशमी के एक दिन पहिले गया का राज्य राजा बीरेन्द्रसिंह के कब्जे आ गया और विजयादशमी को अर्थात् दूसरे दिन प्रातःकाल उनके लड़के आन सिंह को यहां की गद्दी पर बैठे हुए लोगों ने देखा तथा नजरें दीं। अपने लड़के कुंअर आनन्दसिंह को गया की गद्दी दे दूसरे ही दिन राजा बीरेन्द्रसिंह चुन लौट जाने वाले थे, मगर उनके रवाना होने के पहिले ही ऐयार लोग जख्मी बे बेहोश कुंअर इन्द्रजीतसिंह को लिए हुए गयाजी पहुंच गये जिन्हें देख राजा बीरे सिंह को अपना इरादा छोड़ देना पड़ा और बहुत दिन से बिछुड़े हुए प्यारे लड़ को आज इस अवस्था में पाकर अपने तन बदन की सुध भुला देनी पड़ी।

राजा बीरेन्द्रसिंह के मौजूद होने पर भी गयाजी का बड़ा भारी राजभवन सू हो रहा था क्योंकि उसमें रहने वाले माधवी और दीवान अग्निदत्त के रिश्तेदा लोग भाग गये थे और हुक्म के मुताबिक किसी ने भी उनको भागते समय नहीं रोका था। इस समय राजा बीरेन्द्रसिंह उनके दोनों लड़के और ऐयारों के सिवा सिर्फ थोड़े से फौजी अफसरों का डेरा इस महल में पड़ा हुआ है। ऐयारों में सि भैरोसिंह और तारासिंह यहां मौजूद हैं, बाकी के कुल ऐयार चुनार लौटा दिये ग थे। शहर के इन्तजाम में सब के पहिले यह किया गया कि चीठी या अरजी डाल के लिए एक बगल छेद करके दो बड़े बड़े सन्दूक राजभवन के फाटक के दोनों तर लटका दिये गये और मुनादी करवा दी गई कि जिसको अपना सुख दुःख ब करना हो दर्बार में हाजिर होकर अर्ज किया करे और जो किसी कारण से हाजि न हो सके वह अर्जी लिख कर इन्हीं सन्दूकों में डाल दिया करे। हुक्म था कि बारी बारी से ये सन्दूक दिन रात में छः मर्तबे कुंअर आनन्दसिंह के सामने खोले जाया करें। इस इन्तजाम से गयाजी की रिआया बहुत प्रसन्न थी।

रात पहर भर से ज्यादे जा चुकी है। एक सजे हुए कमरे में जिसमें रोशनी अच्छी तरह हो रही है, छोटी सी खूबसूरत मसहरी पर जख्मी कुंअर इन्द्रजीत सिंह लेटे हुए हलकी दुलाई गर्दन तक ओढ़े हैं। आज कई दिनों पर उन्हें होश

आई है इससे अचम्भे में आकर इस नये कमरे में चारों तरफ निगाह दौड़ा कर अच्छी तरह देख रहे हैं। बगल में बायें हाथ का ढासना पलंगड़ी पर दिये हुए उनके पिता राजा बीरेन्द्रसिंह बैठे उनका मुंह देख रहे हैं, और कुछ पायताने की तरफ हट कर पाटी पकड़े कुंअर आनन्दसिंह बैठे बड़े भाई की तरफ देख रहे हैं। पायताने की तरफ पलंगड़ी के नीचे भैरोसिंह और तारासिंह धीरे धीरे तलवा झंस रहे हैं। कुंअर आनन्दसिंह के वगल में देवीसिंह बैठे हैं। उनके अलावे बैद्य जर्राह और बहुत से सिपाही नंगी तलवार लिए पहरा दे रहे हैं।

थोड़ी देर तक कमरे में सन्नाटा रहा इसके बाद कुंअर इन्द्रजीतसिंह ने अपने पिता की तरफ देख कर पूछा—

इन्द्र०। यह कौन सी जगह है ? यह किसका मकान है ?

बीरेन्द्र०। यह चन्द्रदत्त की राजधानी गयाजी है। ईश्वर की कृपा से आज यह हमारे कब्जे में आ गई है। मकान भी चन्द्रदत्त ही के रहने का है। हम लोग इस शहर में अपना दखल जमा चुके थे जब तुम यहां पहुंचाये गये।

यह सुन इन्द्रजीतसिंह चुप हो रहे और कुछ सोचने लगे, साथ ही इसके राजगृह में दीवान अग्निदत्त के साथ होने वाली लड़ाई का समा उनकी आंखों के आगे घूम गया और वे किशोरी की याद कर अफसोस करने लगे। इनके बेहोश होने के बाद क्या हुआ और किशोरी पर क्या वीती इसके जानने के लिये दिल बेचैन था मगर पिता का लेहाज कर भैरोसिंह से कुछ पूछ न सके सिर्फ ऊंची सांस लेकर रह गये, मगर देवीसिंह उनके जी का भाव समझ गये और विना पूछे ही कुछ कहने का मौका समझ कर बोले, "राजगृही में लड़ाई के समय जितने आदमी आपके साथ थे ईश्वर की कृपा से सब बच गये और अपने ठिकाने पर हैं, केवल आपही को इतना कष्ट भोगना पड़ा।"

देवीसिंह के इतना कहने से इन्द्रजीतसिंह की बेचैनी बिल्कुल ही जाती तो नहीं रही मगर कुछ कम जरूर हो गई। इतने में दिल बहलाने का कुछ ठिकाना समझ कर देवीसिंह पुनः बोल उठे।

देवी०। अर्जियों वाला सन्दूक हाजिर है, उसके देखने का समय भी हो गया है।

इन्द्र०। कैसा सन्दूक ?

आनन्द०। यहां महल के फाटक पर दो सन्दूक इसलिये रख दिए गए हैं कि जो लोग दर्बार में हाजिर होकर अपना दुख सुख न कह सकें वे लोग अरजी लिख कर इस सन्दूक में डाल दिया करें।

इन्द्र० । बहुत मुनासिब है, इससे रैयतों के दिल का हाल अच्छी तरह मालू हो सकता है । इस तरह के कई सन्दूक शहर में इधर उधर भी रखवा देना चाहि क्योंकि बहुत से आदमी खौफ से फाटक तक आते भी हिचकेंगे ।

आनन्द० । बहुत खूब, कल इसका इन्तजाम हो जायगा ।

बीरेन्द्र० । हमने यहां की गद्दी पर आनन्दसिंह को बैठा दिया है ।

इन्द्र० । बड़ी खुशी की बात है, यहां का इन्तजाम ये बहुत ही अच्छी तर कर सकेंगे क्योंकि यह तीर्थ का मुकाम है और इनका पुराणों से बड़ा प्रेम है औ उन्हें अच्छी तरह समझते भी हैं । (देवीसिंह की तरफ देख कर) हां साहब क सन्दूक मंगवाइये जरा दिल तो बहले ।

हाथ भर का चौखूटा सन्दूक हाजिर किया गया और उसे खोल कर बिल्कु अर्जियां जिनसे वह सन्दूक भरा था बाहर निकाली गईं । पढ़ने से मालूम हुआ कि यहां की रिआया नये राजा की अमलदारी से बहुत प्रसन्न है और मुबारकबाद दे रही है, हां एक अर्जी उसमें ऐसी भी निकली जिसके पढ़ने से सभों को तरद्दुद ने आ घेरा और सोचने लगे कि अब क्या करना चाहिए । पाठकों की दिलचस्पी के लिए हम उस अर्जी की नकल नीचे लिखे देते हैं :—

"हम लोग मुद्दत से मनाते थे कि यहां की गद्दी पर हजूर को या हुजूर के खानदान में से किसी को बैठा देखें । ईश्वर ने आज हम लोगों की आरजू पूरी की और कम्बख्त माधवी और अग्निदत्त का बुरा साया हम लोगों के सर से हटाया । चाहे उन दोनों दुष्टों का खौफ अभी हम लोगों को बना हो, मगर फिर भी हुजूर के भरोसे पर हम लोग बिना मुबारकबाद दिए और खुशी मनाये नहीं रह सकते । वह डर इस बात का नहीं है कि यहां फिर उन दुष्टों की अमलदारी होगी तो कष्ट भोगना पड़ेगा । राम राम, ऐसा तो कभी हो ही नहीं सकता, हम लोगों को यह गुमान तो स्वप्न में भी नहीं हो सकता, वह डर बिल्कुल दूसरा ही है जो हम लोग नीचे अर्ज करते हैं । आशा है कि बहुत जल्द उससे हम लोगों की रिहाई होगी, नहीं तो महीने भर में यहां की चौथाई रिआया यमलोक में पहुंच जायगी । मगर नहीं, हुजूर के नामी और अपनी आप नजीर रखने वाले ऐयारों के हाथ से वे बेईमान हरामजादे कब बच सकते हैं जिनके डर से हम लोगों को पूरी नींद सोना नसीब नहीं होता ।

"कुछ दिनों से दीवान अग्निदत्त की तरफ से थोड़े बदमाश इस काम के लिए मुकर्रर कर दिए हैं कि अगर कोई आदमी अग्निदत्त के खिलाफ नजर

आवे तो बेधड़क उसका सर चोरी से रात के समय काट डालें, या दीवान साहब को जब रुपये की जरूरत हो तो जिस अमीर या जमींदार के घर में चाहे डाका डाल दें या चोरी करके कंगाल बना दें। इसकी फरियाद कहीं सुनी नहीं जाती, इसी वजह से और भी बाहरी चोरों को अपना घर भरने और हम लोगों को सताने का मौका मिलता है। हम लोगों ने अभी उन दुष्टों की सूरत नहीं देखी और नहीं जानते कि वे लोग कौन हैं या कहां रहते हैं जिनके खौफ से दिन रात हम लोग कांपा करते हैं।"

इस अर्जी के नीचे कई मशहूर और नामी रईसों और जमींदारों के दस्तख थे। यह अरजी उसी समय देवीसिंह के हवाले कर दी गई और देवीसिंह ने वादा किया कि एक महीने के अन्दर इन दुष्टों को जिन्दा या मरे हुए हुजूर में हाजिर करेंगे।

इसके बाद जर्राहों ने कुंअर इन्द्रजीतसिंह के जख्मों को खोला और दूसरी पट्टी बदली, कविराज ने दवा खिलाई और हुक्म पाकर सब अपने अपने ठिकाने चले गए। देवीसिंह उसी समय विदा हो, न मालूम कहां चले गए और राजा बीरेन्द्रसिंह भी वहां से हट कर अपने कमरे में चले गए।

इस कमरे के दोनों तरफ छोटी छोटी दो कोठरियां थीं। एक में संध्या पूजा का सामान दुरुस्त था और दूसरी में खाली फर्श पर एक मसहरी बिछी हुई थी जो उस मसहरी से कुछ छोटी थी जिस पर कुंअर इन्द्रजीतसिंह आराम कर रहे थे। कोठरी से वह मसहरी बाहर निकाली गई और कुंअर आनन्दसिंह के सोने के लिए कुंअर इन्द्रजीतसिंह की मसहरी के पास बिछाई गई। भैरोंसिंह और तारासिंह ने भी दोनों मसहरियों के नीचे अपना बिस्तर जमाया। सिवाय इन चारों के उस कमरे में और कोई न रहा। इन लोगों ने रात भर आराम से काटी और सवेरा होने पर आंख खुलते ही विचित्र तमाशा देखा।

सुबह के पहले ही दोनों ऐयारों की आंखें खुलीं और हैरत भरी निगाहों से चारो तरफ देखने लगे, इसके बाद कुंअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह भी जागे और फूलों की खुशबू जो इस कमरे में बहुत देर पहिले से ही भर रही थी लेने तथा दोनों ऐयारों की तरह ताज्जुब से चारो तरफ देखने लगे।

आनन्द०। खुशबूदार फूलों के गजरे और गुलदस्ते इस कमरे में किसने सजाए हैं?

इन्द्र०। ताज्जुब है, हमारे आदमी बिना हुक्म पाए ऐसा कब कर सकते हैं?

भैरो०। हम दोनों आदमी घंटे भर के पहिले से उठ कर इस पर गौर कर

रहे हैं मगर कुछ समझ में नहीं आता कि क्या मामला है।

आनन्द०। गुलदस्ते भी बहुत खूबसूरत और बेशकीमत मालूम पड़ते हैं।

तारा०। (एक गुलदस्ता उठा कर और पास ला कर) देखिए इस सोने के गुलदस्ते पर क्या उम्दा मीने का काम किया हुआ है! बेशक किसी बहुत बड़े शौकीन का बनवाया हुआ है, इसी ढंग के सब गुलदस्ते हैं।

भैरो०। हां एक बात ताज्जुब की और भी है जो मैंने अभी तक आपसे नहीं कही।

इन्द्र०। वह क्या?

भैरो०। (हाथ का इशारा करके) ये दोनों दर्वाजे सिर्फ घुमा कर मैंने खुले छोड़ दिये थे मगर सुबह को और दर्वाजों की तरह इन्हें भी बन्द पाया।

तारा०। (आनन्दसिंह की तरफ देख कर) शायद रात को आप उठे हों?

आनन्द०। नहीं।

इसी तरह देर तक ये लोग ताज्जुब भरी बातें करते रहे मगर अकल ने कुछ गवाही न दी कि क्या मामला है। राजा बीरेन्द्रसिंह भी आ पहुंचे, उनके साथ और भी कई मुसाहिब लोग आ जमे। सभी इस आश्चर्य की बात को सुन कर सोचने और गौर करने लगे। कई बुजदिलों को भूत प्रेत और पिशाच का ध्यान आया मगर महाराज और दोनों कुमारों के खौफ से कुछ बोल न सके, क्योंकि ये लोग ऐसे डरपोक और इस खयाल के आदमी न थे और न ऐसे आदमियों को अपने साथ रखना ही पसन्द करते थे।

उन फूलों के गजरों और गुलदस्तों को किसी ने न छेड़ा और वे ज्यों के त्यों जहां के तहां लगे रह गये। रईसों की हाजिरी और शहर के इन्तजाम में दिन बीत गया और रात को फिर कल ही की तरह दोनों भाई मसहरी पर सो रहे। दोनों ऐयार भी मसहरी के बगल में जमीन पर लेट गये, मगर आपुस में मिल जुल कर बारी बारी से जागते रहने का विचार दोनों ने ही कर लिया था और अपने बीच में एक लम्बी छड़ी इसलिए रख ली थी कि अगर रात को किसी समय कोई ऐयार कुछ देखे तो बिना मुंह से बोले लकड़ी के इशारे से दूसरे को जगा दे। इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह ने भी कह रक्खा था कि अगर घर में किसी को देखना तो चुपके से हमें जगा देना जिससे हम लोग भी देख लें कि कौन है और कहां से आता है।

आधी रात से कुछ ज्यादे जा चुकी है। कुंअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह

गहरी नींद में बेसुध पड़े हैं। पहरे के मुताबिक लेटे लेटे तारासिंह दर्वाजे की तरफ देख रहे हैं। यकायक पूरब तरफ वाली कोठरी में कुछ खटका हुआ। तारासिंह जरा सा घूम गए और पड़े पड़े ही उस कोठरी की तरफ देखने लगे। बारीक चादर पहिले ही से दोनों ऐयारों के मुंह पर पड़ी हुई थी और रोशनी अच्छी तरह हो रही थी।

कोठरी का दर्वाजा धीरे धीरे खुलने लगा। तारासिंह ने लकड़ी के इशारे से भैरोसिंह को उठा दिया जो बड़ी होशियारी से घूम कर कोठरी की तरफ देखने लगे। कोठरी के दर्वाजे का एक पल्ला अब अच्छी तरह खुल गया और एक निहायत हसीन और कमसिन औरत किवाड़ पर हाथ रक्खे खड़ी दोनों मसहरियों की तरफ देखती नजर पड़ी। भैरोसिंह और तारासिंह ने मसहरी के पावे पर हाथ का इशारा देकर दोनों भाइयों को भी जगा दिया।

इन्द्रजीतसिंह का रुख तो पहिले ही उस कोठरी की तरफ था मगर आनन्दसिंह उस तरफ पीठ किए सो रहे थे। जब उनकी आंखें खुलीं तो अपने सामने की तरफ जहां तक देख सकते थे कुछ भी न देखा, लाचार धीरे से उनको करवट बदलनी पड़ी और तब मालूम हुआ कि इस कमरे में क्या आश्चर्य की बात दिखाई दे रही है।

अब कोठरी का दोनों पल्ला खुल गया और वह हसीन औरत सिर से पैर तक अच्छी तरह इन चारो को दिखाई देने लगी क्योंकि उसके तमाम बदन पर बखूबी रोशनी पड़ रही थी। वह औरत नखसिख से ऐसी दुरुस्त थी कि उसकी तरफ चारो की टकटकी बंध गई। बेशकीमत सुफेद साड़ी और जड़ाऊ जेवरों से वह बहुत ही भली मालूम हो रही थी। जेवरों में सिर्फ खुशरंग मानिक जड़ा हुआ था जिसकी सुर्खी उसके गोरे रंग पर पड़ कर उसके हुस्न को हद्द से ज्यादा रौनक दे रही थी। उसकी पेशानी (माथे) पर एक दाग था जिसके देखने से विश्वास होता था कि बेशक इसने कभी तलवार या किसी हर्बे की चोट खाई है। यह दो अंगुल का दाग भी उसकी खूबसूरती को बढ़ाने के लिए जेवर ही हो रहा था। उसे देख ये चारों आदमी यही सोचते होंगे कि इससे बढ़ कर खूबसूरत रम्भा और उर्वशी अप्सरा भी न होंगी। कुंअर इन्द्रजीतसिंह तो किशोरी पर मोहित हो रहे थे, उसकी तस्वीर इनके दिल में खिच रही थी, उन पर चाहे इसके हुस्न ने ज्यादा असर न किया हो मगर आनन्दसिंह की क्या हालत हो गई यह वे ही जानते होंगे। बहुत बचाते रहने पर भी ठण्डी सांसें उनसे न रुक सकीं जिससे हम भी

कह सकते हैं कि उनके दिल ने उनकी ठण्डी सांसों के साथ ही बाहर निकल कर कह दिया कि अब हम तुम्हारे कब्जे में नहीं हैं।

कुंअर आनन्दसिंह अपने को संभाल न सके, उठ बैठे और उधर ही देखने लगे जिधर वह औरत किवाड़ का पल्ला थामे खड़ी थी। उनकी यह हालत देख तीनों आदमियों को विश्वास हो गया कि वह भाग जायगी, मगर नहीं, वह इनको उठ कर बैठते देख जरा भी न हिचकी, ज्यों की त्यों खड़ी रही, बल्कि इनकी तरफ देख उसने जरा सा हंस दिया, जिससे ये और भी बेचैन हो गए।

कुंअर आनन्दसिंह यह सोच कर कि उस कोठरी में किसी दूसरी तरफ निकल जाने के लिए दूसरा दर्वाजा नहीं है मसहरी पर से उठ खड़े हुए और उस औरत की तरफ चले। इनको अपनी तरफ आते देख वह औरत कोठरी में चली गई और फुर्ती से उसका दर्वाजा भीतर से बन्द कर लिया।

कुंअर इन्द्रजीतसिंह की तबीयत चाहे दुरुस्त हो गई हो मगर कमजोरी अभी तक मौजूद है, बल्कि सब जख्म भी अभी तक कुछ गीले हैं, इसलिए अभी घूमने फिरने लायक नहीं हुए। उस परीजमाल को भीतर से किवाड़ बन्द कर लेते देख सब उठ खड़े हुए, कुंअर इन्द्रजीतसिंह भी तकिए का सहारा लेकर बैठ गए और बोले, "उस कोठरी में किसी तरफ निकल जाने का रास्ता तो नहीं है।"

भैरो०। जी नहीं।

आनन्द०। (किवाड़ में धक्का देकर) इसे खोलना चाहिए।

तारा०। मुश्किल तो कुछ नहीं, (इन्द्रजीतसिंह की तरफ देख कर) क्या हुक्म होता है?

इन्द्र०। जब इस कोठरी में दूसरी तरफ निकल जाने का रास्ता ही नहीं तो जल्दी क्यों करते हो?

इन्द्रजीतसिंह के इतना कहते ही आनन्दसिंह वहां से हटे और अपने भाई के पास आकर बैठ गए। भैरोसिंह और तारासिंह भी पास आकर बैठ गए और बातचीत होने लगी:—

इन्द्रजीत०। (भैरोसिंह और तारासिंह की तरफ देख कर) तुममें से कोई जागता भी रहा या दोनों सो गए थे?

भैरो०। नहीं सो क्या जाएंगे? हम लोग बारी बारी से बराबर जागते और महीन चादर से मुंह ढांके दर्वाजे की तरफ देखते रहे।

इन्द्र०। तो क्या इसी दर्वाजे में से इस औरत को आते देखा था?

आनन्द० । बेशक इसी तरफ से आई होगी !

तारा०।जी नहीं, यही तो ताज्जुब है कि कमरे के दर्वाजे ज्यों के त्यों भिड़के रह गए और यकायक कोठरी का दर्वाजा खुला और वह नजर आई ।

इन्द्र० । यह तो अच्छी तरह मालूम है न कि उस कोठरी में और कोई दर्वाजा नहीं है ?

भैरो० । जी हां अच्छी तरह जानते हैं, और कोई दर्वाजा नहीं है ।

तारा० । क्या कहें, कोई सुने तो यही कहे कि चुड़ैल थी ?

आनन्द० । राम राम, यह भी कोई बात है !

इन्द्र० । खैर जो हो, मेरी राय यही है कि पिताजी के आने तक कोठरी का दर्वाजा न खोला जाय ।

आनन्द० । जो हुक्म, मगर मैं तो यह चाहता था कि पिताजी के आने तक दर्वाजा खोल कर सब कुछ दरियाफ्त कर लिया जाता ।

इन्द्र० । खैर खोलो ।

हुक्म पाते ही कुंअर आनन्दसिंह उठ खड़े हुए, खूंटी से लटकती हुई एक भुजाली उतार ली और उस दर्वाजे के पास जा एक एक हाथ दोनों कुलाबों पर मारा जिससे कुलाबे कट गए । तारासिंह ने दोनों पल्ले उतार अलग रख दिए। भैरोसिंह ने एक बलता हुआ शमादान उठा लिया और तीनों आदमी उस कोठरी के अन्दर गए मगर वहां एक चूहे का बच्चा भी नजर न आया ।

इस कोठरी में तीन तरफ मजबूत दीवारें थीं और एक तरफ वही दर्वाजा था जिसका कुलाबा काट ये लोग अन्दर आए थे, हां सामने की तरफ वाली अर्थात् बिचली दीवार में काठ की एक आलमारी जड़ी हुई थी । इन लोगों का ध्यान उस आलमारी पर गया और सोचने लगे कि शायद यह आलमारी इस ढंग की हो जो दर्वाजे का काम देती हो और इसी राह से वह औरत आई हो, मगर उन लोगों का यह ख्याल भी तुरन्त ही जाता रहा और विश्वास हो गया कि यह आलमारी किसी तरह दर्वाजा नहीं हो सकती और न इस राह से वह औरत आई ही होगी, क्योंकि उस आलमारी में भैरोसिंह ने अपने हाथ से कुछ जरूरी असबाब रख कर ताला लगा दिया था जो अभी तक ज्यों का त्यों बन्द था । यह कब हो सकता है कि कोई ताला खोल कर इस आलमारी के अन्दर घुस गया हो और बाहर का ताला जैसा का तैसा दुरुस्त कर दिया तो ! लेकिन तब फिर क्या हुआ ? वह औरत क्योंकर आई और किस राह से चली गई ? उन लोगों ने लाख सिर धुन

और गौर किया मगर कुछ समझ में न आया।

ताज्जुब भरी बातों ही में रात बीत गई। सुबह को जब राजा वीरेन्द्रसिंह अपने लड़के को देखने के लिए उस कमरे में आए तो जर्राह वैद्य तथा और मुसाहिब लोग भी उनके साथ थे। बीरेन्द्रसिंह ने इन्द्रजीतसिंह से तबीयत का हाल पूछा। उन्होंने कहा, "अब तबीयत अच्छी है मगर एक जरूरी बात अर्ज किया चाहता हूं जिसके लिए तखलिया (एकान्त) हो जाना बेहतर होगा।"

बीरेन्द्रसिंह ने भैरोसिंह की तरफ देखा। उसने तखलिया हो जाने में महाराज की रजामन्दी जान कर सभी को हट जाने का इशारा किया। बात की बात में सन्नाटा हो गया और सिर्फ वही पांच आदमी उस कमरे में रह गए।

बीरेन्द्र०। कहो क्या बात है?

इन्द्र०। आज रात एक अजीब बात देखने में आई।

वीरेन्द्र०। वह क्या?

इन्द्र०। (तारासिंह की तरफ देख कर) तारासिंह, तुम्हीं सब हाल कह जाओ क्योंकि उस समय तुम्हीं जागते थे, हम लोग तो पीछे जगाए गए हैं।

तारा०। बहुत खूब।

तारासिंह ने रात का पूरा पूरा हाल राजा बीरेन्द्रसिंह से कह सुनाया जिसे सुन कर उन्होंने बहुत ताज्जुब किया और घण्टों तक गौर में डूबे रहने बाद बोले, "खैर यह बात किसी और को न मालूम हो नहीं तो मुसाहिबों और अहलकारों में खलबली पैदा हो जायगी और सैकड़ों तरह की गप्पें उड़ने लगेंगी। देखो तो क्या होता है और कब तक पता नहीं लगता, आज हम भी इसी कमरे में सोएंगे"

एक दिन क्या कई दिनों तक राजा वीरेन्द्रसिंह उस कमरे में सोए मगर कुछ मालूम न हुआ और न फिर कोई बात ही देखने में आई, आखिर उन्होंने हुक्म दिया कि उस कोठरी का दर्वाजा नया कुलाबा लगा कर फिर उसी तरह बन्द कर दिया जाय।

बारहवां बयान

आज पांच दिन के बाद देवीसिंह लौट कर आये हैं। जिस कमरे का हाल हम ऊपर लिख आए हैं उसी में राजा बीरेन्द्रसिंह, उनके दोनों लड़के, भैरोसिंह तारासिंह और कई सर्दार लोग बैठे हैं। इन्द्रजीतसिंह की तबीयत अब बहुत अच्छी है और वे चलने फिरने लायक हो गये हैं। देवीसिंह को बहुत जल्द लौट आते

देख कर सभों को विश्वास हो गया कि जिस काम पर मुस्तैद किए गये थे उसे कर चुके मगर ताज्जुब इस बात का था कि वे अकेले क्यों आये।

बीरेन्द्र०। कहो देवीसिंह खुश तो हो ?

देवी०। खुशी तो मेरी खरीदी हुई है ! (और लोगों की तरफ देख कर) अच्छा अब आप लोग जाइये बहुत विलम्ब हो गया।

दरबारियों और खुशामदियों के चले जाने के बाद बीरेन्द्रसिंह ने देवीसिंह से पूछा —

बीरेन्द्र०। कहो उस अर्जी में जो कुछ लिखा था सच था या झूठ ?

देवी०। उसमें जो कुछ लिखा था बहुत ठीक था। ईश्वर की कृपा से शीघ्र ही उन दुष्टों का पता लग गया, मगर क्या कहें ऐसी ताज्जुब की बातें देखने में आईं कि अभी तक बुद्धि चकरा रही है।

बीरेन्द्र०। (हंस कर) उधर तुम ताज्जुब की बातें देखो इधर हमलोग अद्भुत बातें देखें।

देवी०। सो क्या ?

बीरेन्द्र०। पहिले तुम अपना हाल कह लो तो यहां का सुनो !

देवी०। बहुत अच्छा, फिर सुनिए। रामशिला पहाड़ी के नीचे मैंने एक कागज अपने हाथ से लिख कर चिपका दिया जिसमें यह लिखा था :—

"हम खूब जानते हैं कि जो अग्निदत्त के विरुद्ध होता है उसका तुम लोग सिर काट लेते हो, जिसका घर चाहते हो लूट लेते हो। मैं डंके की चोट से कहता हूं अग्निदत्त का दुश्मन मुझसे बढ़ के कोई न होगा और गयाजी में मुझसे बढ़ कर मालदार भी कोई नहीं है, तिस पर मजा यह है कि मैं अकेला हूं, अब देखा चाहिए तुम लोग क्या कर लेते हो ?"

आनन्द०। अच्छा तब क्या हुआ ?

देवी०। उन दुष्टों का पता लगाने के उपाय तो मैंने और भी कई किए थे मगर काम इसी से चला। उस राह से आने जाने वाले सभी उस कागज को पढ़ते थे और चले जाते थे। मैं उस पहाड़ी के कुछ ऊपर जाकर पत्थर की चट्टान की आड़ में छिपा हुआ हर दम उसकी तरफ देखा करता था। एक दफे दो आदमी एक साथ वहां आये और उसे पढ़ मूछों पर ताव देते शहर की तरफ चले गये। शाम को वे दोनों लौटे और फिर उस कागज को पढ़ सिर हिलाते बराबर की पहाड़ी की ओर चले गये। मैंने सोचा कि इनका पीछा जरूर करना चाहिये क्योंकि

कागज के पढ़ने का असर सबसे ज्यादा इन्हीं दोनों पर हुआ। आखिर मैंने उनका पीछा किया और जो सोचा था वही ठीक निकला। वे लोग पन्द्रह बीस आदमी हैं और हट्टे कट्टे और मुसण्डे हैं। उसी झुण्ड में मैंने एक औरत को भी देखा। अहा, ऐसी खूबसूरत औरत तो मैंने आज तक नहीं देखी। पहिले मैंने सोचा कि वह इन लोगों में से किसी की लड़की होगी क्योंकि उसकी अवस्था बहुत कम थी, मगर नहीं उसके हाव भाव और उसकी हुकूमत भरी बातचीत से मालूम हुआ कि वह उन सभों की मालिक है, पर सच तो यह है कि मेरा जी इस बात पर भी नहीं जमता। उसकी चालढाल, उसकी बढ़ियां पौशाक और उसके जड़ाऊ कीमती गहनों पर जिसमें सिर्फ खुशरंग मानिक ही जड़े हुए थे ध्यान देने से दिल की कुछ विचित्र हालत हो जाती है।

मानिक के जड़ाऊ जेवरों का नाम सुनते ही कुंअर आनन्दसिंह चौंक पड़े, इन्द्रजीतसिंह और तारासिंह का भी चेहरा बदल गया और उस औरत का विशेष हाल जानने के लिए घबड़ाने लगे, क्योंकि उस रात को इन चारों ने इस कमरे में या यों कहिए कोठरी में जिस औरत की झलक देखी थी वह भी मानिक के जड़ाऊ जेवरों से ही अपने को सजाये हुए थी। आखिर आनन्दसिंह से न रहा गया, देवीसिंह को बात करते कहते रोक कर पूछा—

आनन्द०। उस औरत का नखसिख जरा अच्छी तरह कह जाइए।

देवी०। सो क्या?

वीरेन्द्र०। (लड़कों की तरफ देख कर) तुम लोगों को ताज्जुब किस बात का है, तुम लोगों के चेहरे पर हैरानी क्यों छा गई है?

भैरो०। जी वह औरत भी जिसे हमलोगों ने देखा था ऐसे ही गहने पहिरे हुए थी जैसा चाचाजी कह रहे हैं*।

वीरेन्द्र०। हां!

भैरो०। जी हां।

देवी०। तुम लोगों ने कैसी औरत देखी थी?

वीरेन्द्र०। सो पीछे सुनना, पहिले जो ये पूछते हैं उसका जवाब दे लो।

देवी०। नखसिख सुन के क्या कीजियेगा, सबसे ज्यादा पक्का निशान तो यह कि उसके ललाट में दो ढाई अंगुल का एक आड़ा दाग है, मालूम होता है

* भैरोसिंह और देवीसिंह का रिश्ता तो मामा भांजे का था मगर भैरोसिंह उन्हें चाचाजी कहा रहते थे।

शायद उसने कभी तलवार की चोट खाई है !

आनन्द० । बस बस बस !

इन्द्रजीत० । बेशक वही औरत है ।

तारा० । कोई शक नहीं कि वही है ।

भैरो० । अवश्य वही है !

बीरेन्द्र० । मगर आश्चर्य है, कहां उन दुष्टों का संग और कहां हम लोगों के साथ आपुस का वर्ताव ।

भैरो० । हम लोग तो उसे दुश्मन नहीं समझते ।

देवी० । अब हम न बोलेंगे जब तक यहां का खुलासा हाल न सुन लेंगे, न मालूम आप लोग क्या कह रहे हैं ?

बीरेन्द्र० । खैर यही सही, अपने लड़के से पूछिए कि यहां क्या हुआ ।

तारा० । जी हां सुनिए मैं अर्ज करता हूं ।

तारासिंह ने यहां का बिल्कुल हाल अच्छी तरह कहा । फूल तो फेंक दिए गए थे मगर गुलदस्ते अभी तक मौजूद थे, वे भी दिखाये । देवीसिंह हैरान थे कि यह क्या मामला है, देर तक सोचने के वाद बोले, "मुझे तो विश्वास नहीं होता कि यहां वही औरत आई होगी जिसे मैंने वहां देखा है !"

बीरेन्द्र० । यह शक भी मिटा ही डालना चाहिए ।

देवी० । उन लोगों का जमाव वहां रोज ही होता है जहां मैं देख आया हूं, आज तारा या भैरो को अपने साथ ले चलूंगा, ये खुद ही देख लें कि वही औरत है या दूसरी ।

बीरेन्द्र० । ठीक है, आज ऐसा ही करना, हां अब तुम अपना हाल और आगे कहो ।

देवी० । मुझे यह भी मालूम हुआ कि उन दुष्टों ने हमेशे के लिए अपना डेरा उसी पहाड़ी में कायम किया है और बातचीत से यह भी जाना गया कि लूट और चोरी का माल भी वे लोग उसी ठिकाने कहीं रखते हैं । मैंने अभी बहुत खोज उन लोगों की नहीं की, जो कुछ मालूम हुआ था आपसे कहने के लिए चला आया । अब उन लोगों को गिरफ्तार करना कुछ मुश्किल नहीं है, हुक्म हो तो थोड़े से आदमी अपने साथ ले जाऊं और आज ही उन लोगों को उस औरत के सहित गिरफ्तार कर लाऊं ।

बीरेन्द्र० । आज तो तुम भैरो या तारा को अपने साथ ले जाओ, फिर कल

उन लोगों की गिरफ्तारी की फिक्र की जायगी।

आखिर भैरोसिंह को अपने साथ लेकर देवीसिंह बरावर के पहाड़ पर गए जो गयाजी से तीन चार कोस की दूरी पर होगा। घूमघुमौवा और पेचीली पगडण्डियों को तै करते हुए पहर रात जाते जाते ये दोनों उस खोह के पास पहुंचे जिसमें वे वदमाश डाकू लोग रहते थे। उस खोह के पास ही एक और छोटी सी गुफा थी जिसमें मुश्किल से दो आदमी बैठ सकते थे। इस गुफा में एक बारीक दरार ऐसी पड़ी हुई थी जिससे ये दोनों ऐयार उस लम्वी चौड़ी गुफा का हाल बखूबी देख सकते थे जिसमें वे डाकू लोग रहते थे। इस समय वे सब के सब वहां मौजूद भी थे, बल्कि वह औरत भी सर्दारी के तौर पर छोटी सी गद्दी लगाए वहां मौजूद थी। ये दोनों ऐयार उस दरार से उन लोगों की बातचीत तो नहीं सुन सकते थे मगर सूरत शक्ल भाव और इशारे अच्छी तरह देख सकते थे।

इन लोगों ने इस समय वहां पन्द्रह डाकुओं को बैठे हुए पाया और उस औरत को देख कर भैरोसिंह ने पहिचान लिया कि यह वही है जो कुंअर इन्द्रजीतसिंह के कमरे में आई थी। आज वह वैसी पोशाक या उन जेवरों को पहिरे हुए न थी, तो भी सूरत शक्ल में किसी तरह का फर्क न था!

इन दोनों ऐयारों के पहुंचने के बाद दो घण्टे तक वे डाकू लोग आपुस में कुछ बातचीत करते रहे, इस बीच में कई डाकुओं ने दो तीन दफे हाथ जोड़ कर उस औरत से कुछ कहा जिसके जवाब में उसने सिर हिला दिया जिससे मालूम हुआ कि मंजूर नहीं किया। इतने ही में एक दूसरी हसीन कमसिन और फुर्तीली औरत लपकती हुई वहां आ मौजूद हुई। उसके हांफने और दम फूलने से मालूम होता था कि वह बहुत दूर से दौड़ती हुई आ रही है।

उस नई आई औरत ने न मालूम उस सर्दार औरत के कान में झुक कर क्या कहा जिसके सुनते ही उसकी हालत बदल गई। बड़ी बड़ी आंखें सुर्ख हो गईं, खूबसूरत चेहरा तमतमा उठा और तुरत उस नई औरत को साथ ले उस खोह के बाहर चली गई। वे डाकू उन दोनों औरतों का मुंह देखते ही रह गये मगर कुछ कहने की हिम्मत न पड़ी।

जब दो घण्टे तक दोनों औरतों में से कोई न लौटी तो डाकू लोग भी उठ खड़े हुए और खोह के बाहर निकल गये। उन लोगों के इशारे और आकृति से मालूम होता था कि वे दोनों औरतों के यकायक इस तरह पर चले जाने से ताज्जुब कर रहे हैं। यह हालत देख कर देवीसिंह भी वहां से चल पड़े और सुबह होते होते राजमहल में आ पहुंचे।

तेरहवां बयान

कुंअर इन्द्रजीतसिंह तो किशोरी पर जी जान से आशिक हो चुके थे। इस बीमारी की हालत में भी उसकी याद इन्हें सता रही थी और यह जानने के लिए बेचैन हो रहे थे कि उस पर क्या बीती, वह किस अवस्था में कहां है और अब उसकी सूरत कब किस तरह देखनी नसीब होगी। जब तक वे अच्छी तरह दुरुस्त नहीं हो जाते, न तो खुद कहीं जाने के लिए हुक्म ले सकते थे और न किसी बहाने से अपने प्रेमी साथी ऐयार भैरोसिंह को ही कहीं भेज सकते थे। इस बीमारी की हालत में समय पाकर उन्होंने भैरोसिंह से सब हाल मालूम कर लिया था। यह सुन कर कि किशोरी को दीवान अग्निदत्त उठा ले गया बहुत ही परेशान थे, मगर यह खबर उन्हें कुछ कुछ ढाढ़स देती थी कि चपला चम्पा और पण्डित बद्रीनाथ उसके छुड़ाने की फिक्र में लगे हुए हैं और राजा बीरेन्द्रसिंह को भी यह धुन जो से लगी हुई है कि जिस तरह बने शिवदत्त की लड़की किशोरी की शादी अपने लड़के के साथ करके शिवदत्त को नीचा दिखावें और शर्मिन्दा करें।

कुंअर आनन्दसिंह ने भी अब इश्क के मैदान में पैर रक्खा, मगर इनकी हालत अजब गोमगो में पड़ी हुई है। जब उस औरत का ध्यान आता जी बेचैन हो जाता था मगर जब देवीसिंह की बात को याद करते कि वह डाकुओं के एक गिरोह की सरदार है तो कलेजे में अजीब तरह का दर्द पैदा होता था और थोड़ी देर के लिए चित्त का भाव बदल जाता था, लेकिन साथ ही इसके सोचने लगते थे कि नहीं अगर वह हम लोगों की दुश्मन होती तो मेरी तरफ देख कर प्रेम भाव से कभी न हंसती और फूलों के गुलदस्ते और गजरे सजाने के लिए जब उस कमरे में आई थी तो हम लोगों को नींद में गाफिल पाकर जरूर मार डालती। पर फिर हम लोगों की दुश्मन अगर नहीं है तो उन डाकुओं का साथ कैसा!

ऐसे ऐसे सोच विचार ने उनकी अवस्था खराब कर रक्खी थी। कुंअर इन्द्रजीतसिंह भैरोसिंह और तारासिंह को उनके जी का पता कुछ कुछ लग चुका था मगर जब तक उसकी इज्जत आबरू और जात पांत की खबर के साथ साथ यह भी मालूम न हो जाय कि वह दोस्त है या दुश्मन, तब तक कुछ कहना सुनना या समझाना मुनासिब नहीं समझते थे।

राजा बीरेन्द्रसिंह को अब यह चिन्ता हुई कि जिस तरह वह औरत इस घर में आ पहुंची कहीं डाकू लोग भी आकर लड़कों को दुख न दें और फसाद न मचावें।

उन्होंने पहरे वगैरह का अच्छी तरह इन्तजाम किया और यह सोच कर कि कुंअर इन्द्रजीतसिंह अभी तन्दुरुस्त नहीं हुए हैं कमजोरी बनी हुई है और किसी तरह लड़भिड़ नहीं सकते, इनको अकेले छोड़ना मुनासिब नहीं, अपने सोने का इन्तजाम भी उसी कमरे में किया और साथ ही एक नया तथा विचित्र तमाशा देखा।

हम ऊपर लिख आये हैं कि इस कमरे के दोनों तरफ दो कोठरियां हैं,एक में सन्ध्या पूजन का सामान है और दूसरी वही विचित्र कोठरी है जिसमें से वह औरत पैदा हुई थी। सन्ध्या पूजा वाली कोठरी में बाहर से ताला बन्द कर दिया गया और दूसरी कोठरी का कुलाबा वगैरह दुरुस्त करके बिना बाहर ताला लगाये उसी तरह छोड़ दिया गया जैसे पहले था, बल्कि राजा बीरेन्द्रसिंह ने उसी दर्वाजे पर अपना पलंग बिछवाया और सारी रात जागते रह गए।

आधी रात बीत गई मगर कुछ देखने में न आया, तब बीरेन्द्रसिंह अपने बिस्तरे पर से उठे और कमरे में इधर उधर घूमने लगे। घण्टे भर बाद उस कोठरी में से कुछ खटके की आवाज आई, बीरेन्द्रसिंह ने फौरन तलवार उठा ली और तारासिंह को उठाने के लिए चले मगर खटके की आवाज पा तारासिंह पहिले ही से सचेत हो गये थे, अब हाथ में खंजर ले बीरेन्द्रसिंह के साथ टहलने लगे।

आधी घड़ी के बाद जंजीर खटकने की आवाज इस तरह पर हुई जिससे साफ मालूम हो गया कि किसी ने इस कोठरी का दरवाजा भीतर से बन्द कर लिया। थोड़ी ही देर बाद पैर के धमाधमी की आवाज भीतर से आने लगी, मानो चार पांच आदमी भीतर उछल कूद रहे हैं। बीरेन्द्रसिंह कोठरी के दर्वाजे के पास गये और हाथ का धक्का देकर किवाड़ खोलना चाहा मगर भीतर से बन्द रहने के कारण दर्वाज़ा न खुला, लाचार उसी जगह खड़े हो भीतर की आहट पर गौर करने लगे।

अब पैरों की धमाधमी की आवाज बढ़ने लगी और धीरे धीरे इतनी ज्यादा हुई कि कुंअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह भी उठे और कोठरी के पास जा कर खड़े हो गये। फिर दर्वाजा खोलने की कोशिश की गई मगर न खुला। भीतर जल्द जल्द पैर उठाने और पटकने की आवाज से सभों को निश्चय हो गया कि अन्दर लड़ाई हो रही है। थोड़ी ही देर बाद तलवारों की झनझनाहट भी सुनाई देने लगी। अब भीतर लड़ाई होने में किसी तरह का शक न रहा। आनन्दसिंह ने चाहा कि दर्वाजे का कुलाबा तोड़ा जाय मगर बीरेन्द्रसिंह की मरजी न पा कर सब चुपचाप खड़े आहट सुनते रहे।

यकायक धमधमाहट की आवाज बढ़ी और तब सन्नाटा हो गया। घड़ी भर तक ये लोग बाहर खड़े रहे मगर कुछ मालूम न हुआ और न फिर किसी तरह की आहट या आवाज ही सुनाई दी। रात सिर्फ दो घंटे बल्कि इससे भी कम बाकी रह गई थी। पहरे वाले टहल कर अच्छी तरह से पहरा दे रहे हैं या नहीं यह देखने के लिए तारासिंह बाहर गए और सभों को अपने काम पर मुस्तैद पाकर लौट आए। इतने ही में कमरे का दर्वाजा खुला और भैरोसिंह को साथ लिए देवीसिंह आते दिखाई पड़े।

ये दोनों ऐयार सलाम करने बाद वीरेन्द्रसिंह के पास बैठ गये मगर यह देख कर कि यहां अभी तक ये लोग जाग रहे हैं ताज्जुब करने लगे।

देवी०। आप लोग इस समय तक जाग रहे हैं!

बीरेन्द्र०। हां, यहां कुछ ऐसा ही मामला हुआ जिससे निश्चिन्त हो सो न सके।

देवी०। सो क्या ?

बीरेन्द्र०। खैर तुम्हें यह भी मालूम हो जायगा, पहिले अपना हाल तो कहो। (भैरोसिंह की तरफ देख कर) तुमने उस औरत को पहिचाना ?

भैरो०। जी हां, बेशक वही औरत है जो यहां आई थी, बल्कि वहां एक और औरत दिखाई दी।

वीरेन्द्र०। यहां से जाकर तुमने क्या किया और क्या क्या देखा जो खुलासा कह जाओ।

भैरोसिंह ने जो कुछ देखा था कहने बाद यहां का हाल पूछा। वीरेन्द्रसिंह ने भी यहां की कुल कैफियत कह सुनाई और बोले, "हम यही राह देख रहे थे कि सवेरा हो जाये और तुम लोग भी आ जाओ तो इस कोठरी को खोलें और देखें कि क्या है, कहीं से किसी के आने जाने का पता लगता है या नहीं।"

कोठरी खोली गई। एक हाथ में रोशनी दूसरे में नंगी तलवार लेकर पहिले देवीसिंह कोठरी के अन्दर घुसे और तुरन्त ही बोल उठे—"वाह वाह, यहां तो खून-खराबा मच चुका है!" अब राजा बीरेन्द्रसिंह, दोनों कुमार और उनके दोनों ऐयार भी कोठरी के अन्दर गये और ताज्जुब भरी निगाहों से चारो तरफ देखने लगे।

इस कोठरी में जो फर्श बिछा हुआ था वह इस तरह से सिमट गया था जैसे कई आदमियों के बेअख्तियार उछल कूद करने या लड़ने से इकट्ठा हो गया हो, ऊपर से वह खून से तर भी हो रहा था। चारो तरफ दीवारों पर भी खून के छींटे और लड़ते समय हाथ बहक कर बैठ जाने वाली तलवारों के निशान दिखाई दे रहे

थे। बीच में एक लाश पड़ी हुई थी मगर बेसिर की, कुछ समझ में नहीं आता था कि यह लाश किसकी है। कपड़ों में सिर्फ एक लंगोटा उसकी कमर में था। तमाम बदन नंगा जिसमें अन्दाज से ज्यादा तेल लगा हुआ था। दाहिने हाथ में तलवार थी मगर वह हाथ भी कटा हुआ सिर्फ जरा सा चमड़ा लगा हुआ था, वह भी इतना कम कि अगर कोई खैंचे तो अलग हो जाय। सबसे ज्यादा परेशान और बेचैन करने वाली एक चीज और दिखाई दी।

दाहिने हाथ की कटी हुई एक कलाई जिसमें फौलादी कटार अभी तक मौजूद थी, दिखाई पड़ी। आनन्दसिंह ने फौरन उस हाथ को उठा लिया और सभों की निगाह भी गौर के साथ उस पर पड़ने लगी। यह कलाई किसी नाजुक हसीन और कमसिन औरत की थी। हाथ में हीरे का जड़ाऊ कड़ा और जमीन पर मानिक की दो तीन बारीक जड़ाऊ चूड़ियां भी मौजूद थीं, शायद कलाई कट कर गिरती समय ये चूड़ियां हाथ से अलग हो जमीन पर फैल गई हों।

इस कलाई के देखने से सभों को रंज हुआ और झट उस औरत की तरफ ख्याल दौड़ गया जिसे इस कोठरी में से निकलते सभों ने देखा था। चाहे उस औरत के सबब से ये कैसे ही हैरान क्यों न हों मगर उसकी सूरत ने सभों को अपने ऊपर मेहरबान बना लिया था, खास करके कुंअर आनन्दसिंह के दिल में तो वह उनके जान और माल की मालिक ही होकर बैठ गई थी, इसलिए सबसे ज्यादे दुःख छोटे कुंअर साहब को हुआ। यह सोच कर कि बेशक यह उसी औरत की कलाई है कुंअर आनन्दसिंह के आंखों में जल भर आया और कलेजे में एक किस्म का दर्द पैदा हुआ, मगर इस समय कुछ कहने या अपने दिल का हाल जाहिर करने का मौका न समझ उन्होंने बड़ी कोशिश से अपने को सम्हाला और चुपचाप सभों का मुंह देखने लगे।

पाठक, अभी इस औरत के बारे में बहुत कुछ लिखना है इसलिए जब तक यह मालूम न हो जाय कि यह औरत कौन है तब तक अपने और आपके सुभीते के लिए हम इसका नाम 'किन्नरी' रख देते हैं।

राजा बीरेन्द्रसिंह और उनके ऐयारों ने इन सब अद्भुत बातों को जो इधर कई दिनों में हो चुकी थीं छिपाने लिए बहुत कोशिश की मगर हो न सका। कई तरह पर रंग बदल कर यह बात तमाम शहर में फैल गई। कोई कहता था 'महाराज के मकान में देव और परियों ने डेरा डाला है'! कोई कहता था गयाजी के भूत प्रेत इन्हें सता रहे हैं'! कोई कहता था 'दीवान अग्निदत्त के तरफदार बदमाश

और डाकुओं ने यह फसाद मचाया है' ! इत्यादि बहुत तरह की बातें शहर वाले आपुस में कहने लगे मगर उस समय उन बातों का ढंग ही बिल्कुल बदल गया जब राजा बीरेन्द्रसिंह के हुक्म से देवीसिंह ने उस सिरकटी लाश को जो कोठरी में से निकली थी उठवा कर सदर चौक में रखवा दिया और उसके पास एक मुनादी वाले को यह कह कर पुकारने के लिए बैठा दिया कि—'अग्निदत्त के तरफदार डाकू लोग जो शहर के रईसों और अमीरों को सताया करते थे ऐयारों के हाथ गिरफ्तार होकर मारे जाने लगे, आज एक डाकू मारा गया है जिसकी लाश यह है' ।

चौदहवां बयान

सूर्य भगवान के अस्त होने में अभी घंटे भर की देर है, फिर भी मौसिम के मुताबिक बाग में टहलने वाले हमारे कुंअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह को ठंडी हवा सिहरावनदार मालूम हो रही है । रंग बिरंग के खूबसूरत फूल खिले हुए हैं जिनके देखने से हर एक की तबीयत उमंग पर आ सकती है मगर इन दोनों के दिल की कली किसी तरह भी खिलने में नहीं आती । बाग में जितनी चीजें दिल खुश करने वाली हैं ये सभी इस समय इन दोनों को बुरी मालूम होती हैं । बहुत देर से ये दोनों भाई बाग में टहल रहे हैं मगर ऐसी नौबत न आई कि एक दूसरे से बात करे या हंसे क्योंकि दोनों के दिल चुटीले हो रहे हैं, दोनों ही अपनी अपनी धुन में डूबे हुए हैं, दोनों ही को अपने अपने माशूक की खोज है, दोनों ही सोच रहे हैं कि 'हाय क्या ही आनन्द होता अगर इस समय वह मौजूद होता जिसे जी प्यार करता है या जिसके बिना दुनिया की सम्पत्ति तुच्छ मालूम होती है' ! दिल बहलाने का बहुत कुछ उद्योग किया मगर न हो सका, लाचार दोनों भाई उस बारहदरी में पहुंचे जो बाग के दक्खिन तरफ महल के साथ सटी हुई है और जहां इस समय राजा बीरेन्द्रसिंह अपने मुसाहिबों के साथ जी बहलाने की बातें कर रहे थे । देवीसिंह भी उनके पास बैठे हुए थे जो कभी कभी लड़कपन की बातें याद दिलाने के साथ ही गुप्त दिल्लगी भी करते जाते थे और जवाब भी पाते थे । दोनों लड़के भी वहां जा पहुंचे मगर इनके बैठते ही मजलिस का रंग बदल गया और बातों ने पल्टा खाकर दूसरा ही ढंग पकड़ा जैसा कि अक्सर हंसी दिल्लगी करते हुए बड़ों के बीच में समझदार लड़कों के आ बैठने से हो जाता है ।

बीरेन्द्र० । अब तो चुनार जाने का जी चाहता है मगर....

देवी० । यहां आपकी जरूरत भी अब क्या है ?

बीरेन्द्र० । ठीक है, यहां मेरी जरूरत नहीं, लेकिन यहां की अद्भुत बातें देख कर विचार होता है कि मेरे चले जाने से कोई वखेड़ा न मचे और लड़कों को तकलीफ न हो ।

इन्द्र० । (हाथ जोड़ कर) इसकी चिन्ता आप न करें, हम लोग जब इतनी छोटी छोटी बातों से अपने को सम्हाल न सकेंगे तो आगे क्या करेंगे ।

बीरेन्द्र० । तो क्या तुम्हारा इरादा भी यहां रहने का है ?

इन्द्र० । यदि आज्ञा हो !

बीरेन्द्र० । (कुछ सोच कर) क्यों देवीसिंह !

देवी० । क्या हर्ज है रहने दीजिए ।

बीरेन्द्र० । और तुम ?

देवी० । मैं आपके साथ चलूंगा, यहां भैरो और तारा रहेंगे, वे दोनों होशियार हैं, कुछ हर्ज नहीं है !

भैरो० । (हाथ जोड़ कर) यहां की अद्भुत बातें हम लोगों का कुछ बिगाड़ नहीं सकतीं !

तारा० । (हाथ जोड़ कर) सरकार की मर्जी नहीं पाई नहीं तो ऐसी ऐसी लीलाओं की तो मैं एक ही दिन में काया पलट कर देने की हिम्मत रखता हूं ।

भैरो० । अगर मर्जी हो तो इन अद्भुत बातों का आज ही निपटारा कर दिया जाय ।

बीरेन्द्र० । (मुस्कुरा कर) नहीं ऐसी कोई जरूरत नहीं, हमें तुम लोगों के हौसले पर पूरा भरोसा है । (देवीसिंह की तरफ देख कर) खैर तो आज दिन भी अच्छा है ।

देवी० । बहुत खूब ! (एक मुसाहिब की तरफ देख कर) आप जरा तकलीफ करें।

मुसा० । बहुत अच्छा, मैं जाता हूं ।

कुंअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह यही चाहते थे कि किसी तरह बीरेन्द्रसिंह चुनार जायं क्योंकि उनके रहते ये दोनों अपने मतलब की कार्रवाई नहीं कर सकते थे । इस बात को बीरेन्द्रसिंह भी समझते थे मगर इसके सिवाय भी न मालूम क्या सोच कर वे इस समय चुनार जा रहे हैं या गयाजी की सरहद छोड़ कर क्या मतलब निकाला चाहते हैं !

राजा बीरेन्द्रसिंह का विचार कोई जान नहीं सकता था । वे किसी से यह नहीं कह सकते कि हम दो घण्टे के बाद क्या करेंगे । कोई यह नहीं कह सकता था कि

महाराज आज यहां तो हैं मगर कल कहां रहेंगे, या महाराज फलाना काम क्यों और किस इरादे से कर रहे हैं। पहिले दिल ही दिल में अपना इरादा मजबूत कर लेते थे, जिसे कोई बदल नहीं सकता था, मगर अपने बाप की इज्जत बहुत करते थे और उनके मुकाबले में अपने दृढ़ विचार को भी हुक्म के मुताबिक बदल देने में बुरा नहीं समझते थे, बल्कि उसे कर्तव्य और धर्म मानते थे।

दो घड़ी रात जाते जाते बीरेन्द्रसिंह ने चुनार की तरफ कूच कर दिया और देवीसिंह को साथ लेते गए। अब कुंअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह खुदमुख्तार हो गये, मगर साथ ही इसके राजा हो गए तो क्या अपनी खुद मुख्तारी के सामने आनन्दसिंह अपने बड़े भाई के हुक्म की नाकदरी नहीं कर सकते थे और यहां तो दोनों ही के इरादे दूसरे हैं जिसमें एक दूसरे का बाधक नहीं हो सकता था।

कुंअर इन्द्रजीतसिंह बीमार थे इसलिए दोनों भाई एक ही कमरे में रहा करते थे, मगर अब दोनों ने अपने अपने लिए अलग अलग दो कमरे मुकर्रर किए। जिस कमरे में वह विचित्र कोठरी थी और जिसका हाल ऊपर लिखा गया है आनन्दसिंह ने अपने लिए रक्खा। उससे कुछ दूर पर इन्द्रजीतसिंह का दूसरा कमरा था।

पन्द्रहवां बयान

आधी रात से ज्यादे जा चुकी है। गयाजी में हर महल्ले के चौकीदार 'जागते रहियो, होशियार रहियो' कह कह कर इधर से उधर घूम रहे हैं। रात अंधेरी है, चारो तरफ अंधेरा छाया हुआ है। यहां का मुख्य स्थान विष्णु-पादुका है, उसके चारो तरफ की आबादी बहुत घनी है मगर इस समय हम गुन्जान आबादी में न जाकर उस मुख्तसर आबादी की तरफ चलते हैं जो शहर के उत्तर रामशिला पहाड़ी के नीचे आबाद है और जहां के कुल मकान कच्चे और खपड़े की छावनी के हैं। इसी आबादी में से दो आदमी स्याह कम्बल ओढ़े बाहर निकले और फलगू नदी की तरफ रवाना हुए।

रामशिला पहाड़ी से पूरब फलगू नदी के बीचोबीच में एक बड़ा भयानक ऊंचा टीला है। उस टीले पर किसी महात्मा की समाधि है और उसी जगह पत्थर की मजबूत बनी हुई कुटी में एक साधु भी रहते हैं। उस समाधि और कुटी के चारो तरफ बैर मकोइचे धौ इत्यादि जंगली पेड़ों से बड़ा ही गुंजान हो रहा है और वहां जमीन पर पड़ी हुई हड्डियों की यह कैफियत है कि बिना उन पर पैर रक्खे कोई आदमी समाधि या उस कुटी तक जा ही नहीं सकता। छोटी

बड़ी साबूत और टूटी सैंकड़ों तरह की खोपड़ियां इधर से उधर लुढ़क रही हैं। न मालूम कब और क्योंकर इतनी हड्डियां चारो तरफ जमा हो गईं। उस आबादी से निकले हुए दोनों आदमी इसी टीले की तरफ जा रहे हैं।

कोई साधारण आदमी ऐसी अंधेरी रात में उस टीले की तरफ जाने का साहस कभी नहीं कर सकता, मगर ये दोनों बिना किसी तरह की रोशनी साथ लिए अंधेरे में ही हड्डियों पर पैर रखते और कंटीली झाड़ियों में घुसते चले जा रहे हैं। आखिर ये दोनों कुटी के पास जा पहुंचे और दर्वाजे पर खड़े होकर एक ने ताली बजाई।

भीतर से०। कौन है?

एक०। किवाड़ खोलो।

भीतर से०। क्यों किवाड़ खोलें?

एक०। काम है।

भीतर से०। तुम लोग हमें व्यर्थ तंग करते हो?

साधू ने उठ कर किवाड़ खोला और वे दोनों अन्दर जाकर एक तरफ बैठ गये। भीतर धूनी के जलने से कुटी अच्छी तरह गर्म हो रही थी इसलिए उन दोनों ने कम्बल उतार कर रख दिया। अब मालूम हुआ कि ये दोनों औरतें हैं और साथ ही इसके यह भी देखने में आया कि एक औरत की दाहिनी कलाई कटी है जिस पर वह कपड़ा लपेटे हुए है। एक औरत तो चुपचाप बैठी रही मगर बाबाजी से वह दूसरी औरत जिसकी कलाई कटी हुई थी यों बातचीत करने लगी :—

औरत०। कहिये आपने कुछ सोचा?

बाबाजी०। जो काम मेरे किए हो ही नहीं सकता उसके लिए मैं क्या सोचूं।

औरत०। बेशक आपके किए वह काम हो सकता है, क्योंकि वह आपको गुरु के समान मानती है।

साधू०। गुरु के समान मानती है तो क्या मेरे कहने से वह अपनी जान दे देगी? तुम लोग भी क्या अन्धेर करती हो!

औरत०। इसमें जान देने की क्या जरूरत है?

साधू०। तो तुम क्या चाहती हो?

औरत०। बस इतना ही कि वह उस मकान को छोड़ दे।

साधू०। उस बेचारी ने किसी को दुःख तो दिया नहीं, फिर उसके पीछे क्यों पड़ी हो?

औरत०। क्या उसने मुझे और मेरे आदमियों को धोखा नहीं दिया?

साधू० । तुम अपना राज्य दूसरे को देकर आप भाग गईं, अब तो वही मालिक है, इसलिए वे लोग उसी के नौकर गिने जायंगे ।

औरत० । मैं अपना राज्य फिर अपने कब्जे में किया चाहती हूं ।

साधू० । जो तुमसे हो सके करो पर मैं किसी तरह की मदद नहीं दे सकता। तुम लड़कपन से मुझे जानती हो, तुम्हारे पिता तुमको गोद में लेकर यहां आया करते थे, कभी मैं किसी के भले बुरे का साथी नहीं हुआ ।

औरत ० । जो हो मगर आपको वह काम करना ही पड़ेगा जो मैं कहती हूं और याद रखिये कि अगर आप इनकार करेंगे तो इसका नतीजा अच्छा न होगा, मैं साधू और महात्मा समझ कर छोड़ न दूंगी ।

साधू० । (कुछ देर सोचने के बाद) अच्छा आज भर तुम मुझे और मोहलत दो, कल इसी समय यहां आना ।

औरत० । खैर एक दिन और सही ।

ये दोनों औरतें वहां से उठ कर रवाना हुईं । न मालूम कब से एक आदमी कुटी के पीछे छिपा हुआ था जो इस समय नजर बचा कर उन दोनों के पीछे पीछे तब तक चला ही गया जब तक वे दोनों आबादी में पहुंच कर अपने मकान के अन्दर न घुस गईं । जब उन दोनों औरतों ने मकान के अन्दर जाकर दर्वाज़ा बन्द कर लिया जो खुला छोड़ गई थीं, तब वह आदमी वहां से लौटा और फिर उसी कुटी में पहुंचा जिसका हाल ऊपर लिख चुके हैं । कुटी का दर्वाजा खुला हुआ था और साधू बेचारे उसी तरह बैठे कुछ सोच रहे थे । वह आदमी कुटी के अन्दर बेधड़क चला गया और दंडवत करके एक किनारे बैठ गया ।

साधू० । कहिए देवीसिंहजी, आप आ गए ?

देवी० । (हाथ जोड़ कर) जी महाराज, मैं तभी से यहां हूं जब वे दोनों यहां आई भी न थीं, अब उन दोनों को उनके घर पहुंचा कर लौटा आ रहा हूं ।

साधू० । हां !

देवी० । जी हां, आपने बड़ी कृपा की जो उसका हाल मुझे बता दिया, कई दिनों से हम हैरान हो रहे थे । क्या कहूं आपकी आज्ञा न हुई नहीं तो मैं इसी जगह से इन दोनों को अपने कब्जे में कर लेता ।

साधू० । नहीं भैया ऐसा करने से यह हमारे गुरु की कुटिया बदनाम होती, अब तुमने उसका घर देख ही लिया है सब काम बना लोगे । वीरेन्द्रसिंह बड़े प्रतापी और धर्मात्मा राजा हैं, ऐसे को कभी कोई सता नहीं सकता । देखो इस दुष्टा

माधवी ने अपने चाल चलन को कैसा खराब किया और प्रजा को कितना दुःख दिया, आखिर उसी की सजा भोग रही है। अच्छा अब ईश्वर तुम्हारा कल्याण करे। बीरेन्द्रसिंह से मेरा आशीर्वाद कहना। अहा, कैसा भक्त धर्मात्मा और नीति पर चलने वाला राजा है।

देवी०। अच्छा तो मुझे आज्ञा है न?

साधू०। हां जाओ, मगर देखो मैं तुम्हें पहले भी कह चुका हूं और अब भी कहता हूं कि माधवी को जान से मत मारना और बेचारी कामिनी पर दया रखना। मैं उसे अपनी पुत्री ही मानता हूं। बीरेन्द्रसिंह से कह देना कि वे कामिनी को अपनी लड़की समझें और आनन्दसिंह के साथ उसका संबंध करने में कुछ सोच विचार न करें, क्या हुआ अगर उसका बाप आपके सामने खड़ा होने लायक नहीं है।

देवी०। (हाथ जोड़ कर) बहुत अच्छा कह दूंगा, राजा बीरेन्द्रसिंह कदापि आपकी आज्ञा न टालेंगे मगर फिर एक दफे मैं आपकी सेवा में आऊंगा।

साधू०। नहीं अब मुझसे मुलाकात न होगी, मैं आज ही इस कुटी को छोड़ दूंगा। हां ईश्वर चाहेगा तो मैं एक दिन स्वयं तुम लोगों से मिलूंगा।

देवी०। जैसी आज्ञा।

साधू०। हां बस अब जाओ यहां मत अटको।

पाठक सोचते होंगे कि देवीसिंह तो बीरेन्द्रसिंह के साथ चुनार चले गये थे, यहां कैसे आ पहुंचे! मगर नहीं, लोगों के जानने में बीरेन्द्रसिंह देवीसिंह को अपने साथ ले गये थे परन्तु वास्तव में ऐसा न था। राजा बीरेन्द्रसिंह की गुप्त नीति साधारण नहीं।

सोलहवां बयान

राजा बीरेन्द्रसिंह के चुनार चले जाने बाद दोनों भाइयों को अपनी अपनी फिक्र पैदा हुई। कुंअर आनन्दसिंह किन्नरी की फिक्र में पड़े और कुंअर इन्द्रजीतसिंह को राजगृही की फिक्र पैदा हुई। राजगृही को फतह कर लेना उनके लिए एक अदना काम था मगर इस विचार से कि किशोरी वहां फंसी हुई है, हमें सताने के लिए अग्निदत्त उसे तकलीफ न दे, धावा करने का जल्दी साहस नहीं कर सकते थे। जिस समय वह आजाद हुए अर्थात् बीरेन्द्रसिंह के मौजूद रहने का खयाल जाता रहा, उसी समय से किशोरी की मुहब्बत ने जोर बांधा और तरद्दुद के साथ मिली हुई बेचैनी बढ़ने लगी। आखिर अपने मित्र भैरोसिंह से बोले, "अब

मैं बिना राजगृही गए नहीं रह सकता। जिस जगह हमारे देखते देखते बेचारी किशोरी हम लोगों से छीन ली गई उस जगह अर्थात् उस अमलदारी को बिना तहस नहस किये और किशोरी को पाये मेरा जी ठिकाने न होगा और न मुझे दुनिया की कोई चीज भली मालूम होगी।

भैरो०। आपका कहना ठीक है मगर आप अकेले वहां क्या करेंगे ?

इन्द्र०। दुष्ट अग्निदत्त के लिये मैं अकेला ही बहुत हूं।

भैरो०। दुष्ट अग्निदत्त के लिए आप अकेले बहुत हैं मगर शहर भर के लिए नहीं।

इन्द्र०। शहर भर से मुझे कोई मतलब नहीं।

भैरो०। आखिर शहर वाले उसकी तरफदारी करेंगे या नहीं।

इन्द्र०। इसका अन्दाज तो गयाजी पर कब्जा करने से ही तुम्हें मालूम ह गया होगा।

भैरो०। ठीक है मगर अपनी तरफ से मजबूती रखना मुनासिब है।

इन्द्र०। अच्छा तो मैं आनन्द को समझा दूंगा कि फलाने दिन एक सर्दार को थोड़ी फौज देकर हमारी मदद के लिए भेज देना

भैरो०। यह हो सकता है, मगर उत्तम तो यही था कि दो चार दिन और ठहर जाते तब तक मैं राजगृह से घूम आता।

इन्द्र०। नहीं अब इस किस्म की नसीहत सुनने लायक मैं नहीं रहा।

भैरो०। (कुछ देर सोच कर) खैर जैसी आपकी मरजी।

शाम के वक्त दोनों भाई घोड़ों पर सवार हो अपने दोनों ऐयारों और बहुत से मुसाहबों और सर्दारों को साथ ले घूमने और हवा खाने के लिए महल के बाहर निकले। कायदे के मुताबिक सरदार और मुसाहब लोग अपने अपने घोड़े उन दोनों भाइयों के घोड़ों से लगभग पचीस कदम पीछे लिए जाते थे, जब इन्द्रजीतसिंह या आनन्दसिंह घूम कर उनकी तरफ देखते तब ये लोग झट आगे बढ़ जाते और बात सुन कर पीछे हट जाते, हां दोनों ऐयार घोड़ों की रकाब थामे पैदल साथ जा रहे थे। जब ये दोनों भाई घूमने के लिए बाहर निकलते तब शहर के मर्द औरत बल्कि छोटे छोटे बच्चे भी इनको देख कर खुश होते थे। जिसके मुंह से सुनिये यही आवाज निकलती थी, "ईश्वर ने हम लोगों की सुन ली जो ऐसे, राजकुमारों के चरण यहां आये और उस खुदगरज निमकहराम बेईमान का साया हमारे सर से हटा।"

जब घूमते हुए ये दोनों भाई शहर से बाहर हुए इन्द्रजीतसिंह ने आनन्दसिंह से कहा, "मैं किसी काम के लिए भैरोसिंह को साथ लेकर राजगृही जाता हूं। आज से ठीक आठवें दिन अर्थात् रविवार को किसी सर्दार के साथ थोड़ी सी फौज हमारी मदद को भेज देना।"

आनन्द०। (थोड़ी देर चुप रहने के बाद) जो हुक्म, मगर........

इन्द्र०। तुम किसी तरह की चिन्ता मत करो, मैं अपने को हर तरह से सम्हाले रहूंगा।

आनन्द०। ठीक है, लेकिन........

इन्द्र०। गयाजी पहुंचने से ही तुम्हें मालूम हो गया होगा कि माधवी की रिआया हमारे खिलाफ न होगी।

आनन्द०। ईश्वर करे ऐसा ही हो, परन्तु....

इन्द्र०। जब तक तुम्हारी फौज वहां न पहुंच जायगी हम लोगों को जो कुछ करना होगा छिप कर करेंगे।

आनन्द०। ऐसा करने पर भी....

इन्द्र०। खैर जो कुछ तुम्हें कहना हो साफ साफ कहो!

आनन्द०। आपका अकेले जाना मुनासिब नहीं, दुश्मन के घर में जाकर अपने को सम्हाले रहना भी कठिन है, राजा की मौजूदगी में रियाया को हर तरह उसका डर बना ही रहता है, आप दुश्मन के घर में किसी तरह निश्चिन्त नहीं रह सकते और आपके इस तरह चले जाने बाद मेरा जी यहां कभी नहीं लग सकता।

राजगृही जाने पर कुंअर इन्द्रजीतसिंह कैसे ही मुस्तैद क्यों न हों लेकिन छोटे भाई की आखिरी बात ने उन्हें हर तरह से मजबूर कर दिया। कुंअर इन्द्रजीतसिंह बड़े ही समझदार और बुद्धिमान थे, मगर मुहब्बत का भूत जब किसी के सर पर सवार होता है तो वह पहिले उसकी बुद्धि की ही मिट्टी पलीद करता है।

छोटे भाई की बात सुन इन्द्रजीतसिंह ने भैरोसिंह की तरफ देखा।

भैरो०। मैं भी यही चाहता था कि आप दो चार रोज यहीं और सब्र करें और तब तक मुझे राजगृही से घूम आने दें।

आनन्द०। (भैरोसिंह की तरफ देख कर) वादा कर जाओ कि तुम कब लौटोगे?

भैरो०। चार दिन के अन्दर ही मैं यहां पहुंच जाऊंगा।

आनन्द०। (भैरो की तरफ देख कर इन्द्रजीतसिंह से) यदि आज्ञा हो जाय

तो ये इधर ही से चले जायें, घर जाने की जरूरत ही क्या है।

भैरो०। मैं तैयार हूं।

इन्द्र०। घर जाकर अपना सामान तो इन्हें दुरुस्त करना ही होगा, हां मुझसे चाहे इसी समय बिदा हो जायं।

सत्रहवां बयान

भैरोसिंह को राजगृही गये आज तीसरा दिन है। वहां का हाल चाल अभी तक कुछ मालूम नहीं हुआ, इसी सोच में आधी रात के समय अपने कमरे में पलंग पर लेटे हुए कुंअर इन्द्रजीतसिंह को नींद नहीं आ रही है। किशोरी की खयाली तस्वीर उनकी आंखों के सामने आ आ कर गायब हो जाती है। इससे उन्हें और भी दुःख होता है, घबरा कर लम्बी सांस ले उठ बैठते हैं। कभी कभी जब बेचैनी बहुत बढ़ जाती है तो पलंग को छोड़ कमरे में टहलने लगते हैं।

इसी हालत में इन्द्रजीतसिंह कमरे के अन्दर टहल रहे थे, इतने में पहरे के एक सिपाही ने अन्दर की तरफ झांक कर देखा और इनको टहलते देख हट गया, थोड़ी देर बाद वह दर्वाजे के पास इस उम्मीद में आकर खड़ा हो गया कि कुमार उसकी तरफ देख कर पूछें तो वह कुछ कहे मगर कुमार तो अपने ध्यान में डूबे हुए हैं, उन्हें खबर ही क्या है कि कोई उनकी तरफ झांक रहा या इस उम्मीद में खड़ा है कि वे उसकी तरफ देखें और कुछ पूछें। आखिर उस सिपाही ने जान बूझ कर किवाड़ का एक पल्ला इस ढंग से खोला कि कुछ आवाज हुई, साथ ही कुमार ने घूम कर उसकी तरफ देखा और इशारे से पूछा कि क्या है।

राजा सुरेन्द्रसिंह बीरेन्द्रसिंह इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह का बराबर के लिए हुक्म था कि मौका न होने पर चाहे किसी की इत्तिला न की जाय मगर जब कोई ऐयार आवे और कहे कि मैं ऐयार हूं और इसी समय मिलना चाहता हूं तो चाहे कैसा ही बेमौका क्यों न हो हम तक उसकी इत्तिला जरूर पहुंचनी चाहिए। अपने घर के ऐयारों के लिए तो कोई रोक टोक थी नहीं, चाहे वह कुसमय में भी महल में घुस जांय या जहां चाहे वहां पहुंचें, महल में उनकी खातिर और उनका लिहाज ठीक उतना ही किया जाता था जितना पन्द्रह वर्ष के लड़के का किया जाता और इसी का ठीक नमूना ऐयार लोग दिखलाते थे।

सिपाही ने हाथ जोड़ के कहा, "एक ऐयार हाजिर हुआ है और इसी समय कुछ अर्ज किया चाहता है!" कुमार ने कहा, "रोशनी तेज कर दो और उसे अभी

यहां लाओ।" थोड़ी देर बाद चुस्त स्याह मखमल की पौशाक पहिरे कमर से खंजर लटकाये हाथ में कमन्द लिए एक खूबसूरत लड़का कमरे में आ मौजूद हुआ।

इन्द्रजीतसिंह ने गौर से उसकी ओर देखा, साथ ही उनके चेहरे की रंगत बदल गई, जो अभी उदास मालूम होता था खुशी से दमकता हुआ दिखाई देने लगा।

इन्द्र०। मैं तुम्हें पहिचान गया।

लड़का०। क्यों न पहिचानेंगे जब कि आपके यहां एक से एक बढ़ कर ऐयार हैं और दिन रात उनका संग है, मगर इस समय मैंने भी अपनी सूरत अच्छी तरह नहीं बदली है।

इन्द्र०। कमला, पहिले यह कहो कि किशोरी कहां और किस हालत में हैं, और उन्हें अग्निदत्त के हाथ से छुट्टी मिली या नहीं ?

कमला०। अग्निदत्त को अब इनकी कोई खबर नहीं है।

इन्द्र०। इधर आओ और हमारे पास बैठो, खुलासा कहो कि क्या क्या हुआ, मैं तो इस लायक नहीं कि अपना मुंह उन्हें दिखाऊं क्योंकि मेरे किए कुछ भी न हो सका।

कमला०। (बैठ कर) आप ऐसा खयाल न करें, आपने बहुत कुछ किया, अपनी जान देने को तैयार हो गए और महीनों दुःख झेला। आपके ऐयार लोग अभी तक राजगृहा में इस मुस्तैदी से काम कर रहे हैं कि अगर उन्हें यह मालूम हो जाता कि किशोरी वहां नहीं हैं तो उस राज्य का नाम निशान मिटा देते।

इन्द्र०। मैंने भी यही सोच के उस तरफ जोर नहीं दिया कि कहीं अग्निदत्त के हाथ पड़ी हुई बेचारी किशोरी पर कुछ आफत न आवे, हां तो अब किशोरी वहां नहीं हैं ?

कमला०। नहीं।

इन्द्र०। कहां हैं और किसके कब्जे में हैं ?

कमला०। इस समय वह खुदमुख्तार हैं, सिवाय लज्जा के उन्हें और किसी का डर नहीं।

इन्द्र०। जल्द बताओ वह कहां हैं ? मेरा जी घबड़ा रहा है।

कमला०। वह इसी शहर में हैं मगर अभी आपसे मिलना नहीं चाहतीं।

इन्द्र०। (आंखों में आंसू भर कर) बस तो मुझे मालूम हो गया कि उन्हें मेरी तरफ से रंज है, मेरे किए कुछ न हो सका इसका उन्हें दुःख है।

कमला०। नहीं नहीं, ऐसा भूल के भी न सोचिए।

इन्द्र० । तो फिर मैं उनसे क्यों नहीं मिल सकता ?

कमला० । (कुछ सोच कर) मिल क्यों नहीं सकते, मगर इस समय....

इन्द्र० । क्या तुमको मुझ पर दया नहीं आती ! अफसोस, 'तुम बिल्कुल नहीं जानतीं कि तुम्हारी बातें सुन कर इस समय मेरी दशा कैसी हो रही है। जब तुम खुद कह रही हो कि वह स्वतन्त्र हैं, किसी के दबाव में नहीं हैं और इसी शहर में हैं तो मुझसे न मिलने का कारण ही क्या है। बस यही न कि मैं उस लायक नहीं समझा जाता !

कमला० । फिर भी आप उसी खयाल को मजबूत करते हैं ! खैर तो फिर चलिए मैं आपको ले चलती हूं, जो होगा देखा जायगा, मगर अपने साथ किसी ऐयार को लेते चलिए। भैरोसिंह तो यहां हैं नहीं, आपने उन्हें राजगृही भेज दिया हैं।

इन्द्र० । क्या हर्ज है तारासिंह को साथ लिये चलता हूं, मगर भैरोसिंह के जाने की खबर तुम्हें क्योंकर मिली ?

कमला० । मैं बखूबी जानती हूं, बल्कि उनसे मिल कर मैंने कह भी दिया है कि किशोरी राजगृही में नहीं हैं तुम बेखौफ अपना काम करना ।

इन्द्र० । अगर तुमने उससे ऐसा कह दिया है तो राजगृही में वह बड़ा ही बखेड़ा मचावेगा !

कमला० । मचाना ही चाहिये ।

कुंअर इन्द्रजीतसिंह ने उसी समय तारासिंह को बुलाया और उन्हें साथ ले कपड़े पहिन कमला के साथ किशोरी से मिलने की खुशी में बड़े बड़े कदम बढ़ाते रवाना हुए ।

शहर ही शहर बहुत सी गलियों में घुमाती हुई इन दोनों को साथ लिए कमला बहुत दूर चली गई और विष्णुपादुका मन्दिर के पास ही एक मकान के मोड़ पर पहुंच कर खड़ी हो गई ।

इन्द्र० । क्यों क्या हुआ ? रुक क्यों गईं ।

कमला० । बस हम लोगों को इसी मकान में चलना है ।

इन्द्र० । तो चलो ।

कमला० । इस मकान के दर्वाजे के सामने ही एक भारी जमींदार की बैठक है। वहां दिन रात पहरा पड़ता है । इधर से आप लोगों का जाना और यह जाहिर करना कि आज इस मकान में दो आदमी नये घुसे हैं मुनासिब नहीं ।

तारा० । तो फिर क्या करना चाहिए ।

कमला० । मैं दर्वाजे की राह से जाती हूं, आप लोग पीछे की तरफ जाइये और कमन्द लगा कर मकान के अन्दर पहुंचिये ।

इन्द्र० । क्या हर्ज है, ऐसा ही होगा, तुम दर्वाजे की राह से जाओ ।

कमला० । मगर एक बात और सुन लीजिये । जब मैं इस मकान में पहुंच कर छत पर से झांकूं तभी आप कमन्द फेंकिये, क्योंकि बिना मेरी मदद के कमन्द अड़ न सकेगी ।

अट्ठारहवां बयान

मकान के अन्दर कमला इन्द्रजीतसिंह और तारासिंह के पहुंचने के पहिले ही हम अपने पाठकों को इस मकान में ले चल कर यहां की कैफियत दिखाते हैं।

इस मकान के अन्दर छोटी छोटी न मालूम कितनी कोठरियां हैं पर हमें उनसे कोई मतलब नहीं, हम तो उस दालान के पास जा कर खड़े होते हैं जिसके दोनों तरफ दो कोठरियां और सामने लम्बा चौड़ा सहन है । इस दालान में किसी तरह की सजावट नहीं, सिर्फ एक दरी बिछी हुई है और खूंटियों पर कुछ कपड़े लटक रहे हैं । आधी रात का समय होने पर भी इस दालान में चिराग की रोशनी नहीं है । यह दालान ऊपर के दर्जे में है, इसके ऊपर कोई इमारत नहीं, सामने का सहन बिलकुल खुला हुआ है, चन्द्रमा की फैली हुई सुफेद चांदनी सहन से घुसती हुई धीरे धीरे दालान में आ रही है जिसकी रोशनी उस दालान की हर एक चीज को दिखलाने के लिए काफी है । एक तरफ की कोठरी तो बन्द है मगर दूसरी बगल वाली कोठरी का दर्वाजा खुला हुआ है । यह कोठरी बहुत ज्यादा बड़ी नहीं है और इसके भीतर सुफेद फर्श पर दो औरतें बैठी हुई धीरे धीरे कुछ बातें कर रही हैं ।

हमारे पाठक इन दोनों औरतों को बखूबी पहिचानते हैं । इनमें से एक तो किशोरी और दूसरी वही किन्नरी है जिस पर कुंअर आनन्दसिंह रीझे हुए हैं, जो कई दफे आनन्दसिंह के कमरे में कोठरी के अन्दर से निकल अपने चितवनों से उन्हें घायल कर चुकी है और साथ साथ आप भी आशिक हो चुकी है ।

किशोरी० । बहिन तुमने जो कुछ नेकी मेरे साथ की है उसे मैं किसी तरह भूल नहीं सकती । मुझसे यह कभी न होगा कि तुम्हें ऐसी हालत में छोड़ इन्द्रजीतसिंह के पास चली जाऊं ।

किन्नरी० । फिर क्या किया जाय, किस तरह उम्मीद हो कि मुझे कोई पूछेगा।

किशोरी०। कमला ने मुझसे कसम खाकर कहा है कि आनन्दसिंह किन्नरी की चाह में डूबे हैं। इसे भी जाने दो, आखिर तुम्हारा अहसान कुछ उनके ऊपर है या नहीं? इतने बदमाशों को जो यहां फसाद मचा रखे थे सिवाय तुम्हारे कौन मार सकता था!

किन्नरी०। खैर जो होगा देखा जायगा, अब तो यह सोचना चाहिए कि हम लोग कहां जांय और क्या करें?

किशोरी०। कमला आ जाय तो उससे राय मिला कर जो मुनासिब मालूम हो किया जाय। ओफ, यहां बैठे बैठे जी घबड़ा गया, चलो बाहर चलें, चांदनी खूब निकली हुई है।

दोनों औरतें कोठरी के बाहर निकलीं और सहन में आकर टहलने लगीं। मौसिम के मुताबिक कुछ सर्दी पड़ रही थी इसलिए दोनों ज्यादे देर तक सहन में टहल न सकीं दालान में आकर दरी पर बैठ गईं और बातचीत करने लगीं।

इस मकान के बगल में एक छोटा सा नजरबाग था मगर उसकी हालत ऐसी खराब हो रही थी कि उसे नजरबाग की जगह खण्डहर या जंगल ही कहना मुनासिब है। नजरबाग में जाने के लिए इस मकान से एक रास्ता था, बाकी चारो तरफ उसके ऊंची ऊंची दीवारें थीं। इस मकान में बिना भीतर वाले की मदद के कोई कमन्द लगा कर चढ़ नहीं सकता था क्योंकि इसकी ऊपर की दीवारें इस खूबी से बनी हुई थीं कि किसी तरह कमन्द अड़ नहीं सकती थी। हां अगर कोई चाहे तो कमन्द के जरिए उस नजरबाग में जरूर जा सकता था, मगर इस मकान में आने के लिए वहां से भी वही दिक्कत होती।

थोड़ी देर किन्नरी और किशोरी बातें करती रहीं, इसके बाद नीचे से किवाड़ खटखटाने की आवाज आई। किशोरी ने कहा, "लो बहिन कमला भी आ पहुंची।"

किन्नरी०। खटखटाने की आवाज से तो मालूम होता है कि कमला ही है, मगर तो भी खिड़की से झांक के मामूली सवाल कर लेना मुनासिब है।

किशोरी०। ऐसा जरूर करना चाहिए क्योंकि हम लोगों को धोखा देने के लिए दुश्मन लोग पचासों रंग लाया करते हैं।

"तुम ठहरो मैं कुछ पूछती हूं!" इतना कह कर किशोरी ने दर्वाजे की तरफ वाली खिड़की में से झांक कर पूछा, "गिनती पूरी हुई?" इसके जवाब में किसी ने कहा, "हां पचासी तक।"

किशोरी०। अच्छा मैं नीचे आकर दर्वाजा खोलती हूं।

बाबा० । खैर, जिस तरह बनेगा मैं तुम्हारी मदद करूँगा मगर यह तो बताओ कि सिवाय मेरे इस समय और भी कोई तुम्हारा मददगार है या नहीं ?

माधवी० । कल तक तो मेरा मददगार कोई भी न था मगर आज मेरे कई मददगार पहुँच गये हैं और अब मेरा काम जरूर हो जायगा इसमें शक नहीं ?

बाबा० । कौन मददगार पहुँच गया है ?

माधवी० । मेरा भाई भीमसेन ?

बाबा० । शिवदत्त का लड़का भीमसेन ?

माधवी० । जी हाँ ।

बाबा० । तब तो तुम्हारा काम जरूर हो जायगा ।

माधवी० । तो भी आपको मेरी मदद करनी ही होगी ।

बाबा० । मैं जरूर मदद करूँगा, जो कुछ कहो मैं करने को तैयार हूँ !

माधवी० । कल भीमसेन उस मकान में जाने का उद्योग करेगा जिसमें किशोरी रहती है । उसने मौका पाते ही अपनी बहिन किशोरी को मार डालने की कसम खाई है । अगर कल वह उस मकान के अन्दर किसी तरह जा सका तो जरूर ही किशोरी को मार डालेगा । फिर मुझे किसी तरह का तरद्दुद न रहेगा और न आपसे मदद लेने की ही जरूरत पड़ेगी, लेकिन वह उस मकान के अन्दर न जा सका तो जिस तरह हो आपको ऐसी कोई तरकीब करनी पड़ेगी जिसमें किशोरी उस मकान को छोड़ दे ।

बाबा० । भरसक तो मेरी मदद की जरूरत ही न पड़ेगी ।

माधवी० । ऐसा न कहिए ! अगर उस मकान में कमन्द लगाने की जगह होती तब तो कोई बात ही न थी, अब तक मैं अपना काम निकाल लिए होती ।

बाबा० । हाँ, यह तो मैं भी जानता हूँ कि तुम्हारे पिता ने उस मकान के बनवाने में बड़ी कारीगरी खर्च की है, मगर तो भी भीमसेन ने उसके अन्दर जाने की कोई तर्कीब सोची ही होगी ।

माधवी० । जी हाँ, देखा चाहिए कल क्या होता है ।

बाबा० । अच्छा, अब तुम परसों मुझसे जरूर मिलना, अगर तुम्हारा काम हो गया तो ठीक ही है नहीं तो वे चौथे दिन मैं सहज ही में तुम्हारा काम कर दूँगा ।

'बहुत अच्छा' कह कर माधवी वहाँ से उठी और अपनी सखी तिलोत्तमा को साथ लिये अपने डेरे पर चली आई ।

माधवी के चले जाने पर थोड़ी देर तक बाबाजी कुछ सोचते रहे, इसके बाद

कुटी के बाहर निकले और दो चार दफे जोर से ताली बजाई। यकायक इधर उधर पेड़ों की आड़ में से चार पाँच आदमी निकल कर बाबाजी के पास आये और एक ने बढ़ कर पूछा, "कहिये क्या हाल है?"

बाबाजी ने कहा, "आज अब तुम लोगों की कोई जरूरत नहीं है जहाँ चाहो चले जाओ; मगर कल एक घण्टे रात जाते जाते तुम लोग यहाँ जरूर जुट जाओ!"

एक०। क्यों खैर तो है, मैं बिना कुछ हाल सुने जाने वाला नहीं!

बाबा०। अच्छा तो फिर सुन लो कि कल क्या होगा और हम लोग क्या करेंगे।

सभों को लेकर बाबाजी कुटी के अन्दर गये और किवाड़ बन्द कर न मालूम क्या बातचीत करने लगे।

अब हम उसी मकान में पहुँचते हैं जिसमें किशोरी और किन्नरी का डेरा है या जहाँ इन्द्रजीतसिंह को ले कर कमला गई है।

किशोरी के चिल्लाने की आवाज सुन कर किन्नरी हाथ में तलवार लिए बहुत जल्द नीचे उतर गई। कमला ने किवाड़ खटखटाया है, दर्वाजा खोलना चाहिए, इसका खयाल तो जाता रहा और इधर उधर किशोरी को ढूंढने लगी मगर इसे ढूँढ़ने में उसने ज्यादा देर न लगाई, दो ही चार दफे दालान और कोठरियों में घूम कर वह लौटी और सदर दर्वाजा खोल कर कमला को मकान के अन्दर कर लिया।

दर्वाजा खुलने में देर हुई इसी से कमला समझ गई कि भीतर कुछ गोलमाल हुआ है। अन्दर आते ही उसने पूछा, "क्यों क्या हुआ?" जिसके जवाब में बदहवास किन्नरी केवल इतना ही कह सकी, "दर्वाजा खोलने के लिए किशोरी नीचे उतरी मगर न मालूम चिल्ला कर कहाँ गायब हो गई!"

कमला ने इस बात का कुछ जवाब न दिया। उसने सबके पहिले छत पर जाकर कुंअर इन्द्रजीतसिंह को कमन्द लगाने में मदद दी। जब वे और तारासिंह ऊपर चढ़ आये तो उन दोनों को भी साथ ले वह नीचे आँगन में उतर आई और किन्नरी की ही तरह संक्षेप में किशोरी के गायब हो जाने का हाल कह कर इधर उधर ढूँढ़ने लगी।

ये सब बातें थोड़ी ही देर में हो गईं और अंधेरा होने पर भी बात की बात में कमला ने नीचे की कुल कोठरियों में किशोरी को ढूंढ डाला, परेशान और बदहवास इन्द्रजीतसिंह उसके साथ साथ घूमते रहे।

ढूँढ़ते ढूँढ़ते कमला जब उस कोठरी में पहुँची जिसकी पीठ खंडहर की तरफ पड़ती थी तो यकायक चाँदना मालूम पड़ा। भीतर घुसी, और तुरत ही निश्चय हो गया कि खण्डहर की तरफ से कोई दीवार में सेंध लगा कर इस मकान के अन्दर घुसा और यह आफत मचा गया। उस खुलासा सेंध की राह से ये चारो आदमी भी बाहर खंडहर में निकल गये और वहाँ एक विचित्र तमाशा देखा।

दूसरा बयान

शिवदत्तगढ़ में महाराज शिवदत्त बैठा हुआ बेफिक्री का हलुआ नहीं उड़ाता। सच पूछिये तो तमाम जमाने की फिक्र ने उसको आ घेरा है। वह दिन रात सोचा ही करता है और उसके ऐयारों और जासूसों का दिन दौड़ते ही बीतता है। चुनार, गयाजी और राजगृही का हाल तो उसे रत्ती रत्ती मालूम है क्योंकि इन तीनों जगहों की खबरें पहुँचाने के लिए उसने पूरा बन्दोबस्त किया हुआ है। आज यह खबर पाकर कि गयाजी का राज्य राजा बीरेन्द्रसिंह के कब्जे में आ गया, माधवी राज ही छोड़ कर भाग गई, और किशोरी दीवान अग्निदत्त से हाथ फँसी हुई है, शिवदत्त घबड़ा उठा और तरह तरह की बातें सोचने में इतना डूब हो गया कि तनोबदन की सुध जाती रही। किशोरी के ऊपर उसे इतना गुस्सा आया कि अगर वह यहाँ मौजूद होती तो अपने हाथ से उसके टुकड़े टुकड़े कर डालता। इस समय भी यह प्रण करके उठ खड़ा हुआ कि 'जब तक किशोरी के मरने की खबर न पाऊँगा अन्न न खाऊँगा' और सीधा महल में चला गया, हुक्म देता गया कि भीमसेन को हमारे पास भेज दो।

राजा शिवदत्त महल में जाकर अपनी रानी कलावती के पास बैठ गया। उसके चेहरे की उदासी और परेशानी का सबब जानने के लिए कलावती ने बहुत कुछ उद्योग किया मगर जब तक उसका लड़का भीमसेन महल में न गया उसने कलावती की बात का कुछ भी जवाब न दिया। माँ बाप के पास पहुँचते ही भीमसेन ने प्रणाम किया और पूछा, "क्या आज्ञा होती है?"

शिव०। किशोरी के बारे में जो कुछ खबर आज पहुँची तुमने भी सुनी होगी?

भीम०। जी हाँ।

शिव०। अफसोस, फिर भी तुम्हें अपना मुँह दिखाते शर्म नहीं आती! न मालूम तुम्हारी बहादुरी किस दिन काम आयेगी और तुम किस दिन अपने को इस लायक बनाओगे कि मैं तुम्हें अपना लड़का समझूँ!!

भीम० । मुझे जो आज्ञा हो तैयार हूँ ।

शिव० । मुझे उम्मीद नहीं कि तुम मेरी बात मानोगे !

भीम० । मैं यज्ञोपवीत हाथ में लेकर कसम खाता हूँ कि जब तक जान बाकी है उस काम के करने की पूरी कोशिश करूँगा जिसके लिये आप आज्ञा देंगे !

शिव० । मेरा पहला हुक्म यह है कि किशोरी का सर काट कर मेरे पास लाओ ।

भीम० । (कुछ सोच और ऊँची साँस लेकर) बहुत अच्छा, ऐसा ही होगा । और क्या हुक्म होता है ?

शिव० । इसके बाद बीरेन्द्रसिंह या उनके लड़कों में से जब तक किसी को मार न लो यहाँ मत आओ । यह न समझना कि यह काम मैं तुम्हारे ही सुपुर्द करता हूँ । नहीं, मैं खुद आज इस शिवदत्तगढ़ को छोड़ूँगा और अपना कलेजा ठंढा करने के लिए पूरा उद्योग करूँगा । बीरेन्द्रसिंह का चढ़ता प्रताप देख कर मुझे निश्चय हो गया कि लड़ कर उन्हें किसी प्रकार नहीं जीत सकता इसलिए आज से मैं उनके साथ लड़ने का खयाल छोड़ देता हूँ और उस ढंग पर चलता हूँ जिसे ठग चोर या डाकू लोग पसन्द करते हैं ।

भीम० । अख्तियार आपको है जो चाहे करें । मुझे आज्ञा हो तो इसी समय चला जाऊँ और जो कुछ हुक्म हुआ है उसे पूरा करने का उद्योग करूँ !

शिव० । अच्छा जाओ मगर यह कहो कि अपने साथ किस किस को ले जाते हो ?

भीम० । किसी को नहीं !

शिव० । तब तुम कुछ न कर सकोगे । दो तीन ऐयार और दस बीस लड़ाकों को अपने साथ जरूर लेते जाओ ।

भीम० । आपके यहाँ ऐसा कौन ऐयार है जो बीरेन्द्रसिंह के ऐयारों का मुकाबला करे और ऐसा कौन बहादुर है जो उन लोगों के सामने तलवार उठा सके !

शिव० । तुम्हारा कहना ठीक है मगर तुम्हारे साथ गए हुए ऐयारों की कार्रवाई तब तक बहुत ही अच्छी होगी जब तक दुश्मनों को यह न मालूम हो जाय कि शिवदत्तगढ़ का कोई आया है ! सिवाय इसके मैं बहादुर नाहरसिंह को तुम्हारे साथ भेजता हूँ जिसका मुकाबला करने वाला बीरेन्द्रसिंह की तरफ कोई नहीं है ।

भीम० । बेशक नाहरसिंह ऐसा ही है मगर मुश्किल तो यह है कि नाहरसिंह जितना बहादुर है उससे ज्यादा इस बात को देखता है कि अपने कौल का सच्चा रहे । उसका कहना है कि 'जिस दिन कोई बहादुर द्वन्द्व-युद्ध में मुझे जीत लेगा

उसी दिन मैं उसका हो जाऊँगा'। ईश्वर न करे कहीं ऐसी नौबत पहुँची तो वह उसी दिन से हम लोगों का दुश्मन हो जायगा।

शिव०। यह सब तुम्हारा खयाल है, द्वन्द्व-युद्ध में उसे वहाँ कोई जीतने वाला नहीं है।

भीम०। अच्छा जो आज्ञा।

शिव०। (खड़े होकर) चलो मैं इसी वक्त चल कर तुम्हारे जाने का बन्दोवस्त कर देता हूँ।

शिवदत्त और भीमसेन के बाहर चले जाने के बाद रानी कलावती ने जो बहुत देर से इन लोगों की बातें सुन सुन कर गरम गरम आँसू गिरा रही थी सर उठाया और लम्बी साँस लेकर कहा, "हाय, अब तो जमाने का उलट फेर ही दूसरा हुआ चाहता है। बेचारी किशोरी का क्या कसूर? वह आप से आप तो चली ही नहीं गई? उसने अपने आप तो कोई ऐसा काम किया ही नहीं जिससे उसकी इज्जत में फर्क आवे! हाय, किस कलेजे से भीमसेन अपनी बहिन को मारने का इरादा करेगा! मेरी जिन्दगी अब व्यर्थ है क्योंकि बेचारी लड़की तो अब मारी ही जायगी, भीमसेन भी वीरेन्द्रसिंह से दुश्मनी करके अपनी जान नहीं बचा सकता, दूसरे उस लड़के का भरोसा ही क्या जो अपने हाथ से अपनी बहिन का सिर काटे। अगर इन सब बातों को भूल जाऊँ और यही सोच कर बैठ रहूँ कि मेरा सर्वस्व तो पति है मुझे लड़के लड़कियों से क्या मतलब, तो भी नहीं बनता, क्योंकि वे भी डाकू-वृत्ति लिया चाहते हैं। इस अवस्था में वे किसी प्रकार का सुख नहीं पा सकते। फिर जीते जी अपने पति को दुःख भोगते मैं कैसे देखूँगी? हाय! वीरेन्द्रसिंह वही बीरेन्द्रसिंह है जिसकी बदौलत मेरी जान बची थी, न मालूम बुर्देफरोशों की बदौलत मेरी क्या दुर्दशा होती! वही बीरेन्द्रसिंह है जिसने कृपा कर मुझे अपने पति के पास खोह में भेजवा दिया था! वही वीरेन्द्रसिंह है जिसने हम लोगों का कसूर एकदम माफ कर दिया था और चुनार की गद्दी लौटा देने को भी तैयार था! किस किस बात की तरफ देखूँ? वीरेन्द्रसिंह के बराबर धर्मात्मा तो कोई दुनिया में न होगा! फिर किसको दोष दूँ, अपने पति को? नहीं कभी नहीं, यह मेरे किए न होगा! यह सब दोष तो मेरे कर्मों ही का है। फिर जब भाग्य ही बुरे हैं तो ऐसे भाग्य को लेकर दुनिया में क्यों रहूँ? अपनी छुट्टी तो आप ही कर लेती हूँ फिर मेरे पीछे क्या जाने क्या होगा इसकी खबर ही किसे है!"

रानी कलावती पागलों की तरह बहुत देर तक न जाने क्या क्या सोचती रही, आखिर उठ खड़ी हुई और ताली का गुच्छा उठा कर अपना एक सन्दूक खोला। न मालूम उसमें से क्या निकाल कर उसने अपने मुँह में रख लिया और पास ही पड़ी हुई सोने की सुराही में से जल निकाल कर पीने के बाद कलम दावात और कागज़ लेकर कुछ लिखने बैठ गई। लेख समाप्त होते होते तक उसकी सखियाँ भी आ पहुँचीं। कलावती ने लिखे हुए कागज को लपेट कर अपनी एक सखी के हाथ में दिया और कहा, "जब महाराज मुझे पूछें तो यह कागज उनके हाथ में दे देना। बस अब तुम लोग जाओ अपना काम करो, मैं इस समय सोना चाहती हूँ, जब तक मैं खुद न उठूँ खबरदार मुझको कभी मत उठाना!"

हुक्म पाते ही उसकी लौंडियाँ वहाँ से हट गईं और रानी कलावती ने पलंग पर लेट कर आँचल से मुँह ढाँप लिया।

दो ही पहर के बाद मालूम हो गया कि रानी कलावती सो गई, आज के लिए नहीं बल्कि वह हमेशा के लिए सो गई, अब वह किसी के जगाये नहीं जाग सकती।

शाम के वक्त जब महाराज शिवदत्त फिर महल में आए तो महारानी का लिखा कागज उनके हाथ में दिया गया। पढ़ते ही शिवदत्त दौड़ा हुआ उस कमरे में गया जिसमें कलावती सोई हुई थी। मुँह पर से कपड़ा हटाया, नब्ज देखी, और तुरत लौट कर बाहर चला गया।

अब तो उसकी सखियों और लौंडियों को भी मालूम हो गया कि रानी कलावती हमेशा के लिए सो गई। न मालूम बेचारी ने किन किन बातों को सोच कर जान दे देना ही मुनासिब समझा। उसकी प्यारी सखियाँ जिन्हें वह जान से ज्यादे मानती थी पलंग के चारो तरफ जमा हो गईं और उसकी आखिरी सूरत देखने लगीं। भीमसेन चार घण्टे पहिले ही मुहिम पर रवाना हो चुका था। उसे अपनी प्यारी माँ के मरने की कुछ खबर ही नहीं और यह सोच कर कि वह उदास और सुस्त होकर अपना काम न कर सकेगा, शिवदत्त ने भी कलावती के मरने की खबर उसके कान तक पहुँचने न दी।

ऐयारों और थोड़े से लड़ाकों के सिवाय नाहरसिंह को साथ लिए हुए भीमसेन राजगृही की तरफ रवाना हुआ। उसका साथी नाहरसिंह बेशक लड़ाई के फन में बहुत ही जबर्दस्त था। उसे विश्वास था कि कोई अकेला आदमी लड़ कर कभी मुझसे जीत नहीं सकता। भीमसेन भी अपने को ताकतवर और होशियार लगाता था मगर जब से लोभवश नाहरसिंह ने उसकी नौकरी कर ली और आज-

माइश के तौर पर दो चार दफे नाहरसिंह और भीमसेन से नकली लड़ाई हुई तब से भीमसेन को मालूम हो गया कि नाहरसिंह के सामने वह एक बच्चे के बराबर है। नाहरसिंह लड़ाई के फन में जितना होशियार और ताकतवर था उतना ही नेक और ईमानदार भी था और उसका यह प्रण करना बहुत ही मुनासिब था कि उसे जिस दिन जो कोई जीतेगा वह उसी दिन से उसकी ताबेदारी कबूल कर लेगा।

ये लोग पहिले राजगृही में पहुँचे और एक गुप्त खोह में डेरा डालने बाद भीमसेन ने ऐयारों को वहाँ का हाल मालूम करने से लिए मुस्तैद किया। दो ही दिन की कोशिश में ऐयारों ने कुल हाल वहाँ का मालूम कर लिया और भीमसेन ने जब यह सुना कि माधवी वहाँ मौजूद नहीं है तब बिना छेड़छाड़ मचाये गयाजी की तरफ कूच किया।

इस समय राजगृही को अपने कब्जे में कर लेना भीमसेन के लिये कोई बड़ी बात न थी, मगर इस ख्याल से कि गयाजी में राजा बीरेन्द्रसिंह की अमलदारी हो गई है। राजगृही दखल करने से कोई फायदा न होगा और बीरेन्द्रसिंह के मुकाबले में लड़ कर भी जीतना बहुत ही मुश्किल है उसने राजगृही का खयाल छोड़ दिया। सिवाय इसके जाहिर होकर वह किसी तरह किशोरी को अपने कब्जे में कर भी नहीं सकता था, उसे लुक छिप कर पहिले किशोरी ही पर सफाई का हाथ दिखाना मंजूर था।

गयाजी के पास पहुँचते ही एक गुप्त और भयानक पहाड़ी में उन लोगों ने डेरा डाला और खबर लेने के लिए ऐयारों को रवाना किया। जिस तरह भीमसेन के ऐयार लोग घूम घूम कर टोह लिया करते थे उसी तरह माधवी की सखी तिलोत्तमा भी अपना काम साधने के लिए भेष बदल कर चारों तरफ घूमा करती थी। इत्तिफाक से भीमसेन के ऐयारों की मुलाकात तिलोत्तमा से हो गई और बहुत जल्द माधवी की खबर भीमसेन को तथा भीमसेन की खबर माधवी को लग गई।

भीमसेन के साथ जितने लड़ाके थे उन सभों को खोह में ही छोड़ सिर्फ भीमसेन और नाहरसिंह को माधवी ने उस मकान में बुला लिया जिसका हाल हम ऊपर लिख चुके हैं।

आज किशोरी के घर में घुस कर आफत मचाने वाले ये ही भीमसेन और नाहरसिंह हैं। अपने ऐयारों की मदद से उस मकान के बगल वाले खण्डहर में घुस कर भीमसेन ने उस मकान में सेंध लगाई और उस सेंध की राह नाहरसिंह ने अन्दर जाकर जो कुछ किया पाठकों को मालूम ही है।

नाहरसिंह मकान के अन्दर घुस कर उसी सेंध की राह किशोरी को लेकर बाहर निकल आया और उस बेचारी को जमीन पर गिरा कर मालिक के हुक्म के मुताबिक उसे मार डालने पर मुस्तैद हुआ। मगर एक बेकसूर औरत पर इस तरह जुल्म करने का इरादा करते ही उस जवाँमर्द का कलेजा दहल गया। वह किशोरी को जमीन पर रख दूर जा खड़ा हुआ और, भीमसेन से जो मुँह पर नकाब डाले उस जगह मौजूद था बोला, "लीजिए, इसके आगे जो कुछ करना है आप ही कीजिए। मेरी हिम्मत नहीं पड़ती! मगर मैं आपको भी....!"

हाथ में खंजर लेकर भीमसेन फौरन बेचारी किशोरी की छाती पर जो उस समय डर के मारे बेहोश थी जा चढ़ा, साथ ही इसके किशोरी की बेहोशी भी जाती रही और उसने अपने को मौत के पंजे में फँसा हुआ पाया जैसा कि हम ऊपर लिख आये हैं।

भीमसेन ने खंजर उठा कर ज्यों ही किशोरी को मारना चाहा पीछे से किसी ने उसकी कलाई थाम ली और खंजर लिये उसके मजबूत हाथ को बेवस कर दिया। भीमसेन ने फिर कर देखा तो एक साधु की सूरत नजर पड़ी। वह किशोरी को छोड़ उठ खड़ा हुआ और उसी खंजर से उसने साधु पर वार किया।

यह साधु वही है जो रामशिला पहाड़ी के सामने फल्गू नदी के बीच में भयानक टीले पर रहता था और जिसके पास मदद के लिए माधवी और तिलोत्तमा का जाना और उन्हीं के पास देवीसिंह का पहुँचना भी हम लिख आये हैं। इस समय यह साधु इस बात पर मुस्तैद दिखाई देता है कि जिस तरह बने इन दुष्टों के हाथ से बेचारी किशोरी को बचावे।

चाँदनी रात में दूर खड़ा नाहरसिंह यह तमाशा देखता रहा मगर भीमसेन को साधु से जबर्दस्त समझ कर मदद के लिए पास न आया। भीमसेन के चलाए हुए खंजर ने साधु का कुछ भी नुकसान न किया और उसने खंजर का वार बचा कर फुर्ती से भीमसेन के पीछे जा उसकी टाँग पकड़ कर इस ढंग से खैंची कि भीमसेन किसी तरह सम्हल न सका और धम्म से जमीन पर गिर पड़ा। उसके गिरते ही साधु हट गया और बोला, "उठ खड़ा हो और फिर आ कर लड़!"

गुस्से में भरा हुआ भीमसेन उठ खड़ा हुआ और खंजर जमीन पर फेंक साधु से लिपट गया क्योंकि वह कुश्ती के फन में अपने को बहुत होशियार समझता था, मगर साधु से कुछ पेश न गई। थोड़ी ही देर में साधु ने भीमसेन को सुस्त कर दिया और कहा, "जा मैं तुझे छोड़ देता हूँ, अगर अपनी जिन्दगी

चाहता है तो अभी यहाँ से भाग जा।"

भीमसेन हैरान होकर साधु का मुँह देखता रह गया कुछ जवाब न दे सका। जमीन पर पड़ी हुई बेचारी किशोरी यह कैफियत देख रही थी मगर डर के मारे न तो उससे उठा जाता था और न वह चिल्ला ही सकती थी।

भीमसेन को इस तरह बेदम देख कर नाहरसिंह से न रहा गया। वह झपट कर साधु के पास आया और ललकार कर बोला, "अगर बहादुरी का दावा रखता है तो इधर आ। मैं समझ गया कि तू साधु नहीं बल्कि कोई मक्कार है।

साधु महाशय नाहरसिंह से भी उलझने को तैयार हो गये मगर ऐसी नौबत न आई क्योंकि उसी समय ढूँढ़ते हुए सींध की राह से कुँअर इन्द्रजीतसिंह और तारासिंह भी खण्डहर में आ पहुँचे और उनके पीछे पीछे किन्नरी और कमला भी आ मौजूद हुईं। कुँअर इन्द्रजीतसिंह को देखते ही वे साधूराम तो हट गये और खण्डहर की दीवार फाँद न मालूम कहाँ चले गये। उधर एक पेड़ के पास गड़े हुए अपने नेजे को नाहरसिंह ने उखाड़ लिया और उसी से इन्द्रजीतसिंह का मुकाबला किया। तारासिंह ने उछल कर एक लात भीमसेन को ऐसी लगाई कि वह किसी तरह सम्हल न सका, तुरत जमीन पर लोट गया। भीमसेन एक लात खा कर जमीन पर लोट जाने वाला न था मगर साधु के साथ लड़ कर वह बदहवास और सुस्त हो रहा था इसलिए तारासिंह की लात से सम्हल न सका। तारासिंह ने भीमसेन की मुश्कें बाँध ली और उसे एक किनारे रख के नाहरसिंह की लड़ाई का तमाशा देखने लगा।

आधे घण्टे तक नाहरसिंह और इन्द्रजीतसिंह के बीच लड़ाई होती रही। इन्द्रजीतसिंह की तलवार ने नाहरसिंह के नेजे को दो टुकड़े कर दिया और नाहरसिंह की ढाल पर बैठ कर कुँअर इन्द्रजीतसिंह की तलवार कब्जे से अलग हो गई। थोड़ी देर के लिए दोनों बहादुर ठहर गए। कुँअर इन्द्रजीतसिंह की बहादुरी देख नाहरसिंह बहुत खुश हुआ और बोला—

नाहर०। शाबाश! तुम्हारे ऐसा बहादुर मैंने आज तक नहीं देखा।

इन्द्र०। ईश्वर की सृष्टि में एक से एक बढ़ के पड़े हैं, तुम्हारे या हमारे ऐसों की बात ही क्या है!

नाहर०। आपका कहना बहुत ठीक है, मेरा प्रण क्या है आप जानते हैं?

इन्द्र०। कह जाइए, अगर नहीं जानता हूँ तो अब मालूम हो जायगा।

नाहर०। मैंने प्रण किया है कि जो कोई लड़ कर मुझे जीतेगा मैं उसकी

तावेदारी कबूल करूँगा।

इन्द्र०। तुम्हारे ऐसे बहादुर का यह प्रण बेमुनासिब नहीं है। फिर आइए कुश्ती से निपटारा कर लिया जाय।

नाहर०। बहुत अच्छा आइए!

दोनों में कुश्ती होने लगी। थोड़ी ही देर में कुँअर इन्द्रजीतसिंह ने नाहरसिंह को जमीन पर दे मारा और पूछा, "कहो अब क्या इरादा है?"

नाहर०। मैं तावेदारी कबूल करता हूँ।

इन्द्रजीतसिंह उसकी छाती पर से उठ खड़े हुए और इधर उधर देखने लगे। चारो तरफ सन्नाटा था। किशोरी किन्नरी या कमला का कहीं पता नहीं, भीमसेन और उसके साथियों का भी (अगर कोई वहाँ हो) नाम निशान नहीं, यहाँ तक कि अपने ऐयार तारासिंह की सूरत भी उन्हें दिखाई न दी।

इन्द्र०। यह क्या! चारो तरफ सन्नाटा क्यों छा गया?

नाहर०। ताज्जुब है! इसके पहिले तो यहाँ कई आदमी थे न मालूम वे सब कहाँ चले गए?

इन्द्र०। तुम कौन हो और तुम्हारे साथ कौन था?

नाहर०। मैं आपका तावेदार हूँ, मेरे साथ शिवदत्तसिंह का लड़का भीमसेन था और इसके पहिले मैं उसका नौकर था, आशा है कि आप भी अपना परिचय मुझे देंगे।

इन्द्र०। मेरा नाम इन्द्रजीतसिंह है।

नाहर०। हाँ!!

नाम सुनते ही नाहरसिंह उनके पैरों पर गिर पड़ा और बोला, "मैं ईश्वर को धन्यवाद देता हूँ कि उसने मुझे आपकी तावेदारी में सौंपा! यदि किसी दूसरे की तावेदारी कबूल करनी पड़ती तो मुझे बड़ा दुःख होता!"

नाहरसिंह ने सच्चे दिल से कुमार की तावेदारी कबूल की। इसके बाद बड़ी देर तक दोनों बहादुर चारों तरफ घूम घूम कर लोगों को ढूँढ़ते रहे मगर किसी का पता न लगा, हाँ एक पेड़ के नीचे भीमसेन दिखाई पड़ा जिसके हाथ पैर कमन्द से मजबूत बँधे हुए थे। भीमसेन ने पुकार कर कहा, "क्यों नाहरसिंह! क्या मेरी मदद न करोगे?"

नाहर०। अब मैं तुम्हारा तावेदार नहीं हूँ।

इन्द्र०। (भीमसेन से) तुम्हें किसने बाँधा?

भीम० । मैं पहिचानता तो नहीं मगर इतना कह सकता हूं कि आपके साथी ने।

इन्द्र० । और वह बाबाजी कहाँ चले गये ?

भीम० । क्या मालूम ?

इतने ही में खण्डहर की दीवार फाँद कर आते हुए तारासिंह भी दिखाई पड़े। इन्द्रजीतसिंह घबड़ाए हुए उनकी तरफ बढ़े और पूछा, "तुम कहाँ चले गये थे ?"

तारा० । जिस समय हम लोग यहाँ आये थे एक बाबाजी भी इस जगह मौजूद थे मगर न मालूम कहाँ चले गये ! मैं एक आदमी की मुश्कें बाँध रहा था कि उसी समय (हाथ का इशारा करके) उस झाड़ी में छिपे कई आदमी बाहर निकले और किशोरी को जबर्दस्ती उठा कर उसी तरफ ले चले। उन लोगों को जाते देख किन्नरी और कमला भी उसी तरफ लपकीं। मैंने यह सोच कर कि कहीं ऐसा न हो कि आपको लड़ाई के समय धोखा देकर यह आदमी पीछे से आप पर वार करे झटपट उसकी मुश्कें बाँधी और फिर मैं भी उसी तरफ लपका जिधर वे लोग गये थे। वहाँ कोने में एक खुली हुई खिड़की नजर आई, मैं यह सोच उस खिड़की के बाहर गया कि बेशक इसी राह से वे लोग निकल गये होंगे!

इन्द्र० । फिर कुछ पता लगा ?

तारा० । कुछ भी नहीं, न मालूम वे लोग किधर गायब हो गये ! मैं आपको लड़ते हुए छोड़ गया था इस लिए तुरन्त लौट आया। अब आप घर चलिए, आपको पहुँचा कर मैं उन लोगों को खोज निकालूँगा। (नाहरसिंह की तरफ इशारा करके) इनसे क्या निपटेरा हुआ ?

इन्द्र० । इन्होंने मेरी ताबेदारी कबूल कर ली।

तारा० । सो तो ठीक है, मगर दुश्मन का ....

नाहर० । आप इन सब बातों को न सोचिये, ईश्वर चाहेगा तो आप मुझे बेईमान कभी न पावेंगे !

तारा० । ईश्वर ऐसा ही करे !

रात की अँधेरी बिल्कुल जाती रही और अच्छी तरह सवेरा हो गया। मुहल्ले के कई आदमी उस खिड़की की राह खंडहर में चले आये और अपने राजा को वहाँ पा हैरान हो देखने लगे। कुँअर इन्द्रजीतसिंह तारासिंह और नाहरसिंह अपने साथ भीमसेन को लिए हुए महल में पहुँचे और इन्द्रजीतसिंह ने सब हाल अपने छोटे भाई आनन्दसिंह से कहा।

आज रात की वारदात ने दोनों कुमारों को हद से ज्यादे तरदुद्द में डाल दिया।

किन्नरी और किशोरी के इस तरह मिल कर भी पुनः गायब हो जाने से दोनों ही पहिले से ज्यादे उदास हुए और सोचने लगे कि अब क्या करना चाहिए।

आधी रात का समय है और सन्नाटे की हवा चल रही है। बिल्लौर की तरह खूबी पैदा करने वाली चाँदनी आशिकमिजाजों को सदा ही भली मालूम होती है लेकिन आज की सर्दी ने उन्हें भी पस्त कर दिया है, यह हिम्मत नहीं पड़ती कि जरा मैदान में निकलें और इस चाँदनी की बहार लें मगर घर में बैठे दर्वाजे की तरफ देखा करने और उसाँसें लेने से होता ही क्या है। मर्दानगी कोई और ही चीज है, इश्क किसी दूसरी ही वस्तु का नाम है, तो भी इश्क के मारे हुए माशूक की नागिन सी जुल्फों से अपने को डसाना ही जवाँमर्दी समझते हैं और दिलवर की तिरछी निगाहों से अपने कलेजे को चलनी बनाने ही में बहादुरी मानते हैं। मगर वे लोग जो सच्चे बहादुर हैं घर बैठे 'ओफ' करना पसन्द नहीं करते और समय पड़ने पर तलवार ही को अपना माशूक मानते हैं। देखिये इस सर्दी और ऐसे भयानक स्थान में भी एक सच्चे बहादुर को किसी पेड़ की आड़ में बैठ जाना भी बुरा मालूम होता है।

अब रात पहर भर से भी कम बाकी है। एक पहाड़ी के ऊपर जिसकी ऊँचाई बहुत ज्यादे नहीं तो इतनी कम भी नहीं है कि बिना दम लिए एक ही दौड़ में कोई ऊपर चढ़ जाय एक आदमी मुँह पर नकाब डाले काले कपड़े से तमाम बदन को छिपाये इधर उधर टहल रहा है। चारो तरफ सन्नाटा है, कोई उसे पहिचानने वाला यहाँ मौजूद नहीं, शायद इसी ख्याल से उसने नकाब उलट दी और कुछ देर के लिए खड़े होकर मैदान की तरफ देखने लगा।

इस पहाड़ी के बगल में एक दूसरी पहाड़ी है जिसकी जड़ इस पहाड़ी से मिली हुई है। मालूम होता है कि एक पहाड़ी के दो टुकड़े हो गए हैं। बीच में डाकुओं और लुटेरों के आने जाने लायक रास्ता है जिसे भयानक दर्रा कहना मुनासिब जान पड़ता है। इस आदमी की निगाह घड़ी घड़ी उसी दर्रे की तरफ दौड़ती और सन्नाटा पाकर मैदान की तरफ घूम जाती है जिससे मालूम होता है कि उसकी आँखें किसी ऐसे को ढूँढ़ रही हैं जिसके आने की इस समय पूरी उम्मीद है।

टहलते टहलते उसे बहुत देर हो गई, पूरब तरफ आसमान पर कुछ कुछ सुफेदी फैलने लगी जिसे देख यह कुछ घबड़ाया सा हो गया और दस कदम आगे बढ़ कर मैदान की तरफ देखने लगा, साथ ही इसके चौंका और धीरे से बोल उठा, "आ पहुँचे!!" उस आदमी ने धीरे से सीटी बजाई। इधर उधर चट्टानों की आड़ में छिपे

हुए दस बारह आदमी निकल आये जिन्हें देख वह हुकूमत के तौर पर बोला, "देखो वे लोग आ पहुँचे, अब बहुत जल्द नीचे उतर चलना चाहिए।"

बात के अन्दाज से मालूम हो गया कि वह आदमी जो बहुत देर से पहाड़ी के ऊपर टहल रहा था उन सभों का सर्दार है। अब उसने अपने चेहरे पर नकाब डाल ली और अपने साथियों को लेकर तेजी के साथ पहाड़ी के नीचे उतर आने वालों का मुहाना रोक लिया।

कपड़े में लपेटी हुई एक लाश उठाए और उसे चारो तरफ से घेरे हुए कई आदमी उस दर्रे में घुसे। वे लोग कदम बढ़ाये जा रहे थे। उन्हें स्वप्न में भी यह गुमान न था कि हमलोगों के काम में बाधा डालने वाला इस पहाड़ के बीच में से कोई निकल आएगा।

जब लाश उठाए हुए वे लोग उस दर्रे के बीच में घुसे बल्कि उन लोगों ने जब आधा दर्रा तै कर लिया, तब यकायक चारो तरफ से छिपे हुए कई आदमी उन लोगों पर टूट पड़े और हर तरह से उन्हें लाचार कर दिया। वे लोग किसी तरह भी लाश को न ले जा सके और तीन चार आदमियों के घायल होने तथा एक के मर जाने पर उसी जगह उस लाश को छोड़ आखिर सभों को भाग ही जाना पड़ा।

दुश्मनों के भाग जाने पर उस सर्दार ने जो पहिले ही से उस पहाड़ी पर मौजूद था जिसका जिक्र हम कर आये हैं अपने साथियों को पुकार कर कहा, "पीछा करने की कोई जरूरत नहीं, हमारा मतलब निकल गया, मगर यह देख लेना चाहिये कि यह किशोरी ही है या नहीं!"

एक ने बटुए में से मोमबत्ती निकाल कर जलाई और उस लाश के मुँह पर से कपड़ा हटा कर देखने के बाद कहा, "किशोरी ही तो है।" सर्दार ने किशोरी की नब्ज पर हाथ रक्खा और कहा—

सर्दार०। ओफ! इसे बहुत तेज बेहोशी दी गई है, देखो तुम भी देख लो!

एक०। (नब्ज देख कर) बेशक बहुत ज्यादे बेहोशी दी गई है, ऐसी हालत में अकसर जान निकल जाती है!

दूसरा०। इसे कुछ कम करना चाहिये।

सर्दार ने अपने बटुए में से एक डिबिया निकाल तथा खोल कर किशोरी को सुंघाने बाद फिर नब्ज पर हाथ रक्खा और कहा, "बस इससे ज्यादे बेहोशी कम करने से यह होश में आ जायगी, चलो उठाओ, अब यहाँ ठहरना मुनासिब नहीं है।"

किशोरी को उठा कर वे लोग उसी दर्रे की राह घूमते हुए पहाड़ी के पार

हो गये और न मालूम किस तरफ चले गये। इनके जाने बाद उसी जगह जहाँ पर लड़ाई हुई थी छिपा हुआ एक आदमी बाहर निकला और चारो तरफ देखने लगा। जब वहाँ किसी को मौजूद न पाया तो धीरे से बोल उठा—

"मेरा पहिले ही से यहाँ आ पहुँचना कैसा मुनासिब हुआ! मैं उन लोगों को खूब पहिचानता हूँ जो लड़ भिड़ कर बेचारी किशोरी को गये। खैर, क्या मुजायका है, मुझसे भाग कर ये लोग कहाँ जायेंगे। मेरे लिए तो दोनों ही बराबर हैं, वे ले जाते तब भी उतनी ही मेहनत करनी पड़ती, और ये लोग ले गये हैं तब भी उतनी ही मेहनत करनी पड़ेगी। खैर हरि इच्छा, अब बाबाजी को ढूँढ़ना चाहिये। उन्होंने भी इसी जगह मिलने का वादा किया था।"

इतना कह वह आदमी चारो तरफ घूमने और बाबाजी को ढूँढ़ने लगा। इस समय इस आदमी को यदि माधवी देखती तो तुरत पहिचान लेती क्योंकि यह वही साधु है जो रामशिला पहाड़ी के सामने टीले पर रहता था, जिसके पास माधवी गई थी, या जिसने भीमसेन के हाथ से उस समय किशोरी की जान बचाई थी जब खंडहर के बीच में वह उसकी छाती पर सवार हो खंजर उसके कलेजे के पार किया ही चाहता था।

साफ सवेरा हो चुका था बल्कि पूरब तरफ सूर्य की लालिमा ने चौथाई आसमान पर अपना दखल जमा लिया था। वह साधु इधर उधर घूमता फिरता एक जगह अटक गया और सोचने लगा कि किधर जाय या क्या करे, इतने ही में सामने से इसी की सूरत शक्ल के एक दूसरे बाबाजी आते हुए दिखाई पड़े। देखते ही यह उनकी तरफ बढ़ा और बोला, "मैं बड़ी देर से आपको ढूँढ़ता रहा हूँ क्योंकि इसी जगह मिलने का आपने वादा किया था!"

अभी आए हुए बाजाजी ने कहा, "मैं भी वादा पूरा करने के लिए आ पहुँचा। (हँस कर) बहुत खासे! यदि इस समय कोई देखे तो अवश्य बावला हो जाय और कहे कि एक ही रंग और सूरत शक्ल के दो बाबाजी कहाँ से पैदा हो गये? अच्छा हमारे पीछे पीछे चले आओ।"

दोनों बाबाजी ने एक तरफ का रास्ता लिया और देखते देखते न मालूम किधर गायब हो गये या किस खोह में जा छिपे।

किशोरी की जब आँख खुली तो उसने अपने को एक सुन्दर मसहरी पर लेटे हुए पाया और उम्दा कपड़ों और जेवरों से सजी हुई कई औरतें भी उसे दिखाई पड़ीं। पहिले तो किशोरी ने यही समझा कि वे सब अच्छे अमीरों और सर्दारों

की लड़कियाँ हैं मगर थोड़ी ही देर बाद उनकी बातचीत और कायदे से मालूम हो गया कि लौंडियाँ हैं। अपनी बेबसी और बदकिस्मती पर रोती हुई भी किशोरी को यह जानने की बड़ी उत्कण्ठा हुई कि किस महाराजाधिराज के मकान में आ फँसी हूँ जिसकी लौंडियाँ इस शान और शौकत की दिखाई पड़ती हैं।

किशोरी को होश में आते देख उनमें की दो तीन लौंडियाँ न मालूम कहाँ चली गईं, मगर किशोरी ने समझ लिया कि मेरे होश में आने की किसी को खबर करने गई हैं।

ताज्जुब भरी निगाहों से किशोरी चारो तरफ देखने लगी। वाह वाह, क्या सुन्दर कमरा बना हुआ है! चारो तरफ दीवारों पर मीनाकारी का काम किया हुआ है, छत में सुनहरी बेल और बीच बीच में जड़ाऊ फूलों को देख कर अक्ल दंग होती है, न मालूम इसकी तैयारी में कितने रुपये खर्च हो गये होंगे! छत से लटकती हुई बिल्लौरी हाँडियों की परइयों में मानिक की लोलकें लटक रही हैं, जड़ाऊ डारों पर बेशकीमत दीवारगीरें अपनी बहार दिखा रही हैं, दर्वाजों की महराबों पर अंगूर की बेलें और उस पर बैठी हुई छोटी छोटी खूबसूरत चिड़ियों के बनाने में कारीगर ने जो कुछ मेहनत की होगी उसका जानना बहुत ही मुश्किल है। उन अंगूरों में कहीं पक्के अंगूर की जगह मानिक और कच्चे की जगह पन्ना काम में लाया गया था। अलावे इन सब बातों के उस कमरे की कुल सजावट का हाल अगर लिखा जाय तो हमारा असल मतलब बिल्कुल छूट जायगा और मुख्तसर लिखावट के वादे में फर्क पड़ जायगा, अस्तु इस बारे में हम कुछ नहीं लिखते।

इस मकान को देख किशोरी दंग हो गई। उसकी हालत का लिखना बहुत ही मुश्किल है। जिधर उसकी निगाह जाती उधर ही की हो रहती थी, पर उस जगह की सजावट किशोरी अच्छी तरह देखने भी न पाई थी कि पहिले की सी और कई लौंडियाँ वहाँ आ मौजूद हुईं और बोलीं, "महाराज को साथ लिए रानी साहिबा आ रही हैं!"

महाराज को साथ लिए रानी साहिबा उस कमरे में आ पहुँचीं। बेचारी किशोरी को भला क्या मालूम कि ये दोनों कौन हैं या कहाँ के राजा हैं? तो भी इन दोनों की सूरत शक्ल देखते ही किशोरी रुआब में आ गई। महाराज की उम्र लगभग पचास वर्ष की होगी। लम्बा कद, गोल चेहरा, बड़ी बड़ी आँखें, चौड़ी पेशानी, ऊपर को उठी हुई मूँछें, बहादुरी चेहरे पर बरस रही थी। रानी साहिबा की उम्र भी लगभग पैंतीस वर्ष के होगी फिर भी उनके बदन की बनावट और खूब-

सूरती नौजवान परीजमालों की आँखें नीची करती थी। उनकी बड़ी बड़ी रत-नार आँखों में अब भी वही बात थी जो उनकी जवानी में होगी। उनके अंगों की लुनाई में किसी तरह का फर्क नहीं आया था। इस समय एक कीमती धानी पोशाक उनकी खूबसूरती को बढ़ा रही थी और जड़ाऊ जेवरों से उनका बदन भरा हुआ था मगर देखने वाला यही कहेगा कि इन्हें जेवरों की कोई जरूरत नहीं, यह तो हुस्न ही के बोझ से दबी जाती हैं।

उन दोनों के रुआब ने किशोरी को पलंग पर पड़े रहने न दिया। वह उठ खड़ी हुई और उनकी तरफ देखने लगी। रानी साहिबा चाहे कैसी ही खूबसूरत क्यों न हों और उन्हें अपनी खूबसूरती पर चाहे कितना ही घमंड क्यों न हो, मगर किशोरी की सूरत देखते ही वे दंग हो गईं और उनकी शेखी हवा हो गई। इस समय वह हर तरह से सुस्त और उदास थी, किसी तरह की सजावट उसके बदन पर न थी, तो भी महारानी के जी ने गवाही दे दी कि इससे बढ़ कर खूबसूरत दुनिया में कोई न होगी। किशोरी उनकी खूबसूरती के रुआब में आकर पलंग के नीचे नहीं उतरी थी बल्कि इज्जत के लिहाज से और यह सोच कर कि जब इस कमरे की इतनी बड़ी सजावट है तो उनके खास कमरे की क्या नौबत होगी और वह कितने बड़े राज्य और दौलत की मालिक होंगी।

राजा और रानी दोनों ने प्यार की निगाह से किशोरी की तरफ देखा और राजा ने आगे बढ़ कर किशोरी की पीठ पर हाथ फेर कर कहा, "बेशक यह मेरी ही पतोहू होने के लायक है।"

इस आखिरी शब्द ने किशोरी के साथ वह काम किया जो नमक जख्म के साथ, आग फूस की झोपड़ी के साथ, तीर कलेजे के साथ, शराब धर्म के साथ, लालच ईमान के साथ और बिजली गिर कर तनोबदन के साथ करती है।

पाँचवाँ बयान

कुंअर इन्द्रजीतसिंह नाहरसिंह और तारासिंह को साथ लिए घर आये और अपने छोटे भाई से सब हाल कहा। वे भी सुन कर बहुत उदास हुए और सोचने लगे कि अब क्या करना चाहिए। दोनों कुमार बड़े ही तरद्दुद में पड़े। अगर तारासिंह को पता लगाने के लिए भेजें तो गया में कोई ऐयार न रह जायगा और यह बात अगर उनके पिता सुनें तो बहुत रंज हों, जिसका खयाल उन्हें सब से ज्यादे था। दोपहर दिन चढ़े तक दोनों भाई बड़े ही तरद्दुद में पड़े रहे, दोपहर

बाद उनका तरद्दुद कुछ कम हुआ जब पण्डित बद्रीनाथ भैरोसिंह और जगन्नाथ ज्योतिषी वहाँ आ मौजूद हुए। तीनों के पहुँचने से दोनों कुमार बहुत खुश हुए और समझे कि अब हमारा काम अटका न रहेगा।

कुँअर इन्द्रजीतसिंह आनन्दसिंह तारासिंह पण्डित बद्रीनाथ और ज्योतिषीजी ये सब बाग की बारहदरी में एकान्त समझ कर चले गये और बातचीत करने लगे।

आनन्द०। लीजिए साहब अब तो दुश्मन लोग यहाँ भी बहुत से हो गये।

ज्योतिषी०। कोई हर्ज नहीं।

इन्द्र०। भैरोसिंह, पहिले तुम अपना हाल कहो, यहाँ से जाने के बाद क्या हुआ ?

भैरो०। मुझे तो रास्ते ही में मालूम हो गया था कि किशोरी वहाँ नहीं है।

इन्द्र०। यह हाल मुझे भी मालूम हुआ था।

भैरो०। ठीक है, वह आदमी आपके पास भी आया होगा जिसने मुझे खबर दी थी।

इन्द्र०। खैर तब क्या हुआ ?

भैरो०। फिर भी मैं वहाँ चला गया (बद्रीनाथ और ज्योतिषीजी की तरफ इशारा करके) और इन लोगों के साथ मिल कर काम करने लगा। ये लोग दो सौ बहादुरों के साथ वहाँ पहिले से मौजूद थे। आखिर नतीजा यह हुआ कि दीवान अग्निदत्त और दो तीन उसके साथी गिरफ्तार करके चुनार भेज दिये गये। माधवी का पता नहीं कि वह कहाँ गई, वहाँ की रिआया सब अग्निदत्त से रंज थी इसलिए राजगृही अपने कब्जे में कर लेना हमलोगों को बहुत ही सहज हुआ। अब उन्हीं दो सौ आदमियों के साथ पन्नालाल को वहाँ छोड़ आया हूँ।

बद्री०। आप यहाँ का हाल तो कहिये। सुना है यहाँ बड़े बड़े बेढब मामले हो गये हैं !

इन्द्र०। यहाँ का हाल भैरोसिंह की जुबानी आपने सुना ही होगा, इसके बाद आज रात को एक अजीब बात हो गई है।

तारासिंह ने रात भर का कुल हाल उन लोगों से कहा जिसे सुन वे लोग बहुत ही तरद्दुद में पड़ गये।

इन लोगों की बातचीत हो ही रही थी कि एक चोबदार ने आकर अर्ज किया कि 'अखण्डनाथ बाबाजी बाहर खड़े हैं और यहाँ आया चाहते हैं'। अखण्डनाथ नाम सुन ये लोग सोचने लगे कि कौन हैं और कहाँ से आये हैं। आखिर इन्द्रजीत

सिंह ने उन्हें अपने पास बुलाया और सूरत देखते ही पहिचान लिया।

पाठक, ये अखण्डनाथ बाबाजी वही हैं जो रामशिला के सामने फल्गू के बीच भयानक टीले पर रहते थे, जिनके पास माधवी जाती थी, तथा जिन्होंने उस समय किशोरी की जान बचाई थी जब खंडहर में उसकी छाती पर सवार हो भीमसेन खंजर उसके कलेजे में भोंका ही चाहता था और जिसका हाल ऊपर के तीसरे बयान में हम लिख आये हैं। इन बाबाजी को तारासिंह भी पहिचानते थे क्योंकि कल रात को यह भी इन्द्रजीतसिंह के साथ ही थे।

इन्द्रजीतसिंह ने उठ कर बाबाजी को प्रणाम किया। इनको उठते देख और सब लोग भी उठ खड़े हुए। कुमार ने अपने पास बाबाजी को बैठाया और ऐयारों की तरफ देख के कहा, "इन्हीं का हाल मैं कह चुका हूँ, इन्होंने ही उस खंडहर में किशोरी की जान बचाई थी।"

बाबा०। जान बचाने वाला तो ईश्वर है मैं क्या कर सकता हूँ। खैर, यह तो कहिये उस मामले के बाद की भी आपको खबर है कि क्या हुआ ?

इन्द्रजीत०। कुछ भी नहीं, हम लोग इस समय इसी सोच विचार में पड़े हैं।

बाबा०। अच्छा तो फिर मुझसे सुनिये। दो औरतें और जो उस मकान में थीं उनका हाल तो मुझे मालूम नहीं कि किशोरी की खोज में कहाँ गईं, मगर किशोरी का हाल मैं खूब जानता हूँ।

बाबाजी की बातों ने सभों का दिल अपनी तरफ खैंच लिया और सब लोग एकाग्र होकर उनकी बातें सुनने लगे। बाबाजी ने यों कहना शुरू किया:—

"नाहरसिंह से जब कुमार लड़ रहे थे उस समय भीमसेन के साथियों को जो उसी जगह छिपे हुए थे मौका मिला और वे लोग किशोरी को लेकर शिवदत्तगढ़ की तरफ भागे, मगर ले न जा सके क्योंकि रास्ते ही में रोहतासगढ़* के राजा के ऐयार लोग छिपे हुए थे जिन लोगों ने लड़ कर किशोरी को छीन लिया और रोहतासगढ़ ले गये। किशोरी की खूबसूरती का हाल सुन कर रोहतासगढ़ के राजा ने इरादा कर लिया था कि अपने लड़के के साथ उसे ब्याहेगा और बहुत दिन से उसके ऐयार लोग किशोरी की धुन में लगे हुए भी थे। अब मौका पाकर

* रोहतासगढ़ बिहार के इलाके में मशहूर मोकाम है। यह एक किला पहाड़ के ऊपर है। उस जमाने में इस किले की लम्बाई चौड़ाई लगभग दस कोस की होगी। बड़े बड़े राजा लोग भी इसके फतह करने का हौसला नहीं कर सकते। आज कल यह इमारत बिल्कुल टूट फूट गई है तो भी देखने योग्य है।

वे लोग अपना काम कर गये। अगर आप लोग जल्द उसके छुड़ाने की फिक्र न करेंगे तो बेचारी के बचने की उम्मीद जाती रहेगी। लड़ भिड़ कर रोहतासगढ़ के किले का फतह करना बहुत मुश्किल है, चाहे फौज और दौलत में आप लोग बढ़ के क्यों न हों मगर पहाड़ के ऊपर के उस आलीशान किले के अन्दर घुसना बड़ा ही कठिन है मगर फिर भी चाहे जो हो आप लोग हिम्मत न हारें। किशोरी का खयाल चाहे न भी हो मगर यह सोच कर कि आपके समीप का यह मजबूत किला आप ही के योग्य है, जरूर मेहनत करना चाहिए। ईश्वर आपको विजय देगा और जहाँ तक हो सकेगा मैं भी आपकी मदद करूँगा।"

बाबाजी की जुबानी सब हाल सुन कर कुंअर इन्द्रजीतसिंह बहुत प्रसन्न हुए। एक तो किशोरी का पता लगने की खुशी, दूसरे रोहतासगढ़ के राजा से बड़ी भारी लड़ाई लड़ कर जवानी का हौसला निकालने और मशहूर किले पर अपना दखल जमाने की खुशी से वे गद्गद हो गये और जोश भरी आवाज में बाबाजी से बोले—

इन्द्रजीतसिंह०। बड़े बड़े वीरों की आत्माएँ स्वर्ग से झांक कर देखेंगी कि रोहतासगढ़ की लड़ाई कैसी होती है और किस तरह हम लोग उस किले को फतह करते हैं। रोहतासगढ़ का हाल हम बखूबी जानते हैं, मगर बिना कोई सबब हाथ लगे ऐसा इरादा नहीं कर सकते थे।

बाबा०। अच्छा एक लोटा जल मंगाइये!

तुरत जल आया। बाबाजी ने अपनी दाढ़ी नोच कर फेंक दी और मुंह धो डाला। अब तो सभों ने पहिचान लिया कि ये देवीसिंह हैं।

पाठक, रामशिला पहाड़ी के सामने भयानक टीले पर रहने वाले बाबाजी से देवीसिंह का मिलना आप भूले न होंगे और आपको यह भी याद होगा कि देवीसिंह से बाबाजी ने कहा था कि 'कल इस स्थान को हम छोड़ देंगे'। वह बाबाजी के जाने बाद देवीसिंह ही उनकी सूरत में उस गद्दी पर जा विराजे और जो कुछ काम किया आप जानते ही हैं। उस दिन बाबाजी की सूरत में देवीसिंह ही थे जिस दिन माधवी ने मिल कर कहा था कि 'हमारी मदद के लिए भीमसेन आ गया है'। असली बाबाजी भी उस पहाड़ी पर देवीसिंह से मिल चुके हैं जहाँ हमने लिखा है कि एक ही सूरत के दो बाबाजी इकट्ठे हुए हैं और उन्हीं बाबाजी की जुबानी रोहतासगढ़ का मामला देवीसिंह ने सुना था।

देवीसिंह ने अपना बिल्कुल हाल दोनों कुमारों से कहा और आखीर में बोले, "अब रोहतासगढ़ पर हम जरूर चढ़ाई करेंगे।"

इन्द्र० । बहुत अच्छी बात है, हम लोगों का हौसला भी तभी दिखाई देगा! हाँ यह तो कहिए नाहरसिंह से कैसा बर्ताव किया जाय ?

देवी० । कौन नाहरसिंह ?

इन्द्र० । उस खण्डहर में जो मुझसे लड़ा था ! बड़ा ही बहादुर है । उसने प्रण कर रक्खा था कि जो मुझे जोतेगा उसी का मैं ताबेदार हो जाऊँगा । अब उसने भीमसेन का साथ छोड़ दिया और हम लोगों के साथ रहने को तैयार है ।

देवी० । ऐसे बहादुर पर जरूर मेहरबानी करनी चाहिये मगर आज हम उसे आजमावेंगे । आप उसके लिए एक मकान दे दें और हर तरह के आराम का बन्दोबस्त कर दें ।

इन्द्रजीत० । बहुत अच्छा !

कुंअर इन्द्रजीतसिंह ने उसी समय नाहरसिंह को अपने पास बुलाया और बड़ी मेहरबानी के साथ पेश आयें । एक मकान देकर अपने सेनापति की पदवी उसे दी और भीमसेन को कैद में रखने का हुक्म दिया ।

अपने ऊपर कुमार की इतनी मेहरबानी देख कर नाहरसिंह बहुत प्रसन्न हुआ । कुछ देर तक बातें करता रहा, तब सलाम करके अपने ठिकाने चला गया और सेनापति के काम को ईमानदारी के साथ पूरा करने का उद्योग करने लगा ।

आधी रात जा चुकी है । चारो तरफ सन्नाटा छाया हुआ है । गलियों और सड़कों पर चौकीदारों के "जागते रहियो, होशियार रहियो" पुकारने की आवाज आ रही है । नाहरसिंह अपने मकान में पलंग पर लेटा हुआ कोई किताब देख रहा है और सिरहाने शमादान जल रहा है ।

नाहरसिंह के हाथ में श्रुति स्मृति या पुराण की कोई पुस्तक नहीं है, उसके हाथ में तस्वीरों की एक किताब है जिसके पन्ने वह उलटता है और एक एक तस्वीर को देर तक बड़े गौर से देखता है । इन तस्वीरों में बड़े बड़े राजाओं और बहादुरों की मशहूर लड़ाइयों का नक्शा दिखाया गया है और पहलवानों की बहादुरी और दिलावरों की दिलावरी का खाका उतारा हुआ है जिसे देख देख कर बहादुर नाहरसिंह की रगें जोश मारती हैं और वह चाहता है कि ऐसी लड़ाइयों में हमें भी कभी हौसला निकालने का मौका मिले ।

तस्वीरें देखते देखते बहुत देर हो गई और नाहरसिंह की नींद भरी आँखें भी बन्द होने लगीं । आखिर उसने किताब बन्द करके एक तरफ रख दी और थोड़ी ही देर बाद गहरी नींद में सो गया ।

इस मकान के किसी कोने में एक आदमी न मालूम कब का छिपा हुआ था जो नाहरसिंह को सोता जान उस कमरे में चला आया और पलंग के पास खड़ा हो उसे गौर से देखने लगा। इस आदमी को हम नहीं पहिचानते क्योंकि यह मुँह पर नकाब डाले हुए है। थोड़ी देर बाद अपनी जेब से उसने एक पुड़िया निकाली और एक चुटकी बुकनी की नाहरसिंह की नाक के पास ले गया। साँस के साथ घूरा दिमाग में पहुँचा और वह छींक मार कर बेहोश हो गया।

उस आदमी ने अपनी कमर से एक रस्सी खोली और नाहरसिंह के हाथ पैर मजबूती से बाँध कर उसे होशियार करने के बाद तलवार खैंच मुँह पर से नकाब हटा सामने खड़ा हो गया। होश में आते ही नाहरसिंह ने अपने को बेबस और हाथ में नंगी तलवार लिए महाराज शिवदत्त को सामने मौजूद पाया।

शिव०। क्यों नाहरसिंह, एक नाजुक समय में हमारे लड़के का साथ छोड़ देना और उसे दुश्मनों के हाथ में फँसा देना क्या तुम्हें मुनासिब था?

नाहर०। जब तक बहादुर इन्द्रजीतसिंह ने मुझ पर फतह नहीं पाई तब तक मैं बराबर तुम्हारे लड़के का साथी रहा, जब कुमार ने मुझे जीत लिया तो अपने कौल के मुताबिक मैंने उनकी ताबेदारी कबूल कर ली। मेरे कौल को तो तुम भी जानते ही थे!

शिव०। जो कुछ तुमने किया है उसकी सजा देने के लिए इस समय मैं मौजूद हूँ।

नाहर०। खैर ईश्वर की मर्जी।

शिव०। अब भी अगर तुम हमारा साथ देना मंजूर करो तो छोड़ सकता हूँ।

नाहर०। यह नहीं हो सकता, ऐसे बहादुर का साथ छोड़ तुम्हारे ऐसे बेईमान का संग करना मुझे मंजूर नहीं!

शिव०। (डपट कर और तलवार उठा कर) क्या तुम्हें अपनी जान देना मंजूर है?

नाहर०। खुशी से मंजूर है मगर मालिक का संग छोड़ना कबूल नहीं है?

शिव०। देखो मैं फिर तुम्हें समझाता हूँ; सोचो और मेरा साथ दो!

नाहर०। बस बहुत बकवाद करने की जरूरत नहीं, जो कुछ तुम कर सको कर लो। मैं ऐसी बातें नहीं सुनना चाहता।

शिवदत्त ने बहुत कुछ समझाया और डराया धमकाया मगर बहादुर नाहरसिंह की नीयत न बदली। आखिर लाचार होकर शिवदत्त ने अपने हाथ से तलवार

दूर फेंक दी और नाहरसिंह की पीठ ठोंक कर बोला—

"शावाश बहादुर ! तुम्हारे ऐसे जवांमर्द का दिल अगर ऐसा न होगा तो किसका होगा ? मैं शिवदत्त नहीं हूं, कुमार का ऐयार देवीसिंह हूं, तुम्हें आजमाने के लिये आया था !"

इतना कह कर उन्होंने नाहरसिंह की मुश्कें खोल दीं और वहां से फौरन चले गये। देवीसिंह ने यह हाल दोनों कुमारों से कह कर नाहरसिंह की तारीफ की मगर बहादुर नाहरसिंह ने अपनी जिन्दगी भर इस आजमाने का हाल किसी से न कहा।

दूसरे दिन देवीसिंह चुनार चले गये और कह गये कि रोहतासगढ़ की चढ़ाई का बन्दोवस्त करके मैं बहुत जल्द आऊंगा।

यह जान कर कि किशोरी को रोहतासगढ़ वाले ले गये हैं कुंअर इन्द्रजीत-सिंह की वेचैनी हद से ज्यादे बढ़ गई। दम भर के लिए भी आराम करना मुश्किल हो गया, दो ही पहर में सूरत बदल गई। किसी का बुलाना या कुछ पूछना उन्हें जहर सा मालूम पड़ने लगा। इनकी ऐसी हालत देख भैरोसिंह से न रहा गया, निराले में बैठ उन्हें समझाने लगा।

इन्द्र०। तुम्हारे समझाने से मेरी हालत किसी तरह बदल नहीं सकती और किशोरी की जान का खतरा जो मुझे लगा हुआ है किसी तरह कम नहीं हो सकता !

भैरो०। किशोरी को अगर शिवदत्तगढ़ वाले ले जाते तो वेशक उसकी जान का खतरा था, क्योंकि शिवदत्त रंज के मारे विना उ. की जान लिये न रहता, मगर अब तो वह रोहतासगढ़ के राजा के कब्जे में है और वह अपने लड़के से उसकी शादी किया चाहता है, ऐसी हालत में किशोरी की जान का दुश्मन वह क्योंकर हो सकेगा ?

इन्द्र०। अगर जबर्दस्ती किशोरी की शादी कर दी गई तब क्या होगा ?

भैरो०। हाँ अगर ऐसा हो तो जरूर रंज होगा, खैर आप चिन्ता न करिये, ईश्वर चाहेगा तो पाँच हो सात दिन में कुल बखेड़ा तै करे देता हूं।

इन्द्र०। क्या किशोरी को वहाँ से ले आओगे !

भैरो०। रोहतासगढ़ के किले में घुस कर किशोरी को निकाल लाना तो दो तीन दिन का काम नहीं, इसके अतिरिक्त क्या रोहतासगढ़ का किला ऐयारों से खाली होगा ?

इन्द्र०। फिर तुम पाँच सात दिन में क्या करोगे ?

भैरो०। कोई काम ऐसा जरूर करूंगा जिससे किशोरी की शादी रुक जाय।

इन्द्र० । वह क्या ?

भैरो० । जिस तरह बनेगा वहाँ के राजकुमार कल्याणसिंह को पकड़ लाऊँगा, जब हम लोगों का फैसला हो जायगा तब छोड़ दूँगा ।

इन्द्र० । हाँ अगर ऐसा करो तो क्या बात है !

भैरो० । आप चिन्ता न कीजिये । मैं अभी यहाँ से रवाना होता हूँ, मगर आप किसी से मेरे जाने का हाल न कहियेगा ।

इन्द्र० । क्या अकेले जाओगे ?

भैरो० । जी हाँ ।

इन्द्र० । वाह ! कहीं फँस जाओ तो मैं तुम्हारी राह ही देखता रह जाऊँ, कोई खबर देने वाला भी नहीं ।

भैरो० । ऐसी उम्मीद न रखिये ।

कुँअर इन्द्रजीतसिंह से वादा करके भैरोसिंह रोहतासगढ़ की तरफ रवाना हुए, मगर भैरोसिंह का अकेले रोहतासगढ़ जाना इन्द्रजीतसिंह को न भाया । उस समय तो भैरोसिंह की जिद्द से चुप हो रहे मगर उसके जाने बाद कुमार ने सब हाल पण्डित बद्रीनाथ से कह कर दोस्त की मदद के लिए जाने का हुक्म दिया । हुक्म पाते ही पण्डित बद्रीनाथ भी रोहतासगढ़ रवाना हुए और रास्ते ही में भैरोसिंह से जा मिले।

दो रोज चल कर ये दोनों आदमी रोहतासगढ़ पहुँचे* और पहाड़ के ऊपर

---

* राजा शिवप्रसाद सितारेहिन्द ने अपनी किताब जान-जहाँनुमा में लिखा है—'आरे से करीब पचहत्तर मील के दक्खिन पश्चिम को झुकता हुआ हजार फीट ऊँचे पहाड़ के ऊपर का एक बड़ा ही मजबूत किला "रोहतासगढ़" जिसका असल नाम "रोहताश्म" है दस मील मुरब्बः की वसअत में सोन नदी के बाएँ किनारे पर उजाड़ पड़ा हुआ है । उसमें जाने के वास्ते सिर्फ एक ही रास्ता दो कोस की चढ़ाई का तंग सा बना है बाकी सब तरफ वह पहाड़ जंगल और नदियों से ऐसा घिरा हुआ है कि किसी तौर से वहाँ आदमी का गुजर नहीं हो सकता । उस किले के अन्दर दो मन्दिर अगले जमाने के अभी मौजूद हैं बाकी सब इमारतें महल बाग तालाब वगैरह जिनका अब सिर्फ निशान भर रह गया है मुसलमान बादशाहों के बनाये हुए हैं ।"

(ग्रन्थकर्ता)—मगर अकबर के जमाने में जो "बिहार" का हाल लिखा गया है उससे मालूम होता है कि यह मुकाम मुसलमानों की अमलदारी के पहिले से बना हुआ है ।

चढ़ किले में दाखिल हुए। यह बहुत बड़ा किला पहाड़ पर निहायत खूबी का बना हुआ था और इसी के अन्दर शहर भी बसा था जो बड़े-बड़े सौदागरों महाजनों व्यापारियों और जौहरियों के कारबार से अपनी चमक दमक दिखा रहा था। इस शहर की खूबी और सजावट का हाल इस जगह लिखने की कोई जरूरत नहीं मालूम होती और इतना समय भी नहीं है, हाँ मौके पर दो चार दफे पढ़ कर इसकी खूबी का हाल पाठक मालूम कर लेंगे। इस किले के अन्दर एक छोटा किला और भी था जिसमें महाराजा और उनके आपस वाले रहा करते थे और लोगों में वह महल के नाम से मशहूर था।

इस पहाड़ पर छोटे झरने और तालाब बहुत हैं। ऊपर जाने के लिए केवल एक ही राह है और वह भी बहुत बारीक। उसके चारो तरफ घना जंगल इस ढंग का है कि जरा भी आदमी चूका और राह भूल कर कई दिन तक भटकने की नौबत आई। दुश्मनों का और किसी तरह से इस पहाड़ पर चढ़ना बहुत ही मुश्किल है और वह बारीक राह भी इस लायक नहीं कि पाँच सात आदमी से ज्यादा एक साथ चढ़ सकें। भेष बदले हुए हमारे दोनों ऐयार रोहतासगढ़ पहुँचे और वहाँ की रंगत देख कर समझ गये कि इस किले को फतह करने में बहुत मुश्किल पड़ेगी।

भैरोसिंह और पण्डित बद्रीनाथ मथुरिया चौबे बने हुए रोहतासगढ़ में घूमने और एक एक चीज को अच्छी तरह देखने लगे। दोपहर के समय एक शिवालय पर पहुँचे जो बहुत ही खूबसूरत और बड़ा बना हुआ था, सभामंडप इतना बड़ा था कि सौ डेढ़ सौ आदमी अच्छी तरह उसमें बैठ सकते थे। उसके चारो तरफ खुलासा सहन था जिस पर कई ब्राह्मण और पुजारी बैठे धूप सेंक रहे थे। उन्हीं लोगों के पास जाकर हमारे दोनों ऐयार खड़े हो गये और गरज कर बोले—"जै जमुना मैया की!"

पुजारियों ने हमारे दोनों चौबों को खातिरदारी से बैठाया और बातचीत करने लगे।

एक पुजारी०। कहिये चौबेजी कब आना हुआ?

बद्री०। बस अभी चले ही तो आते हैं महाराज! पहाड़ पर चढ़ते चढ़ते थक गये, गला सूख गया, कृपा कर सिल लुढ़िया दो तो भंग छने और चित्त ठिकाने हो।

पुजारी०। लीजिये, सिल लुढ़िया लीजिये, मसाला लीजिये, चीनी लीजिये, खूब भंग छानिये।

भैरो०। भंग मसाला तो हमारे साथ है आप ब्राह्मणों का क्यों नुकसान करें।

पुजारी० । नहीं नहीं, हमारा कुछ नहीं है, यहाँ सब चीजें महाराज के हुक्म से मौजूद रहती हैं, ब्राह्मण परदेशी जो कोई आवे सभी को देने का हुक्म है।

बद्रो० । वाह वाह, तब क्या बात है ! लाइये फिर महाराज की जयजयकार मनावें !

पुजेरी ने इन दोनों को सब सामान दिया और इन दोनों ने भंग बनाई, आप भी पी और पुजेरियों को भी पिलाई । दोनों ऐयारों ने बातचीत और मसखरेपन से वहाँ के पुजेरियों को अपने बस में कर लिया । बड़े पुजेरी बहुत प्रसन्न हुए और बोले, "चौबेजी महाराज, बड़े भाग्य से आप लोगों के दर्शन हुए हैं । आप लोग दो चार रोज यहाँ जरूर रहिये ! इसी जगह आपको महाराजकुमार से भी मिलावेंगे और आप लोगों को बहुत कुछ दिलावेंगे । हमारे महाराजकुमार बहुत ही हँसमुख नेक और बुद्धिमान हैं । आप उन्हें देख बहुत प्रसन्न होंगे !"

बद्री० । बहुत खूब महाराज, आप लोगों की इतनी कृपा है तो हम जरूर रहेंगे और आपके महाराजकुमार से भी मिलेंगे, वे यहाँ कब आते हैं ?

पुजेरी० । प्रातः और सायंकाल दोनों समय यहाँ आते हैं और इसी मंदिर में सन्ध्या पूजा करते हैं !

भैरो० । तो आज भी उनके दर्शन होंगे ?

पुजेरी० । अवश्य ।

यह मन्दिर किले की दीवार के पास ही था । इसके पीछे की तरफ एक छोटी सी लोहे की खिड़की थी जिसकी राह से लोग किले के बाहर जंगल में जा सकते थे । पुजारी के हुक्म से भंग पीने के बाद दोनों ऐयार उसी राह से जंगल में गए और मैदान होकर लौट आये, पुजेरी लोग भी उसी राह से जंगल मैदान गये ।

सन्ध्या समय महाराजकुमार भी वहाँ आये और मंदिर के अन्दर दर्वाजा बन्द करके घंटे भर से ज्यादे देर तक सन्ध्या पूजा करते रहे । उस समय केवल एक बड़ा पुजेरी उस मन्दिर में तब तक मौजूद रहा जब तक महाराजकुमार नित्य नेम करते रहे । दोनों ऐयारों ने भी महाराजकुमार को अच्छी तरह देखा मगर पुजेरीजी को कह दिया था कि आज महाराजकुमार को यह मत कहना कि यहाँ दो चौबे आये हैं, कल सायंकाल को हम लोगों का सामना कराना ।

दोनों ऐयारों ने रात भर उसी मन्दिर में गुजारा किया और अपने मसखरेपन से पुजेरी महाशय को बहुत ही प्रसन्न किया, साथ ही इसके उन्हें इस बात का भी विश्वास दिलाया कि इस पहाड़ के नीचे एक बड़े भारी महात्मा आये हुए

हैं, आपको उनसे जरूर मिलावेंगे, हमलोगों पर उनकी बड़ी ही कृपा रहती है।

सवेरे उठ कर इन दोनों ने फिर भंग घोंट कर पी और सभों को पिलाने बाद उसी खिड़की की राह मैदान गये। दोनों ऐयार तो अपनी धुन में थे, महाराज-कुमार को यहाँ से उड़ाने की फिक्र सोच रहे थे तथा उसी खिड़की की राह निकल जाने का उन्होंने मौका तजबीजा था, इसलिए मैदान जाते समय इस जंगल को दोनों आदमी अच्छी तरह देखने लगे कि इधर से सीधी सड़क पर निकल जाने का क्योंकर हमलोगों को मौका मिल सकता है। इस काम में उन्होंने दिन भर बिता दिया और रास्ता अच्छी तरह समझ बूझकर शाम होते होते मंदिर में लौट आये।

पुजेरी०। कहिये चौबेजी महाराज! आप लोग कहाँ चले गये थे?

वद्री०। अजी महाराज, कुछ न पूछो! जरा आगे क्या बढ़ गये बस जहन्नुम में मिल गये। ऐसा रास्ता भूले कि बस हमारा ही जी जानता है।

भैरो०। ईश्वर की ही कृपा से इस समय लौट आये नहीं तो कोई उम्मीद यहाँ पहुँचने की न थी।

पुजेरी०। राम राम, यह जंगल बड़ा ही भयानक है, कई दफे तो हमलोग इसमें भूल गये हैं और दो दो दिन तक भटकते ही रह गये हैं, आप बेचारे तो नये ठहरे, आइये बैठिये कुछ जलपान कीजिये।

भैरो०। अजी कहाँ का खाना कैसा पीना! होश तो ठिकाने ही नहीं हैं, बस भंग पीकर खूब सोवेंगे। घूमते घूमते ऐसे थके कि तमाम बदन चूर चूर हो गया। कृपानिधान, आज भी हमलोगों की इत्तिला कुमार से न कीजियेगा, हम लोग मिलने लायक नहीं हैं, इस समय तो खूब गहरी छनेगी!!

पुजेरी०। खैर ऐसा ही सही! (हँस कर) आइये बैठिये तो।

दोनों ऐयारों ने भंग पी और बाकी लोगों को भी पिलाई। इसके बाद कुछ देर आराम करके बाजार में घूमने फिरने के लिए गये और अच्छी तरह देख-भाल कर लौट आये। सोते समय फिर उन्हीं महात्मा का जिक्र पुजेरी से करने लगे जिनसे मिलाने का वादा कर चुके थे और यहाँ तक उनकी तारीफ की कि पुजेरीजी उनसे मिलने के लिए जल्दी करने लगे और बोले, "यह तो कहिये कल आप उनके दर्शन करावेंगे या नहीं?"

वद्री०। जरूर, बस कुमार यहाँ से सन्ध्या पूजा करके लौट जाँय तो चले चलिये, मगर अकेले आप ही चलिए नहीं तो महात्मा बड़ा बिगड़ेंगे कि इतने आदमियों को क्यों ले आए। वह जल्दी किसी से मिलने वाले नहीं हैं।

पुजेरी० । हमें क्या गरज पड़ी है जो किसी को साथ ले जाँय, अकेले आपके साथ चलेंगे ।

भैरो० । बस तभी तो ठीक होगा ।

दूसरे दिन जब महाराजकुमार सन्ध्या पूजा करके लौट गए तो बद्रीनाथ और भैरोसिंह पुजेरी को साथ ले वहाँ से रवाना हुए और पहाड़ के नीचे उतरने बाद बोले, "बस अब यहीं बूटी छान लें तब आगे चलें, इसीलिए लुटिया लेता आया हूँ।

पुजेरी० । क्या हर्ज है, बूटी छान लीजिए ।

बद्री० । आपके हिस्से की भी बनाऊँ न !

पुजेरी० । इस दोपहर के समय क्या बूटी पिलाइएगा । हमें तो इतनी आदत न थी, आप ही लोगों के सबब दो दिन से खूब पीने में आती है ।

बद्री० । क्या हर्ज है, थोड़ी सी पी लीजिएगा ।

पुजेरी० । जैसी आपकी मर्जी ।

हमारे बहादुर ऐयारों ने एक पत्थर की चट्टान पर भंग घोंट कर पी और नजर बचा थोड़ी सी बेहोशी की दवा मिला पुजेरी को भी पिलाई। थोड़ी ही देर में पुजेरीजी महाराज तो चीं बोल गए और गहरी बेहोशी में मस्त हो गए। दोनों ऐयार उन्हें उठा कर ले गए और एक झाड़ी में छिपा आए ।

बद्री० । अब क्या करना चाहिए ?

भैरो० । आप यहाँ रहिए मैं उसी तरकीब से कुमार को उठा लाता हूँ ।

बद्री० । अच्छी बात है, मैं अपने हाथ से पुजेरी की सूरत तुम्हें बनाता हूँ।

भैरो० । बनाइए ।

पुजेरी की सूरत बन बद्रीनाथ को उसी जगह छोड़ भैरोसिंह लौटे । संध्या होने के पहिले ही मन्दिर में जा पहुँचे। लोगों ने पूछा, "कहिये पुजारीजी, महात्मा से मुलाकात हुई या नहीं ? और अकेले क्यों लौटे, चौबेजी कहाँ रह गए ?"

नकली पुजारी ने कहा — "महात्मा से मुलाकात हुई । वाह क्या बात है, महात्मा क्या वह तो पूरे सिद्ध हैं ! दोनों चौबों को बहुत मानते हैं । उन्हें तो आने न दिया मगर मैं चला आया । अब चौबेजी कल आवेंगे ।"

समय पर महाराजकुमार भी आ पहुँचे और सन्ध्या करने के लिए मंदिर के अन्दर घुसे । मामूली तौर पर पुजेरी के बदले में नकली पुजेरी अर्थात् भैरोसिंह मन्दिर के अन्दर रहे और कुमार के अन्दर आने पर भीतर से किवाड़ बन्द कर लिया । सन्ध्या करने के समय महाराजकुमार के साथ मंदिर के अन्दर घुस कर

पुजेरी क्या क्या करते थे यह दोनों ऐयारों ने उनसे बातों बातों में पहिले ही दरियाफ्त कर लिया था। पुजारीजी मन्दिर के अन्दर बैठे कुछ विशेष काम नहीं करते थे, केवल पूजा का सामान कुमार के आगे जमा कर देते और एक किनारे बैठे रहते थे। चलती समय प्रसादी में माला कुमार को देते थे और वे उसे सूँघ आँखों से लगा उसे उसी जगह रख चले जाते थे। आज इन सब कामों को हमारे ऐयार पुजेरीजी ने ही पूरा किया।

इस मन्दिर में चारो तरफ चार दर्वाजे थे। आगे की तरफ तो कई आदमी और पहरे वाले बैठे रहते थे, बाईं तरफ के दर्वाजे पर होम करने का कुण्ड बना हुआ था, दाहिने दर्वाजे पर फूलों के कई गमले रक्खे हुए थे, और पिछला दर्वाजा बिल्कुल सन्नाटा पड़ता था।

मन्दिर के अन्दर दरवाजा बन्द करके कुमार सन्ध्या करने लगे। प्राणायाम के समय मौका जान कर नकली पुजेरी ने आशीर्वाद में देने वाली फूलों की माला में बेहोशी का धूरा मिलाया। जब कुमार चलने लगे पुजेरी ने माला गले में डाली, कुमार ने उसे गले से निकाल सूँघा और माथे से लगा कर उसी जगह रख दिया।

माला सूँघने के साथ ही कुमार का सिर घूमा और वे बेहोश होकर जमीन पर गिर पड़े। भैरोसिंह ने झटपट उनकी गठरी बाँधी और पिछले दर्वाजे की राह बाहर निकल आये, इसके बाद उसी छोटी खिड़की की राह किले के बाहर हो जंगल का रास्ता लिया और दो ही घण्टे में उस जगह जा पहुँचे जहाँ पण्डित बद्रीनाथ को छोड़ गये थे। ये दोनों ऐयार कुमार कल्याणसिंह को ले गयाजी की तरफ रवाना हुए।

छठवाँ बयान

इश्क भी क्या बुरी बला है! हाय, इस दुष्ट ने जिसका पीछा किया उसे खराब करके छोड़ दिया और उसके लिए दुनिया भर के अच्छे पदार्थ बेकाम और बुरे बना दिये। छिटकी हुई चाँदनी उसके बदन में चिनगारियाँ पैदा करती है, शाम की ठंडी हवा उसे लू सी लगती है, खुशनुमा फूलों को देखने से उसके कलेजे में काँटे चुभते हैं, बाग की रविशों पर टहलने से पैरों में छाले पड़ते हैं, नरम बिछावन पर पड़े रहने से हड्डियाँ टूटती हैं, और वह करवटें बदल कर भी किसी तरह आराम नहीं ले सकता।

खाना पीना हराम हो जाता है, मिसरी की डली जहर मालूम होती है, गम

खाते खाते पेट भर जाता है, प्यास बुझाने के लिए आँसू की बूँदें बहुत हो जाती हैं, हजार दुःख भोगने पर भी किसी की जुल्फ में उलझी हुई जान को निकल भागने का मौका हाथ नहीं लगता। दोस्तों की नसीहतें जिगर के टुकड़े टुकड़े करती हैं, जुदाई की आग में कलेजा भुन जाता है, बदन का खून पानी हो जाता है और इसी से उसकी भूख प्यास दोनों ही जाती रहती है। जिसकी सूरत उसकी आँखों में छुपी रहती है, दरोदीवार में वही दिखाई देता है, स्वप्न में भी इठलाता हुआ वही नजर आता है। उसकी सुनी हुई बातें रात दिन कान में गूँजा करती हैं, हँसी के समय दिखाई दिये हुए मोतियों से दाँत गले का हार बन बैठते हैं. भुलाए नहीं भूलते, जादू भरी चितवनों की याद दिल को उचाट कर देती है, गले में हाथ डाल कर ली हुई अँगड़ाई बदन को दबाए देती है, उसकी याद में एक तरफ झुके हुए कभी सीधे भी नहीं होने पाते!

वे दिन रात आँखें बन्द कर हुस्न के बाग में टहला करते हैं। ठंडी साँसें आँधी का काम देती हैं। सूखे पत्ते उड़ाया करते हैं और धीरे-धीरे आप भी ऐसे सूख जाते हैं कि साँस के साथ उड़ जाने की हिम्मत बाँधते हैं, मुहब्बत का गुरु चाबुक लिए हर दम पीछे मौजूद रहता है, बुदबुदाते हुए अपने चेले को कहीं ठहरने नहीं देता और न माशूक के नाम के सिवाय कोई दूसरा शब्द मुँह से निकालने देता है।

आदमी क्या हवा तक ऐसों से दिल्लगी करती है, किवाड़ खटखटा माशूक के आने की याद दिला दिला चुटकियाँ लेती है, और कभी कान में झुक कर कहती है कि मैं उस गली से आई हूँ जिसमें तेरा प्यारा रहता है।

बाग में टहलने के समय हवा के चपेटों में पड़ी हुई पेड़ों की टहनियाँ हिल हिल कर अपने पास बुलाती हैं और जब वह पास जाता है हँसी के दो फूल गिरा कर चुप हो जाती हैं जिससे उसका दिल और भी बेचैन हो जाता है और वह दोनों हाथों से कलेजा थाम कर बैठ जाता है। उसके प्यारे रिश्तेदार यह हालत देख अफसोस करते हैं और उसकी नर्म अँगुलियों को हाथ में ले कर पूछते हैं कि क्या अपनी जुल्फें सँवारने के लिए ये नाखून बढ़ा रक्खे हैं?

बेचैनी इतनी बढ़ जाती है कि आधे घंटे तक के लिए भी ध्यान एक तरफ नहीं जमता और न एक जगह थोड़ी देर तक आराम के साथ बैठने की मोहलत मिलती है। आँखों में छिपी रहने वाली नींद भी न मालूम कहाँ चली जाती है और अपनी जगह टकटकी को जो दम दम में तरह तरह की तस्वीरें बनाने और बिगाड़ने वाली है छोड़ जाती है।

यही हमारे कुंअर इन्द्रजीतसिंह और उनकी प्यारी किशोरी की हालत है, इस समय दोनों एक दूसरे से दूर पड़े हैं मगर मुहब्बत का भूत रंग बिरंग की सूरत बन दोनों की आँखों में नाचा करता है और बढ़ती हुई उदासी और बेचैनी को किसी तरह कम नहीं होने देता।

रोहतासगढ़ महल में रहने वाली जितनी औरतें हैं सभी को किशोरी की खातिरदारी का ध्यान रहने पर भी किशोरी की उदासी किसी तरह कम नहीं होती। यद्यपि उसे यहाँ किसी तरह की भी तकलीफ नहीं थी मगर कलेजे को टुकड़े टुकड़े करने वाली वह बात एक सायत के लिए भी उसके दिल से नहीं भूलती थी जो उसने यहाँ आने के साथ ही पीठ पर हाथ फेरते हुए महाराज के मुँह से सुनी थी, अर्थात्—"यह तो मेरी पतोहू होने लायक है!"

यों तो ऊँचे दर्जे की औरतों के जिद करने से लाचार होकर जनाने नजरबाग में किशोरी को टहलना ही पड़ता था मगर वहाँ की कोई चीज उस बेचारी के जी को ढाढ़स नहीं दे सकती थी। खिले हुए गुलाब के फूल पर नजर पड़ते ही वह मुर्झा जाती, नर्गिस की तरफ देखते ही उसकी शर्मीली आखें पलकों की चिलमन में छिप जातीं, सरो के पास पहुँचते ही वह गम के बोझ से झुक जाती और खुशनुमा फूलों से लदी हुई पेचीली लतायें उसके सामने पड़ कर कुँअर इन्द्रजीतसिंह को सुंबली जुल्फों की याद दिलाती जिसमें उलझी हुई उसकी जान को जीते जी छूटने की उम्मीद न थी।

रविशों को वह यार की जुदाई का मैदान समझती, छोटे छोटे रंगीन फूलों से भरे हुए पेड़ों की क्यारियों को वह घना जंगल जानती और गूँजते हुए भौंरों की आवाज उसके कानों में झिल्ली की झनकार मालूम होती जो जंगल में बिना मौसिम पर ध्यान दिये बारहों महीने बोला और इत्तिफाक से आ पड़े हुए नाजुकबदनों के कलेजों को दहलाया करती है।

नर्म हवा के झोंकों से हिलती हुई रंग बिरंग की खूबसूरत पत्तियों को देखते हीं वह काँप जाती, सुन्दर और साफ मोती सरीखे जल से भरे और बहते हुए बनावटी झरने के पास पहुँचते ही उसका दिल डूब जाता, छूटते हुए फौवारे पर नजर पड़ते ही कलेजा मुँह को आता और आँखों से टपाटप आँसू की बूँदें गिरने लगतीं जिन्हें देख तरह तरह की बोलियों से दिल खुश करने वाली बाग की नाजुक चिड़ियों से चुप न रहा जाता और वे बोल उठतीं—"हाय हाय! इस बेचारी का दिल किसी की जुदाई में खून हो गया और वह खून पानी होकर आँखों की

राह निकला जाता है।"

उन कुछ जवान नाजुक और चंचल औरतों को जो किशोरी के साथ रहने पर मुस्तैद की गई थीं उसकी हालत पर अफसोस आता मगर लाचार थीं क्योंकि उन्हें अपनी जान बहुत प्यारी थी।

रात के समय जब किशोरी अपने को अकेली पाती तरह तरह की बातें सोचा करती। कभी तो वह निकल भागने की तर्कीब सोचती मगर अनहोनी जान उधर से खयाल को लौटा कर अपने प्यारे इन्द्रजीतसिंह की तरफ ध्यान लगाती और कहती कि क्या वे मेरी मदद न करेंगे और मुझे यहाँ से न छुड़ावेंगे? नहीं जरूर छुड़ावेंगे, मगर कब? जब उन्हें यह खबर होगी कि किशोरी फलानी जगह कैद है। हाय हाय! कहीं ऐसा न हो कि खबर होते होते तक मुझे यह दुनिया छोड़ देनी पड़े और दिल के अरमान दिल ही में ले जाने पड़ें। नहीं, अगर मेरे साथ जबर्दस्ती की जायगी तो जरूर ऐसा करूँगी और सिवाय उसके जिसके ऊपर न्योछावर हो चुकी हूँ दूसरे की न कहलाऊँगी, ऐसी नौबत आने के पहिले ही शरीर छोड़ उनसे जा मिलूँगी, कोई ताकत ऐसी नहीं जो ऐसा करने से मुझे रोक सके। हे ईश्वर! क्या तू उन आफत के परकाले ऐयारों को यहाँ का रास्ता न बतावेगा जो कुमार के लिए ज़ान तक दे देने को हरदम मुस्तैद रहते हैं?

एक रात वह इसी सोच विचार में पड़ी थी कि सवेरा हो गया और कमरे के बाहर से एक ऐसी आवाज उसके कान में आई कि वह चौंक पड़ी। उसके फैले हुए खयाल इकट्ठे हो गये, साथ ही कुछ कुछ खुशी उसके चेहरे पर झलकने लगी। वह आवाज यह थी—

"यह काम बेशक बीरेन्द्रसिंह के ऐयारों का है!"

किशोरी उठ खड़ी हुई और कमरे के बाहर निकलने पर घण्टे ही भर में उसे मालूम हो गया कि कुँअर कल्याणसिंह को बीरेन्द्रसिंह के ऐयार लोग ले भागे।

अब किशोरी को अपने छूटने की कुछ कुछ उम्मीद हुई और वह दिन भर इसी खयाल में डूबी रहने लगी कि देखें इसके आगे क्या होता है।

सातवाँ बयान

आधी रात से ज्यादे जा चुकी है, किशोरी अपने कमरे में मसहरी पर लेटी हुई न मालूम क्या सोच रही है, हाँ उसकी डबडबाई हुई आँखें जरूर इस बात की खबर देती हैं कि उसके दिल में किसी तरह का द्वन्द मचा हुआ है। उसकी

आँखों में नींद बिल्कुल नहीं है, घड़ी घड़ी करवटें बदलती और लम्बी साँसें लेकर रह जाती है।

यकायक कमरे के बाहर से कोई तड़पा देने वाली आवाज उसके कान में आई जिसके सुनते ही वह बेचैन हो गई, किसी तरह लेटी रह न सकी, पलंग से नीचे उतर पड़ी और दरवाजा खोल बाहर इधर उधर देखने लगी। वह आवाज किसी के सिसक सिसक कर रोने की थी।

कमरे के बाहर आठ दर का दालान था जहाँ एक खम्भे के सहारे खड़ी बिलख बिलख कर रोती हुई एक कमसिन औरत को किशोरी ने देखा। खम्भे और उस औरत पर चाँदनी अच्छी तरह पड़ रही थी। पास जाने से मालूम हुआ कि सर्दी से वह औरत काँप रही है क्योंकि कोई भारी कपड़ा उसके बदन पर न था जिससे सर्दी का बचाव होता।

किशोरी का दिल तो पहिले ही से जख्मी हो रहा था, वह इस तरह से बिलख बिलख किसी को रोते कब देख सकती थी! जाते ही उस औरत का हाथ थाम लिया और पूछा—

"तुम पर क्या आफत आई है जो इस तरह बिलख बिलख कर रो रही हो?"

औरत०। हाय, मेरे ऊपर वह आफत आई है जो किसी तरह टल नहीं सकती!

किशोरी उसे अपने कमरे में ले आई और अपने पास फर्श पर बैठा कर बातचीत करने लगी। इस औरत की उम्र अट्ठारह वर्ष से ज्यादे न होगी। यह हर तरह से खूबसूरत और नाजुक थी, इसके बदन में जो कुछ जेवर था उसके देखने से साफ मालूम होता था कि यह जरूर किसी बड़े खानदान की लड़की है।

किशोरी०। मैं उम्मीद करती हूँ कि अपने दिल का हाल साफ साफ मुझसे कहोगी और मुझे बहिन समझ कर कुछ न छिपाओगी।

औरत०। बहिन, मैं जरूर अपना हाल तुमसे कहूँगी क्योंकि तुम भी उसी बला में फँसी हो जिसमें मैं।

किशोरी०। (चौंक कर) क्या मेरी ही तरह से तुम पर भी जुल्म किया गया है।

औरत०। बेशक।

किशोरी०। (लम्बी साँस लेकर) हे ईश्वर! मैंने तो किसी के साथ बुराई नहीं की थी, फिर क्यों यह दुःख भोग रही हूँ!!

औरत०। मगर मैं अब इस जगह ठहर नहीं सकती!

किशोरी० । सो क्यों ? क्या किसी तरह का खौफ मालूम होता है ?

औरत० । नहीं नहीं डर किसी बात का नहीं है, पर इस समय मुझे किसी की मदद से निकल भागने की उम्मीद है, इसीलिए अपने कमरे से निकल यहाँ तक आई थी ।

किशोरी० । क्या कोई तरकीव निकाली गई है ?

औरत० । हाँ, और अगर चाहो तो तुम भी मेरे साथ यहाँ से भाग सकती हो । इसी राज्य का एक जबर्दस्त आदमी आज हमारी मदद करेगा ।

यह सुन कर किशोरी बहुत ही खुश हुई । वह औरत कौन है, उसका नाम क्या है, उस पर क्या दुःख पड़ा है ? यह सब पूछना तो बिल्कुल भूल गई और निकल भागने की खुशी में उस औरत का हाथ अपने दोनों हाथों में लेकर प्रेम से उसकी तरफ देख पूछने लगी, "क्या तुम्हारी मदद से मेरा भी छुटकारा यहाँ से हो सकता है ?"

औरत० । जरूर हो सकता है मगर अब देर न करना चाहिये ।

इसके जवाब में किशोरी कुछ कहा ही चाहती थी कि सामने का दरवाजा खुला और एक हसीन औरत अन्दर आती हुई दिखाई पड़ी । इसकी अवस्था लगभग बीस वर्ष के होगी, सुफेद गेहूँ का सा रंग, कद न लम्बा न नाटा, बदन साफ और सुडौल, नमकीन चेहरा, रस भरी आँखें, नाक में एक हीरे की कील के अलावे दो चार मामूली गहने पहिरे हुए थी, तो भी वह इस लायक थी कि ऊँचे दर्जे के खूबसूरतों की पंक्ति में बैठ सके । इसे देखते ही वह औरत जो किशोरी के पास बैठी थी चौंकी और उसकी तरफ देख कर बोली, "लाली, इस समय तुम्हारा यहाँ आना मुझे ताज्जुब में डालता है !"

लाली० । लेकिन यह सुन कर तुम्हें और भी ताज्जुब होगा कि मैं तुम्हारे पंजे से बेचारी किशोरी की जान बचाने के लिये आई हूँ ।

इतना सुनते ही उस औरत का रंग ढंग बिल्कुल बदल गया । उसके चेहरे पर जो अभी तक उदासी छाई हुई थी बिल्कुल जाती रही और तमतमाहट आ मौजूद हुई, उसकी आँखें जो अभी डबडबाई हुई थीं खुश्क हो गईं और उनमें गुस्से की सुर्खी दिखाई देने लगी, वह इस निगाह से लाली को देखने लगी जैसे उस पर किसी तरह की हुकूमत रखती हो ।

लाली को किशोरी भी पहचानती थी, क्योंकि यह उन हसीनों में से थी जो किशोरी का दिल बहलाने और उसकी हिफाजत करने के लिए तैनात की गई थीं ।

हुकूमत भरी निगाहों से कई सायत तक लाली की तरफ देखने बाद वह औरत फिर बोली—

"लाली, क्या तू आज पागल हो गई है जो मेरे सामने इस तरह से बेअदब होकर बोलती है ?"

लाली०। तू कौन है जो तेरे साथ अदब का बर्ताव करूँ ?

औरत०। (खड़ी होकर) तू नहीं जानती कि मैं कौन हूँ ?

लाली०। कुन्दन, मैं तुझे खूब जानती हूँ, मगर तू यह नहीं जानती कि तेरी नकेल मेरे हाथ में है जिससे तू मेरा कुछ नहीं कर सकती और न अपनी बेईमानी का जाल ही बेचारी किशोरी पर फैला सकती है !

इतना सुनते ही वह औरत जिसका नाम कुन्दन था लाल हो गई और अपने जोश को किसी तरह सम्हाल न सकी, छूरा जो कमर में छिपाये हुए थी हाथ में ले लिया और मारने के लिए लाली की तरफ झपटी। मगर लाली ने झट अपने बगल से एक नारंगी निकाल कर उसे दिखाई और पूछा, "क्या तू भूल गई कि इसमें कै फाँकें हैं ?"

नारंगी देखने के साथ ही और लाली के मुँह से निकले हुए शब्दों को सुनते ही उसका जोश जाता रहा, खौफ और घबराहट से उसका रंग बिल्कुल उड़ गया और वह एक चीख मार कर जमीन पर गिर पड़ी।

आठवाँ बयान

रोहतासगढ़ किले के सामने पहाड़ी से कुछ दूर हट कर वीरेन्द्रसिंह का लश्कर पड़ा हुआ है। चारो तरफ फौजी आदमी अपने अपने काम में लगे हुए दिखाई देते हैं। कुछ फौज आ चुकी और बराबर चली ही आती है। बीच में राजा वीरेन्द्रसिंह का कारचोबी खेमा शान शौकत के साथ खड़ा है, उसके दोनों बगल कुँअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह का खेमा है, सामने और पीछे की तरफ दुपट्टी बड़े बड़े सर्दारों और बहादुरों का डेरा पड़ा है। बाजार लगने की तैयारियाँ हो रही हैं, लड़ाई का सामान इतना इकट्ठा हो रहा है कि देखने से दुश्मनों का कलेजा दहल जाय।

डेरा खड़ा होने के दूसरे दिन कुँअर इन्द्रजीतसिंह आनन्दसिंह तेजसिंह देवीसिंह पण्डित बद्रीनाथ भैरोसिंह तारासिंह जगन्नाथ ज्योतिषी फतहसिंह (पुराने सेनापति जो नौगढ़ में थे) और नाहरसिंह इत्यादि को साथ लिये राजा वीरेन्द्रसिंह भी आ पहुँचे और सब लोग अपने अपने खेमे में उतरे। पन्नालाल गयाजी में और

रामनारायण तथा चुन्नीलाल चुनारगढ़ में रक्खे गये। इस लड़ाई के लिए सेनापति की पदवी नाहरसिंह को दी गई। तीसरे दिन और भी फौज आ जाने पर पाँच झंडे पचास हजार फौज का निशान खड़ा किया गया। बहादुरों के चेहरों पर खुशी मालूम होती थी, सब इसी फिक्र में थे कि जहाँ तक हो लड़ाई जल्दी छिड़ जाय और बेशक एक ही दो दिन में लड़ाई छिड़ जाने की उम्मीद थी मगर बीरेन्द्रसिंह के लश्कर पर यकायक ऐसी आफत आ पड़ी कि कुछ दिनों तक लड़ाई रुकी रही। इस आफत के आने का किसी को स्वप्न में भी गुमान न था जिसका हाल हम आगे चल कर लिखेंगे।

राजा दिग्विजयसिंह का पत्र लेकर उनका एक ऐयार बीरेन्द्रसिंह के पास आया। बीरेन्द्रसिंह ने पत्र लेकर मुन्शी को पढ़ने के लिये दिया, उसमें जो कुछ लिखा था उसका संक्षेप यह है :—

"हमसे आपसे कभी की दुश्मनी नहीं, तो भी न मालूम आपस में लड़ने या विगाड़ पैदा करने का इरादा आपने क्यों किया। खैर इसका सबब जो कुछ हो हम नहीं कह सकते मगर इतना याद रखना चाहिये कि पचास वर्ष लड़ कर भी यह किला आप हमसे नहीं ले सकते, अगर हम चुपचाप बैठे रहें तो भी आप हमारा कुछ नहीं कर सकते, फिर भी हम आपसे लड़ेंगे और मैदान में निकल कर बहादुरी दिखायेंगे। अगर आपको अपनी बहादुरी या जवाँमर्दी का घमंड है तो फौज की जान क्यों लेते हैं, एक पर एक लड़ के फैसला कर लीजिये। बहादुरों की कारवाई देखने बाद हमसे और आपसे द्वन्द-युद्ध हो जाय, आप हम पर फतह पाइये तो यह राज्य आपका हो जाय, नहीं तो आप हमारे मातहत समझे जायें। अफसोस, इस समय हमारा लड़का मौजूद नहीं है, अगर होता तो आपके दोनों लड़कों से वह अकेला ही भिड़ जाता।"

इस पत्र के जवाब में जो कुछ राजा बीरेन्द्रसिंह ने लिखा हम उसका भी संक्षेप नीचे लिख देते हैं—

"आप हमारे राज्य में घुस कर किशोरी को ले गये क्या यह आपकी जबर्दस्ती नहीं है? क्या इसे लड़ाई की बुनियाद कायम करना नहीं कह सकते? हाँ, अगर आप किशोरी को इज्जत के साथ हमारे पास भेज दें तो हम बेशक अपने घर लौट जायेंगे। नहीं तो याद रहे हम इस किले की एक एक ईंट उखाड़ कर फेंक देंगे जिसकी मजबूती पर आप घमंड करते हैं। हम लोग द्वन्द-युद्ध करने के लिये भी तैयार हैं, जिसका जी चाहे एक पर एक लड़ के हौसला निकाल ले।

आपका लड़का मेरे यहाँ कैद है, यदि आप किशोरी को हमारे पास भेज दें तो हम उसे छोड़ देने के लिए तैयार हैं।"

इस पत्र के जवाब में रोहतासगढ़ के किले से तोप की एक आवाज आई। अब लड़ाई में किसी तरह का शक न रहा। दोनों तरफ के ऐयार अपनी अपनी कारंवाई दिखाने पर मुस्तैद हो गये और उन लोगों ने जो कुछ किया उसका हाल आगे चल कर मालूम होगा।

रोहतासगढ़ किले के अन्दर राजमहल की अटारियों पर चढ़ी हुई बहुत सी औरतें उस तरफ देख रही हैं जिधर राजा वीरेन्द्रसिंह का लश्कर पड़ा हुआ है। कुँअर कल्याणसिंह के गिरफ्तार हो जाने से किशोरी को एक तरह की निश्चिन्ती सी हो गई थी क्योंकि ज्यादे डर उसे अपनी शादी उसके साथ हो जाने का था, अपने मरने की उसे जरा भी परवाह न थी। हाँ, कुँअर इन्द्रजीतसिंह की याद वह एक सांयत के लिए भी नहीं भुला सकती थी जिनकी तस्वीर उसके कलेजे में खिंची हुई थी। वीरेन्द्रसिंह की चढ़ाई का हाल सुन उसे बड़ी खुशी हुई और वह भी अपनी अटारी पर चढ़ कर हसरत भरी निगाहों से उस तरफ देखने लगी जिधर बीरेन्द्रसिंह की फौज पड़ी हुई थी। चाहे यहाँ से बहुत दूर हो तो भी किशोरी की निगाहें वहाँ तक पहुँच और भीड़ में घुस घुस कर किसी को ढूँढ़ निकालने की कोशिश कर रही थीं। इस समय किशोरी के साथ ही लाली थी जिसने आज कई दिन हुए किशोरी के कमरे में कुन्दन को नारंगी दिखा कर डरा दिया था।

लाली किशोरी की निगहबानी पर रक्खी गई थी तो भी वह किशोरी पर मेहरबानी रखती थी। किशोरी ने नारंगी वाले भेद को जानने की कई दफे कोशिश की मगर पता न लगा। उस दिन के बाद कई दफे कुन्दन से भी मुलाकात हुई मगर पूछने पर उसने ऐसी कोई बात न कही जिससे किशोरी का शक दूर हो जाय। नित्य एक घर में रहने पर भी लाली और कुन्दन में फिर किसी तरह की दुश्मनी न दिखाई पड़ी, इस बात ने किशोरी के ताज्जुब को और भी बढ़ा रक्खा था।

इस समय किशोरी के साथ सिवाय लाली के दूसरी कोई औरत न थी। ये दोनों वीरेन्द्रसिंह के लश्कर की तरफ बड़े गौर से देख रही थीं कि यकायक किशोरी को फिर वही नारंगी वाली बात याद आई और थोड़ी देर तक सोचने के बाद वह लाली से पूछने लगी।

किशोरी०। लाली, उस दिन की बात जब मैं याद करती हूँ, उस पर विचार करती हूँ तो कुन्दन की दगाबाजी साफ झलक जाती है। कुन्दन अगर सच्ची

होती तो तुम्हें मारने के लिए न झपटती या हकीकत में अगर वह उस समय यहाँ से भाग जाने वाली होती तो उसके काम में विघ्न पड़ जाने से उसे रंज होता, सो उसके बदले में वह खुश दिखाई देती है।

लाली०। नहीं, वह एक दम से झूठी भी नहीं है।

किशोरी०। क्या उसकी बातों का कोई हिस्सा सच भी था ?

लाली०। जरूर था।

किशोरी०। वह क्या ?

लाली०। यही कि वह भी इस किले में उसी काम के लिए लाई हुई है जिस काम के लिए आप लाई गई हैं।

किशोरी०। यानी तुम्हारे राजकुमार के साथ ब्याहने के लिए।

लाली०। हाँ।

किशोरी०। अच्छा उसकी और कौन सी बात सच थी ?

लाली०। इन सब बातों को पूछ कर क्या करोगी, इस भेद के खुलने से बहुत बड़ी बुराई पैदा होगी ?

किशोरी०। नहीं नहीं मेरी प्यारी लाली, मेरी जुबान से वह बात कोई दूसरा कभी नहीं सुन सकता और मैं उम्मीद करती हूँ कि तुम मुझसे उसका हाल साफ साफ कह दोगी ! उस दिन से मुझे विश्वास हो गया है कि तुम मेरी दर्दशरीक हो, अस्तु अगर मेरा खयाल ठीक है तो तुम उसका हाल मुझे जरूर बता दो जिससे मैं हर दम होशियार रहूँ।

लाली०। अब वह तुम्हारे साथ बुराई कभी न करेगी।

किशोरी०। तो भी मेहरबानी करके........

लाली०। खैर बता देती हूँ, मगर खबरदार इसका जिक्र किसी दूसरे के सामने कभी मत करना !

किशोरी०। ऐसा मैं कदापि नहीं कर सकती और तुम खुद ही जानती हो कि इस महल में सिवाय तुम्हारे कोई भी ऐसा नहीं है कि जिससे मैं दो बातें करती होऊँ।

लाली०। अच्छा तो सिवाय उस बात के जो मैं ऊपर कह चुकी हूँ बाकी कुल बातें उसकी झूठ थीं। वह इस मकान से भागा नहीं चाहती थी, वह तो हमारे कुमार के साथ ब्याह होने की उम्मीद में खुश है, मगर जिस दिन से तुम आई हो उस दिन से वह फिक्र में पड़ गई है क्योंकि वह खूबसूरती और इज्जत में तुमको अपने से बहुत बढ़ के समझती है और हकीकत में ऐसा ही है। उसे यह

खयाल सता रहा है कि राजकुमार से पहिले किशोरी की शादी हो लेगी तब मेरी होगी और ऐसी अवस्था में किशोरी बड़ी रानी कहलावेगी और उसी के लड़के गद्दी के मालिक समझे जायेंगे, इसी से वह इस फिक्र में थी कि तुम्हें मार डाले मगर किसी ऐसे ठिकाने पर ले जाकर जिसमें उस पर कोई शक न कर सके।

किशोरी०। छिः छिः !

लाली०। मगर अब वह तुम्हारे साथ बुराई नहीं कर सकती।

किशोरी०। और वह नारंगी वाला भेद क्या है ?

लाली०। वह मैं नहीं कह सकती। मगर तुम उसी से क्यों नहीं पूछतीं, अब तो वह हरदम तुम्हारी खुशामद किया करती है।

किशोरी०। मैं उससे पूछ चुकी हूँ।

लाली०। उसने क्या कहा ?

किशोरी०। उसने कहा कि लाली ने नारंगी दिखा कर यह नसीहत की कि देखो इसमें कई फाँकें हैं, मगर एक साथ रहने और छिलके से ढँके रहने के कारण एक ही गिनी जाती हैं, कोई कह नहीं सकता कि इसमें कै फाँकें हैं, इसी तरह हमलोगों को भी रहना चाहिये।

लाली०। ठीक तो कहा।

किशोरी०। वाह वाह! तुमने तो उसी का साथ दिया, एक दम छोकरी बना कर भुलावा देने लगीं!

लाली०। (हँस कर) खैर घबराओ मत, सब मालूम हो जायगा।

इतने में सीढ़ियों पर किसी के चढ़ने की आहट मालूम हुई और दोनों उस तरफ देखने लगीं। कुन्दन ने पहुँच कर दोनों को सलाम किया और हँसी हँसी में लाली की तरफ देख कर बोली, "एक आदमी तुम्हें खोजता हुआ आया है, वह कहता है कि लाली ने मेरी किताब चुराई है, वह किताब जो किसी के खून से लिखी गई है।"

कुन्दन के इन शब्दों में न मालूम क्या भेद भरा हुआ था कि सुनते ही लाली का रंग उड़ गया। खौफ के मारे उसके तमाम बदन में कँपकँपी पैदा हो गई और मालूम होता था कि किसी ने उसके तमाम बदन का खून खैंच लिया है। थोड़ी देर तक वह अपने हवास में न रही, अन्त में हाथ जोड़ के उसने कुन्दन से कहा—

लाली०। कुन्दन, मुझसे बड़ी भूल हुई, मुझ पर रहम खा, मैं तमाम उम्र तेरी लौंडी बन कर रहूँगी!

कुन्दन०। क्या गुलामी की दस्तावेज मेरे आँचल पर लिख देगी ?

कुन्दन के इस दूसरे जुमले ने तो लाली को एकदम ही बदहवास कर दिया। अबकी दफे वह अपने को किसी तरह न सम्हाल सकी, उसका सर घूमने लगा और वह चक्कर खाकर जमीन पर गिर पड़ी।

लाली का यह हाल देख कुन्दन चुपचाप वहाँ से चली गई, मगर उसकी सूरत से मालूम होता था कि वह अपनी कार्रवाई पर खुश है या उसने लाली के ऊपर अपनी हुकूमत पैदा कर ली है। उसका मुँह सिकोड़ कर सिर हिलाना कहे देता था कि वह लाली पर कुछ और भी जुल्म किया चाहती है।

बेचारी किशोरी का अजब हाल था। नारंगी वाला भेद जानने के लिये वह पहिले ही परेशान थी, अब इस दूसरे भेद ने और भी कलेजा ऐंठ दिया। उसने बड़ी मुश्किल से अपने को सम्हाला और लाली को उसी तरह छोड़ छत के नीचे उतर आई तथा अपने कमरे से एक गिलास जल लाकर लाली के मुँह पर छींटा दिया। थोड़ी देर में लाली होश में आई और बिना कुछ बात किये रोती हुई अपने रहने की जगह में चली गई और किशोरी भी अपने कमरे की तरफ रवाना हुई।

जिस कमरे में किशोरी रहती थी वह एक खुशनुमा बाग के बीचोबीच में था। इस बाग के चारो कोनों में छोटी छोटी चार इमारतें और भी थीं, एक में वे कुल औरतें रहती थीं जो किशोरी की हिफाजत के लिये मुकर्रर की गई थीं। उन औरतों की अफसर लाली थी। दूसरे मकान में दो तीन लौंडियों के साथ लाली रहती थी। तीसरा मकान अमीराना ठाठ से रहने के लिये कुन्दन को मिला हुआ था, चौथे मकान में जो सबसे छोटा था ताला बंद था मगर बारी बारी से कई औरतें नंगी तलवार लिये उसके दर्वाजे पर पहरा दिया करती थीं। यह बाग जनाने महल में था और किसी गैर का यहाँ आना या यहाँ से किसी का निकल भागना बड़ा ही मुश्किल था!

नौवाँ बयान

आधी रात का समय है, चारो तरफ सन्नाटा छाया हुआ है, राजा बीरेन्द्रसिंह के लश्कर में पहरा देने वालों के सिवाय सभी आराम की नींद सोये हुए हैं, हाँ थोड़े से फौजी आदमियों का सोना कुछ विचित्र ही ढंग का है जिन्हें न तो जागा ही कह सकते हैं और न सोने वालों में ही गिन सकते हैं, क्योंकि ये लोग जो गिनती में एक हजार से ज्यादा न होंगे लड़ाई की पोशाक पहिरे और उम्दे हर्बे बदन पर लगाये लेटे हुए हैं। जाड़े का मौसिम है मगर कोई ऐसा कपड़ा जो बखूबी सर्दी को दूर कर सके ओढ़े हुए नहीं हैं, इसलिये तेज हवा के साथ मिली हुई सर्दी उन्हें नींद में मस्त होने नहीं देती।

राजा वीरेन्द्रसिंह के खेमे की चौकसी फतहसिंह कर रहे हैं, खुद तो दर्वाजे के आगे एक चौकी पर बैठे हुए हैं मगर मातहत के सिपाही खेमे के चारो तरफ नंगी तलवारें लिए घूम रहे हैं। कुँअर इन्द्रजीतसिंह के खेमे की चौकसी कंचनसिंह और आनन्दसिंह के खेमे की हिफाजत नाहरसिंह सिपाहियों के साथ कर रहे हैं।

जब आधी रात से ज्यादे जा चुकी एक आदमी कुँअर इन्द्रजीतसिंह के खेमे के दर्वाजे पर आया और कंचनसिंह को सलाम करके पास खड़ा हो गया। यह आदमी लम्बे कद का और मजबूत मालूम होता था, सर पर मुँड़ासा बाँधे और ऊपर से एक काश्मीरी स्याह चोगा डाले हुए था।

कंचन०। तुम कौन हो और क्यों आये हो ?

आदमी०। मैं रोहतासगढ़ किले का रहने वाला हूँ और किशोरीजी का सन्देशा लेकर आया हूँ।

कंचन०। क्या सन्देशा है ?

आदमी०। हुक्म है कि कुमार के सिवाय और किसी से न कहूँ।

कंचन०। कुमार तो इस समय सोये हुए हैं !

आदमी०। अगर आप मेरा आना जरूरी समझते हों तो मुझे खेमे के अन्दर ले चलिए या कुमार को उठा कर खबर कर दीजिये।

कंचन०। (कुछ सोच कर) बेशक ऐसी हालत में कुमार को जगाना ही पड़ेगा। कहो, तुम्हारा नाम क्या है ?

आदमी०। मैं अपना नाम नहीं बता सकता मगर कुमार मुझे अच्छी तरह जानते हैं, आप अपने साथ मुझे खेमे के अन्दर ले चलिए, आँख खुलते ही मुझे पहिचान लेंगे, आपको कुछ कहने की जरूरत न पड़ेगी !

कंचनसिंह उस आदमी को लेकर खेमे के अन्दर घुसा, आगे आगे कंचनसिंह और पीछे पीछे वह आदमी जब दोनों खेमे के मध्य में पहुँचे तो उस आदमी ने अपने कपड़े के अन्दर से एक भुजाली निकाल कर धोखे में पड़े हुए बेचारे कंचनसिंह की गरदन पर पीछे से इस जोर से मारी कि खट से सर कट कर दूर जा गिरा, बेचारे के मुँह से कोई आवाज तक न निकल पाई। इसके बाद वह भुजाली पोछ कर अपने कमर में रक्खी और नींद में मस्त सोए हुए कुँअर इन्द्रजीतसिंह के पास आकर खड़ा हो गया, कमर से एक शीशी निकाली और बहुत सम्हाल कर कुमार की नाक से लगाई। इस शीशी में तेज बेहोशी की दवा थी। कुमार के बेहोश हो जाने के बाद उसने अपने कमर से एक लोई खोली और उसमें उनकी गठरी बाँध

दर्वाजे पर परदे के पास आकर देखने लगा कि आगे की तरफ सन्नाटा है या नहीं।

इस समय पहरे वाले गश्त लगाते हुए खेमे के पीछे की तरफ निकल गये थे। आगे सन्नाटा पाकर उसने कुमार की गठरी उठाई और खेमे के बाहर हो अपने को बचाता हुआ लश्कर से निकल गया। लश्कर से कुछ दूर पर एक रथ खड़ा था जिसमें दो मजबूत मुश्की रंग के घोड़े जुते हुए थे, कोचवान तैयार बैठा था, गठरी खोल कर कुमार को उसी पर लेटा दिया और खुद भी सवार हो रथ हाँकने का हुक्म दिया।

रथ थोड़ी ही दूर गया था कि सारथी को मालूम हो गया कि पीछे कोई सवार आ रहा है। उसने घबड़ा कर अन्दर बैठे हुए आदमी से कहा कि कोई सवार बराबर रथ के साथ चला आ रहा है।

रथ और तेज किया गया मगर सवार ने पीछा न छोड़ा। सुबह होते होते रथ बहुत दूर निकल गया और ऐसी जगह पहुँचा जहाँ सड़क के दोनों तरफ घना जंगल था। तब वह सवार घोड़ा बढ़ा कर रथ के बराबर आया और बोला, "बस अब रथ रोक लो !"

सारथी०। तुम कौन हो जो तुम्हारे कहने से रथ रोका जाय ?

सवार०। हम तुम्हारे बाप हैं! बस खबरदार, अब रथ आगे न बढ़ने पावे!!

इस सवार के हाथ में एक बरछी थी। जब सारथी ने उसकी बात न सुनी तो लाचार उसने बरछी मारी। चोट खाकर सारथी जमीन पर गिर पड़ा। रथ के घोड़े भड़क कर और तेजी के साथ भागे और पहिया सारथी के ऊपर से होकर निकल गया।

सवार ने घोड़े को बरछी मारी, एक घोड़ा जख्मी होकर गिर पड़ा, दूसरा घोड़ा भी रुक गया। वह आदमी जो रथ के अन्दर बैठा हुआ था कूद कर तलवार खैंच कर सवार के सामने आ खड़ा हुआ। बात की बात में सवार ने उसे भी बेजान कर दिया और घोड़े के नीचे उतर पड़ा। यह सवार नकाबपोश था।

बरछी गाड़ कर सवार ने घोड़े को उसके साथ बाँध दिया और बड़ी होशियारी से कुँअर इन्द्रजीतसिंह को रथ से नीचे उतारा। सड़क के दोनों तरफ घना जंगल था। कुमार को उठा कर जंगल में ले गया और एक सलई के पेड़ के नीचे रख लौट आया और अपने घोड़े पर सवार हो फिर उसी जगह पहुँचने के बाद कुमार के पास बैठ उनको होश में लाने की फिक्र करने लगा।

सुबह की ठण्डी हवा लगने पर कुमार होश में आये और घबड़ा कर उठ बैठे। सवार तलवार खैंच सामने खड़ा हो गया। कुमार भी सँभल कर खड़े हो गये और बोले—

कुमार० । क्या तुम हमें यहाँ लाये हो ?

सवार० । नहीं कोई दूसरा ही आपको लिए जाता था, मैंने छुड़ाया है ।

कुमार० । (चारो तरफ देख कर) जब तुमने मुझे किसी दुश्मन के हाथ से छुड़ाया है तो स्वयं तलवार लेकर सामने क्यों खड़े हो गये ?

सवार० । आपकी बहादुरी और दिलावरी की बहुत कुछ तारीफ सुनी है, लड़ने का हौसला रखता हूँ ।

कुमार० । मेरे पास कोई हरबा न होने पर भी लड़ने को तैयार हूँ, वार करो !

सवार० । जो आदमी रथ पर सवार करके आपको लिए जाता था उसकी ढाल तलवार मैं ले आया हूँ, (हाथ का इशारा करके) वह देखिए आपके बगल में मौजूद है, उठा लीजिए और मुकाबला कीजिए । मैं खाली हाथ आप से लड़ना नहीं चाहता ।

कुँअर इन्द्रजीतसिंह ढाल तलवार उठा पैतरे के साथ उस नकाबपोश सवार के मुकाबिले में खड़े हो गए । थोड़ी देर तक लड़ाई होती रही । कुमार को मालूम हो गया कि यह दुश्मनी के तौर पर नहीं लड़ता । ललकार कर बोले, "तुम लड़ते हो या खिलवाड़ करते हो ?"

सवार० । कोई दुश्मनी तो आपसे है नहीं !

कुमार० । फिर लड़ने को तैयार क्यों हुए ?

सवार० । इसलिए कि आपके बदन में जरा फुर्ती आये, बहुत देर तक बेहोश पड़े रहने से रगों में सुस्ती आ गई होगी । अगर आपसे दुश्मनी रहती तो आपको दुश्मन के हाथ से ही क्यों बचाते ?

कुमार० । तो क्या तुम हमारे दोस्त हो ?

सवार० । मैं यह भी नहीं कह सकता ।

कुमार० । जरूर तुम हमारे दोस्त हो. अगर दुश्मन के हाथ से हमें बचाया ।

सवार० । क्या इस बारे में आपको कोई शक है कि मैंने आपकी जान बचाई ?

कुमार० । जरूर शक है । मैं कैसे विश्वास कर सकता हूँ कि तुम मुझे यहाँ लाए हो या कोई दूसरा !

सवार० । इसके लिए मैं तीन सबूत दूँगा । एक तो अगर मैं दुश्मन होता तो बेहोशी में आपको मार डालता ।

कुमार० । बेशक, और दो सबूत कौन से हैं ।

सवार० । जरा ठहरिए, मैं अभी आता हूँ तो ये दोनों सबूत भी देता हूँ।

इतना कह वह नकाबपोश सवार झट अपने घोड़े पर सवार हुआ और वहाँ पहुँचा जहाँ वह रथ था जिस पर कुमार लाए गए थे। एक घोड़ा मरा हुआ पड़ा था, दूसरा बागडोर से बँधा अलग खड़ा था, उस ऐयार की लाश भी उसी जगह पड़ी हुई थी जो कुमार को बेहोश करके उठा लाया था। पीछे की तरफ थोड़ी दूर पर सारथी की लाश थी।

वह नकाबपोश सवार अपने घोड़े से उतर पड़ा और जोर लगा कर किसी तरह उस रथ को उलट दिया जो अभी तक खड़ा था। फिर सोचने लगा कि अब क्या करना चाहिए? उसकी निगाह सारथी की लाश पर पड़ी, वहाँ गया और उस लाश को घसीट लाकर रथ के पास रख दिया और फिर कुछ सोच कर धीरे से बोला, "अब कुमार नहीं समझ सकते कि उनका लश्कर किधर है और वे किस तरफ से लाए गए, उन्हें धोखे में डाल कर अपनी और उनकी किस्मत का अन्दाजा लेना चाहिए।" इसके बाद वह सवार फिर अपने घोड़े पर चढ़ा और वहाँ पहुँचा जहाँ कुमार उसकी राह देख रहे थे।

कुमार० । तुम कहाँ गए थे?

सवार० । एक आदमी की खोज में गया था मगर वह नहीं मिला।

कुमार० । खैर तुम अपनी सचाई के लिए और सबूत देने वाले थे!

सवार घोड़े पर से उतर पड़ा और कुमार से बोला, "आप घोड़े पर सवार हो लीजिए और मेरे साथ चलिए।" मगर कुमार ने मंजूर न किया। सवार ने भी घोड़े की लगाम थामी और पैदल कुमार को लिए हुए उस रथ के पास पहुँचा और सब हाल कह कर बोला, "देखिए इसी रथ पर आप लाए गए, यही बदमाश आपको लाया है, और यह दूसरा सारथी है। मैं इत्तिफाक से आपके पास मिलने के लिए जा रहा था जो आपके काम आया। अब उस रथ का एक घोड़ा जो बचा हुआ है उसी पर आप सवार होकर लश्कर में चले जाइए!"

कुमार० । बेशक तुमने मेरी जान बचाई, इसका अहसान कभी न भूलूँगा।

सवार० । क्या इसका अहसान आप मानते हैं?

कुमार० । जरूर।

सवार० । तो आप कुछ देकर इस अहसान का बोझ अपने ऊपर से उतार दीजिए।

कुमार० । बड़ी खुशी के साथ मैं ऐसा करने को तैयार हूँ, जो कहो दूँ।

सवार० । इस समय तो मैं आपसे कुछ नहीं ले सकता, मगर आप वादा करें तो जरूरत पड़ने पर आपसे कुछ माँगूँ और मदद लूँ !

कुमार० । मैं वादा करता हूँ कि जो कुछ माँगोगे दूँगा, जब चाहे ले लो ।

सवार० । देखिए फिर बदल न जाइएगा ।

कुमार० । कभी नहीं, यह क्षत्रियों का धर्म नहीं है ।

सवार० । अच्छा अब एक सबूत और देता हूँ कि विना आपको किसी तरह का कष्ट दिये अपने घर चला जाता हूँ ।

कुमार० । तुम अपने चेहरे पर से नकाब तो हटाओ जिसमें तुमको पहिचान रक्खूँ ।

सवार० । यह बात तो जरूरी है ।

इतना कह कर सवार ने चेहरे पर से नकाव उलट दी और कुमार को हैरत में डाल दिया क्योंकि वह एक हसीन और नौजवान औरत थी ।

बेशक सिवाय किशोरी के ऐसी हसीन औरत कुमार ने कभी नहीं देखी थी । उसने अपनी तिरछी चितवन से कुमार के दिल का शिकार कर लिया और उनकी बँधी हुई टकटकी की तरफ कुछ खयाल न कर उन्हें उसी तरह छोड़ सड़क से नीचे उतर जंगल का रास्ता लिया ।

उसके चले जाने के बाद थोड़ी देर तक तो कुमार उसी तरफ देखते रहे जिधर वह घोड़े पर सवार होकर गई थी, इसके बाद रथ और सड़क की तरफ देखा फिर उस घोड़े के पास गये जो रथ के दोनों घोड़ों में से जीता मौजूद था । उसकी पीठ पर जो कुछ असबाव था खोल दिया सिर्फ लगाम रहने दी और नंगी पीठ पर सवार हो उसी तरफ का रास्ता लिया जिधर वह नकाबपोश औरत उनके देखते देखते चली गई थी ।

भूखे प्यासे दोपहर तक घोड़ा दौड़ाते चले गये मगर उस औरत का पता न लगा कि किधर गई और क्या हुई । भूख और प्यास से परेशान हो गये और इसी फिक्र में पड़े कि कहीं ठण्ढा पानी मिले तो प्यास बुझावें मगर इस जंगल में कहीं किसी सोते या झरने का पता न लगा, लाचार वह आगे बढ़ते ही गये और शाम होते तक एक ऐसे मैदान में पहुँचे जिसके चारो तरफ तो घना जंगल था मगर बीच में सुन्दर साफ जल से लहराता हुआ एक अनूठा तालाब था ।

कुँअर इन्द्रजीतसिंह उस विचित्र तालाब को देख बड़े ही विस्मित हुए और एक टक उसकी तरफ देखने लगे । इस तालाब के बीचोबीच एक खूबसूरत छोटा

सा मकान वना हुआ था जिसके चारो तरफ सहन था और चारो कोनों में चार औरतें तीर कमान चढ़ाये मुस्तैद थीं, मालूम होता था कि ये अभी तीर छोड़ा ही चाहती हैं। कमरे की छत पर एक छोटे से चवूतरे पर भी एक औरत दिखाई पड़ी जिसका सिर नीचे और पैर आसमान की तरफ था। वड़ी देर तक देखने वाद मालूम हुआ कि ये औरतें जानदार नहीं हैं वल्कि बनावटी हैं जिन्हें पुतली कहना मुनासिव है। एक छोटी सी डोंगी भी उसी चवूतरे के साथ रस्सी के सहारे बँधी हुई थी जिससे मालूम होता था कि इस मकान में जरूर कोई रहता है जिसके आने जाने के लिए यह डोंगी मौजूद है।

कुमार घोड़े की लगाम एक पत्थर से अटका कर तालाव के नीचे उतरे, हाथ मुँह धो जल पिया और कुछ सुस्ताने वाद फिर उसी मकान की तरफ देखने लगे क्योंकि कुमार का इरादा हुआ कि तैर कर उस मकान तक जायँ और देखें कि उसमें क्या है।

सूर्य अस्त होते होते एक औरत उस मकान के अन्दर से निकली और सहन पर खड़ी हो कुमार की तरफ देखने लगी, इसके वाद हाथ के इशारे से कहा कि यहाँ से चले जाओ। कुमार ने उस औरत को साफ पहिचान लिया कि यह वही नकाबपोश सवार है जिसने कुमार को रथ पर ले जाते हुए ऐयार के हाथ से बचाया था।

दसवाँ बयान

कुछ रात जा चुकी है। रोहतासगढ़ किले के अन्दर अपने मकान में बैठी हुई बेचारी किशोरी न मालूम किस ध्यान में डूबी हुई है और क्या सोच रही है। कोई दूसरी औरत उसके पास नहीं है। आखिर किसी के पैर की आहट पा अपने ख्याल में डूबी हुई किशोरी ने सिर उठाया और दर्वाजे की तरफ देखने लगी। लाली ने पहुँच कर सलाम किया और कहा, "माफ कीजियेगा, मैं विना हुक्म के इस कमरे में आई हूँ।"

किशोरी०। मैंने लौंडियों को हुक्म दे रक्खा है कि इस कमरे में कोई न आने पावे मगर साथ ही इसके यह भी कह दिया था कि लाली आने का इरादा करे तो उसे मत रोकना।

लाली०। वेशक आपने मेरे ऊपर बड़ी मेहरबानी की।

किशोरी०। मगर न मालूम तुम मेरे ऊपर दया क्यों नहीं करतीं। आओ बैठो।

लाली०। (वैठ कर) आप ऐसा न कहें, मैं जी जान से आपके काम आने को तैयार हूँ।

किशोरी० । ये सब बनावटी बातें करती हो । अगर ऐसा ही होता तो अपना और कुन्दन वाला भेद मुझसे क्यों छिपातीं ? नारंगी वाले भेद से तो मैं पहिले ही हैरान हो रही थी मगर जब से कुन्दन ने अपनी बातों का असर तुम पर डाला है तब से मेरी घबराहट और भी बढ़ गई है ।

लाली० । बेशक आपको बहुत कुछ ताज्जुब हुआ होगा । मैं कसम खा कर कह सकती हूँ कि कुन्दन ने उस समय जो मुझे कहा था या कुन्दन की जिन बातों को सुन कर मैं डर गई थी वह उसे पहिले से मालूम न थीं, अगर मालूम होती तो जिस समय मैंने नारंगी दिखा कर उसे धमकाया था उसी समय वह मुझसे बदला ले लेती। अब मुझे विश्वास हो गया कि इस मकान में कोई बाहर का आदमी जरूर आया है जिसने हमारे भेद से कुन्दन को होशियार कर दिया। अफसोस, अब मेरी जान मुफ्त में जाया चाहती है क्योंकि कुन्दन बड़ी ही बेरहम और बदकार औरत है।

किशोरी० । तुम्हारी बातें मेरी घबराहट को बढ़ा रही हैं, कृपा करके कुछ कहो तो सही क्या भेद है ?

लाली० । मैं बिल्कुल हाल आपसे कहूँगी और आपकी चिन्ता दूर करूँगी मगर आज रात भर आप मुझे और माफ कीजिये और इस समय एक काम में मेरी मदद कीजिए ।

किशोरी० । वह क्या ?

लाली० । यह तो मुझे विश्वास हो ही गया कि अब मेरी जान किसी तरह नहीं बच सकती, तो भी अपने बचने के लिए मैं कोई न कोई उद्योग जरूर करूँगी । मैं चाहती हूँ कि अपने मरने के पहिले ही कुन्दन को इस दुनिया से उठा दूँ मगर एक ऐसी अंडस में पड़ गई हूँ कि ऐसा करने का इरादा भी नहीं कर सकती, हाँ कुन्दन का कुछ विशेष हाल जानना चाहती हूँ और इसके बाद बाग के उस कोने वाले मकान में घुसा चाहती हूँ जिसमें हरदम ताला बन्द रहता है और दर्वाजे पर नंगी तलवार लिए दो औरतें बारी बारी से पहरा दिया करती हैं । इन्हीं दोनों कामों में मैं आपसे मदद लिया चाहती हूँ ।

किशोरी० । उस मकान में क्या है तुम्हें कुछ मालूम है ?

लाली० । हाँ कुछ मालूम है और बाकी भेद जानना चाहती हूँ । मुझे विश्वास है कि अगर आप भी मेरे साथ उस मकान के अन्दर चलेंगी और हम दोनों आदमी किसी तरह बच कर निकल आवेंगे तो फिर आपको भी इस कैद से छुट्टी मिल जायगी, मगर उसके अन्दर जाना और बच कर निकल आना यही मुश्किल है ।

किशोरी० । यह और ताज्जुब की बात तुमने कही, खैर ऐसी जिन्दगी से मैं मरना उत्तम समझती हूँ। जो कुछ तुम्हें करना हो करो और जिस तरह की मदद मुझसे लिया चाहती हो लो !

लाली० । (एक छोटी सी तस्वीर कमर से निकाल और किशोरी के हाथ में दे कर) थोड़ी देर बाद मामूली तौर पर कुन्दन जरूर आपके पास आवेगी, उस समय यह तस्वीर ऐसे ढंग से उसे दिखाइए जिसमें उसे यह न मालूम हो कि आप जान बूझ कर दिखा रही हैं, फिर उसके चेहरे की जैसी रंगत हो या जो कुछ वह कहे मुझसे कहिए। इस समय तो यही एक काम है।

किशोरी० । यह काम मैं बखूबी कर सकूँगी ।

किशोरी ने लाली के हाथ से तस्वीर लेकर पहिले खुद देखी। इस तस्वीर में एक खोह की हालत दिखाई गई थी जिसमें एक आदमी उलटा लटक रहा था और एक औरत हाथ में छूरा लिए उसके बदन में घाव लगा रही थी, पास में एक कमसिन औरत खड़ी थी और कोने की तरफ कब्र खोदी जा रही थी।

पाठक, यह तस्वीर ठीक उस समय की थी जिसका हाल हम पहिले भाग के आठवें बयान में लिख आये हैं, मगर वह हाल किशोरी को अभी तक मालूम नहीं हुआ था। किशोरी उस तस्वीर को देख कर बहुत ही हैरान हुई और उसके बारे में लाली से कुछ पूछना चाहा मगर लाली तस्वीर देने के बाद वहाँ न ठहरी, तुरत बाहर चली गई।

लाली के जाने के थोड़ी ही देर बाद कुन्दन आ पहुँची मगर उस समय किशोरी उस तस्वीर के देखने में अपने को यहाँ तक भूली हुई थी कि कुन्दन का आना उसे तब मालूम हुआ जब उसने पास आकर कुछ देर तक खड़े रह कर पूछा, "कहो बहिन क्या देख रही हो ?"

किशोरी० । (चौंक कर) हैं ! तुम यहाँ कब से खड़ी हो ?

कुन्दन० । कुछ देर से। इस तस्वीर में कौन सी ऐसी बात है जिसे तुम बड़े गौर से देख रही हो ?

किशोरी० । तुमने इस तस्वीर को देखा है ?

कुन्दन० । सैकड़ों दफे। मैं समझती हूँ कि यह तस्वीर तुम्हें लाली ने खास मुझे दिखाने के लिए दी है। आप लाली से कह दीजिएगा कि मैं इस तस्वीर को देख कर नहीं डर सकती। मैं बिना बदला लिए कभी न छोड़ूँगी क्योंकि जिस दिन पहिले पहिल रात को आपसे मुलाकात हुई थी उस दिन यहाँ से मेरे निकल

जाने का सामान बिल्कुल ठीक था इसी लाली ने मेरे उद्योग को मिट्टी कर दिया और मेरे मददगारों को भी फँसा दिया, खैर देखा जायगा। मैं आपके मिलने से प्रसन्न थी मगर अफसोस उसने झूठी बात गढ़ कर आपका दिल भी मेरी तरफ से फेर दिया। तो भी मैं आपके साथ बुराई न करूँगी और जहाँ तक हो सकेगा उसकी चालबाजियों से आपको होशियार कर दूँगी, मानने न मानने का आपको अख्तियार है।

किशोरी०। मेरी समझ में कुछ नहीं आता कि क्या हो रहा है। हे ईश्वर, मैंने क्या अपराध किया था कि चारो तरफ से संकट ने आकर घेर लिया। हाय, मैं बिल्कुल नहीं जान सकती कि यहाँ कौन मेरा दोस्त है और कौन दुश्मन?

इतना कह किशोरी रोने लगी, उसने अपने को बहुत सँभालना चाहा मगर न हो सका, हिचकियों ने उसका गला दबा दिया। कुन्दन किशोरी के पास बैठ गई और उसका हाथ अपने दोनों हाथों में दबा कर बोली—

"प्यारी किशोरी, यह समझना तो बहुत मुश्किल है कि यहाँ आपका दोस्त कौन है। बात बना कर दोस्ती साबित करना भूल है तिसमें दुश्मन के घर में, हाँ यह मैं जरूर साबित कर दूँगी कि लाली आपसे दुश्मनी रखती है। लाली ने आपसे जरूर कहा होगा कि आपकी तरह मैं भी कुमार के साथ ब्याह करने के लिये लाई गई हूँ मगर नहीं, यह बात बिल्कुल झूठ है। असल तो यह है कि लाली मुझको बिल्कुल नहीं जानती और न मैं जानती हूँ कि लाली कौन है? मगर आज कल लाली जिस फिक्र में पड़ी है उससे मैं समझती हूँ कि वह आपके साथ दुश्मनी कर रही है। ताज्जुब नहीं कि वह आपको एक दिन उस मकान में ले जाय जिसका ताला बराबर बन्द रहता है और जिसके दरवाजे पर नंगी तलवार का पहरा पड़ा करता है क्योंकि आज कल वह वहाँ पहरा देने वाली औरतों से दोस्ती बढ़ा रही है और ताला खोलने के लिए एक ताली तैयार कर रही है। उसकी दुश्मनी का अन्त उसी दिन होगा जिस दिन वह आपको उस मकान के अन्दर कर देगी, फिर आपकी जान किसी तरह नहीं बच सकती। उसका ऐसा करना केवल आपही के साथ दुश्मनी करना नहीं बल्कि यहाँ के राजा और इस राज्य के साथ भी दुश्मनी करना है। बेशक वह आपको उस मकान के अन्दर भेजेगी और आप उस चौखट के अन्दर पैर भी न रक्खेगी।

किशोरी०। उस मकान के अन्दर क्या है?

कुन्दन०। सो मैं नहीं जानती।

किशोरी०। यहाँ का कोई आदमी जानता है?

कुन्दन०। कोई नहीं, बल्कि जहाँ तक मैं खयाल करती हूँ यहाँ का राजा भी उसके अन्दर का हाल नहीं जानता।

किशोरी०। क्या मकान कभी खोला नहीं जाता।

कुन्दन०। मेरे सामने तो कभी खोला नहीं गया।

किशोरी०। फिर कैसे कह सकती हो कि उसके अन्दर जाकर कोई बच नहीं सकता?

कुन्दन०। इसका जानना तो कोई मुश्किल नहीं है। पहिले तो यही सोचिए कि वहाँ हरदम ताला बन्द रहता है, अगर कोई चोरी से भीतर गया भी तो निकलने का मौका मुश्किल से मिलेगा, फिर हम लोगों को उसके अन्दर जाकर फायदा ही क्या होगा? आपने देखा होगा उस दरवाजे के ऊपर लिखा है कि—'इसके अन्दर जो जायगा उसका सिर आपसे आप कट कर गिर पड़ेगा'! जो हो मगर यह सब होते हुए भी लाली आपको उस मकान के अन्दर जरूर भेजना चाहेगी।

किशोरी०। खैर, इस तस्वीर का हाल अगर तुम जानती हो तो कहो।

कुन्दन०। कहती हूँ सुनो—जब कुँअर इन्द्रजीतसिंह को धोखा देकर माधवी ले गई तो उनके छोटे भाई आनन्दसिंह उनकी खोज में निकले। एक मुसलमानी ने उन्हें धोखा देकर गिरफ्तार कर लिया और अपने साथ शादी करनी चाही मगर उन्होंने मंजूर न किया और तीन दिन भूखे प्यासे उसके यहाँ कैद रह गये। आखिर उन्हीं के ऐयार देवीसिंह ने उस कैद से उनको छुड़ाया मगर उन्हें अभी तक मालूम नहीं है कि उन्हें देवीसिंह ने छुड़ाया था।

इसके बाद उस तस्वीर के बारे में जो कुछ आनन्दसिंह ने देखा सुना था कुन्दन ने वहाँ तक कह सुनाया जब आनन्दसिंह बेहोश करके उस खोह के बाहर निकाल दिये गये बल्कि घर तक पहुँचा दिये गये।

किशोरी०। यह सब हाल तुम्हें कैसे मालूम हुआ?

कुन्दन०। मुझसे देवीसिंह ने कहा था।

किशोरी०। देवीसिंह से तुमसे क्या सम्बन्ध?

कुन्दन०। जान पहिचान है। आपने इस तस्वीर के बारे में लाली से कुछ सुना है या नहीं?

किशोरी०। कुछ नहीं।

कुन्दन०। पूछिये देखें क्या कहती है, अच्छा अब मैं जाती हूँ, फिर मिलूँगी?

किशोरी०। जरा ठहरो तो।

कुन्दन०। अब मत रोको, बेमौका हो जायगा। मैं फिर बहुत जल्द मिलूँगी।

कुन्दन चली गई मगर किशोरी पहिले से भी ज्यादे सोच में पड़ गई। कभी तो उसका दिल लाली की तरफ झुकता और उसको अपने दुःख का साथी समझती, कभी सोचते सोचते लाली की बातों में शक पड़ जाने पर कुन्दन ही को सच्ची समझती। उसका दिल दोनों तरफ के खिंचाव में पड़ कर बेवस हो रहा था, वह ठीक निश्चय नहीं कर सकती थी कि अपना हमदर्द लाली को बनावे या कुन्दन को क्योंकि लाली और कुन्दन दोनों ही अपने असली भेदों को किशोरी से छिपा रही थीं।

उस दिन लाली ने फिर मिल कर किशोरी से पूछा, "उस तस्वीर को देख कर कुन्दन की क्या दशा हुई?" जिसके जवाब में किशोरी ने कहा, "कुन्दन ने उस तस्वीर की तरफ ध्यान भी न दिया और मेरे खुद पूछने पर कहा कि मैं नहीं जानती यह तस्वीर कैसी है और न इसे कभी मैंने पहिले देखा ही था।"

यह सुन कर लाली का चेहरा कुछ उदास हो गया और वह किशोरी के पास से उठ कर चली गई। किशोरी ने कहा, "भला तुम ही बताती जाओ कि यह तस्वीर कैसी है?" मगर लाली ने इसका कुछ जवाब न दिया और चली गई।

इस बात को कई दिन बीत गये। लश्कर से कुंअर इन्द्रजीतसिंह के गायब होने का हाल भी चारो तरफ फैल गया जिसे सुन धीरे धीरे किशोरी की उदासी और भी ज्यादे बढ़ गई।

एक दिन रात को अपनी पलंगड़ी पर लेटी हुई किशोरी तरह तरह की बातें सोच रही थी, लाली और कुन्दन के बारे में भी गौर कर रही थी। यकायक वह उठ बैठी और धीरे से आप ही आप बोली, "अब मुझे खुद कुछ करना चाहिए, इस तरह पड़े रहने से काम नहीं चलता। मगर अफसोस, मेरे पास कोई हर्बा भी तो नहीं है।"

किशोरी पलंग के नीचे उतरी और कमरे में इधर उधर टहलने लगी, आखिर कमरे के बाहर निकली। देखा कि पहरेदार लौंडियां गहरी नींद में सो रही हैं। आधी रात से ज्यादे जा चुकी थी, चारो तरफ अंधेरा छाया हुआ था। धीरे धीरे क़दम बढ़ाती हुई कुन्दन के मकान की तरफ बढ़ी। जब पास पहुँची तो देखा कि एक आदमी काले कपड़े पहने उसी तरफ लपका हुआ जा रहा है बल्कि उस कमरे के दालान में पहुँच गया जिसमें कुन्दन रहती है। किशोरी एक पेड़ की आड़ में खड़ी हो गई, शायद इसलिए कि वह आदमी लौट कर चला जाय तो आगे बढ़ूं।

थोड़ी देर बाद कुन्दन भी उसी आदमी के साथ बाहर निकली और धीरे धीरे बाग के उस तरफ रवाना हुई जिधर घने दरख्त लगे हुए थे। जब दोनों

उस पेड़ के पास पहुँचे जिसकी आड़ में किशोरी छिपी हुई थी तब वह आदमी रुका और धीरे से बोला—

आदमी०। अब तुम जाओ, ज्यादे दूर तक पहुँचाने की कोई जरूरत नहीं।

कुन्दन०। फिर भी मैं कहे देती हूँ कि अब पाँच सात दिन 'नारंगी' की कोई जरूरत नहीं।

आदमी०। खैर, मगर किशोरी पर दया बनाये रहना!

कुन्दन०। इसके कहने की कोई जरूरत नहीं।

वह आदमी पेड़ों के झुण्ड की तरफ चला गया और कुन्दन लौट कर अपने कमरे में चली गई। किशोरी भी फिर वहाँ न ठहरी और अपने कमरे में आकर पलंग पर लेट रही क्योंकि उन दोनों की बातों ने जिसे किशोरी ने अच्छी तरह सुना था उसे परेशान कर दिया और वह तरह तरह की बातें सोचने लगी, मगर अपने दिल का हाल किससे कहे? इस लायक वहाँ कोई भी न था।

पहिले तो किशोरी बनिस्वत कुन्दन के लाली को सच्ची और नेक समझती थी मगर अब वह बात न रही। किशोरी उस आदमी के मुँह से निकली हुई उस बात को फिर याद करने लगी कि 'किशोरी पर दया बनाये रहना'!

वह आदमी कौन था? इस बाग में आना और यहाँ से निकल कर जाना तो बड़ा ही मुश्किल है, फिर वह क्योंकर आया! उस आदमी की आवाज पहिचानी हुई सी मालूम होती है, बेशक मैं उससे कई दफे बातें कर चुकी हूँ मगर कब और कहाँ, सो याद नहीं पड़ता और न उसकी सूरत का ध्यान बँधता है। कुंदन ने कहा था, "पाँच सात दिन तक नारंगी की कोई जरूरत नहीं।" इससे मालूम होता है कि नारंगी वाली बात कुछ उस आदमी से सम्बन्ध रखती है और लाली उस भेद को जानती है। इस समय तो यह निश्चय हो गया कि कुन्दन मेरी खैरख्वाह है और लाली मुझसे दुश्मनी किया चाहती है मगर इसका भी विश्वास नहीं होता। कुछ भेद खुला मगर इससे तो और भी उलझन हो गई। खैर कोशिश करूँगी तो कुछ और भी पता लगेगा मगर अबकी लाली का हाल मालूम करना चाहिये।

थोड़ी देर तक इन सब बातों को किशोरी सोचती रही, आखिर फिर अपने पलंग से उठी और कमरे के बाहर आई। उसकी हिफाजत करने वाली लौंडियाँ उसी तरह गहरी नींद में सो रही थीं। जरा रुक कर बाग के उस कोने की तरफ बढ़ी जिधर लाली का मकान था। पेड़ों की आड़ में अपने को छिपाती और रुक रुक कर चारो तरफ की आहट लेती हुई चली जाती थी, जब लाली के मकान के

पास पहुँची तो धीरे धीरे किसी के बातचीत की आहट पा एक अंगूर की झाड़ी में रुक रही और कान लगा कर सुनने लगी, केवल इतना ही सुना, "आप बेफिक्र रहिये, जब तक मैं जीती हूँ कुन्दन किशोरी का कुछ बिगाड़ नहीं सकती और न उसे कोई दूसरा ले जा सकता है। किशोरी इन्द्रजीतसिंह की है और बेशक उन तक पहुँचाई जायगी।"

किशोरी ने पहिचान लिया कि यह लाली की आवाज है। लाली ने यह बात बहुत धीरे से कही थी मगर किशोरी बहुत पास पहुँच चुकी थी इसलिए बखूबी सुन कर पहिचान सकी कि लाली की आवाज है मगर यह न मालूम हुआ कि दूसरा आदमी कौन है। लाली अपने कमरे के पास ही थी, बात कह कर तुरन्त दो चार सीढ़ियाँ चढ़ अपने कमरे में घुस गई और उसी जगह से एक आदमी निकल कर पेड़ों की आड़ में छिपता हुआ बाग के पिछली तरफ जिधर दरवाजे में बराबर ताला बन्द रहने वाला मकान था चला गया, मगर उसी समय जोर जोर से "चोर चोर" की आवाज आई। किशोरी ने इस आवाज को भी पहिचान कर मालूम कर लिया कि कुन्दन है जो उस आदमी को फँसाया चाहती है। किशोरी फौरन लपकती हुई अपने कमरे में चली आई और चोर चोर की आवाज बढ़ती ही गई।

किशोरी अपने कमरे में आकर पलंग पर लेट रही और उन बातों पर गौर करने लगी जो अभी दो तीन घण्टे के हेर फेर में देख सुन चुकी थी। वह मन ही मन में कहने लगी, "कुन्दन की तरफ भी गई और लाली की तरफ भी गई जिससे मालूम हो गया कि वे दोनों ही एक एक आदमी से जान पहिचान रखती हैं जो बहुत छिप कर इस मकान में आता है। कुन्दन के साथ जो आदमी मिलने आया था उसकी जुबानी जो कुछ मैंने सुना उससे जाना जाता था कि कुन्दन मुझसे दुश्मनी नहीं रखती बल्कि मेहरबानी का बर्ताव किया चाहती है, इसके बाद जब लाली की तरफ गई तो वहाँ की बातचीत से मालूम हुआ कि लाली सच्चे दिल से मेरी मददगार है और कुन्दन शायद दुश्मनी की निगाह से मुझे देखती है। हाँ ठीक है, अब समझी, बेशक ऐसा ही होगा। नहीं नहीं, मुझे कुन्दन की बातों पर विश्वास न करना चाहिये! अच्छा देखा जायगा। कुन्दन ने बेमौके चोर चोर का शोर मचाया, कहीं ऐसा न हो कि बेचारी लाली पर कोई आफत आवे।"

इन्हीं सब बातों को सोचती हुई किशोरी ने बची हुई थोड़ी रात जाग कर ही बिता दी और सुबह की सुफेदी फैलने के साथ ही अपने कमरे के बाहर निकली क्योंकि रात की बातों का पता लगाने के लिए उसका जी बेचैन हो रहा था।

किशोरी जैसे ही दालान में पहुँची सामने से कुन्दन को आते हुए देखा। कुन्दन ने पास आकर सलाम किया और कहा, "रात का कुछ हाल मालूम है या नहीं?"

किशोरी०। सब कुछ मालूम है! तुम्हीं ने तो गुल मचाया था!

कुन्दन०। (ताज्जुब से) यह कैसी बात कहती हो ?

किशोरी०। तुम्हारी आवाज साफ मालूम होती थी।

कुन्दन०। मैं तो चोर चोर का गुल सुन कर वहाँ पहुँची थी और उन्हीं की तरह खुद भी चिल्लाने लगी थी।

किशोरी०। (हँस कर) शायद ऐसा ही हो।

कुन्दन०। क्या इसमें आपको को कोई शक है ?

किशोरी०। बेशक। लो यह लाली भी तो आ रही है।

कुन्दन०। (कुछ घबड़ा कर) जो कुछ किया उन्होंने किया।

इतने में लाली भी आकर खड़ी हो गई और कुन्दन की तरफ देख कर बोली, "आपका वार तो खाली गया।"

कुन्दन० (घबड़ा कर) मैंने क्या........

लाली०। बस रहने दीजिये, आपने मेरी कार्रवाई कम देखी होगी मगर दो घण्टे पहिले मैं आपकी/पूरी कार्रवाई मालूम कर चुकी थी।

कुन्दन०। (बदहवास होकर) आप तो कसम खा....

लाली०। हाँ हाँ, मुझे खूब याद है, मैं उसे नहीं भूलती।

किशोरी०। जो हो, मुझे अब पाँच सात दिन तक नारंगी की कोई जरूरत नहीं।

किशोरी की इस बात ने लाली और कुन्दन दोनों को चौंका दिया। लाली के चेहरे पर कुछ हँसी थी मगर कुन्दन के चेहरे का रंग बिल्कुल ही उड़ गया था क्योंकि उसे विश्वास हो गया कि किशोरी ने भी रात की कुल बातें सुन लीं। कुन्दन की घबराहट और परेशानी यहाँ तक बढ़ गई कि किसी तरह अपने को सम्हाल न सकी और बिना कुछ कहे वहाँ से उठ कर अपने कमरे की तरफ चली गई। अब लाली और किशोरी में बातचीत होने लगी—

लाली०। मालूम होता है तुमने भी रात भर ऐयारी की!

किशोरी०। हाँ, मैं कुन्दन की तरफ छिप कर गई थी।

लाली०। तब तो तुम्हें मालूम हो गया होगा कि कुन्दन तुम्हें धोखा दिया चाहती है।

किशोरी०। पहिले तो यह साफ नहीं जान पड़ता था मगर जब तुम्हारी

तरफ गई और तुमको किसी से बातें करते सुना तो विश्वास हो गया कि इस महल में केवल तुम्हीं से मैं कुछ भलाई की उम्मीद कर सकती हूँ।

लाली० । ठीक है, कुन्दन की कुल बातें तुमने नहीं सुनीं, क्या मुझसे भी.... (रुक कर) खैर जाने दीजिए। हाँ, अब वह समय आ गया कि तुम और हम दोनों यहां से निकल जांय। क्या तुम मुझ पर विश्वास रखती हो ?

किशोरी० । बेशक, तुमसे मुझे नेकी की उम्मीद है, मगर कुन्दन बहुत बिगड़ी हुई मालूम होती है।

लाली० । वह मेरा कुछ नहीं कर सकती।

किशोरी० । अगर तुम्हारा हाल किसी से कह दे तो ?

लाली० ! अपनी जुबान से वह नहीं कह सकती, क्योंकि वह मेरे पंजे में उतना ही फँसी हुई है जितना मैं उसके पंजे में।

किशोरी० । अफसोस ! इतनी मेहरबानी रहने पर भी तुम वह भेद मुझसे नहीं कहतीं ?

लाली० । घबड़ाओ मत, धीरे धीरे सब कुछ मालूम हो जायगा।

इसके बाद लाली ने दबी जुबान से किशोरी को कुछ समझाया और दो घंटे में फिर मिलने का वादा करके वहाँ से चली गई।

ग्यारहवाँ बयान

हम ऊपर कई दफे लिख आये हैं कि उस बाग में जिसमें किशोरी रहती थी एक तरफ एक ऐसी इमारत है जिसके दर्वाजे पर बराबर ताला बन्द रहता है और नंगी तलवार का पहरा पड़ा करता है।

आधी रात का समय है। चारो तरफ अँधेरा छाया हुआ है। तेज हवा चलने के कारण बड़े बड़े पेड़ों के पत्ते खड़खड़ा कर सन्नाटे को तोड़ रहे हैं। इसी समय हाथ में कमन्द लिए हुए लाली अपने को हर तरफ से बचाती और चारो तरफ गौर से देखती हुई उसी मकान के पिछवाड़े की तरफ जा रही है। जब दीवार के पास पहुँची कमन्द लगा कर छत के ऊपर चढ़ गई। छत के ऊपर चारो तरफ तीन,तीन हाथ ऊँची दीवार थी। लाली ने बड़ी होशियारी से छत फोड़ कर एक इतना बड़ा सूराख किया जिसमें आदमी बखूबी उतर जा सके और खुद कमन्द के सहारे उसके अन्दर उतर गई।

दो घण्टे के बाद एक छोटी सी सन्दूकड़ी लिए हुए लाली निकली और कमन्द के सहारे छत के नीचे उतर एक तरफ को रवाना हुई। पूरब तरफ

वाली बारहदरी में आई जहाँ से महल में जाने का रास्ता था, फाटक के अन्दर घुस कर महल में पहुँची। यह महल बहुत बड़ा और आलीशान था, दो सौ लौंडियों और सखियों के साथ महारानी साहिबा इसी में रहा करती थीं। कई दालानों और दर्वाजों को पार करती हुई लाली ने एक कोठरी के दर्वाजे पर पहुँच कर धीरे से कुण्डा खटखटाया।

एक बुढ़िया ने उठ कर किवाड़ खोला और लाली को अन्दर करके फिर बन्द कर लिया। उस बुढ़िया की उम्र लगभग अस्सी वर्ष के होगी, नेकी और रहमदिली उसके चेहरे पर झलक रही थी। सिर्फ छोटी सी कोठरी, थोड़े से जरूरी सामान और मामूली चारपाई पर ध्यान देने से मालूम होता था कि बुढ़िया लाचारी से अपनी जिन्दगी बिता रही है। लाली ने दोनों पैर छू कर प्रणाम किया और उस बुढ़िया ने पीठ पर हाथ फेर कर बैठने के लिए कहा।

लाली०। (सन्दूक आगे रख कर) यही है ?

बुढ़िया०। क्या ले आई ? हाँ ठीक है, बेशक यही है, अब आगे जो कुछ कीजियो बहुत सम्हाल कर! ऐसा न हो कि इस आखीरी समय में मुझे कलंक लगे।

लाली०। जहाँ तक हो सकेगा बड़ी होशियारी से काम करूँगी, आप आशीर्वाद दीजिए कि मेरा उद्योग सफल हो।

बुढ़िया०। ईश्वर तुझे इस नेकी का बदला दे, वहाँ कुछ डर तो नहीं मालूम हुआ ?

लाली०। दिल कड़ा करके इसे ले आई, नहीं तो मैंने जो कुछ देखा जीते जी भूलने योग्य नहीं, अभी तो फिर एक दफे देखना नसीब होगा। ओफ! अभी तक कलेजा काँपता है।

बुढ़िया०। (मुस्कुरा कर) बेशक वहाँ ताज्जुब के सामान इकट्ठे हैं मगर डरने की कोई बात नहीं, जा ईश्वर तेरी मदद करे।

लाली ने उस सन्दूकड़ी को उठा लिया और अपने खास घर में आ सन्दूकड़ी को हिफाजत से रख पलंग पर जा लेट रही। सवेरे उठ कर किशोरी के कमरे में गई।

किशोरी०। मुझे रात भर तुम्हारा खयाल बना रहा और घड़ी घड़ी उठ कर बाहर जाती थी कि कहीं से गुल शोर की आवाज तो नहीं आती।

लाली०। ईश्वर की दया से मेरे काम में किसी तरह का विघ्न नहीं पड़ा।

किशोरी०। आओ मेरे पास बैठो, अब तो तुम्हें उम्मीद हो गई होगी कि मेरी जान बच जायगी और मैं यहाँ से जा सकूँगी।

लाली० । बेशक अब मुझे पूरी उम्मीद हो गई ।

किशोरी० । सन्दूकड़ी मिली ?

लाली० । हाँ, यह सोच कर कि दिन को किसी तरह मौका न मिलेगा उसी समय मैं बूढ़ी दादी को भी दिखा आई, उन्होंने पहिचान कर कहा कि बेशक यही सन्दूकड़ी है । उसी रंग की वहाँ कई सन्दूकड़ियाँ थीं मगर वह खास निशान जो बूढ़ी दादी ने बताया था देख कर मैं उसी एक को ले आई !

किशोरी० । मैं भी उस सन्दूकड़ी को देखा चाहती हूँ ।

लाली० । बेशक मैं तुम्हें अपने यहाँ ले चल कर वह सन्दूकड़ी दिखा सकती हूँ मगर उसके देखने से तुम्हें किसी तरह का फायदा नहीं होगा। बल्कि तुम्हारे वहाँ चलने से कुन्दन को खुटका हो जायगा और वह सोचेगी कि किशोरी लाली के यहाँ क्यों गई । उस सन्दूकड़ी में भी कोई ऐसी बात नहीं है जो देखने लायक हो, उसे मामूली एक छोटा सा डिब्बा समझना चाहिए जिसमें कहीं ताली लगाने की जगह नहीं है और मजबूत भी इतनी है कि किसी तरह टूट नहीं सकती ।

किशोरी० । फिर वह क्योंकर खुल सकेगी और उसके अन्दर से वह चाभी क्योंकर निकलेगी जिसकी हम लोगों को जरूरत है ?

लाली० । रेती से रेत कर उसमें सूराख किया जायगा ।

किशोरी० । देर लगेगी !

लाली० । हाँ, दो दिन में यह काम होगा क्योंकि सिवाय रात के दिन को मौका नहीं मिल सकता ।

किशोरी० । मुझे तो एक घड़ी सौ सौ वर्ष के समान बीतती है ।

लाली० । खैर जहाँ इतने दिन बीते वहाँ दो दिन और सही ।

थोड़ी देर तक बातचीत होती रही । इसके बाद लाली उठ कर अपने मकान में चली गई और मामूली कामों की फिक्र में लगी ।

इसके तीसरे दिन आधी रात के समय लाली अपने मकान से बाहर निकली और किशोरी के मकान में आई । वे लौंडियाँ जो किशोरी के यहाँ पहरे पर मुकर्रर थीं गहरी नींद में पड़ी खुर्राटे ले रही थीं मगर किशोरी की आँखों में नींद का नाम निशान नहीं, वह पलंग पर लेटी दर्वाजे की तरफ देख रही थी । उसी समय हाथ में एक छोटी सी गठरी लिए लाली ने कमरे के अन्दर पैर रक्खा जिसे देखते ही किशोरी उठ खड़ी हुई, बड़ी मुहब्बत के साथ हाथ पकड़ लाली को अपने पास बैठाया ।

किशोरी० । ओफ ! ये दो दिन बड़ी कठिनता से बीते, दिन रात डर लगा

ही रहता था।

लाली०। क्यों ?

किशोरी०। इसलिए कि कोई उस छत पर जाकर देख न ले कि किसी ने सेंध लगाई है।

लाली०। ऊंह, कौन उस पर जाता है और कौन देखता है। लो अब देर करना मुनासिब नहीं।

किशोरी०। मैं तैयार हूँ, कुछ लेने की जरूरत नहीं है ?

लाली०। जरूरत की सब चीजें मेरे पास हैं, तुम बस चली चलो।

लाली और किशोरी वहाँ से रवाना हुईं और पेड़ों की आड़ में छिपती हुई उस मकान के पिछवाड़े पहुँचीं जिसकी छत में लाली ने सेंध लगाई थी। कमन्द लगा कर दोनों ऊपर चढ़ीं, कमन्द खींच लिया और उसी कमन्द के सहारे सेंध की राह दोनों मकान के अन्दर उतर गईं। वहाँ की अजायबातों को देख किशोरी की अजब हालत हो गई मगर तुरत ही उसका ध्यान दूसरी तरफ जा पड़ा। किशोरी और लाली जैसे ही उस मकान के अन्दर उतरीं वैसे ही बाहर से किसी के ललकारने की आवाज आई, साथ ही फुर्ती से कई कमन्द लगा दस पन्द्रह आदमी छत पर चढ़ आये और "धरो धरो, जाने न पावे जाने न पावे!" की आवाज आने लगी।

बारहवाँ बयान

कुंअर इन्द्रजीतसिंह तालाब के किनारे खड़े उस विचित्र इमारत और हसीन औरत की तरफ देख रहे हैं। उनका इरादा हुआ कि तैर कर उस मकान में चले जायँ जो इस तालाब के बीचोबीच में बना हुआ है, मगर उस नौजवान औरत ने इन्हें हाथ के इशारे से मना किया बल्कि वहाँ से भाग जाने के लिए कहा, उसका इशारा समझ ये रुक गये मगर जी न माना, फिर तालाब में उतरे।

उस नाजनीन को विश्वास हो गया कि कुमार बिना यहाँ आए न मानेंगे, तब उसने इशारे से ठहरने के लिए कहा और यह भी कहा कि किश्ती लेकर मैं आती हूँ। उस औरत ने किश्ती खोली और उस पर सवार हो अजीब तरह से घुमाती फिराती तालाब के पिछले कोने की तरफ ले गई और कुमार को भी उसी तरफ आने का इशारा किया। कुमार उस तरफ गये और खुशी खुशी उस औरत के साथ किश्ती पर सवार हुए। वह किश्ती को उसी तरह घुमाती फिराती मकान के पास ले गई। दोनों आदमी उतर कर अन्दर गये।

उस छोटे से मकान की सजावट कुमार ने बहुत पसन्द की। वहाँ सभी चीजें जरूरत की मौजूद थीं। बीच का बड़ा कमरा अच्छी तरह से सजा हुआ था, बेशकीमत शीशे लगे हुए थे, काश्मीरी गालीचे जिनमें तरह तरह के फूल बूटे बने हुए थे, छोटी छोटी मगर ऊँची संगमर्मर की चौकियों पर सजावट के सामान और गुलदस्ते लगाये हुए थे, गाने बजाने का सामान भी मौजूद था, दीवारों पर की तस्वीर को बनाने में मुसौवरों ने अच्छी कारीगरी खर्च की थी। उस कमरे के बगल में एक और छोटा सा कमरा सजा हुआ था जिसमें सोने के लिए एक मसहरी बिछी हुई थी, उसके बगल में एक कोठरी नहाने की थी जिसकी जमीन सुफेद और स्याह पत्थरों से बनी हुई थी। बीच में एक छोटा सा हौज बना हुआ था जिसमें एक तरफ से तालाब का जल आता था और दूसरी तरफ से निकल जाता था, इसके अलावे और भी तीन चार कोठरियाँ जरूरी कामों के लिए मौजूद थीं, मगर उस मकान में सिवाय उस एक औरत के और कोई दूसरी औरत न थी, न कोई नौकर या मजदूरनी ही नजर आती थी।

उस मकान को देख और उसमें सिवाय उस नौजवान नाजनीन के और किसी को न पा कुमार को बड़ा ताज्जुब हुआ। वह मकान इस योग्य था कि बिना पाँच चार आदमियों के उसकी सफाई या वहाँ के सामान की दुरुस्ती हो नहीं सकती थी।

थके मांदे और धूप खाये हुए कुंअर इन्द्रजीतसिंह को वह जगह बहुत ही भली मालूम हुई और उस हसीन औरत के अलौकिक रूप की छटा में ऐसे मोहित हुए कि पीछे की सुध बिल्कुल ही जाती रही। बड़े नाज और अन्दाज से उस औरत ने कुमार को कमरे में ले जा कर गद्दी पर बैठाया और आप उनके सामने बैठ गई।

कुमार०। तुमने जो कुछ एहसान मुझ पर किया है मैं किसी तरह उसका बदला नहीं चुका सकता।

औरत०। ठीक है, मगर उम्मीद करती हूँ कि आप कोई काम ऐसा भी न करेंगे जो मेरी बदनामी का सबब हो।

कुमार०। नहीं नहीं मुझसे ऐसी उम्मीद कभी न करना, लेकिन क्या सबब है जो तुमने ऐसा कहा?

औरत०। इस मकान में जहाँ मैं अकेली रहती हूँ आपका इस तरह आना और देर तक रहना बेशक मेरी बदनामी का सबब होगा।

कुमार०। (कुछ सोच कर) तुम इतनी खूबसूरत क्यों हुई? अफसोस! तुम्हारी एक एक अदा मुझे अपनी तरफ खैंचती है। (कुछ अटक कर) जो हो मुझे अब

यहाँ से चले ही जाना चाहिये। अगर ऐसा ही था तो मुझे किश्ती पर चढ़ा कर यहाँ क्यों लाईं।

औरत०। मैंने तो पहिले ही आपको चले जाने का इशारा किया मगर जब आप जल में तैर कर यहाँ आने लगे तो लाचार मुझे ऐसा करना पड़ा। मैं जान बूझ कर उस आदमी को किसी तरह आफत में फँसा नहीं सकती हूँ जिसकी जान खुद एक जालिम ऐयार के हाथ से बचाई हो। आप यह न समझें कि कोई आदमी इस तालाब में तैर कर यहाँ तक आ सकता है, क्योंकि इस तालाब में चारो तरफ जाल फेंके हुए हैं, अगर कोई आदमी यहाँ तैर कर आने का इरादा करेगा तो बेशक जाल में फँस कर अपनी जान बर्बाद करेगा। यही सबब था कि मुझे आपके लिए किश्ती ले जानी पड़ी।

कुमार०। बेशक, तब इसके लिए भी मैं धन्यवाद दूँगा। माफ करना मैं यह नहीं जानता था कि मेरे यहाँ आने से तुम्हारा नुकसान होगा, अब मैं जाता हूँ मगर कृपा करके अपना नाम तो बता दो जिसमें मुझे याद रहे कि फलानी औरत ने बड़े वक्त पर मेरी मदद की थी।

औरत०। (हँस कर) मैं अपना नाम नहीं किया चाहती और न इस धूप में आपको यहाँ से जाने के लिए कहती हूँ बल्कि मैं उम्मीद करती हूँ कि आप मेरी मेहमानी कबूल करेंगे।

कुमार०। वाह वाह ! कभी तो आप मुझे मेहमान बनाती हैं और कभी यहाँ से निकल जाने के लिए हुक्म लगाती हैं, आप लोग जो चाहें करें।

औरत०। (हँस कर) खैर ये सब बातें पीछे होती रहेंगी, अब आप यहाँ से उठें और कुछ भोजन करें क्योंकि मैं जानती हूँ कि आपने अभी तक कुछ भोजन नहीं किया।

कुमार०। अभी तो स्नान सन्ध्या भी नहीं किया। लेकिन मुझे ताज्जुब है कि यहाँ तुम्हारे पास कोई लौंडी दिखाई नहीं देती।

औरत०। आप इसके लिए चिन्ता न करें, आपकी लौंडी मैं मौजूद हूँ। आप जरा बैठें, मैं सब सामान ठीक करके अभी आती हूँ।

इतना कह बिना कुमार की मर्जी पाये वह औरत वहाँ से उठी और बगल के एक कमरे में चली गई। उसके जाने के बाद कुमार कमरे में टहलने और एक एक चीज को गौर से देखने लगे। यकायक एक गुलदस्ते के नीचे दबे हुए कागज के टुकड़े पर उनकी नजर पड़ी। मुनासिब न था कि उस पुर्जे को उठा कर पढ़ते

मगर लाचार थे, उस पुर्जे के कई अक्षर जो गुलदस्ते के नीचे दबने से रह गये थे साफ दिखाई पड़ते थे और उन्हीं अक्षरों ने कुमार को पुर्जा निकाल कर पढ़ने के लिये मजबूर किया। वे अक्षर ये थे—

"किशोरी"

लाचार कुमार ने उस पुरजे को निकाल कर पढ़ा, यह लिखा हुआ था :—

"आपके कहे मुताबिक कुल कार्रवाई अच्छी तरह हो रही है। लाली और कुन्दन में खूब घातें चल रही हैं। किशोरी ने भी पूरा धोखा खाया। किशोरी का आशिक भी यहाँ मौजूद है और उसे किशोरी से बहुत कुछ उम्मीद है। मैंने भी इनाम पाने लायक काम किया है। इस समय लाली कुछ अजब ही रंग लाया चाहती है, खैर दो तीन दिन में खुलासा हाल लिखूँगी !!

आपकी लौंडी—तारा।"

कुमार ने उस पुरजे को झटपट पढ़ कर उसी तरह रख दिया और गद्दी पर आकर बैठ गये। सोच और तरद्दुद ने चारो तरफ से आकर उन्हें घेर लिया। इस पुरजे ने तो उनके दिल का भाव ही बदल दिया। इस समय उनकी सूरत देख कर उनका हाल कोई सच्चा दोस्त भी नहीं मालूम कर सकता था, हाँ कुछ देर सोचने बाद इतना तो कुमार ने लम्बी साँस के साथ खुल कर कहा, "खैर कहाँ जाती है कम्बख्त ! मैं बिना कुछ काम किये टलने वाला नहीं।"

इतने ही में वह औरत भी आ गई और बोली, "उठिये, सब सामान दुरुस्त है।" कुमार उसके साथ नहाने वाली कोठरी में गये जिसमें हौज बना हुआ था। धोती गमछा और पूजा का सब सामान वहाँ मौजूद था, कुमार ने स्नान और सन्ध्या किया। वह औरत एक चाँदी की रिकाबी में कुछ मेवा और खोए की चीजें इनके सामने रख कर चली गई और दूसरी दफे पीने के लिये जल भी लाकर रख गई। उसी समय कुमार ने सुना कि बगल के कमरे में दो औरतें बातें कर रही हैं। उन्हें ताज्जुब हुआ कि ये दूसरी औरतें कहाँ से आईं ! कुमार भोजन करके उठे, हाथ मुँह धो कर कोठरी के बाहर निकला चाहते थे कि सामने का दर्वाजा खुला और दो औरतें नजर पड़ीं जिन्हें देखते ही कुमार चौंक पड़े और बोले—

"हैं ये दोनों यहाँ कहाँ से आ गईं !!"

तेरहवाँ बयान

आधी रात के समय सूनसान मैदान में दो कमसिन औरतें आपुस में कुछ बातें करतीं चली जा रही हैं। राह में छोटे छोटे टीले पड़ते हैं जिन्हें तकलीफ

के साथ लांघने और दम फूलने पर कभी ठहर कर फिर चलने से मालूम होता है कि इन दोनों को इसी समय किसी खास जगह पर पहुँचने या किसी से मिलने की ज्यादे जरूरत है। हमारे पाठक इन दोनों औरतों को बखूबी पहिचानते हैं इस लिये इनकी सूरत शकल के बारे में कुछ लिखने की जरूरत नहीं, क्योंकि इन दोनों में से एक तो किन्नरी है और दूसरी कमला।

किन्नरी०। कमला, देखो किस्मत का हेर फेर इसे कहते हैं। एक हिसाब से गयाजी में हम लोग अपना काम पूरा कर चुके थे मगर अफसोस!

कमला०। जहाँ तक हो सका तुमने किशोरी की मदद जी जान से की, बेशक किशोरी जन्म भर याद रक्खेगी और तुम्हें तो अपनी बहिन मानेगी। खैर कोई चिन्ता नहीं, हमलोगों को हिम्मत न हारनी चाहिये और न किसी समय ईश्वर को भूलना चाहिये। मुझे घड़ी घड़ी बेचारे आनन्दसिंह याद आते हैं। तुम पर उनकी सच्ची मुहब्बत है मगर तुम्हारा कुछ हाल न जानने से न मालूम उनके दिल में क्या क्या बातें पैदा होंगी, हाँ अगर वे जानते कि जिसको उनका दिल प्यार करता है वह फलानी है तो बेशक वे खुश होते।

किन्नरी०। (ऊँची साँस लेकर) जो ईश्वर की मर्जी !!

कमला०। देखो वह उस पुराने मकान की दीवार दिखाई देने लगी।

किन्नरी०। हाँ ठीक है, अब आ पहुँचे।

इतने ही में वे दोनों एक ऐसे टूटे फूटे मकान के पास पहुँचीं जिसकी चौड़ी चौड़ी दीवारें और बड़े बड़े फाटक कहे देते थे कि किसी जमाने में यह इज्जत रखता होगा। चाहे इस समय यह इमारत कैसी ही खराब हालत में क्यों न हो तो भी इसमें छोटी छोटी कोठरियों के अलावे कई बड़े बड़े दालान और कमरे अभी तक मौजूद हैं।

ये दोनों उस मकान के अन्दर चली गईं। बीच में चूने मिट्टी ईंटों का ढेर लगा हुआ था जिसके बगल में घूमती हुई एक दालान में पहुँचीं। इस दालान में एक तरफ एक कोठरी थी जिसमें जाकर कमला ने मोमबत्ती जलाई और चारो तरफ देखने लगी। बगल में एक आलमारी दीवार के साथ जुड़ी हुई थी जिसमें पल्ला खींचने के लिए दो मुट्ठे लगे थे। कमला ने बत्ती किन्नरी के हाथ में देकर दोनों हाथों से दोनों मुट्ठों को तीन चार दफे घुमाया, तुरत पल्ला खुल गया और भीतर एक छोटी सी कोठरी नजर आई। दोनों उस कोठरी के अन्दर चली गईं और उन पल्लों को फिर बन्द कर लिया। उन पल्लों में भीतर की तरफ भी उसी

तरह खोलने और बन्द करने के लिए दो मुट्ठे लगे हुए थे।

इस कोठरी में तहखाना था जिसमें उतर जाने के लिए छोटी छोटी सीढ़ियाँ बनी हुई थीं। वे दोनों नीचे उतर गईं और वहाँ एक आदमी को बैठे देखा जिसके सामने मोमबत्ती जल रही थी और वह कुछ लिख रहा था।

इस आदमी की उम्र लगभग साठ वर्ष के होगी। सर और मूँछों के बाल आधे से ज्यादे सुफेद हो रहे थे, तो भी उसके बदन में किसी तरह की कमजोरी नहीं मालूम होती थी। उसके हाथ पैर गठीले और मजबूत थे तथा चौड़ी छाती उसकी बहादुरी को जाहिर कर रही थी। चाहे उसका रंग सांवला क्यों न हो मगर चेहरा खूबसूरत और रोबीला था। बड़ी बड़ी आँखों में जवानी की चमक मौजूद थी, चुस्त मिर्जई उसके बदन पर बहुत भली मालूम होती थी, सर नंगा था मगर पास ही जमीन पर एक सुफेद मुड़ासा रक्खा हुआ था जिसके देखने से मालूम होता था कि गरमी मालूम होने पर उसने उतार कर रख दिया है। उसके बायें हाथ में पंखा था जिसके जरिये वह गरमी दूर कर रहा था मगर अभी तक पसीने को नमी बदन में मालूम होती थी।

एक तरफ ठीकरे में थोड़ी सी आग थी जिसमें कोई खुशबूदार चीज जल रही थी जिससे वह तहखाना अच्छी तरह सुगन्धित हो रहा था। कमला और किन्नरी के पैर की आहट पा वह पहिले ही से सीढ़ियों की तरफ ध्यान लगाये था, और इन दोनों को देखते ही उसने कहा, "तुम दोनों आ गईं?"

कमला०। जी हाँ।

आदमी०। (किन्नरी की तरफ इशारा करके) इन्हीं का नाम कामिनी है?

कमला०। जी हाँ।

आदमी०। कामिनी! आओ बेटी, तुम मेरे पास बैठो। मैं जिस तरह कमला को समझता हूँ उसी तरह तुम्हें भी मानता हूँ।

कामिनी०। बेशक कमला की तरह मैं भी आपको अपना सगा चाचा मानती हूँ।

आदमी०। तुम किसी तरह की चिन्ता मत करो। जहाँ तक होगा मैं तुम्हारी मदद करूँगा। (कमला की तरफ देख कर) तुझे कुछ रोहतासगढ़ की खबर भी मालूम है?

कमला०। कल मैं वहाँ गई थी मगर अच्छी तरह मालूम न कर सकी। आपसे यहाँ मिलने का वादा किया था इस लिये जल्दी लौट आयी।

आदमी०। अभी पहर भर हुआ मैं खुद रोहतासगढ़ से चला आता हूँ।

कम० । तो बेशक आपको बहुत कुछ हाल वहाँ का मिला होगा ।

आदमी० । मुझसे ज्यादे वहाँ का हाल कोई नहीं मालूम कर सकता । पच्चीस वर्ष तक ईमानदारी और नेकनामी के साथ वहाँ के राजा की नौकरी कर चुका हूँ । चाहे आज दिग्विजयसिंह हमारे दुश्मन हो गये हैं फिर भी मैं कोई काम ऐसा न करूँगा जिससे उस राज्य का नुकसान हो, हाँ तुम्हारे सबब से किशोरी की मदद जरूर करूँगा ।

कमला० । दिग्विजयसिंह नाहक ही आपसे रंज हो गये ।

आदमी० । नहीं नहीं उन्होंने अनर्थ नहीं किया । जब वे किशोरी को जबर्दस्ती अपने यहाँ रक्खा चाहते हैं और जानते हैं कि शेरसिंह ऐयार की भतीजी कमला किशोरी के यहाँ नौकर है और ऐयारी के फन में तेज है, वह किशोरी को छुड़ाने के लिए दाँव घात करेगी, तो उन्हें मुझसे परहेज करना बहुत मुनासिब था चाहे मैं कैसा ही खैरख्वाह और नेक क्यों न समझा जाऊँ । उन्होंने मुझे कैद करने का इरादा बेजा नहीं किया । हाय ! एक वह जमाना था कि रणधीरसिंह (किशोरी का नाना) और दिग्विजयसिंह में दोस्ती थी, मैं दिग्विजयसिंह के यहाँ नौकर था और मेरा छोटा भाई अर्थात् तुम्हारा बाप (ईश्वर उसे बैकुण्ठ दे) रणधीरसिंह के यहाँ रहता था । आज देखो कितना उलट फेर हो गया है । मैं बेकसूर कैद होने के डर से भाग तो आया मगर लोग जरूर कहेंगे कि शेरसिंह ने धोखा दिया ।

कमला० । जब आप दिल से रोहतासगढ़ की बुराई नहीं करते तो लोगों के कहने से क्या होता है, वे लोग आपकी बुराई क्योंकर दिखा सकते हैं ।

शेर० । हाँ ठीक है, खैर इन बातों को जाने दो, हाँ कुन्दन बेचारी को लाली ने खूब ही छकाया, अगर मैं लाली का एक भेद न जानता होता और कुन्दन को न कह देता तो लाली कुन्दन को जरूर बर्बाद कर देती । कुन्दन ने भी भूल की, अगर वह अपना सच्चा हाल लाली से कह देती तो बेशक दोनों में दोस्ती हो जाती ।

कमला० । कुछ कुँअर इन्द्रजीतसिंह का भी हाल मालूम हुआ ?

शेर० । हाँ मालूम है, उन्हें उसी चुड़ैल ने फँसा रक्खा है जो अजायबघर में रहती है ।

कमला० । कौन सा अजायबघर ?

शेर० । वही जो तालाब के बीच में बना है और जिसे जड़बुनियाद से खोद कर फेंक देने का मैंने इरादा किया है, यहाँ से थोड़ी ही दूर तो है ।

कमला० । जी हाँ मालूम हुआ, उसके बारे में बड़ी बड़ी विचित्र बातें सुनने में आती हैं ।

शेर० । वेशक वहां की सभी बातें ताज्जुब से भरी हुई हैं । अफसोस,न मालूम कितने खूबसूरत और नौजवान बेचारे वहां बेदर्दी के साथ मारे गये होंगे !

इतने ही में छत के ऊपर किसी के पैर की आहट मालूम हुई । तीनों का ध्यान सीढ़ियों पर गया ।

कमला० । कोई आता है ।

शेर० । हमें तो यहां किसी के आने की उम्मीद न थी, जरा होशियार हो जाओ ।

कमला० । मैं होशियार हूं, देखिए वह आया !

एक लम्बे कद का आदमी सीढ़ी से नीचे उतरा और शेरसिंह के सामने आकर खड़ा हो गया । उसकी उम्र चाहे जो भी हो मगर बदन की कमजोरी दुबलेपन और चेहरे की उदासी ने उसे पचास वर्षों से भी ज्यादे उम्र का बना रक्खा था । उसके खूबसूरत चेहरे पर उदासी और रंज के निशान पाये जाते थे, बड़ी बड़ी आंखों में आंसुओं की तरी साफ मालूम होती थी,उसकी हसरत भरी निगाहें उसके दिल की हालत दिखा रही थीं और कह रही थीं कि रञ्ज गम फिक्र तरद्दुद और नाउम्मीदी ने उसके बदन में खून और मांस का नाम नहीं छोड़ा केवल हड्डी ही बच गई है । उसके कपड़े भी बहुत पुराने और फटे हुए थे ।

इस आदमी की सूरत से भलमनसी और सूधापन झलकता था मगर शेरसिंह उसकी सूरत देखते ही कांप गया । खौफ और ताज्जुब ने उसका गला दबा दिया । वह एक दम ऐसा घबड़ा गया जैसे कोई खूनी जल्लाद की सूरत देख कर घबड़ा जाता है । शेरसिंह ने उसकी तरफ देख कर कहा,"अहा हा....आप....हैं । आइ....ए........!" मगर ये शब्द घबड़ाहट के मारे बिल्कुल ही उखड़े पुखड़े शेरसिंह के मुंह से निकले ।

उस आदमी ने कमला की तरफ इशारा करके कहा,"क्या यही लड़की...."

शेर० । हां....आप....(कमला और कामिनी की तरफ देख कर) तुम दोनों जरा ऊपर चली जाओ, ये बड़े नेक आदमी हैं, मुझसे मिलने आये हैं, मैं इनसे कुछ बातें किया चाहता हूं ।

कमला और कामिनी दोनों तहखाने से निकल कर ऊपर चली आईं । उस आदमी के आने और अपने चाचा को विचित्र अवस्था में देखने से कमला घबड़ा गई । उसके जी में तरह तरह की बातें पैदा होने लगीं । ऐसे कमजोर, लाचार और गरीब आदमी को देख कर उसका ऐयारी के फन में बड़ा ही तेज और शेर दिल चाचा इस तरह क्यों घबड़ा गया और इतना क्यों डरा, वह इसी सोच में-

परेशान थी। बेचारी कामिनी भी हैरान और डरी हुई थी यहां तक कि घण्टे भर बीत जाने पर भी उन दोनों में कोई बातचीत न हुई। घण्टे भर बाद वह आदमी तहखाने से निकल कर ऊपर चला आया और कामिनी की तरफ देख कर, बोला—"अब तुम लोग नीचे जाओ, मैं जाता हूं।" इतना कहता हुआ उसी तरह किवाड़ खोल कर चला गया जिस तरह कामिनी को साथ लिये हुए कमला इस मकान में आई थी।

कमला और कामिनी तहखाने के नीचे जा शेरसिंह के सामने बैठ गईं। शेरसिंह के चेहरे से अभी तक घबराहट और परेशानी गई नहीं थी। बड़ी मुश्किल से थोड़ी देर में उसने होश हवास दुरुस्त किये और कमला की तरफ देख कर कहा—

शेर०। अच्छा अब हम लोगों को क्या करना चाहिये ?

कमला०। जो हुक्म हो सो किया जाय। यह आदमी कौन था जिसे देख आप....?

शेर०। था एक आदमी, उसका हाल जानने का उद्योग न करो और न उसका खयाल ही करो बल्कि उसे बिल्कुल ही भूल जाओ।

उस आदमी के बारे में कमला बहुत कुछ जानना चाहती थी मगर अपने चाचा के मुंह से साफ जवाब पाकर दम न मार सकी और दिल की दिल ही में रखने पर लाचार हुई।

शेर०। कमला, तू रोहतासगढ़ जा और दो तीन दिन में लौट कर वहां का जो कुछ हाल हो मुझसे कह। किशोरी से मिल कर उसे ढाढ़स दीजियो और कहियो कि घबड़ाये नहीं। उसी रास्ते से किले के अन्दर बल्कि उस बाग में जिसमें किशोरी रहती है चली आइयो जिस राह का हाल मैंने तुमसे कहा था, उस राह से आना जाना कभी किसी को मालूम न होगा।

कमला०। बहुत अच्छा, मगर कामिनी के लिए क्या हुक्म होता है ?

शेर०। मैं इसे ले जाता हूं, अपने एक दोस्त के सुपुर्द कर दूंगा। वहां यह बड़े आराम से रहेगी। जब सब तरफ से फसाद मिट जायगा मैं इसे ले आऊंगा, तब यह भी अपनी मुराद को पहुंच जायगी।

कमला०। जो मर्जी।

तीनों आदमी तहखाने के बाहर निकले और जैसा ऊपर लिखा जा चुका है उसी तरह कोठरियों और दालानों में से होते हुए इस मकान के बाहर निकल आये।

शेर०। कमला, ले अब तू जा और कामिनी की तरफ से बेफिक्र रह। मुझसे मिलने के लिये यही ठिकाना मुनासिब है।

कमला० । अच्छा मैं जाती हूं मगर यह तो कह दीजिये कि उस आदमी से मुझे कहां तक होशियार रहना चाहिये जो आपसे मिलने आया था ?

शेर० । (कड़ी आवाज में) एक दफे तो कह दिया कि उसका ध्यान भुला दे, उससे होशियार रहने की जरूरत नहीं और न वह मुझे कभी दिखाई देगा ।

चौदहवां बयान

रोहतासगढ़ किले के चारो तरफ घना जंगल है जिसमें साखू शीशम तेंद, आसन और सलई इत्यादि के बड़े बड़े पेड़ों की घनी छाया से एक तरह का अंधकार सा हो रहा है । रात की तो बात ही दूसरी है वहां दिन को भी रास्ते या पगडण्डी का पता लगाना मुश्किल था क्योंकि सूर्य की सुनहरी किरणों को पत्तों में से छन कर जमीन तक पहुंचने का बहुत कम मौका मिलता था । कहीं कहीं छोटे छोटे पेड़ों की बदौलत जंगल इतना घना हो रहा था कि उसमें भूले आदमियों को मुश्किल से छुटकारा मिलता था । ऐसे मौके पर उसमें हजारों आदमी इस तरह छिप सकते थे कि हजार सिर पटकने और खोजने पर भी उनका पता लगाना असम्भव था । दिन को तो इस जंगल में अन्धकार रहता ही था मगर हम रात का हाल लिखते हैं जिस समय उसकी अंधेरी और वहां के सन्नाटे का आलम भूले भटके मुसाफिरों को मौत का समाचार देता था और वहां की जमीन के लिए अमावस्या और पूर्णिमा की रात एक सामान थी ।

किले के दाहिने तरफ वाले जंगल में आधी रात के समय हम तीन आदमियों को जो स्याह चोगे और नकाबों से अपने को छिपाये हुए थे घूमते देख रहे हैं । न मालूम ये किसकी खोज और किस जमीन की तलाश में हैरान हो रहे हैं ! इनमें से एक कुंअर आनन्दसिंह दूसरे भैरोसिंह और तीसरे तारासिंह हैं । ये तोनों आदमी देर तक घूमने के बाद छोटी सी चारदीवारी के पास पहुंचे जिसके चारो तरफ की दीवार पांच हाथ से ज्यादे ऊंची न थी और वहां के पेड़ भी कम घने और गुंजान थे, कहीं कहीं चन्द्रमा की रोशनी भी जमीन पर पड़ती थी ।

आनन्द० । शायद यही चारदीवारी है !

भैरो० । बेशक यही है, देखिए फाटक पर हड्डियों का ढेर लगा हुआ है ।

तारा० । खैर भीतर चलिए, देखा जायगा ।

भैरो० । जरा ठहरिये, पत्तों की खड़खड़ाहट से मालूम होता है कि कोई आदमी इसी तरफ आ रहा है !

आनन्द० । (कान लगा कर) हां ठीक तो है, हम लोगों को जरा छिप कर देखना चाहिये कि वह कौन है और इधर क्यों आता है ।

उस आने वाले की तरफ ध्यान लगाये हुए तीनों आदमी पेड़ों की आड़ में छिप रहे और थोड़ी ही देर में सुफेद कपड़े पहिरे एक औरत को आते हुए उन लोगों ने देखा । वह औरत पहिले तो फाटक पर रुकी, तब कान लगा कर चारो तरफ की आहट लेने बाद फाटक के अन्दर घुस गई । भैरोसिंह ने आनन्दसिंह से कहा, "आप दोनों इसी जगह ठहरिये, मैं उस औरत के पीछे जाकर देखता हूं कि वह कहां जाती है ।" इस बात को दोनों ने मंजूर किया और भैरोसिंह छिपते हुए उस औरत के पीछे रवाना हुए ।

ऐसे घने जंगल में भी उस चारदीवारी के अन्दर पेड़ झाड़ी या जंगल का न होना ताज्जुब की बात थी । भैरोसिंह ने वहां की जमीन बहुत साफ सुथरी पाई, हां छोटे जंगली बैर के दस बीस पेड़ वहां जरूर थे जो किसी तरह का नुकसान न पहुंचा सकते थे और न उनकी आड़ में कोई आदमी छिप ही सकता था, मगर मरे हुए जानवरों और उनकी हड्डियों की बहुतायत से वह जगह बड़ी ही भयानक हो रही थी । उस चारदीवारी के अन्दर बहुत सी कब्रें बनी हुई थीं जिनमें कई कच्ची तथा कई ईंट चूने और पत्थर की भी थीं और बीच में एक सबसे बड़ी कब्र संगमर्मर की बनी हुई थी ।

भैरोसिंह ने फाटक के अन्दर पैर रखते ही उस औरत को जिसके पीछे गए थे बीच वाली संगमर्मर की बड़ी कब्र पर खड़े और चारो तरफ देखते पाया, मगर थोड़ी देर में वह देखते देखते कहीं गायब हो गई । भैरोसिंह ने उस कब्र के पास जाकर उसे ढूंढ़ा मगर पता न लगा, दूसरी कब्रों के चारो तरफ और इधर उधर भी खोजा मगर कोई निशान न मिला । लाचार ये आनन्दसिंह और तारासिंह के पास लौट आये और बोले—

भैरो० । वह औरत वहां ही चली गई जहां हम लोग जाया चाहते हैं ।

आनन्द० । हां !

भैरो० । जी हां ।

आनन्द० । फिर अब क्या राय है ?

भैरो० । उसे जाने दीजिये, चलिये हम लोग भी चलें । अगर वह रास्ते में मिल ही जायगी तो क्या हर्ज है ? एक औरत हम लोगों का कुछ नुकसान नहीं कर सकती !

ये तीनों आदमी उस चारदीवारी के अन्दर गए और बीच वाली संगमर्मर की बड़ी कब्र पर पहुंच कर खड़े हो गये। भैरोसिंह ने उस कब्र की जमीन को अच्छी तरह टटोलना शुरू किया। थोड़ी ही देर में एक खटके की आवाज आई और एक छोटा सा पत्थर का टुकड़ा जो शायद कमानी के जोर पर लगा हुआ था दर्वाजे की तरह खुल कर अलग हो गया। ये तीनों आदमी उसके अन्दर घुसे और उस पत्थर के टुकड़े को उसी तरह बन्द कर आगे बढ़े। अब ये तीनों आदमी एक सुरंग में थे जो बहुत ही तंग और लम्बी थी। भैरोसिंह ने अपने बटुए में से एक मोमबत्ती निकाल कर जलाई और चारो तरफ अच्छी तरह निगाह करने बाद आगे बढ़े। थोड़ी ही देर में यह सुरंग खत्म हो गई और ये तीनों एक भारी दालान में पहुंचे। इस दालान की छत बहुत ऊंची थी और इसमें कड़ियों के सहारे कई जंजीरें लटक रही थीं। इस दालान के दूसरी तरफ एक और दर्वाजा था जिसमें से होकर ये तीनों एक कोठरी में पहुंचे। इस कोठरी के नीचे एक तहखाना था जिसमें उतरने के लिए संगमर्मर की सीढ़ियां बनी हुई थीं। ये तीनों नीचे उतर गये। अब एक बड़े भारी घण्टे के बजने की आवाज इन तीनों के कान में पड़ी जिसे सुन ये कुछ देर के लिए रुक गये। मालूम हुआ कि इस तहखाने वाली कोठरी के बगल में कोई और मकान है जिसमें घण्टा बज रहा है। इन तीनों को वहां और भी कई आदमियों के मौजूद होने का गुमान हुआ।

इस तहखाने में भी दूसरी तरफ निकल जाने के लिए एक दर्वाजा था जिसके पास पहुंच कर भैरोसिंह ने मोमबत्ती बुझा दी और धीरे से दर्वाजा खोल उस तरफ झांका। एक बड़ी संगीन बारहदरी नजर पड़ी जिसके खम्भे संगमर्मर के थे। इस बारहदरी में दो मशाल जल रहे थे जिनकी रोशनी से वहां की हर एक चीज साफ मालूम होती थी और इसी से वहां दस पन्द्रह आदमी भी दिखाई पड़े जिनमें रस्सियों से मुश्कें बंधी हुई तीन औरतें भी थीं। भैरोसिंह ने पहिचाना कि इन तीनों औरतों में एक किशोरी है जिसके दोनों हाथ पीठ की तरफ कस कर बंधे हुए हैं और वह नीचे सिर किए रो रही है। उसके पास वाली दोनों औरतों की भी वही दशा थी मगर उन्हें भैरोसिंह, आनन्दसिंह या तारासिंह नहीं पहिचानते थे। उन तीनों के पीछे नंगी तलवार लिए तीन आदमी भी खड़े थे जिनकी सूरत और पोशाक से मालूम होता था कि वे जल्लाद हैं।

उस बारहदरी के बीचोबीच चांदी के सिंहासन पर स्याह पत्थर की एक मूरत इतनी बड़ी बैठी हुई थी कि आदमी पास में खड़ा होकर भी उसे बैठी हुई मूरत

के सिर पर हाथ नहीं रख सकता था। उस मूरत की सूरत शक्ल के बारे में इतना ही लिखना काफी है कि उसे आप कोई राक्षस समझें जिसकी तरफ आंख उठा कर देखने से डर मालूम होता था।

भैरोसिंह तारासिंह और आनन्दसिंह उसी जगह खड़े होकर देखने लगे कि उस दालान में क्या हो रहा है। अब घंटे की आवाज बड़े जोर से आ रही थी मगर यह नहीं मालूम होता था कि वह कहां बज रहा है।

उन तीनों औरतों को जिनमें किशोरी भी थी छः आदमियों ने अच्छी तरह मजबूती से पकड़ा और बारी बारी से उस स्याह मूरत के पास ले गए जहां उसके पैरों पर जबर्दस्ती सिर रखवा कर पीछे हटे और फिर उसी के सामने खड़ा कर दिया।

इसके बाद दो आदमी एक औरत को लेकर आगे बढ़े जिसे हमारे तीनों आदमियों में से कोई भी नहीं पहिचानता था, उस औरत के पोछे जो जल्लाद नंगी तलवार लिए खड़ा था वह भी आगे बढ़ा। दोनों आदमियों ने उस औरत को स्याह मूरत के ऊपर इस जोर से ढकेल दिया कि बेचारी बेतहाशा गिर पड़ी साथ ही जल्लाद ने एक हाथ तलवार का ऐसा मारा कि सिर कट कर दूर जा पड़ा और धड़ तड़पने लगा। इस हाल को देख वे दोनों औरतें जिनमें बेचारी किशोरी भी थी बड़े जोर से चिल्लाई और बदहवास होकर जमीन पर गिर पड़ीं।

इस कैफियत को देख कर हमारे दोनों ऐयारों और कुंअर आनन्दसिंह की अजब हालत हो गई। गुस्से के मारे थर थर कांपने लगे। थोड़ी देर बाद उन लोगों ने किशोरी को उठाया और उस मूरत के पास ले चले। उसके साथ ही दूसरा जल्लाद भी आगे बढ़ा। अब ये तीनों किसी तरह बर्दाश्त न कर सके। कुंअर आनन्दसिंह ने दोनों ऐयारों को ललकारा—"मारो इन जालिमों को! ये थोड़े से आदमी हैं क्या चीज!"

तीनों आदमी खंजर निकाल आगे बढ़ना ही चाहते थे कि पीछे से कई आदमियों ने आकर इन लोगों को भी पकड़ लिया और "यही हैं, यही हैं, पहिले इन्हीं को बलि देना चाहिये!" कह कर चिल्लाने लगे।

॥ तीसरा भाग समाप्त ॥

३२ वां संस्करण] १९७८ [२२०० प्रति

लहरी प्रेस, वाराणसी।

* श्रीः *

चन्द्रकान्ता सन्तति

चौथा भाग

—:o:—

पहिला बयान

अब हम अपने किस्से को फिर उस जगह से शुरू करते हैं जब रोहतासगढ़ किले के अन्दर लाली को साथ लेकर किशोरी सीध की राह उस अजायबघर में घुसी जिसका ताला हमेशा वन्द रहता था और दर्वाजे पर बराबर पहरा पड़ा करता था। हम पहिले लिख आये हैं कि जब लाली और किशोरी उस मकान के अन्दर घुसीं उसी समय कई आदमी उस छत पर चढ़ गये और "धरो, पकड़ो, जाने न पावे!" की आवाज लगाने लगे। लाली और किशोरी ने भी यह आवाज सुनी। किशोरी तो डरी मगर लाली ने उसी समय उसे धीरज दिया और कहा, "तुम डरो मत, ये लोग हमारा कुछ भी नहीं कर सकते।"

लाली और किशोरी छत की राह जब नीचे उतरीं तो एक छोटी सी कोठरी में पहुंचीं जो बिल्कुल खाली थी। उसके तीन तरफ दीवार में तीन दर्वाजे थे, एक दर्वाजा तो सदर का था जिसके आगे बाहर की तरफ पहरा पड़ा करता था, दूसरा दर्वाजा खुला हुआ था और मालूम होता था किसी दालान या कमरे में जाने का रास्ता है। लाली ने जल्दी में केवल इतना ही कहा कि 'ताली लेने के लिये इसी राह से एक मकान में मैं गई थी' और तीसरी तरफ एक छोटा सा दर्वाजा था जिसका ताला किवाड़ के पल्ले ही में जड़ा हुआ था। लाली ने वही ताली जो इस अजायबघर में से ले गई थी लगा कर उस दर्वाजे को खोला, दोनों उसके

अन्दर घुसीं, लाली ने फिर उसी ताली से मजबूत दर्वाजे को अन्दर की तरफ से वन्द कर लिया। ताला इस ढंग से जड़ा हुआ था कि वही ताली बाहर और भीतर दोनों तरफ लग सकती थो*। लाली ने यह काम बड़ी फुर्ती से किया, यहां तक कि उसके अन्दर चले जाने के बाद तब टूटी हुई छत की राह वे लोग जो लाली और किशोरी को पकड़ने के लिए आ रहे थे नीचे इस कोठड़ी में उतर सके। भीतर से ताला बन्द करके लाली ने कहा, "अब हम लोग निश्चिन्त हुए, डर केवल इतना ही है कि किसी दूसरी राह से कोई आकर हम लोगों को तंग न करे, पर जहां तक मैं जानती हूं और जो कुछ मैंने सुना है उससे तो विश्वास है कि इस अजायबघर में आने के लिये और कोई राह नहीं है।"

लाली और किशोरी अब एक ऐसे घर में पहुंचीं जिसकी छत बहुत ही नीची थी, यहां तक कि हाथ उठाने से छत छूने में आती थी। यह घर बिल्कुल अंधेरा था। लाली ने अपनी गठरी खोली और सामान निकाल कर मोमबत्ती जलाई। मालूम हुआ कि यह एक कोठरी है जिसकी चारो तरफ की दीवार पत्थर की बनी हुई तथा बहुत ही चिकनी और मजबूत है। लाली खोजने लगी कि इस मकान से किसी दूसरे मकान में जाने के लिए रास्ता या दर्वाजा है या नहीं।

जमीन में एक दर्वाजा बना हुआ दिखा जिसे लाली ने खोला और हाथ में मोमबत्ती लिये नीचे उतरी। लगभग बीस पचीस सीढ़ियां उतर कर दोनों एक सुरंग में पहुंचीं जो बहुत दूर तक चली गई थी। ये दोनों लगभग तीन सौ कदम के गई होंगी कि यह आवाज दोनों के कानों में पहुंची :—

"हाय, एक ही दफे मार डाल, क्यों दुःख देता है।"

यह आवाज सुन कर किशोरी कांप गई और उसने रुक कर लाली से पूछा, "बहिन, यह आवाज कैसी है? आवाज बारीक है और किसी औरत की मालूम होती है!"

लाली०। मुझे मालूम नहीं कि यह आवाज कैसी है और न इसके बारे में बूढ़ी मांजी ने मुझे कुछ कहा ही था।

किशोरी०। मालूम पड़ता है कि किसी औरत को कोई दुःख दे रहा है, कहीं ऐसा न हो कि वह हम लोगों को भी सतावे, हम दोनों का हाथ खाली है, एक छूरा तक पास में नहीं।

---

* इस मकान में जहां जहां लाली ने ताला खोला इसी ताली और इसी ढंग से खोला।

लाली० । मैं अपने साथ दो छूरे लाई हूं, एक अपने वास्ते और एक तेरे वास्ते। (कमर से एक छूरा निकाल कर और किशोरी के हाथ में देकर) ले एक तू रख। मुझे खूब याद है एक दफे तूने कहा था कि मैं यहां रहने की बनिस्बत मौत पसन्द करती हूं, फिर क्यों डरती है ? देख मैं तेरे साथ जान देने को तैयार हूं।

किशोरी० । बेशक मैंने ऐसा कहा था और अब भी कहती हूं, चलो बढ़ो अब कोई हर्ज नहीं, छूरा हाथ में है और ईश्वर मालिक है।

दोनों फिर आगे बढ़ीं। बीस पचीस कदम और जाकर सुरंग खतम हुई और दोनों एक दालान में पहुंचीं। यहां एक चिराग जल रहा था, कम से कम सेर भर तेल उसमें होगा, रोशनी चारो तरफ फैली हुई थी और यहां की हर एक चीज साफ दिखाई दे रही थी। इस दालान के बीचोबीच एक खम्भा था और उसके साथ एक हसीन नौजवान और खूबसूरत औरत जिसकी उम्र बीस वर्ष से ज्यादे न होगी बंधी हुई थी, उसके पास ही छोटी सी पत्थर की चौकी पर साफ और हलकी पोशाक पहिरे एक बुड्ढा बैठा हुआ छूरे से कोई चीज काट रहा था, इसका मुंह उसी तरफ था जिधर लाली और किशोरी खड़ी वहां की कैफियत देख रही थीं। उस बूढ़े के सामने भी एक चिराग जल रहा था जिससे उसकी सूरत साफ साफ मालूम होती थी। उस बुड्ढे की उम्र लगभग सत्तर वर्ष के होगी, उसकी सुफेद दाढ़ी नाभी तक पहुंचती थी और दाढ़ी तथा मूंछों ने उसके चेहरे का ज्यादा भाग छिपा रक्खा था।

उस दालान की ऐसी अवस्था देख कर किशोरी और लाली दोनों हिचकीं और उन्होंने चाहा कि पीछे की तरफ मुड़ चलें मगर पीछे फिर कर कहां जाएं इस विचार ने उनके पैर उसी जगह जमा दिये। उन दोनों के पैर की आहट इस बुड्ढे ने भी पाई, सर उठा कर उन दोनों की तरफ देखा और कहा—"वाह वाह, लाली और किशोरी भी आ गईं ! आओ आओ, मैं बहुत देर से राह देख रहा था !"

दूसरा बयान

कंचनसिंह के मारे जाने और कुंअर इन्द्रजीतसिंह के गायब हो जाने से लश्कर में बड़ी हलचल मच गई। पता लगाने के लिये चारो तरफ जासूस भेजे गये। ऐयार लोग भी इधर उधर फैल गये और फसाद मिटाने के लिये दिलोजान से कोशिश करने लगे। राजा बीरेन्द्रसिंह से इजाजत लेकर तेजसिंह भी रवाना हुए और भेष बदल कर रोहतासगढ़ किले के अन्दर चले गये। किले के सदर दर्वाजे पर पहरे का

पूरा इन्तजाम था मगर तेजसिंह की फकीरी सूरत पर किसी ने शक न किया।

साधू की सूरत बने हुए तेजसिंह सात दिन तक रोहतासगढ़ किले के अन्दर घूमते रहे। इस बीच में उन्होंने हर एक मोहल्ला, बाजार, गली, रास्ता, देवल, धर्मशाला इत्यादि को अच्छी तरह देख और समझ लिया, कई बार दर्बार में भी जाकर राजा दिग्विजयसिंह और उनके दीवान तथा ऐयारों की चाल और बातचीत के ढंग पर ध्यान दिया और यह भी मालूम किया कि राजा दिग्विजयसिंह किस किसको चाहता है, किस किस की खातिर करता है, और किस किस को अपना विश्वासपात्र समझता है। इस सात दिन के बीच में तेजसिंह को कई बार चोबदार और औरत बनने की भी जरूरत पड़ी और अच्छे अच्छे घरों में घुस कर वहां की कैफियत और हालत को भी देख सुन आये; एक दफे तेजसिंह उस शिवालय में भी गये जिसमें भैरोसिंह और बद्रीनाथ ने ऐयारी की थी या जहां से कुंअर कल्याणसिंह को पकड़ ले गये थे।

तेजसिंह ने उस शिवालय के रहने वालों तथा पुजारियों की अजब हालत देखी। जब से कुंअर कल्याणसिंह गिरफ्तार हुए थे तब से उन लोगों के दिल में ऐसा डर समा गया था कि वे बात बात में चौंकते और डरते थे, रात में एक पत्ती के खड़कने से भी किसी ऐयार के आने का गुमान होता था, साधु ब्राह्मणों की सूरत से उन्हें घृणा हो गई थी, किसी संन्यासी ब्राह्मण साधु को देखा और चट बोल उठे कि ऐयार है, किसी मजदूर को भी अगर मन्दिर के आगे खड़ा पाते तो चट उसे ऐयार समझ लेते और जब तक गर्दन में हाथ दे हाते के बाहर न कर देते चैन न लेते। इत्तिफाक से आज तेजसिंह भी साधू की सूरत बने शिवालय में जा डटे। पुजारियों ने देखते ही गुल करना शुरू किया कि 'ऐयार है, ऐयार है, धरो, पकड़ो, जाने न पावे'! बेचारे तेजसिंह बड़ा घबड़ाये और ताज्जुब करने लगे कि इन लोगों को कैसे मालूम हो गया कि हम ऐयार हैं क्योंकि तेजसिंह को इस बात का गुमान भी न था कि यहां के रहने वाले कुत्ते बिल्ली को भी ऐयार समझते हैं, मगर यकायकी वहां से भाग निकलना भी मुनासिब न समझ कर रुके और बोले—

तेज०। तुम कैसे जानते हो कि हम ऐयार हैं?

एक पुजेरी०। अजी हम खूब जानते हैं कि सिवाय ऐयार के कोई दूसरा हमारे सामने आ नहीं सकता है! अजी तुम्हीं लोग तो हमारे कुंअर साहब को पकड़ ले गये हो या कोई दूसरा? बस बस यहां से चले जाओ, नहीं तो कान पकड़ के खा जायंगे।

'बस बस, यहां से चले जाओ' इत्यादि सुनते ही तेजसिंह समझ गये कि

ये लोग बेवकूफ हैं, अगर हमारे ऐयार होने का इन्हें विश्वास होता तो ये लोग 'चले जाओ' कभी न कहते बल्कि हमें गिरफ्तार करने का उद्योग करते, बस इन्हें भैरोसिंह और बद्रीनाथ डग गये हैं और कुछ नहीं।

तेजसिंह खड़े सोच ही रहे थे कि इतने में एक लंगड़ा भिखमंगा हाथ में ठीकरा लिये लाठी टेकता वहां आ पहुंचा और पुजेरीजी की जय जयकार मनाने लगा। सूरत देखते ही एक पुजेरी चिल्ला उठा और बोला, "लो देखो, एक दूसरा ऐयार भी आ पहुंचा, अबकी शैतान लंगड़ा बन कर आया है, जानता नहीं कि हमलोग बिना पहिचाने न रहेंगे, भाग नहीं तो सर तोड़ डालूंगा!"

अब तेजसिंह को पूरा विश्वास हो गया कि ये लोग सिड़ी हो गये हैं, जिसे देखते उसे ही ऐयार समझ लेते हैं। तेजसिंह वहां से लौटे और सोचते हुए खिड़की की राह* दीवार के पार हो जंगल में चले गए कि अब यहां से ऐयारों से मिलना चाहिए और देखना चाहिए कि वे कैसे हैं और ऐयारी के फन में कितने तेज हैं।

इस किले के अन्दर गांजा पिलाने वालों की कई दूकानें थीं जिन्हें यहां वाले 'अड्डा' कहा करते थे। चिराग जलने के बाद ही से गंजेड़ी लोग वहां जमा होते जिन्हें अड्डे का मालिक गांजा बना कर पिलाता और उनसे एवज में पैसे वसूल करता। वहां तरह तरह की गप्पें उड़ा करती थीं जिनसे शहर भर का हाल झूठ सच मिला जुला लोगों को मालूम हो जाया करता था।

शाम होने के पहिले ही तेजसिंह जंगल से लौटे, लकड़हारों के साथ साथ वैरागी के भेष में किले के अन्दर दाखिल हुए और सीधे अड्डे पर चले गये जहां गंजेड़ी दम पर दम लगा कर धूंए का गुबबार बांध रहे थे। यहां तेजसिंह का बहुत कुछ काम निकला और उन्हें मालूम हो गया कि महाराज के यहां केवल दो ऐयार हैं, एक का नाम रामानन्द, दूसरे का नाम गोविन्दसिंह है। गोविन्दसिंह तो कुंअर कल्याणसिंह को छुड़ाने के लिए चुनार गया हुआ है, बाकी रामानन्द यहां मौजूद हैं।

---

* रोहतासगढ़ किले की बड़ी चहारदीवारी में चारों तरफ छोटी छोटी बहुत सी खिड़कियां थीं जिनमें लोहे के मजबूत दर्वाजे लगे रहते थे और दो सिपाही बराबर पहरा दिया करते थे। फकीर मोहताज और गरीब रिआया अक्सर उन खिड़कियों (छोटे दर्वाजों) की राह जंगल में से सूखी लकड़ियां चुनने या जंगली फल तोड़ने या जरूरी काम के लिए बाहर जाया करते थे, मगर चिराग जलते ही ये खिड़कियां बन्द कर दी जाती थीं।

दूसरे दिन तेजसिंह ने दरबार में जाकर रामानन्द को अच्छी तरह देख लिया और निश्चय कर लिया कि आज रात को इसी के साथ ऐयारी करेंगे क्योंकि रामानन्द का ढांचा तेजसिंह से बहुत कुछ मिलता था और यह भी जाना गया था कि महाराज सबसे ज्यादा रामानन्द को मानते और अपना विश्वासपात्र समझते हैं।

आधी रात के समय तेजसिंह सन्नाटा देख रामानन्द के मकान में कमन्द लगा कर चढ़ गये। देखा कि धूर ऊपर वाले बंगले में रामानन्द मसहरी के ऊपर पड़ा खुर्राटे ले रहा है, दर्वाजे पर पर्दे की जगह पर जाल लटक रहा है जिसमें छोटी छोटी घंटियां बंधी हुई हैं। पहिले तो तेजसिंह ने उसे एक मामूली पर्दा समझा मगर ये तो बड़े ही चालाक और होशियार थे, यकायक पर्दे पर हाथ डालना मुनासिब न समझ कर उसे गौर से देखने लगे। जब मालूम हुआ कि नालायक ने इस जालदार पर्दे में बहुत सी घंटियां लटका रक्खी हैं तो समझ गए कि यह बड़ा ही बेवकूफ है, समझता है कि इन घंटियों के लटकाने से हम बचे रहेंगे, इस घर में जब कोई पर्दा हटा कर आवेगा तो घंटियों की आवाज से हमारी आंख खुल जायगी, मगर यह नहीं समझता कि ऐयार लोग बुरे होते हैं।

तेजसिंह ने अपने बटुए में से कैंची निकाली और बहुत सम्हाल कर पर्दे में से एक एक करके घंटी काटने लगे। थोड़ी ही देर में सब घंटियों को काट के किनारे कर दिया और पर्दा हटा कर अन्दर चले गए। रामानन्द अभी तक खर्राटे ले रहा था। तेजसिंह ने बेहोशी की दवा उसके नाक के आगे की, हलका धूरा सांस लेते ही दिमाग में चढ़ गया, रामानन्द को एक छींक आई जिससे मालूम हुआ कि अब बेहोशी इसे घंटों तक होश में न आने देगी।

तेजसिंह ने बटुए में से एक अस्तुरा निकाल कर रामानन्द की दाढ़ी और मूंछ मूंड़ ली और उसके बाल हिफाजत से अपने बटुए में रख कर उसी रंग की दूसरी दाढ़ी और मूंछ उसे लगा दी जो उन्होंने दिन ही में किले के बाहर जंगल में तैयार की थी। तेजसिंह इतने ही काम के लिए रामानन्द के मकान पर गए थे और इसे पूरा कर कमन्द के सहारे नीचे उतर आए तथा धर्मशाला की तरफ रवाना हुए।

तेजसिंह जब बैरागी साधु के भेष में रोहतासगढ़ किले के अन्दर आए थे तो उन्होंने धर्मशाला* के पास एक बैठक वाले के मकान में छोटी सी कोठरी किराये पर ले ली थी और उसी में रह कर अपना काम करते थे। उस कोठरी का एक दर्वाजा

* रोहतासगढ़ में एक ही धर्मशाला थी।

सड़क की तरफ था जिसमें ताला लगा कर उसकी ताली ये अपने पास रखते थे, इसलिए उस कोठरी में जाने आने के लिए उनको दिन और रात एक समान था।

रामानन्द के मकान से जब तेजसिंह अपना काम करके उतरे उस वक्त पहर भर रात बाकी थी। धर्मशालाके पास अपनी कोठरीमें गए और सवेरा होने के पहिले ही अपनी सूरत रामानन्द की सी बना और वही दाढ़ी और मूंछ जो मूड़ लाये थे दुरुस्त करके खुद लगा कोठड़ी से बाहर निकले और शहर में गश्त लगाने लगे, सवेरा होते तक राजमहल की तरफ रवाना हुए और इत्तिला करा कर महाराज के पास पहुंचे।

हम ऊपर लिख आए हैं कि रोहतासगढ़ में रामानन्द और गोविन्दसिंह केवल दो ही ऐयार थे। इन दोनों के बारे में इतना लिख देना जरूरी है कि इन दोनों में से गोविन्दसिंह तो ऐयारी के फन में बहुत ही तेज और होशियार था और वह दिन रात वही काम किया करता था। रामानन्द भी ऐयारी का फन अच्छी तरह जानता था मगर उसे अपनी दाढ़ी और मूंछ बहुत प्यारी थी इसलिए वह ऐयारी के वे ही काम करता था जिसमें दाढ़ी और मूंछ मुड़ाने की जरूरत न पड़े और इसलिये महाराज ने भी उसे दीवान का काम दे रक्खा था। इसमें भी कोई शक नहीं कि रामानन्द बहुत ही खुशदिल मसखरा और बुद्धिमान था और उसने अपनी तदबीर से महाराज का दिल अपनी मुट्ठी मे कर लिया था।

रामानन्द की सूरत बने हुए तेजसिंह महाराज के पास पहुंचे, मामूल से बहुत पहिले रामानन्द को आते देख महाराज ने समझा कि कोई नई खबर लाया है।

महा०। आज तुम बहुत सवेरे आये! क्या कोई नई खबर है?

रामा०। (खांस कर) महाराज, हमारे यहां कल तीन मेहमान आये हैं।

महा०। कौन कौन?

रामा०। एक तो खांसी जिसने मुझे बहुत ही तंग कर रक्खा है, दूसरे कुंअर आनन्दसिंह, तीसरे उनके चार ऐयार जो आज ही कल में किशोरी को यहां से निकाल ले जाने का दावा रखते हैं।

महा०। (हंस कर) मेहमान तो बड़े नाजुक हैं। इनकी खातिर का भी कोई इन्तजाम किया गया है या नहीं?

रामा०। इसीलिए तो सरकार में आया हूं। कल दर्बार में उनके ऐयार मौजूद थे। सब के पहिले किशोरी का बन्दोबस्त करना चाहिए, उसकी हिफाजत में किसी तरह की कमी न होनी चाहिए।

महा०। जहां तक मैं समझता हूं वे लोग किशोरी को तो किसी तरह नहीं

ले जा सकते, हां बीरेन्द्रसिंह के ऐयारों को जिस तरह भी हो सके गिरफ्तार करना चाहिये।

रामा०। बीरेन्द्रसिंह के ऐयार तो अब मेरे पंजे से बच नहीं सकते, वे लोग सूरत बदल कर दरबार में जरूर आयेंगे, और ईश्वर चाहे तो आज ही किसी को गिरफ्तार करूंगा, मगर वे लोग बड़े ही धूर्त और चालबाज हैं, प्रायः कैदखाने से भी निकल जाया करते हैं।

महा०। खैर हमारे तहखाने से निकल जायेंगे तो समझेंगे कि चालाक और धूर्त हैं।

महाराज की इतनी ही बातचीत से तेजसिंह को मालूम हो गया कि यहां कोई तहखाना है जिसमें कैदी लोग रक्खे जाते हैं, अब उन्हें यह फिक्र हुई कि जहां तक हो सके इस तहखाने का ठीक ठीक हाल मालूम करना चाहिए। यह सोच तेजसिंह ने अपनी लच्छेदार बातचीत में महाराज को ऐसा उलझाया कि मामूली समय से भी आधे घण्टे की देर हो गई। ऐसा करने से तेजसिंह का अभिप्राय यह था कि देर होने से असली रामानन्द अवश्य महाराज के पास आवेगा और मुझे देख चौंकेगा, उसी समय मैं अपना काम निकाल लूंगा जिसके लिए उसकी दाढ़ी मूंड़ लाया हूं, और आखिर तेजसिंह का सोचना ठीक भी निकला।

तेजसिंह रामानन्द की सूरत में जिस समय महाराज के पास आये थे उस समय ड्योढ़ी पर जितने सिपाही पहरा दे रहे थे सब बदल गए और दूसरे सिपाही अपनी बारी के अनुसार ड्योढ़ी के पहरे पर मुस्तैद हुए जो इस बात से बिल्कुल ही बेखबर थे कि रामानन्द महाराज से मिलने के लिये महल में गये हैं।

ठीक समय पर दरबार लग गया। बड़े बड़े ओहदेदार, नायब दीवान, तहसीलदार, मुन्शी मुत्सद्दी इत्यादि और मुसाहब लोग दरबार में आकर जमा हो गये। असली रामानन्द अपनी दीवान की गद्दी पर आकर बैठ गया मगर अपनी दाढ़ी की तरफ से बिल्कुल ही बेखबर था। उसे तेजसिंह का मामला कुछ भी मालूम न था, तो भी यह जानने के लिए वह बड़ी ही उलझन में पड़ा हुआ था कि उस दरवाजे के जालीदार पर्दे में की घंटियां किसने काट डाली थीं। घर भर के आदमियों से उसने पूछा और पता लगाया मगर पता न लगा, इससे उसके दिल में शक हुआ कि इस मकान में जरूर कोई ऐयार आया मगर उसने आकर क्या किया सो नहीं जाना जाता, हां मेरे इस खयाल को उसने जरूर मटियामेट कर दिया कि घंटियां लगे हुए जालदार पर्दे के अन्दर मेरे कमरे में चुपके से कोई नहीं आ सकता, उसने

बता दिया कि यों आ सकता है। बेशक मेरी भूल थी कि उस पर्दे पर इतना भरोसा रखता था, पर तो क्या खाली यही बताने के लिये वह ऐयार आया था ?

इन्हीं सब बातों को सोचता हुआ रामानन्द अपने जरूरी कामों से छुट्टी पा दरबारी कपड़े पहिर बनठन कर दरबार की तरफ रवाना हुआ। बेशक आज उसे कुछ देरी हो गई थी और वह सोच रहा था कि महाराज दरबार में जरूर आ गये होंगे, मगर वहां पहुंच कर उसने गद्दी खाली देखी और पूछने से मालूम हुआ कि अभी तक महाराज के आने की कोई खबर नहीं। रामानन्द क्या सभी दरबारी ताज्जुब कर रहे थे कि आज महाराज को देर क्यों हुई।

रामानन्द को महाराज बहुत मानते थे, यह उनका मुंहलगा था। इसीलिए सभों ने वहां जाकर हाल मालूम करने के लिये इसको ही कहा। रामानन्द खुद भी घबराया हुआ था और महाराज का हाल मालूम किया चाहता था, अस्तु थोड़ी देर बैठ कर वहां से रवाना हुआ और ड्योढ़ी पर पहुंच कर इत्तिला करवाई।

रामानन्द रूपी तेजसिंह बैठे महाराज से बातें कर रहे थे कि एक खिदमतगार आया और हाथ जोड़ कर सामने खड़ा हो गया। उसकी सूरत से मालूम होता था कि वह घबराया हुआ है और कुछ कहना चाहता है, मगर आवाज मुंह से नहीं निकलती। तेजसिंह समझ गये कि अब कुछ गुल खिला चाहता है, आखिर खिदमतगार की तरफ देख कर बोले—

तेज०। क्यों क्या कहना चाहता है ?

खिद०। मैं ताज्जुब के साथ यह इत्तिला करते डरता हूं कि दीवान साहब (रामानन्द) ड्योढ़ी पर हाजिर हैं।

महा०। रामानन्द !

खिद०। जी हां।

महा०। (तेजसिंह की तरफ देख कर) यह क्या मामला है ?

तेज०। (मुस्कुरा कर) महाराज, बस अब काम निकला ही चाहता है। मैं जो कुछ अर्ज कर चुका वही बात है। कोई ऐयार मेरी सूरत बन आया है और आपको धोखा दिया चाहता है, लीजिये इस कम्बख्त को तो मैं अभी गिरफ्तार करता हूं फिर देखा जायगा। सरकार उसे हाजिर होने का हुक्म दें फिर देखें मैं क्या तमाशा करता हूं। मुझे जरा छिप जाने दें, वह आकर बैठ जाय तो मैं उसका पर्दा खोलूं।

महा०। तुम्हारा कहना ठीक है, बेशक कोई ऐयार है, अच्छा तुम छिप जाओ, मैं उसे बुलाता हूं।

तेज०। बहुत खूब, मैं छिप जाता हूं, मगर ऐसा है कि सरकार उसकी दाढ़ी मूंछ पर खूब ध्यान दें, मैं यकायक पर्दे से निकल कर उसकी दाढ़ी उखाड़ लूंगा क्योंकि नकली दाढ़ी जरा ही सा झटका चाहती है।

महा०। (हंस कर) अच्छा अच्छा, (खिदमतगार की तरफ देख कर) देख उससे और कुछ मत कहियो, केवल हाजिर होने का हुक्म सुना दे।

तेजसिंह दूसरे कमरे में जाकर छिप रहे और असली रामानन्द धीरे धीरे वहां पहुंचा जहां महाराज विराज रहे थे। रामानन्द को ताज्जुब था कि आज महाराज ने देर क्यों लगाई, इससे उसका चेहरा भी कुछ उदास सा हो रहा था। दाढ़ी तो वही थी जो तेजसिंह ने लगा दी थी। तेजसिंह ने दाढ़ी बनाते समय जान बूझ कर कुछ फर्क डाल दिया था, जिस पर रामानन्द ने तो कुछ ध्यान न दिया मगर वही फर्क अब महाराज की आंखों में खटकने लगा। जिस निगाह से कोई किसी बहुरूपिये को देखता है उसी निगाह से बिना कुछ बोले चाले महाराज अपने दीवान साहब को देखने लगे। रामानन्द यह देख कर और भी उदास हुआ कि इस समय महाराज की निगाह में अन्तर क्यों पड़ गया है।

तरद्दुद और ताज्जुब के सबब रामानन्द के चेहरे का रंग जैसे जैसे बदलता गया तैसे तैसे उसके ऐयार होने का शक भी महाराज के दिल में बैठता गया। कई सायत बीतने पर भी न तो रामानन्द ही कुछ पूछ सका और न महाराज ही ने उसे बैठने का हुक्म दिया। तेजसिंह ने अपने लिए यह मौका बहुत अच्छा समझा, झट बाहर निकल आये और हंसते हुए एक फर्शी सलाम उन्होंने रामानन्द को किया। ताज्जुब तरद्दुद और डर से रामानन्द के चेहरे का रंग उड़ गया और वह एकटक तेजसिंह की तरफ देखने लगा।

ऐयारी भी कठिन काम है। इस फन में सब से भारी हिस्सा जीवट का है। जो ऐयार जितना डरपोक होगा उतना ही जल्द फंसेगा। तेजसिंह को देखिये, किस जीवट का ऐयार है कि दुश्मन के घर में घुस कर भी जरा नहीं डरता और दिन दोपहर सच्चे को झूठा बना रहा है! ऐसे समय अगर जरा भी उसके चेहरे पर खौफ या तरद्दुद की निशानी आ जाय तो ताज्जुब नहीं कि वह खुद फंस जाय।

तेजसिंह ने रामानन्द को बात करने की भी मोहलत न दी, हंस कर उसकी तरफ देखा और कहा, "क्यों बे! क्या महाराज दिग्विजयसिंह के दर्बार को तैंने ऐसा वैसा समझ रक्खा है! क्या तैं यहां भी ऐयारी से काम निकालना चाहता है? यहां तेरी कारीगरी न लगेगी, देख तेरी गदहे की सी मुटाई मैं पचकाता हूं!"

तेजसिंह ने फुर्ती से रामानन्द की दाढ़ी पर हाथ डाल दिया और महाराज को दिखा कर एक झटका दिया। झटका तो जोर से दिया मगर इस ढंग से कि महाराज को बहुत हलका झटका मालूम हो। रामानन्द की नकली दाढ़ी अलग हो गई।

इस तमाशे ने रामानन्द को पागल सा बना दिया। उसके दिल में तरह तरह की बातें पैदा होने लगीं। यह समझ कर कि यह ऐयार मुझ सच्चे को झूठा किया चाहता है उसे क्रोध चढ़ आया और वह खंजर निकाल कर तेजसिंह पर झपटा, पर तेजसिंह वार बचा गए। महाराज को रामानन्द पर और भी शक बैठ गया। उन्होंने उठ कर रामानन्द की कलाई जिसमें खंजर लिए था मजबूती से पकड़ ली और एक घूंसा उसके मुंह पर दिया। ताकतवर महाराज के हाथ का घूंसा खाते ही रामानन्द का सर घूम गया और वह जमीन पर बैठ गया। तेजसिंह ने जेब से बेहोशी की दवा निकाली और जबर्दस्ती रामानन्द को सुंघा दी।

महा०। क्यों इसे बेहोश क्यों कर दिया?

तेज०। महाराज, गुस्से में आया हुआ और अपने को फंसा जान यह ऐयार न मालूम कैसी कैसी बेहूदी बातें बकता, इसलिये इसे बेहोश कर दिया। कैदखाने में ले जाने के बाद फिर देखा जायगा।

महा०। खैर यह भी अच्छा ही किया, अब मुझसे ताली लो और तहखाने में ले जाकर इसे दारोगा के सुपुर्द करो।

महाराज की बात सुन तेजसिंह घबड़ाये और सोचने लगे कि अब बुरी हुई। महाराज से तहखाने की ताली लेकर कहां जाऊं? मैं क्या जानूं तहखाना कहां है और दारोगा कौन है! बड़ी मुश्किल हुई! अगर जरा भी नाहीं नूकर करता हूं तो उल्टी आंतें गले पड़ती हैं। आखिर कुछ सोच विचार कर तेजसिंह ने कहा—

तेज०। महाराज भी साथ चलें तो ठीक है।

महा०। क्यों?

तेज०। दारोगा साहब इस ऐयार को और मुझे देख कर घबड़ायेंगे और उन्हें न जाने क्या क्या शक पैदा हो। यह पाजी अगर होश में आ जायेगा तो जरूर कुछ बात बनावेगा, आप रहेंगे तो दारोगा को किसी तरह का शक न होगा।

महा०। (हंस कर) अच्छा चलो हम भी चलते हैं।

तेज०। हां महाराज, फिर मुझे पीठ पर यह भारी लाश लादे ताला खोलने और बन्द करने में भी मुश्किल होगी।

महाराज ने अपने कलमदान में से ताली निकाली और खिदमतगार से एक

लालटेन मंगवा कर साथ ले ली। तेजसिंह ने रामानन्द की गठरी बांध पीठ पर लादी। तेजसिंह को साथ लिए हुए महाराज अपने सोने वाले कमरे में गये और दीवार में जड़ी हुई एक आलमारी का ताला खोला। तेजसिंह ने देखा कि दीवार पोली है और उस जगह से नीचे उतरने का एक रास्ता है। रामानन्द की गठरी लिए हुए महाराज के पीछे पीछे तेजसिंह नीचे उतरे, एक दालान में पहुंचने के वाद छोटी सी कोठरी में जाकर दर्वाजा खाला और वहुत वड़ी बारहदरी में पहुचे। तेजसिंह ने देखा कि बारहदरी के बीचोबीच में छोटी सी गद्दी लगाए एक वूढ़ा वैठा कुछ लिख रहा है जो महाराज को देखते ही उठ खड़ा हुआ और हाथ जोड़ कर सामने आया।

महा०। दारोगा साहव, देखिए आज रामानन्द ने दुश्मन के एक ऐयार को फांसा है, इसे अपनी हिफाजत में रखिये।

तेज०। (पीठ से गठरी उतार और उसे खोल कर) लीजिये, इसे सम्हालिए, अव आप जानिए।

दारोगा०। (ताज्जुब से) क्या यह दीवान साहव की सूरत वन कर आया था?

तेज०। जी हां, इसने मुझो को फजूल समझा।

महा०। (हंस कर) खैर चलो, अव दारोगा साहब इसका बन्दोवस्त कर लेंगे।

तेज०। महाराज यदि आज्ञा हो तो मैं ठहर जाऊं और इस नालायक को होश में लाकर अपने मतलव की बातों का कुछ पता लगाऊं, सरकार को भी अटकने के लिए मैं कहता परन्तु दर्वार का समय विल्कुल निकल जाने और दर्वार न करने से रिआया के दिल में तरह तरह के शक पैदा होंगे और आजकल ऐसा न होना चाहिए।

महा०। तुम ठीक कहते हो, अच्छा मैं जाता हूं, अपनी ताली साथ लिए जाता हूं और ताला वन्द करता जाता हूं, तुम दूसरी राह से दारोगा के साथ आना। (दारोगा की तरफ देख कर) आप भी आइएगा और अपना रोजनामचा लेते आइएगा।

तेजसिंह को उसी जगह छोड़ महाराज चले गए। रामानन्द रूपी तेजसिंह को लिए दारोगा साहव अपनी गद्दी पर आये और अपनी जगह तेजसिंह को बैठा कर आप नीचे वैठे। तेजसिंह ने आधे घण्टे तक दारोगा को अपनी बातों में खूब ही उलझाया इसके वाद यह कहते हुए उठे, "अच्छा अव इस ऐयार को होश में लाकर मालूम करना चाहिए कि यह कौन है," और ऐयार के पास आए। अपने जेब में हाथ डाल लखलखे की डिबिया खोजने लगे, आखिर बोले, "ओफ ओह, लखलखे की डिविया तो दीवानखाने में ही भूल-आये, अव क्या किया जाय?"

दारोगा०। मेरे पास लखलखे की डिबिया है, हुक्म हो तो लाऊं?

तेज० । लाइए मगर आपके लखलखे से यह होश में न आयेगा क्योंकि जो बेहोशी की दवा इसे दी गई वह मैंने नए ढंग से बनाई है और उसके लिए लखलखे का नुसखा भी दूसरा है, खैर लाइये तो सही शायद काम चल जाय ।

"बहुत अच्छा" कह कर दारोगा साहब लखलखा लेने चले गये, इधर निराला पा कर तेजसिंह ने दूसरी डिबिया जेब से निकाली जिसमें लाल रंग की कोई बुकनी थी, एक चुटकी रामानन्द के नाक में सांस के साथ चढ़ा दी और निश्चिन्त होकर बैठे । अब सिवा तेजसिंह के दूसरे का बनाया लखलखा उसे कब होश में ला सकता है, हां दो एक रोज तक पड़े रहने पर वह आप से आप चाहे भले ही होश में आ जाय ।

दम भरमें दारोगा साहब लखलखे की डिबिया लिये आ पहुंचे, तेजसिंह ने कहा, "बस आप ही सुंघाइये और देखिये इस लखलखेसे कुछ काम निकलता है या नहीं ।"

दारोगा साहब ने लखलखे की डिबिया बेहोश रामानन्द के नाक से लगाई पर क्या असर होना था, लाचार तेजसिंह का मुंह देखने लगे ।

तेज० । क्यों व्यर्थ मेहनत करते हैं, मैं पहिले ही कह चुका हूं कि इस लखलखे से काम नहीं चलेगा । चलिये महाराज के पास चलें, इसे यों ही रहने दीजिये, अपना लखलखा लेकर फिर लौटेंगे तो काम चलेगा ।

दारोगा० । जैसी मर्जी, इस लखलखे से तो काम नहीं चलता ।

दारोगा साहब ने रोजनामचे की किताब बगल में दाबी और तालियों का झब्बा और लालटेन हाथ में लेकर रवाना हुए । एक कोठरी में घुस कर दारोगा साहब ने दूसरा दर्वाजा खोला, ऊपर चढ़ने के लिये सीढ़ियां नजर आईं । ये दोनों ऊपर चढ़ गये और दो तीन कोठरियों स घुसते हुए एक सुरंग में पहुंचे । दूर तक चले जाने बाद इनका सर छत से अड़ा । दारोगा ने एक सूराख में ताली लगाई और खटका दबाया, एक पत्थर का टुकड़ा अलग हो गया और ये दोनों बाहर निकले । यहां तेजसिंह ने अपने को एक कब्रिस्तान में पाया ।

इस सन्तति के तीसरे भाग के चौदहवें बयान में हम इस कब्रिस्तान का हाल लिख चुके हैं । इसी राह से कुंअर आनन्दसिंह भैरोसिंह और तारासिंह उस तहखाने में गये थे । इस समय हम जो हाल लिख रहे हैं वह कुंअर आनन्दसिंह के तहखाने में जाने के पहिले का है, सिलसिला मिलाने के लिए फिर पीछे की तरफ लौटना पड़ा । तहखाने के हर एक दर्वाजे में पहिले ताला लगा रहता था मगर जब से तेजसिंह ने इसे अपने कब्जे में कर लिया (जिसका हाल आगे चल कर मालूम

होगा) तब से ताला लगाना बन्द हो गया, केवल खटकों पर ही कार्रवाई रह गई।

तेजसिंह ने चारो तरफ निगाह दौड़ा कर देखा और मालूम किया कि इस जंगल में जासूसी करते हुए कई दफे आ चुके हैं और इस कब्रिस्तान में भी पहुंच चुके हैं मगर मानते नहीं थे कि यह कब्रिस्तान क्या है और किस मतलब से बना हुआ है। अब तेजसिंह ने सोच लिया कि हमारा काम चल गया, दारोगा साहब को इसी जगह फंसाना चाहिये जाने न पावें।

तेज०। दारोगा साहब, हकीकत में तुम बड़े ही जूतीखोर हो।

दारोगा०। (ताज्जुब से तेजसिंह का मुंह देख के) मैंने क्या कसूर किया है जो आप गाली दे रहे हैं? ऐसा तो कभी नहीं हुआ था!!

तेज०। फिर मेरे सामने गुर्राता है! कान पकड़ के उखाड़ लूंगा!!

दारोगा०। आज तक महाराज ने भी कभी मेरी ऐसी बेइज्जती नहीं की थी!!

तेजसिंह ने दारोगा को एक लात ऐसी मारी कि बेचारा धम्म से जमीन पर गिर पड़ा। तेजसिंह उसकी छाती पर चढ़ बैठे और बेहोशी की दवा जबर्दस्ती नाक में ठूंस दी। बेचारा दारोगा बेहोश हो गया। तेजसिंह ने दारोगा की कमर से और अपनी कमर से भी चादर खोली और उसी में दारोगा की गठरी बांध ताली का गुच्छा और रोजनामचे की किताब भी उसी में रख पीठ पर लाद तेजो के साथ अपने लश्कर की तरफ रवाना हुए तथा दोपहर दिन चढ़ते चढ़ते राजा बीरेन्द्रसिंह के खेमे में जा पहुंचे। पहिले तो रामानन्द की सूरत देख बीरेन्द्रसिंह चौंके मगर जब बंधे हुए इशारे से तेजसिंह ने अपने को जाहिर किया तो वे बहुत ही खुश हुए।

तीसरा बयान

तेजसिंह के लौट आने से राजा बीरेन्द्रसिंह बहुत खुश हुए और उस समय तो उनकी खुशी और भी ज्यादे हो गई जब तेजसिंह ने रोहतासगढ़ आकर अपनी कार्रवाई करने का खुलासा हाल कहा। रामानन्द की गिरफ्तारी का हाल सुनकर हंसते हंसते लोट गये मगर साथ ही इसके यह सुन कर कि कुंअर इन्द्रजीतसिंह का पता रोहतासगढ़ में नहीं लगता बल्कि मालूम होता है कि रोहतासगढ़ में नहीं हैं, राजा बीरेन्द्रसिंह उदास हो गये। तेजसिंह ने उन्हें हर तरह से समझाया और दिलासा दिया। थोड़ी देर बाद तेजसिंह ने अपने दिल की वे सब बातें कहीं जो वे किया चाहते थे, बीरेन्द्रसिंह ने उनकी राय बहुत पसन्द की और बोले—

बीरेन्द्र० । तुम्हारी कौन सी ऐसी तरकीब है जिसे मैं पसन्द नहीं कर सकता ! हां यह कहो कि इस समय अपने साथ किस ऐयार को ले जाओगे ?

तेज० । मुझे तो इस समय कई ऐयारों की जरूरत थी मगर यहां केवल चार मौजूद हैं और बाकी सब कुंअर इन्द्रजीतसिंह का पता लगाने गये हैं, खैर कोई हर्ज नहीं ! पण्डित बद्रीनाथ को तो इसी लश्कर में रहने दीजिये, उन्हें किसी दूसरी जगह भेजना मैं मुनासिब नहीं समझता क्योंकि यहां बड़े ही चालाक और पुराने ऐयार का काम है, बाकी ज्योतिषीजी भैरो और तारा को मैं अपने साथ ले जाऊंगा।

बीरेन्द्र० । अच्छी बात है, इन तीनों से तुम्हारा काम बखूबी चलेगा ।

तेज० । जी नहीं मैं तीनों ऐयारों को अपने साथ नहीं रक्खा चाहता बल्कि भैरो और तारा को तो वहां का रास्ता दिखा कर वापस कर दूंगा, इसके बाद वे दोनों थोड़े से लड़ाकों को मेरे पास पहुंचा कर फिर आपको या कुंअर आनन्दसिंह को लेकर मेरे पास आवेंगे, तब वह सब कार्रवाई की जायगी जो मैं आपसे कह चुका हूं।

बीरेन्द्र० । और यह दारोगा वाली किताब जो तुम ले आये हो क्या होगी ?

तेज० । इसे फिर अपने साथ ले जाऊंगा और मौका मिलने पर शुरू से आखीर तक पढ़ जाऊंगा, यही तो एक चीज हाथ लगी है ।

बीरेन्द्र० । बेशक उम्दा चीज है, (किताब तेजसिंह के हाथ से लेकर) रोहतासगढ़ तहखाने का कुल हाल इससे तुम्हें मालूम हो जायगा बल्कि इसके अलावे वहां का और भी बहुत कुछ भेद मालूम होगा !

तेज० । जी हां, इसमें दारोगा ने रोज रोज का हाल लिखा है, मैं समझता हूं वहां ऐसी ऐसी और भी कई किताबें होंगी जो इसके पहिले के और दारोगाओं के हाथ से लिखी गई होंगी ।

बीरेन्द्र० । जरूर होंगी, और इससे उस तहखाने के खजाने का भी पता लगता है।

तेज० । लीजिए अब वह खजाना भी हमी लोगों का हुआ चाहता है ! अब हमें यहां देर न करके बहुत जल्द वहां पहुंचना चाहिए, क्योंकि दिग्विजयसिंह मुझे और दारोगा को अपने पास बुला गया था, देर हो जाने पर वह फिर तहखाने में आवेगा और किसी को न देखेगा तो सब काम ही चौपट हो जायगा ।

बीरेन्द्र० । ठीक है, अब तुम जाओ देर मत करो ।

कुछ जलपान करने के बाद ज्योतिषीजी भैरोसिंह और तारासिंह को साथ लिए हुए तेजसिंह वहां से रोहतासगढ़ की तरफ रवाना हुए और दो घण्टे दिन रहते ही तहखाने में जा पहुंचे । अभी तक तेजसिंह रामानन्द की सूरत में थे ।

तहखाने का रास्ता दिखाने के बाद भैरोसिंह और तारासिंह को तो वापस किया और ज्योतिषीजी को अपने पास रक्खा। अबकी दफे तहखाने से बाहर निकलने वाले दर्वाजे में तेजसिंह ने ताला नहीं लगाया, उन्हें केवल खटकों पर बन्द रहने दिया।

दारोगा वाले रोजनामचे के पढ़ने से तेजसिंह को बहुत सी बातें मालूम हुई जिसे यहां लिखने की कोई जरूरत नहीं, समय समय पर आप ही मालूम हो जायगा, हां उनमें से एक बात यहां लिख देना जरूरी है। जिस दालान में दारोगा रहता था उसमें एक खम्भे के साथ लोहे की एक तार बंधी हुई थी जिसका दूसरा सिरा छत में सूराख करके ऊपर की तरफ निकाल दिया गया था। तेजसिंह को किताब के पढ़ने से मालूम हुआ कि इस तार को खैंचने या हिलाने से वह घण्टा बोलेगा जो खास दिग्विजयसिंह के दीवानखाने में लगा हुआ है क्योंकि उस तार का दूसरा सिरा उसी घंटे से बंधा है। जब किसी तरह की मदद की जरूरत पड़ती थी तब दारोगा उस तार को छेड़ता था। उस दालान की बगल की एक कोठरी के अन्दर भी एक बड़ा सा घण्टा लटकता था जिसके साथ बंधी हुई लोहे की तार का दूसरा हिस्सा महाराज के दीवानखाने में था। महाराज भी जब तहखाने वालों को होशियार किया चाहते थे या और कोई जरूरत पड़ती थी तो ऊपर लिखी रीति से वह तहखाने वाला घंटा भी बजाया जाता और यह काम केवल महाराज का था क्योंकि तहखाने का हाल बहुत गुप्त था, तहखाना कैसा है और उसके अन्दर क्या होता है यह हाल सिवाय खास खास आठ दस आदमियों के और किसी को भी मालूम न था, इसके भेद मन्त्र की तरह गुप्त रक्खे जाते थे।

हम ऊपर लिख आये हैं कि असली रामानन्द को ऐयार समझ कर महाराज दिग्विजयसिंह तहखाने में ले आए और लौट कर जाती समय नकली रामानन्द अर्थात् तेजसिंह और दारोगा को कहते गये कि तुम दोनों फुरसत पाकर हमारे पास आना।

महाराज के हुक्म की तामील न हो सकी क्योंकि दारोगा को कैद कर तेजसिंह अपने लश्कर में ले गये और ज्यादा हिस्सा दिन का उधर ही बीत गया था जैसा कि हम ऊपर लिख आये हैं। जब तेजसिंह लौट कर तहखाने में आये तो ज्योतिषीजी को बहुत सी बातें समझाई और उन्हें दारोगा बना कर गद्दी पर बैठाया, उसी समय सामने की कोठड़ियों में से खटके की आवाज आई। तेजसिंह समझ गये कि महाराज आ रहे हैं, ज्योतिषीजी को तो लिटा दिया और कहा कि 'तुम हाय हाय करो, मैं महाराज से बातचीत करूंगा' थोड़ी देर में महाराज उस तहखाने में उसी राह से आ पहुंचे जिस राह से तेजसिंह को साथ लाए थे।

महा० । (तेजसिंह की तरफ देख कर) रामानन्द, तुम दोनों को हम अपने पास आने के लिए हुक्म दे गये थे, क्यों नहीं आये, और इस दारोगा को क्या हुआ जो हाय हाय कर रहा है ?

तेज० । महाराज इन्हीं के सबब से तो आना नहीं हुआ। यकायक बेचारे के पेट में दर्द पैदा हो गई, बहुत सी तर्कीबें करने के बाद अब कुछ आराम हुआ है।

महा० । (दारोगा के हाल पर अफसोस करने के बाद) उस ऐयार का कुछ हाल मालूम हुआ ?

तेज० । जी नहीं, उसने कुछ भी नहीं बताया, खैर क्या हर्ज है, दो एक दिन में पता लग ही जायगा, ऐयार लोग जिद्दी तो होते ही हैं।

थोड़ी देर बाद महाराज दिग्विजयसिंह वहां से चले गये। महाराज के जाने के बाद तेजसिंह भी तहखाने के बाहर हुए और महाराज के पास गये। दो घण्टे तक हाजिरी देकर शहर में गश्त करने के बहाने से बिदा हुए। पहर रात से कुछ ज्यादा गई थी कि तेजसिंह फिर महाराज के पास गये और बोले—

तेज० । मुझे जल्द लौट आते देख महाराज ताज्जुब करते होंगे मगर एक जरूरी खबर देने के लिये आना पड़ा।

महा० । वह क्या ?

तेज० । मुझे पता लगा है कि मेरी गिरफ्तारी के लिए कई ऐयार आये हुए हैं, महाराज होशियार रहें। अगर रात भर मैं उनके हाथ से बच गया तो कल जरूर कोई तर्कीब करूंगा, यदि फंस गया तो खैर।

महा० । तो आज रात भर तुम यहीं क्यों नहीं रहते ?

तेज० । क्या उन लोगों के खौफ से बिना कुछ कार्रवाई किये अपने को छिपाऊं ? यह नहीं हो सकता।

महा० । शाबाश, ऐसा ही मुनासिब है, खैर जाओ जो होगा देखा जायगा।

तेजसिंह घर की तरफ लौटे, रामानन्द के घर की तरफ नहीं बल्कि अपने लश्कर की तरफ। उन्होंने इस बहाने अपनी जान बचाई और चलते हुए। सवेरे जब दर्बार में रामानन्द न आए, महाराज को विश्वास हो गया कि बीरेन्द्रसिंह के ऐयारों ने उन्हें फंसा लिया।

चौथा बयान

अपनी कार्रवाई पूरी करने के बाद तेजसिंह ने सोचा कि अब असली रामानन्द को तहखाने से ऐसी खूबसूरती के साथ निकाल लेना चाहिए जिसमें महाराज को किसी तरह का शक न हो और यह गुमान भी न हो कि तहखाने में बीरेन्द्रसिंह के ऐयार लोग घुसे हैं या तहखाने का हाल किसी दूसरे को मालूम हो गया है, यह काम तभी हो सकता है जब कोई ताजा मुर्दा हाथ लगे।

रोहतासगढ़ से चल कर तेजसिंह अपने लश्कर में पहुंचे और सब हाल बीरेन्द्रसिंह से कहने के बाद कई जासूसों को इस काम के लिए रवाना किया कि अगर कहीं कोई ताजा मुर्दा जो सड़ न गया हो या फूल न गया हो मिले तो उठा लावें और लश्कर के पास ही कहीं रख कर हमें इत्तिला दें। इत्तिफाक से लश्कर से दो तीन कोस की दूरी पर नदी के किनारे एक लावारिस भिखमंगा उसी दिन मरा था जिसे जासूस लोग शाम होते होते उठा लाये और लश्कर से कुछ दूर रख तेजसिंह को खबर की। भैरोसिंह को साथ लेकर तेजसिंह मुर्दे के पास गए और अपनी कार्रवाई करने लगे।

तेजसिंह ने उस मुर्दे को ठीक रामानन्द की सूरत का बनाया और भैरोसिंह की मदद* से उठा कर रोहतासगढ़ तहखाने के अन्दर ले गये और तहखाने के दारोगा (ज्योतिषीजी) के सुपुर्द कर और उसके बारे में बहुत सी बातें समझा बुझा कर असली रामानन्द को अपने लश्कर में उठा लाये।

तेजसिंह के जाने के बाद हमारे नए दारोगा साहब ने खम्भे से बंधे हुए उस तार को खैंचा जिसके सबब से दिग्विजयसिंह के दीवानखाने वाला घण्टा बोलता था। उस समय दो घण्टे रात जा चुकी थी, महाराज अपने कई मुसाहबों को साथ लिए दीवानखाने में बैठे दुश्मन पर फतह पाने के लिए बहुत सी तरकीबें सोच रहे थे, यकायक घण्टे की आवाज सुन कर चौंके और समझ गये कि तहखाने में हमारी जरूरत है। दिग्विजयसिंह उसी समय उठ खड़े हुए और उन जल्लादों को बुलाने का हुक्म दिया जो जरूरत पड़ने पर तहखाने में जाया करते थे और जान के खौफ या निमकहलाली के सबब से वहां का हाल किसी दूसरे से कभी नहीं कहते थे।

महाराज दूसरे कमरे में गए, जब तक कपड़े बदल कर तैयार हों जल्लाद

---

* मुर्दा अक्सर ऐंठ जाया करता है इसलिए गठरी में बंध नहीं सकता, लाचार दो आदमी मिल कर उठा ले गये।

लोग भी हाजिर हुए। ये जल्लाद बड़े ही मजबूत ताकतबर और कद्दावर थे। स्याह रंग, मूछें चढ़ी हुई, पोशाक में केवल जांघिया मिर्जई और कन्टोप पहिरे, हाथ में भारी तेगा लिए बड़े ही भयंकर मालूम होते थे। महाराज नें केवल चार जल्लादों को साथ लिया और उसी मामूली रास्ते से तहखाने में उतर गए। महाराज को आते देख दारोगा चैतन्य हो गया और सामने आ हाथ जोड़ कर बोला, "लाचार महाराज को तकलीफ देनी पड़ी।"

महाराज०। क्या मामला है ?

दारो०। वह ऐयार मर गया जिसे दीवान रामानन्दजी ने गिरफ्तार किया था।

महा०। (चौंक कर) हैं, मर गया !

दारोगा०। जी हां मर गया, न मालूम कैसी जहरीली बेहोशी दी गई थी कि जिसका असर यहां तक हुआ।

महा०। यह बहुत ही बुरा हुआ, दुश्मन समझेगा कि दिग्विजयसिंह ने जान बूझ कर हमारे ऐयार को मार डाला जो कायदे के बाहर की बात है। दुश्मनों को अब हमसे जिद्द हो जायगी और वे भी कायदे के खिलाफ बेहोशी की जगह जहर का बर्ताव करने लगेंगे तो हमारा बड़ा नुकसान होगा और बहुत आदमी जान से मारे जायेंगे।

दारोगा०। लाचारी है, फिर क्या किया जाय ? भूल तो दीवान साहब की है।

महा०। (कुछ जोश में आकर) रामानन्द तो पूरा उजड्ड है ! झक मारने के लिए उसने अपने को ऐयार मशहूर कर रक्खा है, तभी तो बीरेन्द्रसिंह का एक अदना ऐयार आया और उसे पकड़ कर ले गया, चलो छुट्टी हुई !

महाराज की बातें सुन कर मन ही मन ज्योतिषीजी हंसते और कहते थे कि देखो कितना होशियार और बहादुर राजा क्या जरा सी बात में बेवकूफ बना है। वाह रे तेजसिंह, तू जो चाहे कर सकता है।

महाराज ने रामानन्द की लाश को खुद देखा और दूसरी जगह ले जाकर जमीन में गाड़ देने के लिए जल्लादों को हुक्म दिया। जल्लादों ने उसी तहखाने में एक जगह जहां मुर्दे गाड़े जाते थे ले जाकर उस लाश को दबा दिया, महाराज अफसोस करते हुए तहखाने के बाहर निकल आए और इस सोच में पड़े कि देखें बीरेन्द्रसिंह के ऐयार लोग इसका क्या बदला लेते हैं।

पांचवां बयान

ऊपर लिखी वारदात के तीसरे दिन दारोगा साहब अपनी गद्दी पर बैठे रोब नामचा देख रहे थे और उस तहखाने की पुरानी बातें पढ़ पढ़ कर ताज्जुब कर रहे थे कि यकायक पीछे की कोठरी में खटके की आवाज आई। घबरा कर उठ खड़े हुए और पीछे की तरफ देखने लगे। फिर आवाज आई। ज्योतिषीजी दर्वाजा खोल कर अन्दर गये, मालूम हुआ कि उस कोठरी के दूसरे दर्वाजे से कोई भागा जाता है। कोठरी में विलकुल अंधेरा था, ज्योतिषीजी कुछ आगे बढ़े ही थे कि जमीन पर पड़ी हुई एक लाश उनके पैर में अड़ी जिसकी ठोकर खा वे गिर पड़े मगर फिर सम्हल कर आगे बढ़े लेकिन ताज्जुब करते थे कि यह लाश किसकी है। मालूम होता है यहां कोई खून हुआ है, और ताज्जुब नहीं कि वह भागने ही वाला खूनी हो!

वह आदमी आगे आगे सुरंग में भागा जाता था और पीछे पीछे ज्योतिषीजी हाथ में खंजर लिए दौड़े जा रहे थे मगर उसे किसी तरह पकड़ न सके। यकायक सुरंग के मुहाने पर रोशनी मालूम हुई। ज्योतिषीजी समझे कि अब वह बाहर निकल गया। दम भर में ये भी वहां पहुंचे और सुरंग के बाहर निकल चारो तरफ देखने लगे। ज्योतिषीजी की पहिली निगाह जिस पर पड़ी वह पण्डित बद्रीनाथ थे, देखा कि एक औरत को पकड़े हुए बद्रीनाथ खड़े हैं और दिन आधी घड़ी से कम बाकी है।

बद्री०। दारोगा साहब, देखिये आपके यहां चोर घुसे और आपको खबर भी न हो!

ज्यो०। अगर खबर न होती तो पीछे पीछे दौड़ा हुआ यहां तक क्यों आता।

बद्री०। फिर भी आपके हाथ से तो चोर निकल ही गया था अगर इस समय हम न पहुंच जाते तो आप इसे न पा सकते।

ज्यो०। हां वेशक इसे मैं मानता हूं। क्या आप पहिचानते हैं कि यह कौन है? याद आता है कि इस औरत को मैंने कभी देखा है।

बद्री०। जरूर देखा होगा, खैर इसे तहखाने में ले चलो फिर देखा जायगा। इसका तहखाने से खाली हाथ निकलना मुझे ताज्जुब में डालता है।

ज्यो०। यह खाली हाथ नहीं बल्कि हाथ साफ करके आई है। इसके पीछे आती समय एक लाश मेरे पैर में अड़ी थी मगर पीछा करने की धुन में मैं कुछ न कर सका।

पण्डित बद्रीनाथ और ज्योतिषीजी उस औरत को गरफ्तार किए हुए तहखाने में आये और उस दालान या बारहदरी में जिसमें दारोगा साहब की गद्दी लगी रहती थी पहुंचे। उस औरत को खम्भे के साथ बांध दिया और हाथ में लालटेन ले उस लाश को देखने गये जो ज्योतिषीजी के पैर में अड़ी थी। बद्रीनाथ ने देखते ही उस लाश को पहिचान लिया और बोले, "यह तो माधवी है!"

ज्योतिषी०। यह यहां क्योंकर आई! (माधवी की नाक पर हाथ रखकर) अभी दम है, मरी नहीं। यह देखिए इसके पेट में जख्म लगा है। जख्म कारी नहीं है, बच सकती है।

बद्री०। (नब्ज देख कर) हां बच सकती है, खैर इसके जख्म पर पट्टी बांध कर इसी तरह छोड़ दो, फिर बूझा जायगा। हां थोड़ा सा अर्क इसके मुंह में डाल देना चाहिए।

बद्रीनाथ ने माधवी के जख्म पर पट्टी बांधी और थोड़ा सा अर्क भी उसके मुंह में डाल कर उसे वहां से उठा दूसरी कोठरी में ले गए। इस तहखाने में कई जगह से रोशनी और हवा पहुंचा करती थी, कारीगरों ने इसके लिए अच्छी तर्कीब की थी, बद्रीनाथ और ज्यातिषीजी माधवी को उठा कर एक ऐसी कोठरी में ले गये जहां बादाकश की राह से ठण्ढी ठण्ढी हवा आ रही थी और उसे उसी जगह छोड़ आप बारहदरी में आए जहां उस औरत को जिसने माधवी को घायल किया था खम्भे के साथ बांधा था। बद्रीनाथ ने धीरे से ज्योतिषीजी से कहा कि 'आज कुंअर आनन्दसिंह और उनके थोड़ी ही देर बाद मैं बीस पचीस आदमियों को साथ लेकर यहां आऊंगा। अब मैं जाता हूं, वहां बहुत कुछ काम है, केवल इतना ही कहने के लिए आया था। मेरे जाने बाद तुम इस औरत से पूछताछ लेना कि यह कौन है, मगर एक बात का खौफ है'।

ज्योतिषी०। वह क्या?

बद्री०। यह औरत हम लोगों को पहिचान गई है, कहीं ऐसा न हो कि तुम महाराज को बुलाओ और वे आ जावें तो यह कह उठे कि दारोगा साहब तो राजा बीरेन्द्रसिंह के ऐयार हैं!

ज्योतिषी०। जरूर ऐसा होगा, इसका भी बन्दोबस्त कर लेना चाहिए।

बद्री०। खैर कोई हर्ज नहीं, मेरे पास मसाला तैयार है। (बटुए में से एक डिबिया निकाल कर और ज्योतिषीजी के हाथ में देकर) इसे आप रक्खें, जब मौका हो तो इसमें से थोड़ी सी दवा इसकी जबान पर जबर्दस्ती मल दीजिएगा,

बात की बात में जुबान ऐंठ जायगी फिर यह साफ तौर पर कुछ भी न कह सकेगी। तब जो आपके जी में आवे महाराज को समझा दें।

बद्रीनाथ वहां से चले गये। उनके जाने के बाद उस औरत को डरा धमका और कुछ मारपीट कर ज्योतिषीजी ने उसका हाल मालूम करना चाहा मगर कुछ न हो सका, पहरों की मेहनत बर्बाद गई। आखिर उस औरत ने ज्योतिषीजी से कहा, "ज्योतिषीजी, मैं आपको अच्छी तरह से जानती हूं। आप यह न समझिए कि माधवी को मैंने मारा है, उसको घायल करने वाला कोई दूसरा ही था, खैर इन सब बातों से कोई मतलब नहीं क्योंकि अब तो माधवी भी आपके कब्जे में नहीं रही।"

ज्योतिषी०। माधवी मेरे कब्जे में से कहां जा सकती है?

औरत०। जहां जा सकती थी वहां गई, आप जहां रख आये थे वहां जाकर देखिये है या नहीं।

औरत की बात सुन कर ज्योतिषीजी बहुत घबराए और उठ खड़े हुए, वहां गए जहां माधवी को छोड़ आये थे। उस औरत की बात सच निकली, माधवी का वहां पता भी न था। हाथ में लालटेन ले घण्टों ज्योतिषीजी इधर उधर खोजते रहे मगर कुछ फायदा न हुआ, आखिर लौट कर फिर उस औरत के पास आये और बोले, "तेरी बात ठीक निकली मगर अब मैं तेरी जान लिये बिना नहीं रहता, हां अगर सच सच अपना हाल बता दे तो छोड़ दूं।"

ज्योतिषीजी ने हजार सिर पटका मगर उस औरत ने कुछ भी न कहा। इसी औरत के चिल्लाने या बोलने की आवाज किशोरी और लाली ने इस तहखाने में आकर सुनी थी जिसका हाल इस हिस्से के पहिले बयान में लिख आये हैं क्योंकि इसी समय लाली और किशोरी भी वहां आ पहुंची थीं।

ज्योतिषीजी ने किशोरी को पहिचाना, किशोरी के साथ लाली का नाम लेकर भी पुकारा, मगर अभी यह नहीं मालूम हुआ कि लाली क ज्योतिषीजी क्योंकर और कब से जानते थे, हां किशोरी और लाली को इस बात का ताज्जुब था कि दारोगा ने उन्हें क्योंकर पहिचान लिया क्योंकि ज्योतिषीजी दारोगा के भेष में थे।

ज्योतिषीजी ने किशोरी और लाली को अपने पास बुला कर कुछ बात करना चाहा मगर मौका न मिला। उसी समय घण्टे के बजने की आवाज आई और ज्योतिषीजी समझ गये कि महाराज आ रहे हैं। मगर इस समय महाराज क्यों आते हैं! शायद इस वजह से कि लाली और किशोरी इस तहखाने में घुस आई हैं और इसका हाल महाराज को मालूम हो गया है।

जल्दी के मारे ज्योतिषीजी सिर्फ दो काम कर सके, एक तो किशोरी और लाली की तरफ देख कर बोले, "अफसोस, अगर आधी घड़ी की भी मोहलत मिलती तो तुम्हें यहां से निकाल ले जाता, क्योंकि यह सब बखेड़ा तुम्हारे ही लिए हो रहा है।" दूसरे उस औरत की जुबान पर मसाला लगा सके जिसमें वह महाराज के सामने कुछ कह न सके। इतने ही में मशालचियों और कई जल्लादों को लेकर महाराज आ पहुंचे और ज्योतिषीजी की तरफ देख कर बोले, "इस तहखाने में किशोरी और लाली आई हैं, तुमने देखा है?"

दारोगा०। (खड़े होकर) जी अभी तक तो यहां नहीं पहुंचीं।

राजा०। खोजो कहां हैं, यह औरत कौन है?

दारोगा०। मालूम नहीं कौन है और क्यों आई है? मैंने इसी तहखाने में इसे गिरफ्तार किया है, पूछने से कुछ नहीं बताती।

राजा०। खैर किशोरी और लाली के साथ इसे भी भूतनाथ पर चढ़ा देना (बलि देना) चाहिये क्योंकि यहां का बंधा कायदा है कि लिखे आदमियों के सिवा दूसरा जो इस तहखाने को देख ले उसे तुरत बलि दे देना चाहिये।

सब लोग किशोरी और लाली को खोजने लगे। इस समय ज्योतिषीजी घबड़ाये और ईश्वर से प्रार्थना करने लगे कि कुंअर आनन्दसिंह और हमारे ऐयार लोग जल्द यहां आवें जिसमें किशोरी की जान बचे।

किशोरी और लाली कहीं दूर न थीं, तुरत गिरफ्तार कर ली गईं और उनकी मुश्कें बंध गईं। इसके बाद उस औरत से महाराज ने कुछ पूछा जिसकी जुबान पर ज्योतिषीजी ने दवा मल दी थी, पर उसने महाराज की बात का कुछ भी जवाब न दिया। आखिर खंभे से खोल कर उसकी भी मुश्कें बांध दी गईं और तीनों औरतें एक दर्वाजे की राह दूसरी संगीन बारहदरी में पहुंचाई गईं जिसमें सिंहासन के ऊपर स्याह पत्थर की वह भयानक मूरत बैठी हुई थी जिसका हाल इस सन्तति के तीसरे हिस्से के आखिरी बयान में हम लिख आये हैं। इसी समय आनन्दसिंह भैरोसिंह और तारासिंह वहां पहुंचे और उन्होंने अपनी आंखों से उस औरत के मारे जाने का दृश्य देखा जिसकी जुबान पर दवा लगा दी गई थी। जब किशोरी के मारने की बारी आई तब कुंअर आनन्दसिंह और दोनों ऐयारों से न रहा गया और उन्होंने खंजर निकाल कर उस झुण्ड पर टूट पड़ने का इरादा किया मगर न हो सका क्योंकि पीछे से कई आदमियों ने आकर इन तीनों को पकड़ लिया।

छठवां बयान

अब हम अपने किस्से के सिलसिले को मोड़ कर दूसरी तरफ झुकते हैं और पाठकों को पुण्यधाम काशी में ले चल कर संध्या के समय गंगा के किनारे बैठी हुई एक नौजवान औरत की अवस्था पर ध्यान दिलाते हैं।

सूर्य भगवान अस्त हो चुके हैं, चारो तरफ अंधेरी घिरी आती है। गंगाजी शान्त भाव से धीरे धीरे बह रही हैं। आसमान पर छोटे छोटे बादल के टुकड़े पूरब की तरफ से चले आकर पश्चिम की तरफ इकट्ठे हो रहे हैं। गंगा के किनारे हो पर एक नौजवान औरत जिसकी उम्र पन्द्रह वर्ष से ज्यादे न होगी हथेली पर गाल रक्खे जल को तरफ देखती न मालूम क्या सोच रही है। इसमें कोई शक नहीं कि यह औरत नखसिख से दुरुस्त और खूबसूरत है मगर रंग इसका सांवला है, तो भी इसकी खूबसूरती और नजाकत में किसी तरह का बट्टा नहीं लगता। थोड़ी थोड़ी देर पर यह औरत सर उठा कर चारो तरफ देखती और फिर उसी तरह हथेली पर गाल रख कर कुछ सोचने लग जाती है।

इसके सामने ही गंगाजी में एक छोटा सा बजड़ा खड़ा है जिस पर चार पांच आदमी दिखाई दे रहे हैं और कुछ सफर का सामान और दो चार हर्बे भी मौजूद हैं।

थोड़ी देर में अंधेरा हो जाने पर वह औरत उठी, साथ ही बजड़े पर से दो सिपाही उतर आए और उसे सहारा देकर बजड़े पर ले गये। वह छत पर जा बैठी और किनारे की तरफ इस तरह देखने लगी जैसे किसी के आने की राह देख रही हो। बेशक ऐसा ही था, क्योंकि उसी समय हाथ में गठरी लटकाये एक आदमी आया जिसे देखते ही दो मल्लाह किनारे पर उतर आये, एक ने उसके हाथ से गठरी लेकर बजड़े की छत पर पहुंचा दिया और दूसरे ने उस आदमी को हाथ का हलका सहारा देकर बजड़े पर चढ़ा लिया। वह भी छत पर उस औरत के सामने खड़ा हो गया और तब इशारे से पूछा कि 'अब क्या हुक्म होता है'? जिसके जवाब में इशारे ही से उस औरत ने गंगा के उस पार की तरफ चलने को कहा। उस आदमी ने जो अभी आया था मांझियों को पुकार कर कहा कि बजड़ा उस पार ले चलो, इसके बाद अभी आए हुए आदमी और उस औरत में दो चार बातें इशारे में हुई जिसे हम कुछ नहीं समझे, हां इतना मालूम हो गया कि यह औरत गूंगी और बहरी है, मुंह से कुछ नहीं बोल सकती और न कान से कुछ सुन सकती है।

बजड़ा किनारे से खोला गया और पार की तरफ चला, चार मांझी डांड़ लगाने लगे। वह औरत छत से उतर कर नीचे चली गई और मर्द भी अपनी गठरी जो लाया था लेकर छत से नीचे उतर आया। बज़ड़े में नीचे दो कोठरियां थीं, एक में सुन्दर सुफ़ेद फर्श बिछा हुआ था और दूसरी में एक चारपाई बिछी और कुछ असबाब पड़ा हुआ था। यह औरत हाथ से कुछ इशारा करके फर्श पर बैठ गई और मर्द ने एक पटिया लकड़ी की और छोटी सी टुकड़ी खड़िये की उसके सामने रख दी और आप भी बैठ गया और दोनों में बातचीत होने लगी मगर उसी लकड़ी की पटिया पर खड़िया से लिख कर। अब उन दोनों में जो बातचीत हुई हम नीचे लिखते हैं परन्तु पाठक समझ रक्खें कि कुल बातचीत लिख कर हुई।

पहले उस औरत ने गठरी खोली और देखने लगी कि उसमें क्या है। पीतल का एक कलमदान निकला जिसे उस औरत ने खोला। पांच सात चीठियां और पुर्जे निकले जिन्हें पढ़ कर उसी तरह रख दिया और दूसरी चीजें देखने लगी। दो चार तरह के रूमाल और कुछ पुराने सिक्के देखने बाद टीन का एक बड़ा सा डिब्बा खोला जिसके अन्दर कोई ताज्जुब की चीज थी। डिब्बा खोलने बाद पहिले कुछ कपड़ा हटाया जो बेठन की तौर पर लगा हुआ था, इसके बाद झांक कर उस चीज को देखा जो उस डिब्बे के अन्दर थी।

न मालूम उस डिब्बे में क्या चीज थी कि जिसे देखते ही उस औरत की अवस्था बिल्कुल बदल गई। झांक के देखते ही वह हिचकी और पीछे की तरफ हट गई, पसीने से तर हो गई और बदन कांपने लगा, चेहरे पर हवाई उड़ने लगी और आंखें बन्द हो गईं। उस आदमी ने फुर्ती से बेठन का कपड़ा डाल दिया और उस डिब्बे को उसी तरह बन्द कर उस औरत के सामने से हटा लिया। उसी समय बजड़े के बाहर से एक आवाज आई, "नानकजी!"

नानक प्रसाद उसी आदमी का नाम था जो गठरी लाया था। उसका कद न लम्बा और न बहुत नाटा था। बदन मोटा, रंग गोरा, और ऊपर के दांत कुछ खुड़बुड़े से थे। आवाज सुनते ही वह आदमी उठा और बाहर आया, मल्लाहों ने डांड़ लगाना बन्द कर दिया था, और तीन सिपाही मुस्तैद दर्वाजे पर खड़े थे।

नानक०। (एक सिपाही से) क्या है?

सिपाही०। (पार की तरफ इशारा करके) मुझे मालूम होता है कि उस पार बहुत से आदमी खड़े हैं। देखिए कभी कभी बादल टूट जाने से जब चन्द्रमा की रोशनी पड़ती है तो साफ मालूम होता है कि वे लोग भी बहाव की तरफ हटे ही

जाते हैं जिधर हमारा बजड़ा आ रहा है।

नानक०। (गौर से देख कर) हां ठीक तो है।

सिपाही०। क्या ठिकाना शायद हमारे दुश्मन ही हों।

नानक०। कोई ताज्जुब नहीं, अच्छा तुम नाव को बहाव की तरफ जाने दो, पार मत चलो।

इतना कह कर नानकप्रसाद अन्दर गया, तब तक औरत के भी हवास ठीक हो गये थे और वह उस टीन के डिब्बे की तरफ जो इस समय बन्द था बड़े गौर से देख रही थी। नानक को देख कर उसने इशारे से पूछा, "क्या है?",

इसके जवाब में नानक ने लकड़ी की पटिया पर खड़िया से लिख कर दिखाया कि 'पार की तरफ बहुत से आदमी दिखाई पड़ते हैं, कौन ठिकाना शायद हमारे दुश्मन हों।'

औरत०। (लिख कर) बजड़े को बहाव की तरफ जाने दो। सिपाहियों को कहो बन्दूक लेकर तैयार रहें, अगर कोई जल में तैर कर यहां आता हुआ दिखाई पड़े तो बेशक गोली मार दें।

नानक०। बहुत अच्छा।

नानक फिर बाहर आया और सिपाहियों को हुक्म सुना कर भीतर चला गया। उस औरत ने अपने आंचल से एक ताली खोल कर नानक के हाथ में दी और इशारे से कहा कि इस टीन के डिब्बे को हमारे सन्दूक में रख दो।

नानक ने वैसा ही किया, दूसरी कोठरी में जिसमें पलंग बिछा हुआ था और कुछ असबाब और सन्दूक रखा हुआ था गया और उसी ताली से एक सन्दूक खोल कर वह टीन का डिब्बा रख दिया और उसी तरह ताला बन्द कर ताली उस औरत के हवाले की। उसी समय बाहर से बन्दूक की आवाज आई।

नानक ने तुरत बाहर आकर पूछा, "क्या है?"

सिपाही०। देखिये कई आदमी तैर कर इधर आ रहे हैं।

दूसरा०। मगर बन्दूक की आवाज पाकर अब लौट चले।

नानक फिर अन्दर गया और बाहर का हाल पटिया पर लिख कर औरत को समझाया। वह भी उठ खड़ी हुई और बाहर आ कर पार की तरफ देखने लगी। घण्टा भर यों ही गुजर गया और अब वे आदमी जो पार दिखाई दे रहे थे या तैर कर इस बजड़े की तरफ आ रहे थे कहीं चले गये, दिखाई नहीं देते। नानकप्रसाद को साथ आने का इशारा करके वह औरत फिर बजड़े के अन्दर

चली गई और पीछे नानक भी गया। उस गठरी में और जो जो चीजें थीं वह गूंगी औरत देखने लगी। तीन चार बेशकीमत मर्दाने कपड़ों के सिवाय और उस गठरी में कुछ भी न था। गठरी बांध कर एक किनारे रख दी गई और पटिया पर लिख लिख कर दोनों में बातचीत होने लगी।

औरत०। कलमदान में जो चीठियां हैं वे तुमने कहां से पाईं ?

नानक०। उसी कलमदान में थीं।

औरत०। और वह कलमदान कहां पर था ?

नानक०। उसकी चारपाई के नीचे पड़ा हुआ था, घर में सन्नाटा था और कोई दिखाई न पड़ा, जो कुछ जल्दी में पाया ले आया।

औरत०। खैर कोई हर्ज नहीं, हमें केवल उस टीन के डिब्बे से मतलब था। यह कलमदान मिल गया तो इन चीठी पुर्जों से भी बहुत काम चलेगा।

इसके अलावे और कई बातें हुईं जिसके लिखने की यहां कोई जरूरत नहीं। पहर रात से ज्यादे जा चुकी थी जब वह औरत वहां से उठी और शमादान जो जल रहा था बुझा अपनी चारपाई पर जा कर लेट रही। नानक भी एक किनारे फर्श पर सो रहा और रात भर नाव बेखटके चली गई, कोई बात ऐसी नहीं हुई जो लिखने योग्य हो।

जब थोड़ी रात बाकी रही वह औरत अपनी चारपाई से उठी और खिड़की से बाहर झांक कर देखने लगी। इस समय आसमान बिल्कुल साफ था, चन्द्रमा के साथ ही साथ तारे भी समयानुसार अपनी चमक दिखा रहे थे और दो तीन खिड़कियों की राह इस बजड़े के अन्दर भी चांदनी आ रही थी। बल्कि जिस चारपाई पर वह औरत सोई हुई थी चन्द्रमा की रोशनी अच्छी तरह पड़ रही थी। वह औरत धीरे से चारपाई के नीचे उतरी और उस संदूक को खोला जिसमें नानक का लाया हुआ टीन का डिब्बा रखवा दिया था। डिब्बा उसमें से निकाल कर चारपाई पर रक्खा और सन्दूक बन्द करने के बाद दूसरा सन्दूक खोल कर उसमें से एक मोमबत्ती निकाली और चारपाई पर आकर बैठ रही। मोमबत्ती में से मोम लेकर उसने टीन के डिब्बे की दरारों को अच्छी तरह बन्द किया और हर एक जोड़ में मोम लगाया जिसमें हवा तक भी उसके अन्दर न जा सके। इस काम के बाद वह खिड़की के बाहर गर्दन निकाल कर बैठी और किनारे की तरफ देखने लगी। दो मांझी धीरे धीरे डांड़ खे रहे थे, जब वे थक जाते तो दूसरे दो को उठा कर उसी काम पर लगा देते और आप आराम करते।

सवेरा होते होते वह नाव एक ऐसी जगह पहुंची जहां किनारे पर कुछ आबादी थी, बल्कि गंगा के किनारे ही एक ऊंचा शिवालय भी था और उतर कर गंगाजी में स्नान करने के लिए सीढ़ियां भी बनी हुई थीं। औरत ने उस मुकाम को अच्छी तरह देखा और जब वह बजड़ा उस शिवालय के ठीक सामने पहुंचा तब उसने टीन का डिब्बा जिसमें कोई अद्भुत वस्तु थी और जिसके सूराखों को उसने अच्छी तरह मोम से बन्द कर दिया था जल मे फेंक दिया और फिर अपनी चारपाई पर लेट रही। यह हाल किसी दूसरे को मालूम न हुआ। थोड़ी ही देर में वह आबादी पीछे रह गई और बजड़ा दूर निकल गया।

जब अच्छी तरह सवेरा हुआ और सूर्य की लालिमा निकल आई तो उस औरत के हुक्म के मुताबिक बजड़ा एक जंगल के किनारे पहुंचा। उस औरत ने किनारे किनारे चलने का हुक्म दिया। यह किनारा इसी पार का था जिस तरफ काशी पड़ती है या जिस हिस्से से बजड़ा खोल कर सफर शुरू किया गया था।

बजड़ा किनारे किनारे जाने लगा और वह औरत किनारे के दरख्तों को बड़े गौर से देखने लगी। जंगल गुंजान और रमणीक था, सुबह के सुहावने समय में तरह तरह के पच्छी बोल रहे थे, हवा के झपेटों के साथ जंगली फूलों की मीठी खुशबू आ रही थी। वह औरत एक खिड़की में सिर रक्खे जंगल की शोभा देख रही थी। यकायक उसकी निगाह किसी चीज पर पड़ी जिसे देखते ही वह चौंकी और बाहर आकर बजड़ा रोकने और किनारे लगाने का इशारा करने लगी।

बजड़ा किनारे लगाया गया और वह गूंगी औरत अपने सिपाहियों को कुछ इशारा करके नानक को साथ लेकर नीचे उतरी।

घन्टे भर तक वह जंगल में घूमती रही, इसी बीच में उसने अपने जरूरी काम और नहाने धोने से छुट्टी पा ली और तब बजड़े में आकर कुछ भोजन करने के बाद उसने अपनी मर्दानी सूरत बनाई। चुस्त पायजामा, घुटने के ऊपर तक का चपकन, कमरबन्द, सर में बड़ा सा मुंड़ासा बांधा और ढाल तलवार खंजर के अलावे एक छोटी सी पिस्तौल जिसमें गोली भरी हुई थी कमर में छिपा और थोड़ी सी गोली बारूद भी पास रख बजड़े से उतरने के लिए तैयार हुई।

नानक ने उसकी ऐसी अवस्था देखी तो सामने अड़ कर खड़ा हो गया और इशारे से पूछा कि अब हम क्या करें? इसके जवाब में उस औरत ने पटिया और खड़िया मांगी और लिख लिख कर दोनों में बातचीत होने लगी।

औरत०। तुम इसी बजड़े पर अपने ठिकाने चले जाओ। मैं तुमसे आ मिलूंगी।

नानक०। मैं किसी तरह तुम्हें अकेला नहीं छोड़ सकता, तुम खूब जानती हो कि तुम्हारे लिए मैंने कितनी तकलीफें उठाई हैं और नीच से नीच काम करने को तैयार रहा हूं।

औरत०। तुम्हारा कहना ठीक है मगर मुझ गूंगी के साथ तुम्हारी जिन्दगी खुशी से नहीं बीत सकती, हां तुम्हारी मुहब्बत के बदले मैं तुम्हें अमीर किये देती हूं जिसके जरिये तुम खूबसूरत से खूबसूरत औरत ढूंढ़ कर शादी कर सकते हो।

नानक०। अफसोस, आज तुम इस तरह की नसीहत करने पर उतारू हुई और मेरी सच्ची मुहब्बत का कुछ खयाल न किया। मुझे धन दौलत की परवाह नहीं और न मुझे तुम्हारे गूंगी होने का रंज है, बस मैं इस बारे में ज्यादे बात चीत नहीं करना चाहता, या तो मुझे कबूल करो या साफ जवाब दो ताकि मैं इसी जगह तुम्हारे सामने अपनी जान देकर हमेशा के लिए छुट्टी पाऊं। मैं लोगों के मुंह से यह नहीं सुना चाहता कि 'रामभोली के साथ तुम्हारी मुहब्बत सच्ची न थी और तुम कुछ न कर सके'।

रामभोली०। (गूंगी औरत) अभी मैं अपने कामों से निश्चिन्त नहीं हुई, जब आदमी बेफिक्र होता है तो शादी ब्याह और हंसी खुशी की बातें सूझती हैं, मगर इसमें शक नहीं कि तुम्हारी मुहब्बत सच्ची है और मैं तुम्हारी कद्र करती हूं।

नानक०। जब तक तुम अपने कामों से छुट्टी नहीं पातीं मुझे अपने साथ रक्खो, मैं हर काम में तुम्हारी मदद करूंगा और जान तक दे देने को तैयार रहूंगा।

रामभोली०। खैर मैं इस बात को मंजूर करती हूं, सिपाहियों को समझा दो कि बजड़े को ले जाएं और इसमें जो कुछ चीजें हैं अपनी हिफाजत में रक्खें, क्योंकि वह लोहे का डिब्बा भी जो तुम कल लाये थे मैं इसी नाव में छोड़े जाती हूं।

नानकप्रसाद खुशी के मारे ऐंठ गये। बाहर आकर सिपाहियों को बहुत कुछ समझाने बुझाने के बाद आप भी हर तरह से लैस हो बदन पर हर्बे लगा साथ चलने को तैयार हो गए। रामभोली और नानक बजड़े के नीचे उतरे। इशारा पाकर मांझियों ने बजड़ा खोल दिया और वह फिर बहाव की तरफ जाने लगा।

नानक को साथ लिए हुए रामभोली जंगल में घुसी। थोड़ी ही दूर जाकर वह एक ऐसी जगह पहुंची जहां बहुत सी पगडण्डियां थीं, खड़ी होकर चारो तरफ देखने लगी। उसकी निगाह एक कटे हुए साखू के पेड़ पर पड़ी जिसके पत्ते सुख कर गिर चुके थे। वह उस पेड़ के पास जाकर खड़ी हो गई और इस तरह चारो तरफ देखने लगी जैसे कोई निशान ढूंढ़ती हो। उस जगह की जमीन बहुत

पथरीली और ऊंची नीची थी। लगभग पचास गज की दूरी पर एक पत्थर का ढेर नजर आया जो आदमी के हाथ का बनाया हुआ मालूम होता था। वह उस पत्थर के ढेर के पास गई और दम लेने या सुस्ताने के लिए बैठ गई। नानक ने अपना कमरबन्द खोला और एक पत्थर की चट्टान झाड़ कर उसे बिछा दिया, रामभोली उसी पर जा बैठी और नानक को अपने पास बैठने का इशारा किया।

ये दोनों आदमी अभी सुस्ताये भी न थे कि सामने से एक सवार सुर्ख पोशाक पहिरे इन्हीं दोनों की तरफ आता हुआ दिखाई पड़ा। पास आने पर मालूम हुआ कि यह एक नौजवान औरत है जो बड़े ठाट के साथ हर्वे लगाये मर्दों की तरह घोड़े पर बैठी बहादुरी का नमूना दिखा रही है। वह रामभोली के पास आ कर खड़ी हो गई और उस पर एक भेद वाली नजर डाल कर हंसी। रामभोली ने भी उसकी हंसी का जवाब मुस्कुरा कर दिया और कनखियों से नानक की तरफ इशारा किया। उस औरत ने रामभोली को अपने पास बुलाया और जब वह घोड़े के पास जा कर खड़ी हो गई तो आप घोड़े से नीचे उतर पड़ी। कमर से एक छोटा सा बटुआ खोल एक चीठी और एक अंगूठी निकाली जिस पर एक सुर्ख नगीना जड़ा हुआ था और रामभोली के हाथ में रख दिया।

रामभोली का चेहरा गवाही दे रहा था कि वह इस अंगूठी को पाकर हद से ज्यादे खुश हुई है। रामभोली ने इज्जत देने के ढंग पर उस अंगूठी को सिर से लगाया और इसके बाद अपनी अंगुली में पहिर लिया, चीठी कमर में खोंस कर फुर्ती से उस घोड़े पर सवार हो गई और देखते ही देखते जंगल में घुस कर नजरों से गायब हो गई।

नानकप्रसाद यह तमाशा देख भौंचक सा रह गया, कुछ करते धरते बन न पड़ा। न मुंह से कोई आवाज निकली और न हाथ के इशारे ही से कुछ पूछ सका, पूछता भी तो किससे ? रामभोली ने तो नजर उठा के उसकी तरफ देखा तक नहीं। नानक बिल्कुल नहीं जानता था कि यह सुर्ख पोशाक वाली औरत है कौन जो यकायक यहां आ पहुंची और जिसने इशारेबाजी करके रामभोली को अपने घोड़े पर सवार कर भगा दिया। वह औरत नानक के पास आई और हंस के बोली—

औरत०। वह औरत जो तेरे साथ थी मेरे घोड़े पर सवार होकर चली गई, कोई हर्ज नहीं, मगर तू उदास क्यों हो गया ? क्या तुझसे और उससे कोई रिश्तेदारी थी ?

नान०। रिश्तेदारी थी तो नहीं मगर होने वाली थी, तुमने सब चौपट कर दिया।

औरत०। (मुस्कुरा कर) क्या उससे शादी करने की धुन समाई थी ?

नानक०। बेशक ऐसा ही था। वह मेरी हो चुकी थी, तुम नहीं जानती कि मैंने उसके लिए कैसी कैसी तकलीफें उठाईं। अपने बाप दादे की जमींदारी चौपट की और उसकी गुलामी करने पर तैयार हुआ।

औरत०। (बैठ कर) किसकी गुलामी ?

नानक०। उसी रामभोली की जो तुम्हारे घोड़े पर सवार होकर चली गई।

औरत०। (चौंक कर) क्या नाम लिया, जरा फिर तो कहो ?

नानक०। रामभोली।

औरत०। (हंस कर) बहुत ठीक, तू मेरी सखी अर्थात् उस औरत को कब से जानता है ?

नानक०। (कुछ चिढ़ कर और मुंह बना कर) उसे मैं लड़कपन से जानता हूं मगर तुम्हें सिवाय आज के कभी नहीं देखा, वह तुम्हारी सखी क्योंकर हो सकती है ?

औरत०। तू झूठा बेवकूफ और उल्लू बल्कि उल्लू का इत्र है ! तू मेरी सखी को क्या जाने, जब तू मुझे नहीं जानता तो उसे क्योंकर पहिचान सकता है ?

उस औरत की बातों ने नानक को आपे से बाहर कर दिया। वह एक दम चिढ़ गया और गुस्से में आकर म्यान से तलवार निकाल कर बोला—

नानक०। कम्बख्त औरत, तैं मुझे बेवकूफ बनाती है ! जली कटी बातें कहती है और मेरी आंखों में धूल डाला चाहती है ! अभी तेरा सर काट के फेंक देता हूं !!

औरत०। (हंस कर) शाबाश, क्यों न हो, आप जवांमर्द जो ठहरे ! (नानक के मुंह के पास चुटकियां बजा कर) चेत ऐंठासिंह, जरा होश की दवा कर !

अब नानक प्रसाद बर्दाश्त न कर सका और यह कह कर कि 'ले अपने किये का फल भोग' ! उसने तलवार का वार उस औरत पर किया। औरत ने फुर्ती से अपने को बचा लिया और हाथ बढ़ा नानक की कलाई पकड़ जोर से ऐसा झटका दिया कि तलवार उसके हाथ से निकल कर दूर जा गिरी और नानक आश्चर्य में आकर उसका मुंह देखने लगा। औरत ने हंस कर नानक से कहा, "बस इसी जवांमर्दी पर मेरी सखी से ब्याह करने का इरादा था ! बस जा और हिजड़ों में मिल कर नाचा कर !"

इतना कह कर औरत हट गई और पश्चिम की तरफ़ रवाना हुई। नानक का क्रोध अभी शान्त नहीं हुआ था। उसने अपनी तलवार जो दूर पड़ी हुई थी उठा कर म्यान में रख ली और कुछ सोचता और दांत पीसता हुआ उस औरत

के पीछे पीछे चला। वह औरत इस बात से भी होशियार थी की नानक पीछे से आकर धोखे में तलवार न मारे, वह कनखियों से पीछे की तरफ देखती जाती थी।

थोड़ी दूर जाने के बाद वह औरत एक कूए' पर पहुंची जिसका संगीन चबूतरा एक पुर्से से कम ऊंचा न था। चारो तरफ चढ़ने के लिए सीढ़ियां बनी हुई थीं। कूआं बहुत बड़ा और खूबसूरत था। वह औरत कूएं पर चली गई और बैठ कर धीरे धीरे कुछ गाने लगी।

समय दो पहर का था, धूप खूब निकली थी, मगर इस जगह कूंए के चारो तरफ घने पेड़ों की ऐसी छाया थी और ठंडी ठंडी हवा आ रही थी कि नानक की तबीयत खुश हो गई, क्रोध रंज और बदला लेने का ध्यान बिल्कुल ही जाता रहा, तिस पर उस औरत की सुरीली आवाज ने और भी रंग जमाया। वह उस औरत के सामने जाकर बैठ गया और उसका मुंह देखने लगा। दो ही तीन तान लेकर वह औरत चुप हो गई और नानक से बोली—

औरत०। अब तू मेरे पीछे पीछे क्यों घूम रहा है ? जहां तेरा जी चाहे जा और अपना काम कर, व्यर्थ समय क्यों नष्ट करता है ? अब तुझे तेरी रामभोली किसी तरह नहीं मिल सकती, उसका ध्यान अपने दिल से दूर कर दे।

नानक०। रामभोली झख मारेगी और मेरे पास आवेगी, वह मेरे कब्जे में है। उसकी एक ऐसी चीज मेरे पास है जिसे वह जीते जी कभी नहीं छोड़ सकती।

औरत०। (हंस कर) इसमें कोई शक नहीं कि तू पागल है, तेरी बातें सुनने से हंसी आती है, खैर तू जान तेरा काम जाने मुझे इससे क्या मतलब !

इतना कह कर उस औरत ने कूए' में झांका और पुकार कर कहा, "कूपदेव मुझे प्यास लगी है जरा पानी तो पिलाना।"

औरत की बात सुन कर नानक घबराया और जी में सोचने लगा कि यह अजब औरत है। कूएं पर हुकूमत चलाती है और कहती है कि मुझे पानी पिला। यह औरत मुझे पागल कहती है मगर मैं इसी को पागल समझता हूं, भला कूआं इसे क्योंकर पानी पिलावेगा ? जो हो, मगर यह औरत खूबसूरत है और इसका गाना भी बहुत ही उम्दा है।

नानक इन बातों को सोच ही रहा था कि कोई चीज देख कर चौंक पड़ा, बल्कि घबड़ा कर उठ खड़ा हुआ और कांपते हुए तथा डरी हुई सूरत से कूएं की तरफ देखने लगा। वह एक हाथ था जो चांदी के कटोरे में साफ और ठण्डा जल लिए हुए कूएं के अन्दर से निकला और इसी को देख कर नानक घबड़ा गया था।

राममोली० । काम बांट दीजिए ।

महारानी० । (धनपति की तरफ देख के) नानक के कब्जे से किताब निकाल लेना तुम्हारा काम और (राममोली की तरफ देख के) किशोरी को गिरफ्तार कर लाना तुम्हारा काम ।

बाबाजी० । मगर दो बातों का ध्यान रखना नहीं तो जीती न बचोगी !

दोनों० । वह क्या ?

बाबाजी० । एक तो कुंअर इन्द्रजीतसिंह या आनन्दसिंह को हाथ न लगाना, दूसरे ऐसे काम करना जिसमें नानक को तुम दोनों का पता न लगे, नहीं तो वह बिना जान लिए कभी न छोड़ेगा और तुम लोगों के किए कुछ न होगा ! (राममोली की तरफ देख के) यह न समझना कि अब वह तुम्हारा मुलाहिजा करेगा, अब उसे असल हाल मालूम हो गया, हम लोगों को जड़ बुनियाद से खोद कर फेंक देने का उद्योग करेगा ।

महारानी० । ठीक है, इसमें कोई शक नहीं । मगर ये दोनों चालाक हैं, अपने को बचावेंगी । (दोनों की तरफ देख कर) खैर तुम लोग जाओ, देखो ईश्वर क्या करता है । खूब होशियार और अपने को बचाए रहना ।

दोनों० । कोई हर्ज नहीं !

नौवां बयान

अब हम रोहतासगढ़ की तरफ चलते हैं और तहखाने में बेबस पड़ी हुई बेचारी किशोरी और कुंअर आनन्दसिंह इत्यादि की सुध लेते हैं ।

जिस समय कुंअर आनन्दसिंह भैरोसिंह और तारासिंह तहखाने के अन्दर गिरफ्तार हो गए और राजा दिग्विजयसिंह के सामने लाये गये तो राजा के आदमियों ने उन तीनों का परिचय दिया जिसे सुन राजा हैरान रह गया और सोचने लगा कि ये तीनों यहां क्योंकर आ पहुंचे । किशोरी भी उसी जगह खड़ी थी । जब उसने सुना कि ये लोग फलाने हैं तो वह घबरा गई, उसे विश्वास हो गया कि अब इनकी जान नहीं बचती । इस समय वह मन ही मन में ईश्वर से प्रार्थना करने लगी कि जिस तरह हो सके इनकी जान बचाए, इनके बदले में मेरी जान जाय तो कोई हर्ज नहीं परन्तु मैं अपनी आंखों से इन्हें मरते नहीं देखा चाहती, इसमें कोई शक नहीं कि ये मुझी को छुड़ाने आये थे नहीं तो इन्हें क्या मतलब था कि इतना कष्ट उठाते ।

जितने आदमी तहखाने के अन्दर मौजूद थे सभी जानते थे कि इस समय

तहखाने के अन्दर कुंअर आनन्दसिंह का मददगार कोई भी नहीं है परन्तु हमारे पाठक महाशय जानते हैं कि पण्डित जगन्नाथ ज्योतिषी जो इस समय दारोगा बने यहां मौजूद हैं कुंअर आनन्दसिंह की मदद जरूर करेंगे, मगर एक आदमी के किए होता ही क्या है ? तो भी ज्योतिषीजी ने हिम्मत न हारी और वह राजा से बातचीत करने लगे। ज्योतिषीजी जानते थे कि मेरे अकेले के किए ऐसे मौके पर कुछ नहीं हो सकता और वहां की किताब पढ़ने से उन्हें यह भी मालूम हो गया था कि इस तहखाने के कायदे के मुताबिक ये जरूर मारे जायेंगे, फिर भी ज्योतिषीजी को इनके बचने की उम्मीद कुछ कुछ जरूर थी क्योंकि पण्डित बद्रीनाथ कह गये थे कि 'आज इस तहखाने में कुंअर आनन्दसिंह आवेंगे और उनके थोड़ी ही देर बाद कुछ आदमियों को लेकर हम भी आवेंगे'। अब ज्योतिषीजी सिवाय इसके और कुछ नहीं कर सकते थे कि राजा को बातों में लगा कर देर करें जिसमें पण्डित बद्रीनाथ वगैरह आ जायं और आखिर उन्होंने ऐसा ही किया। ज्योतिषिजी अर्थात दारोगा साहब राजा के सामने गये और बोले—

दारोगा०। मुझे इस बात की बड़ी खुशी है कि आप से आप कुंअर आनन्दसिंह हम लोगों के कब्जे में आ गये।

राजा०। (सिर से पैर तक ज्योतिषीजी को अच्छी तरह देख कर) ताज्जुब है कि आप ऐसा कहते हैं! मालूम होता है कि आज आपकी अक्ल चरने चली गई है! छीः!!

दारोगा०। (घबड़ा कर और हाथ जोड़ कर) सो क्या महाराज!

राजा०। (रञ्ज होकर) फिर भी आप पूछते हैं सो क्या ? आप ही कहिये आनन्दसिंह आप से आप यहां आ फंसे तो आप क्यों खुश हुए ?

दारोगा०। मैं यह सोच कर खुश हुआ कि जब इनकी गिरफ्तारी का हाल राजा बीरेन्द्रसिंह सुनेंगे तो जरूर कहला भेजेंगे कि आनन्दसिंह को छोड़ दीजिए, इसके बदले में हम कुंअर कल्याणसिंह को छोड़ देंगे।

राजा०। अब मुझे मालूम हो गया कि तुम्हारी अक्ल सचमुच चरने गई है या तुम वह दारोगा नहीं हो कोई दूसरे हो।

दारोगा०। (कांप कर) शायद आप इसलिये कहते हों कि मैंने जो कुछ अर्ज किया इस तहखाने के कायदे के खिलाफ किया।

राजा०। हां, अब तुम राह पर आये! बेशक ऐसा ही है। मुझे इनके यहां आ फंसने का बड़ा रंज है। अब मैं अपनी और अपने लड़के की जिन्दगी से भी नाउम्मीद हो गया। बेशक अब यह रोहतासगढ़ उजाड़ हो गया। मैं किसी तरह कायदे

के खिलाफ नहीं कर सकता, चाहे जो हो आनन्दसिंह को अवश्य मारना पड़ेगा और इसका नतीजा बहुत ही बुरा होगा। मुझे इस बात का भी विश्वास है कि कुंअर आनन्दसिंह पहिलेपहल यहां नहीं आये बल्कि इनके कई ऐयार इसके पहिले भी जरूर यहां आकर सब हाल देख गये होंगे। कई दिनों से यहां के मामले में जो विचित्रता दिखाई पड़ती है यह सब उसी का नतीजा है। सच तो यह है कि इस समय की बातें सुन कर मुझे आप पर भी शक हो गया है। यहां का दारोगा इस तरह आनन्दसिंह के आ फंसने से कभी न कहता कि मैं खुश हूं। वह जरूर समझता कि कायदे के मुताबिक इन्हें मारना पड़ेगा, इसके बदले में कल्याणसिंह मारा जायेगा, और इसके अतिरिक्त बीरेन्द्रसिंह के ऐयार लोग ऐयारी के कायदे को तिलांजलि देकर बेहोशी की दवा के बदले जहर का बर्ताव करेंगे और एक ही सप्ताह में रोहतासगढ़ को चौपट कर डालेंगे। इस तहखाने के दारोगा को जरूर इस बात का रंज होता।

राजा की बातें सुन कर ज्योतिषीजी की आंखें खुल गईं। उन्होंने मन में अपनी भूल कबूल की और गर्दन नीची करके कुछ सोचने लगे। उसी समय राजा ने पुकार कर अपने आदमियों से कहा, "इस नकली दारोगा को भी गिरफ्तार कर लो और अच्छी तरह आजमाओ कि यहां का दारोगा है या बीरेन्द्रसिंह का कोई ऐयार!"

बात की बात में दारोगा साहब की मुश्कें बांध ली गईं और राजा ने दो आदमियों को गरम पानी लाने का हुक्म दिया। नौकरों ने यह समझ कर कि यहां पानी गरम करने में देर होगी ऊपर दीवानखाने में हरदम गरम पानी मौजूद रहता है वहां से लाना उत्तम होगा, महाराज से आज्ञा चाही। महाराज ने इसको पसन्द करके ऊपर दीवानखाने से पानी लाने का हुक्म दिया।

दो नौकर गरम पानी लाने के लिए दौड़े मगर तुरन्त लौट आ कर बोले, "ऊपर जाने का रास्ता तो बन्द हो गया।"

महा०। सो क्या! रास्ता कैसे बन्द हो सकता है?

नौकर०। क्या जाने ऐसा क्यों हुआ?

महा०। ऐसा कभी नहीं हो सकता! (ताली दिखा कर) देखो यह ताली मेरे पास मौजूद है, इस ताली के बिना कोई क्योंकर उन दर्वाजों को बन्द कर सकता है?

नौकर०। जो हो, मैं कुछ नहीं अर्ज कर सकता, सर्कार खुद चल कर देख लें।

राजा ने स्वयं जाकर देखा तो ऊपर जाने का रास्ता अर्थात् दरवाजा बन्द पाया। ताज्जुब हुआ और सोचने लगा कि दर्वाजा किसने बन्द किया, ताली तो मेरे पास थी! आखिर दर्वाजा खोलने के लिये ताली लगाई मगर ताला न खुला। आज तक

इसी ताली से बराबर इस तहखाने में आने जाने का दर्वाजा खोला जाता था,लेकिन इस समय ताली कुछ काम नहीं करती। यह अनोखी बात जो राजा दिग्विजयसिंह के ध्यान में कभी न आई थी आज यकायक पैदा हो गई। राजा के ताज्जुब का कोई हद न रहा। उस तहखाने में और भी बहुत से दर्वाजे उसी ताली से खुला करते थे। दिग्विजयसिंह ने ताली ठोंक पीट कर एक दूसरे दरवाजे में लगाई, मगर वह भी न खुला। राजा की आंखों में आंसू भर आया और यकायक उसके मुंह से यह आवाज निकली, "अब इस तहखाने की और हम लोगों की उम्र पूरी हो गई।"

राजा दिग्विजयसिंह घबड़ाया हुआ चारो तरफ घूमता और घड़ी घड़ी दर्वाजों में ताली लगाता था। इतने ही में उस काले रंग की भयानक मूर्ति के मुंह में से जिसके सामने एक औरत बलि दी जा चुकी थी एक तरह की आवाज निकलने लगी। यह भी एक नई बात थी। दिग्विजयसिंह और जितने आदमी वहां थे सब डर गये तथा उसी तरफ देखने लगे। कांपता हुआ राजा उस मूर्ति के पास जाकर खड़ा हो गया और गौर से सुनने लगा कि क्या आवाज आती है।

थोड़ी देर तक वह आवाज समझ में न आई, इसके बाद यह सुनाई पड़ा— "तेरी ताली केवल बारह नम्बर की कोठरी को खोल सकेगी। जहां तक जल्दी हो सके किशोरी को उसमें बन्द कर दे नहीं तो सभों की जान मुफ्त में जायगी।"

यह नई अद्भुत और अनोखी बात देख सुन कर राजा का कलेजा दहलने लगा मगर उसकी समझ में कुछ न आया कि यह मूरत क्योंकर बोली, आज तक कभी ऐसी बात नहीं हुई थी। सैकड़ों आदमी इसके सामने बलि पड़ गये लेकिन ऐसी नौबत न आई थी। अब राजा को विश्वास हो गया कि इस मूरत में कोई करामात जरूर है तभी तो बड़े लोगों ने बलि का प्रबन्ध किया है यद्यपि राजा ऐसी बातों पर विश्वास कम रखता था परन्तु आज उसे डर ने दबा लिया, उसने सोच विचार में ज्यादे समय नष्ट न किया और उसी ताली से बारह नम्बर वाली कोठरी खोल कर किशोरी को उसके अन्दर बन्द कर दिया।

राजा दिग्विजयसिंह ने अभी इस काम से छुट्टी न पाई थी कि बहुत से आदमियों को साथ लेकर पण्डित बद्रीनाथ उस तहखाने में आ पहुंचे। कुंअर आनन्दसिंह और तारासिंह को बेबस पाकर झपट पड़े और बहुत जल्द उनके हाथ पैर खोल दिये। महाराज के आदमियों ने इनका मुकाबला किया, पण्डित बद्रीनाथ के साथ जो आदमी आये थे वे लोग भी भिड़ गये। जब आनन्दसिंह भैरोसिंह और तारासिंह छूटे तो लड़ाई गहरी हो गई इन लोगों के सामने ठहरने वाला कौन था? केवल

चार ऐयार ही उतने लोगों के लिए काफी थे। कई मारे गये, कई जख्मी होकर गिर पड़े, राजा दिग्विजयसिंह गिरफ्तार कर लिया गया, बीरेन्द्रसिंह की तरफ का कोई न मरा। इन सब कामों से छुट्टी पाने बाद किशोरी की खोज की गई।

इस तहखाने में जो कुछ आश्चर्य की बातें हुई थीं सभों ने देखी सुनी थीं। लाली और ज्योतिषीजी ने सब हाल आनन्दसिंह और ऐयार लोगों को बताया और यह भी कहा कि किशोरी बारह नम्बर की कोठरी में बन्द कर दी गई है।

पण्डित बद्रीनाथ ने दिग्विजयसिंह की कमर से ताली निकाल ली और बारह नम्बर की कोठरी खोली मगर किशोरी को उसमें न पाया। चिराग ले कर अच्छी तरह ढूंढ़ा परन्तु किशोरी न दिखाई पड़ी, न मालूम जमीन में समा गई या दीवार खा गई। इस बात का आश्चर्य सभों को हुआ कि कोठरी में से किशोरी कहां गायब हो गई। हां एक कागज का पुर्जा उस कोठरी में जरूर मिला जिसे भैरोसिंह ने उठा लिया और पढ़ कर सभों को सुनाया। यह लिखा था:—

"धनपति रंग मचायो साध्यो काम।
भोली भलि मुड़ि ऐहैं यदि यहि ठाम॥"

इस बरवे का मतलब किसी की समझ में न आया, लेकिन इतना विश्वास हो गया कि अब इस जगह किशोरी का मिलना कठिन है। उधर लाली इस बरवे को सुनते ही खिलखिला कर हंस पड़ी, लेकिन जब लोगों ने हंसने का सबब पूछा तो कुछ जवाब न दिया बल्कि सिर नीचा करके चुप हो रही, जब ऐयारों ने बहुत जोर दिया तो बोला, "मेरे हंसने का कोई खास सबब नहीं है। बड़ी मेहनत करके किशोरी को मैंने यहां से छुड़ाया था। (किशोरी के छुड़ाने के लिये जो जो काम उसने किये थे सब कहने के बाद) मैं सोचे हुए थी कि इस काम के बदले में राजा बीरेन्द्रसिंह से कुछ इनाम पाऊंगी, लेकिन कुछ न हुआ, मेरी मेहनत चौपट हो गई, मेरे देखते ही देखते किशोरी इस कोठरी में बन्द हो गई थीं। जब आप लोगों ने कोठरी खोली तो मुझे उम्मीद थी कि उसे देखूंगी और वह अपनी जुबान से मेरे परिश्रम का हाल कहेगी परन्तु कुछ नहीं। ईश्वर की भी क्या विचित्र गति है, वह क्या करता है सो कुछ समझ में नहीं आता! यही सोच कर मैं हंसी थी और कोई बात नहीं है।"

लाली की बातों का और सभों को चाहे विश्वास हो गया हो लेकिन हमारे ऐयारों के दिल में उसकी बातें न बैठीं। देखा चाहिये अब वे लोग लाली के साथ क्या सलूक करते हैं।

पंडित बद्रीनाथ की राय हुई कि अब इस तहखाने में ठहरना मुनासिब नहीं,

जब यहां की अजायबातों से खुद यहां का राजा परेशान हो गया तो हम लोगों की क्या बात है, यह भी उम्मीद नहीं है कि इस समय किशोरी का पता लगे, अस्तु जहां तक जल्द हो सके यहां से चले चलना ही मुनासिब है।

जितने आदमी मर गये थे उसी तहखाने में गड़हा खोद कर गाड़ दिये गये, बाकी बचे हुए चार पांच आदमियों को राजा दिग्विजयसिंह के सहित कैदियों की तरह साथ लिया और सभों का मुं- चादर से बांध दिया। ज्योतिषीजी ने भी ताली का झब्बा सम्हाला, रोजनामचा हाथ में लिया, और सभों के साथ तहखाने से बाहर हुए। अबकी दफे तहखाने से बाहर निकलते हुए जितने दर्वाजे थे सभों में ज्योतिषीजी ताला लगाते गए जिसमें उसके अन्दर कोई आने न पावे।

तहखाने से बाहर निकलने पर लाली ने कुंअर आनन्दसिंह से कहा, "मुझे अफसोस के साथ कहना पड़ता है कि मेरी मेहनत बर्बाद हो गई और किशोरी से मिलने की आशा न रही। अब यदि आप आज्ञा दें तो मैं अपने घर जाऊं क्योंकि किशोरी ही की तरह मैं भी इस किले में कैद की गई थी।"

आनन्द०। तुम्हारा मकान कहां है?

लाली०। मथुराजी।

भैरो०। (आनन्दसिंह से) इसमें कोई शक नहीं कि लाली का किस्सा भी बहुत बड़ा और दिलचस्प होगा, इन्हें हमारे महाराज के पास अवश्य ले चलना चाहिए।

बद्री०। जरूर ऐसा होना चाहिये, नहीं तो महाराज रंज होंगे।

ऐयारों का मतलब कुंअर आनन्दसिंह समझ गये और इसी जगह से लाली को बिदा होने की आज्ञा उन्होंने न दी। लाचार लाली को कुंअर साहब के साथ जाना ही पड़ा और ये लोग बिना किसी तरह की तकलीफ पाए राजा बीरेन्द्रसिंह के लश्कर में पहुंच गये जहां लाली इज्जत के साथ एक खेमे में रक्खी गई।

दसवां बयान

दूसरे दिन संध्या के समय राजा बीरेन्द्रसिंह अपने खेमे में बैठे रोहतासगढ़ के बारे में बातचीत करने लगे। पण्डित बद्रीनाथ भैरोसिंह तारासिंह ज्योतिषीजी कुंअर आनन्दसिंह और तेजसिंह उनके पास बैठे हुए थे। अपने अपने तौर पर सभी ने रोहतासगढ़ के तहखाने का हाल कह सुनाया और अन्त में बीरेन्द्रसिंह से बातचीत होने लगी।

बीरेन्द्र०। रोहतासगढ़ के बारे में अब क्या करना चाहिये?

तेज० । इसमें तो कोई शक नहीं कि रोहतासगढ़ के मालिक आप हो चुके। अब राजा और दीवान दोनों आपके कब्जे में आ गये तो अब किस बात की कसर रह गई ? हां अब यह सोचना है कि राजा दिग्विजयसिंह के साथ क्या सलूक करना चाहिए ?

बीरेन्द्र० । और किशोरी के लिए क्या बन्दोबस्त करना चाहिए ?

तेज० । जो हां यही दो बातें हैं । किशोरी के बारे में तो मैं अभी कुछ कह नहीं सकता, बाकी राजा दिग्विजयसिंह के बारे में पहिले आपकी राय सुनना चाहता हूं।

बीरेन्द्र० । मेरी राय तो यही है कि यदि वह सच्चे दिल से ताबेदारी कबूल करे तो रोहतासगढ़ पर खिराज (मालगुजारी) मुकर्रर करके उसे छोड़ देना चाहिए।

तेज० । मेरी भी यही राय है ।

भैरो० । यदि वह इस समय कबूल करने के बाद पीछे बेईमानी पर कमर बांधे तो ?

तेज० । ऐसी उम्मीद नहीं है । जहां तक मैंने सुना है वह ईमानदार सच्चा और बहादुर जाना गया है, ईश्वर न करे यदि उसकी नीयत कुछ दिन बाद बदल भी जाय तो हमलोगों को इसकी परवाह न करनी चाहिए ।

बीरेन्द्र० । इसका विचार कहां तक किया जायगा ! (तारासिंह की तरफ देख कर) तुम जाओ दिग्विजयसिंह को ले आओ, मगर मेरे सामने हथकड़ी बेड़ी के साथ मत लाना ।

'जो हुक्म' कह कर तारासिंह दिग्विजयसिंह को लाने के लिए चले गये और थोड़ी ही देर में उन्हें अपने साथ लेकर हाजिर हुए, तब तक इधर उधर की बातें होती रहीं । दिग्विजयसिंह ने अदब के साथ राजा बीरेन्द्रसिंह को सलाम किया और हाथ जोड़ कर सामने खड़ा हो गया ।

बीरेन्द्र० । कहिये, अब क्या इरादा है ?

दिग्विजय० । यही इरादा है कि जन्म भर आपके साथ रहूं और ताबेदारी करूं।

बीरेन्द्र० । नीयत में किसी तरह का फर्क तो नहीं है ?

दिग्विजय० । आप ऐसे प्रतापी राजा के साथ खुटाई रखने वाला पूरा कम्बख्त है । वह पूरा बेवकूफ है जो किसी तरह पर आपसे जीतने की उम्मीद रक्खे । इसमें कोई शक नहीं कि आपके एक एक ऐयार दस दस राज्य गारत कर देने की सामर्थ्य रखते हैं । मुझे इस रोहतासगढ़ किले की मजबूती पर बड़ा भरोसा था, मगर अब निश्चय हो गया कि वह मेरी भूल थी । आप जिस राज्य को चाहें बिना लड़े फतह कर सकते हैं । मेरी तो अक्ल नहीं काम करती, कुछ समझ में नहीं आता कि क्या

हुआ और आपके ऐयारों ने क्या तमाशा कर दिया। सैकड़ों वर्षों से जिस तहखाने का हाल एक भेद के तौर पर छिपा चला आता था, बल्कि सच तो यह है कि जहां का ठीक ठीक हाल अभी तक मुझे भी मालूम न हुआ उसी तहखाने पर बात की बात में आपके ऐयारों ने कब्जा कर लिया, यह करामात नहीं तो क्या है! बेशक ईश्वर की आप पर कृपा है और यह सब सच्चे दिल से उपासना का प्रताप है। आपसे दुश्मनी रखना अपने हाथ से अपना सिर काटना है।

दिग्विजयसिंह की बात सुन कर राजा बीरेन्द्रसिंह मुस्कुराये और उनकी तरफ देखने लगे। दिग्विजयसिंह ने जिस ढंग से ऊपर लिखी बातें कहीं उसमें सचाई की बू आती थी। बीरेन्द्रसिंह बहुत खुश हुए और दिग्विजयसिंह को अपने पास बैठा कर बोले—

बीरेन्द्र०। सुनो दिग्विजयसिंह, हम तुम्हें छोड़ देते हैं और रोहतासगढ़ की गद्दी पर अपनी तरफ से तुम्हें बैठाते हैं मगर इस शर्त पर कि तुम हमेशे अपने को हमारा मातहत समझो और खिराज की तौर पर कुछ मालगुजारी दिया करो।

दिग्वि०। मैं तो अपने को आपका ताबेदार समझ चुका अब क्या समझूंगा, बाकी रही रोहतासगढ़ की गद्दी, सो मुझे मन्जूर नहीं। इसके लिए आप कोई दूसरा नायब मुकर्रर कीजिए और मुझे अपने साथ रहने का हुक्म दीजिये।

बीरेन्द्र०। तुमसे बढ़ कर और कोई नायब रोहतासगढ़ के लिए मुझे दिखाई नहीं देता।

दिग्वि०। (हाथ जोड़ कर) बस मुझ पर कृपा कीजिये, अब राज्य का जंजाल मैं नहीं उठा सकता।

आधे घण्टे तक यही हुज्जत रही। बीरेन्द्रसिंह अपने हाथ से रोहतासगढ़ की गद्दी पर दिग्विजयसिंह को बैठाया चाहते थे और दिग्विजयसिंह इन्कार करते थे, लेकिन आखिर लाचार होकर दिग्विजयसिंह को बीरेन्द्रसिंह का हुक्म मंजूर करना पड़ा, मगर साथ ही इसके उन्होंने बीरेन्द्रसिंह से इस बात का एकरार करा लिया कि महीने भर तक आपको मेरा मेहमान बनना पड़ेगा और इतने दिनों तक रोहतासगढ़ में रहना पड़ेगा।

बीरेन्द्रसिंह ने इस बात को खुशी से मंजूर किया, क्योंकि रोहतासगढ़ के तहखाने का हाल उन्हें बहुत कुछ मालूम करना था। बीरेन्द्रसिंह और तेजसिंह को विश्वास हो गया था कि यह तहखाना जरूर कोई तिलिस्म है।

राजा दिग्विजयसिंह ने हाथ जोड़ कर तेजसिंह की तरफ देखा और कहा,

"कृपा कर मुझे समझा दीजिए कि आप और आपके मातहत ऐयार लोगों ने रोहतासगढ़ में क्या किया, अभी तक मेरी अक्ल हैरान है ।"

तेजसिंह ने सब हाल खुलासे तौर पर कह सुनाया। दीवान रामानन्द का हाल सुन दिग्विजयसिंह खूब हंसे बल्कि उन्हें अपनी बेवकूफी पर भी हंसी आई और बोले, "आप लोगों से कोई बात दूर नहीं है।" इसके बाद दीवान रामानन्द भी उसी जगह बुलवाये गये और दिग्विजयसिंह के हवाले किए गये और दिग्विजयसिंह के लड़के कुंअर कल्याणसिंह को लाने के लिए भी कई आदमी चुनारगढ़ रवाना किए गए।

इन सब कामों से छुट्टी पाकर लाली के बारे में बातचीत होने लगी। तेजसिंह ने दिग्विजयसिंह से पूछा कि लाली कौन है और आपके यहां कब से है? इसके जवाब में दिग्विजयसिंह ने कहा कि लाली को हम बखूबी नहीं जानते। महीने भर से ज्यादा न हुआ होगा कि चार पांच दिन के आगे पीछे लाली और कुन्दन दो नौजवान औरतें मेरे यहां पहुंचीं। उनकी चाल डाल और पोशाक से मुझे मालूम हुआ कि किसी इज्जतदार घराने की लड़कियां हैं। पूछने पर उन दोनों ने अपने को इज्जतदार घराने की लड़की जाहिर भी किया और कहा कि मैं अपनी मुसीबत के दो तीन महीने आपके यहां काटना चाहती हूं। रहम खा कर मैंने उन दोनों को इज्जत के साथ अपने यहां रक्खा, बस इसके सिवाय और मैं कुछ नहीं जानता।

तेज०। बेशक इसमें कोई भेद है, वे दोनों साधारण औरतें नहीं हैं।

ज्योतिषी०। एक ताज्जुब की बात मैं सुनाता हूं।

तेज०। वह क्या।

ज्योतिषी०। आपको याद होगा कि तहखाने का हाल कहते समय मैंने कहा था कि जब तहखाने में किशोरी और लाली को मैंने देखा तो दोनों का नाम ले कर पुकारा जिससे उन दोनों को आश्चर्य हुआ।

तेज०। हां हां मुझे याद है, मैं यह पूछने ही वाला था कि लाली को आपने कैसे पहिचाना?

ज्योतिषी०। बस यही वह ताज्जुब की बात है जो अब मैं आपसे कहता हूं।

तेज०। कहिए, जल्द कहिए।

ज्योतिषी०। एक दफे रोहतासगढ़ के तहखाने में बैठे बैठे मेरी तबीयत घबराई तो मैं कोठरियों को खोल खोल कर देखने लगा। उस ताली के झब्बे में जो मेरे हाथ लगा था एक ताली सबसे बड़ी है जो तहखाने की सब कोठरियों में लगती है मगर बाकी बहुत सी तालियों का पता मुझे अभी तक नहीं लगा कि कहां की हैं।

तेज० । खैर तब क्या हुआ ?

ज्योतिषी० । सब कोठरियों में अंधेरा था, चिराग ले जाकर मैं कहां तक देखता, मगर एक कोठरी में दीवार के साथ चमकती हुई कोई चीज दिखाई दी। यद्यपि कोठरी में बहुत अंधेरा था तो भी अच्छी तरह मालूम हो गया कि यह कोई तस्वीर है । उस पर ऐसा मसाला लगा हुआ था कि अंधेरे में भी वह तस्वीर साफ मालूम होती थी, आंख कान नाक बल्कि बाल तक साफ मालूम होते थे। तस्वीर के नीचे 'लाली' ऐसा लिखा हुआ था । मैं बड़ी देर तक ताज्जुब से उस तस्वीर को देखता रहा, आखिर कोठरी बन्द करके अपने ठिकाने चला आया, उसके बाद जब किशोरी के साथ मैंने लाली को देखा तो साफ पहिचान लिया कि वह तस्वीर इसी की है । मैंने तो सोचा था कि लाली उसी जगह की रहने वाली है इसीलिए उसकी तस्वीर वहां पाई गई, मगर इस समय महाराज दिग्विजयसिंह की जुबानी उसका हाल सुन कर ताज्जुब होता है, लाली अगर वहां की रहने वाली नहीं तो उसकी तस्वीर वहां कैसे पहुंची !

दिग्वि० । मैंने अभी तक वह तस्वीर नहीं देखी, ताज्जुब है ।

बीरेन्द्र० । अभी क्या जब मैं आपको साथ लेकर अच्छी तरह उस तहखाने की छानबीन करूंगा तो बहुत सी बातें ताज्जुब की दिखाई पड़ेंगी ।

दिग्वि० । ईश्वर करे जल्द ऐसा मौका आये, अब तो आपको बहुत जल्द रोहतासगढ़ चलना चाहिए ।

बीरेन्द्र० । (तेजसिंह की तरफ देख कर) इन्द्रजीतसिंह के बारे में क्या बन्दोबस्त हो रहा है ?

तेज० । मैं बेफिक्र नहीं हूं, जासूस लोग चारो तरफ भेजे गये हैं ? इस समय तक रोहतासगढ़ की कारवाई में फंसा हुआ था,अब स्वयं उनकी खोज में जाऊंगा, कुछ पता लगा भी है ?

बीरेन्द्र० । हां ? क्या पता लगा है ?

तेज० । इसका हाल कल कहूंगा आज भर और सब्र कीजिए ।

राजा बीरेन्द्रसिंह अपने दोनों लड़कों को बहुत चाहते थे, इन्द्रजीतसिंह के गायब होने का रंज उन्हें बहुत था, मगर वह अपने चित्त के भाव को भी खूब ही छिपाते थे और समय का ध्यान उन्हें बहुत रहता था । तेजसिंह का भरोसा उन्हें बहुत था और उन्हें मानते भी बहुत थे, जिस काम में उन्हें तेजसिंह रोकते थे उसका नाम फिर वह जुबान पर तब तक न लाते थे जब तक तेजसिंह स्वयं उसका

जिक्र न छेड़ते, यही सबब था कि इस समय वे तेजसिंह के सामने इन्द्रजीतसिंह के बारे में कुछ न बोले।

दूसरे दिन महाराज दिग्विजयसिंह सेना सहित तेजसिंह को रोहतासगढ़ किले में ले गये। कुंअर आनन्दसिंह के नाम का डंका बजाया गया। यह मौका ऐसा था कि खुशी के जलसे होते मगर कुंअर इन्द्रजीतसिंह के खयाल से किसी तरह की खुशी न की गई।

राजा दिग्विजयसिंह के बर्ताव और खातिरदारी से राजा बीरेन्द्रसिंह और उनके साथी लोग बहुत प्रसन्न हुए। दूसरे दिन दीवानखाने में थोड़े आदमियों की कमेटी इसलिए की गई कि अब क्या करना चाहिए। इस कुमेटी में केवल नीचे लिखे बहादुर और ऐयार लोग इकट्ठे थे—राजा बीरेन्द्रसिंह, कुंअर आनन्दसिंह, तेजसिंह, देवीसिंह, पण्डित बद्रीनाथ, ज्योतिषीजी, राजा दिग्विजयसिंह और रामानन्द। इनके अतिरिक्त एक और आदमी मुंह पर नकाब डाले मौजूद था जिसे तेजसिंह अपने साथ लाये थे और उसे अपनी जमानत पर कुमेटी में शरीक किया था।

बीरेन्द्र०। (तेजसिंह की तरफ देख कर) इस नकाबपोश आदमी के सामने जिसे तुम अपने साथ लाये हो हम लोग भेद की बातें कर सकते हैं?

तेज०। हां हां, कोई हर्ज की बात नहीं है।

बीरेन्द्र०। अच्छा तो अब हम लोगों को एक तो किशोरी के पता लगाने का, दूसरे यहां के तहखाने में जो बहुत सी बातें जानने और विचारने लायक हैं उनके मालूम करने का, तीसरे इन्द्रजीतसिंह के खोजने का बन्दोवस्त सबसे पहिले करना चाहिये। (तेजसिंह की तरफ देख कर) तुमने कहा था कि इन्द्रजीतसिंह का कुछ हाल मालूम हो चुका है?

तेज०। जी हां, बेशक मैंने कहा था और उसका खुलासा हाल इस समय आपको मालूम हुआ चाहता है, मगर इसके पहले मैं दो चार बातें राजा साहेब से (दिग्विजयसिंह की तरफ इशारा करके) पूछा चाहता हूं जो बहुत जरूरी हैं, इसके बाद अपने मामले में बातचीत करूंगा।

बीरेन्द्र०। कोई हर्ज नहीं।

दिग्वि०। हां हां पूछिये।

तेज०। आपके यहां शेरसिंह* नाम का कोई ऐयार था?

---

* शेरसिंह, कमला का चाचा, जिसका हाल इस सन्तति के तीसरे भाग के तेरहवें बयान में लिखा गया है।

दिग्वि०। हां था, बेचारा बहुत ही नेक इमानदार और मेहनती आदमी था और ऐयारी के फन में पूरा ओस्ताद था, रामानन्द और गोविन्दसिंह उसी के चेले हैं। उसके भाग जाने का मुझे बड़ा ही रंज है। आज के दो तीन दिन पहिले दूसरे तरह का रंज था मगर आज और तरह का अफसोस है।

तेज०। दो तरह के रंज और अफसोस का मतलब मेरी समझ में नहीं आया, कृपा कर साफ साफ कहिये।

दिग्वि०। पहिले उसके भाग जाने का अफसोस क्रोध के साथ था मगर अब इस बात का अफसोस है कि जिन बातों को सोच कर वह भागा था वे बहुत ठीक थीं, उसकी तरफ से मेरा रंज होना अनुचित था, यदि इस समय वह होता तो बड़ी खुशी से आपके काम में मदद करता।

तेज०। उससे आप क्यों रंज हुए थे और वह क्यों भाग गया था?

दिग्वि०। इसका सबब यह था कि जब मैंने किशोरी को अपने कब्जे में कर लिया तो उसने मुझे बहुत कुछ समझाया और कहा कि 'आप ऐसा काम न कीजिए बल्कि किशोरी को राजा बीरेन्द्रसिंह के यहां भेज दीजिये'। यह बात मैंने मंजूर न की बल्कि उससे रंज होकर मैंने इरादा कर लिया कि उसे कैद कर लूं। असल बात यह है कि मुझसे और रणधीरसिंह से दोस्ती थी, शेरसिंह मेरे यहां रहता था और उसका छोटा भाई गदाधरसिंह जिसकी लड़की कमला है, आप उसे जानते होंगे।

तेज०। हां हां, हम सब कोई उसे अच्छी तरह जानते हैं।

दिग्वि०। खैर, तो गदाधरसिंह रणधीरसिंह के यहां रहता था। गदाधरसिंह को मरे बहुत दिन हो गये, इसी बीच में मुझसे और रणधीरसिंह से भी कुछ बिगड़ गई, इधर जब मैंने रणधीरसिंह की नतिनी किशोरी को अपने लड़के के साथ ब्याहने का बन्दोबस्त किया तो शेरसिंह को बहुत बुरा मालूम हुआ। मेरी तबीयत भी शेरसिंह से फिर गई। मैंने सोचा कि शेरसिंह की भतीजी कमला हमारे यहां से किशोरी को निकाल ले जाने का जरूर उद्योग करेगी और इस काम में अपने चाचा शेरसिंह से मदद लेगी। यह बात मेरे दिल में बैठ गई और मैंने शेरसिंह को कैद करने का विचार किया। उसे मेरा इरादा मालूम हो गया और वह चुपचाप न मालूम कहां भाग गया।

तेज०। अब आप क्या सोचते हैं! उसका कोई कसूर था या नहीं?

दिग्वि०। नहीं नहीं, वह बिल्कुल बेकसूर था बल्कि मेरी ही भूल थी जिसके लिए आज मैं अफसोस करता हूं, ईश्वर करे उसका पता लग जाय तो मैं उससे अपना कसूर माफ कराऊं।

तेज० । आप मुझे कुछ इनाम दें तो मैं शेरसिंह का पता लगा दूं ।

दिग्वि० । आप जो मांगेंगे मैं दूंगा और इसके अतिरिक्त आपका भारी अहसान मुझ पर होगा ।

तेज० । बस मैं यही इनाम चाहता हूं कि यदि शेरसिंह को ढूंढ़ कर ले आऊं तो उसे आप हमारे राजा बीरेन्द्रसिंह के हवाले कर दें ! हम उसे अपना साथी बनाना चाहते हैं ।

दिग्वि० । मैं खुशी से इस बात को मन्जूर करता हूं, वादा करने की क्या जरूरत है जब कि मैं स्वयं राजा बीरेन्द्रसिंह का तावेदार हूं ।

इसके बाद तेजसिंह ने उस नकाबपोश की तरफ देखा जो उनके पास बैठा हुआ था और जिसे वह अपने साथ इस कमेटी में लाये थे । नकाबपोश ने अपने मुंह पर से नकाब उतार कर फेंक दिया और यह कहता हुआ राजा दिग्विजयसिंह के पैरों पर गिर पड़ा कि 'आप मेरा कसूर माफ करें' । राजा दिग्विजयसिंह ने शेरसिंह को पहिचाना, बड़ी खुशी से उठा कर गले लगा लिया और कहा, "नहीं नहीं, तुम्हारा कोई कसूर नहीं बल्कि मेरा कसूर है जो मैं तुमसे क्षमा कराया चाहता हूं ।"

शेरसिंह तेजसिंह के पास आ बैठे । तेजसिंह ने कहा, "सुनो शेरसिंह, अब तुम हमारे हो चुके !"

शेर० । बेशक मैं आपका हो चुका हूं, जब आपने महाराज से वचन ले लिया तो अब क्या उज्र हो सकता है ?

राजा बीरेन्द्रसिंह ताज्जुब से ये बातें सुन रहे थे, अन्त में तेजसिंह की तरफ देख कर बोले, "तुम्हारी मुलाकात शेरसिंह से कैसे हुई ?"

तेज० । शेरसिंह ने मुझसे स्वयं मिल कर सब हाल कहा, असल तो यह है कि हमलोगों पर भी शेरसिंह ने भारी अहसान किया है ।

बीरेन्द्र० । वह क्या ?

तेज० । कुंअर इन्द्रजीतसिंह का पता लगाया है और अपने कई आदमी उनकी हिफाजत के लिए तैनात कर चुके हैं, इस बात का भी निश्चय दिला दिया है कि कुंअर इन्द्रजीतसिंह को किसी तरह की तकलीफ न होने पावेगी ।

बीरेन्द्र० । (खुश होकर और शेरसिंह की तरफ देख कर) हां ! कहां पता लगा और किस हालत में है ?

शेर० । यह सब हाल जो कुछ मुझे मालूम था मैं दीवान साहब (तेजसिंह) से कह चुका हूं वह आपसे कह देंगे, आप उसके जानने की जल्दी न करें । मैं इस समय

यहां जिस काम के लिए आया था मेरा वह काम हो चुका अब मैं यहां ठहरना मुनासिब नहीं समझता। आप लोग अपने मतलब की बातचीत करें क्योंकि मदद के लिए मैं बहुत जल्द कुंअर इन्द्रजीतसिंह के पास पहुंचा चाहता हूं। हां यदि आप कृपा करके अपना एक ऐयार मेरे साथ कर दें तो उत्तम हो और काम भी शीघ्र हो जाय।

बीरेन्द्र०। (खुश होकर) अच्छी बात है, आप जाइये और मेरे जिस ऐयार को चाहें लेते जाइये।

शेर०। अगर आप मेरी मर्जी पर छोड़ते हैं तो मैं देवीसिंह को अपने साथ के लिए मांगता हूं।

तेज०। हां आप खुशी से उन्हें ले जायं। (देवीसिंह की तरफ देख कर) आप तैयारी कीजिए।

देवी०। मैं हरदम तैयार ही रहता हूं। (शेरसिंह से) चलिए अब इन लोगों का पीछा छोड़िए।

देवीसिंह को साथ लेकर शेरसिंह रवाना हुए और इधर इन लोगों में विचार होने लगा कि अब क्या करना चाहिए। घण्टे भर में यह निश्चय हुआ कि लाली से कुछ विशेष पूछने की जरूरत नहीं है क्योंकि वह अपना हाल ठीक ठीक कभी न कहेगी, हां उसे हिफाजत में रखना चाहिए और तहखाने को अच्छी तरह देखना और वहां का हाल मालूम करना चाहिए।

ग्यारहवां बयान

अब तो कुन्दन का हाल जरूर ही लिखना पड़ा, पाठक महाशय उसका हाल जानने के लिए उत्कण्ठित हो रहे होंगे। हमने कुन्दन को रोहतासगढ़ महल के उसी बाग में छोड़ा है जिसमें किशोरी रहती थी। कुन्दन इस फिक्र में लगी रहती थी कि किशोरी किसी तरह लाली के कब्जे में न पड़ जाय।

जिस समय किशोरी को ले कर सींध की राह लाली उस घर में उतर गई जिसमें से तहखाने का रास्ता था और यह हाल कुन्दन को मालूम हुआ तो वह बहुत घबराई। महल भर में इस बात का गुल मचा दिया और सोच में पड़ी कि अब क्या करना चाहिये। हम पहिले लिख आये हैं कि किशोरी और लाली के जाने बाद 'धरो पकड़ो' की आवाज लगाते हुए कई आदमी सींध की राह उसी मकान में उतर गये जिसमें लाली और किशोरी गई थीं।

उन्हीं लोगों में मिल कर कुन्दन भी एक छोटी सी गठरी कमर के साथ बांध

उस मकान के अन्दर चली गई और यह हाल घबराहट और गुलशोर में किसी को मालूम न हुआ। उस मकान के अन्दर भी बिल्कुल अंधेरा था। लाली ने दूसरी कोठरी में जाकर दर्वाजा बन्द कर लिया इस लिये लाचार होकर पीछा करने वालों को लौटना पड़ा और उन लोगों ने इस बात की इत्तिला महाराज से की, मगर कुन्दन उस मकान से न लौटी वल्कि किसी कोने में छिप रही।

हम पहिले लिख आये हैं और अब भी लिखते हैं कि उस मकान के अन्दर तीन दर्वाजे थे, एक तो वह सदर दर्वाजा था जिसके बाहर पहरा पड़ा करता था, दूसरा खुला पड़ा था, तीसरे दर्वाजे को खोल कर किशोरी को साथ लिए लाली गई थी।

जो दर्वाजा खुला था उसके अन्दर एक दालान था, इसी दालान तक लाली और किशोरी को खोज कर पीछा करने वाले लौट गये थे क्योंकि कहीं आगे जाने का रास्ता उन लोगों को न मिला था। जब वे लोग मकान के बाहर निकल गये तो कुन्दन ने अपनी कमर से गठरी खोली और उसमें से सामान निकाल कर मोम-वत्ती जलाने बाद चारो तरफ देखने लगी।

यह एक छोटा सा दालान था मगर चारो तरफ से बन्द था। इस दालान की दीवारों में तरह तरह की भयानक तस्वीरें बनी हुई थीं मगर कुन्दन ने उन पर कुछ ध्यान न दिया। दालान के बीचोबीच में बित्ते बित्ते भर के ग्यारह डिब्बे लोहे के रक्खे हुए थे और हर एक डिब्बे पर आदमी की खोपड़ी रक्खी हुई थी। कुन्दन उन्हीं डिब्बों को गौर से देखने लगी। ये डिब्बे गोलाकार एक चौकी पर सजाए हुए थे, एक डिब्बे पर आधी खोपड़ी थी और बाकी डिब्बों पर पूरी पूरी। कुन्दन इस बात को देख कर ताज्जुब कर रही थी कि इसमें से एक खोपड़ी जमीन पर क्यों पड़ी हुई है औरों की तरह उसके नीचे डिब्बा नहीं है ? कुन्दन ने उस डिब्बे से जिस पर आधी खोपड़ी रक्खी हुई थी गिनना शुरू किया। मालूम हुआ कि सातवें नम्बर की खोपड़ी के नीचे डिब्बा नहीं है। यकायक कुन्दन के मुंह से निकला, "ओफ ओह, बेशक इसके नीचे का डिब्बा लाली ले गई क्योंकि ताली वाला डिब्बा वही था, मगर यह हाल उसे क्योंकर मालूम हुआ ?"

कुन्दन ने फिर गिनना शुरू किया और टूटी हुई खोपड़ी से पांचवें नम्बर पर रुक गई, खोपड़ी उठा कर नीचे रख दी और डिब्बे को उठा लिया, तब अच्छी तरह गौर से देख कर जोर से जमीन पर पटका। डिब्बे के चार टुकड़े हो गए, मानों चार जगहों से जोड़ लगाया हुआ हो। उसके अन्दर से एक ताली निकली जिसे देख कुन्दन हंसी और खुश होकर आप ही आप बोली, "देखो तो लाली को मैं कैसा छकाती हूं।"

कुन्दन ने उस ताली से काम लेना शुरू किया। उसी दालान में दीवार के साथ एक आलमारी थी जिसे कुंदन ने उसी ताली से खोला। नीचे उतरने के लिए सीढ़ियां नजर आईं और वह बेखौफ नीचे उतर गई। एक कोठरी में पहुंची जहां एक छोटे सिंहासन के ऊपर हाथ भर लम्बी और इससे कुछ कम चौड़ी तांबे की एक पट्टी रक्खी हुई थी। कुंदन ने उसे उठाकर अच्छी तरह देखा, मालूम हुआ कि कुछ लिखा हुआ है, अच्छर खुदे हुए थे और उन पर किसी तरह का चिकना या तेल मला हुआ था जिसके सबब से पटिया अभी तक जंग लगने से बची हुई थी। कुन्दन ने उस लेख को बड़े गौर से पढ़ा और हंस कर चारो तरफ देखने लगी। उस कोठरी की दीवार में दो तरफ दो दर्वाजे थे और एक पल्ला जमीन में था। उसने एक दर्वाजा खोला, ऊपर चढ़ने के लिए कुछ सीढ़ियां मिलीं, वह बेखौफ ऊपर चढ़ गई और एक ऐसी तंग कोठरी में पहुंची जिसमें चार पांच आदमी से ज्यादे के बैठने की जगह न थी, मगर इस कोठरी के चारो तरफ की दीवार में छोटे छोटे कई छेद थे, जलती हुई बत्ती बुझा कर उन छेदों में से एक छेद में आंख लगा कर कुन्दन ने देखा।

कुन्दन ने अपने को ऐसी जगह पाया जहां से वह भयानक मूर्ति जिसके आगे एक औरत बलि दी जा चुकी थी और जिसका हाल ऊपर लिख आये हैं साफ दिखाई देती थी। थोड़ी देर में कुन्दन ने महाराज दिग्विजयसिंह तहखाने के दारोगा लाली किशोरी और बहुत से आदमियों को वहां देखा। उसके देखते ही देखते एक औरत उस मूरत के सामने बलि दी गई और कुंअर आनन्दसिंह ऐयारों सहित पकड़े गये। इस तहखाने में से किशोरी और कुंअर आनन्दसिंह का जो कुछ हाल हम ऊपर लिख आये हैं वह सब कुन्दन ने देखा था। आखीर में कुन्दन नीचे उतर आई और उस पल्ले को जो जमीन में था उसी ताली से खोल कर तहखाने में उतरने बाद बत्ती बाल कर देखने लगी। छत की तरफ निगाह करने से मालूम हुआ कि वह सिंहासन पर बैठी हुई भयानक मूर्ति जो कि भीतर की तरफ से बिल्कुल (सिंहासन सहित) पोली थी, उसके सिर के ऊपर है।

कुंदन फिर ऊपर आई और दीवार में लगे हुए दूसरे दर्वाजे को खोल कर एक सुरंग में पहुंची। कई कदम जाने बाद एक छोटी खिड़की मिली। उसी ताली से कुंदन ने उस खिड़की को भी खोला। अब वह उस रास्ते में पहुंच गई जो दीवानखाने और तहखाने में आने जाने के लिए था और जिस राह से महाराज आते थे, तहखाने से दीवानखाने में जाने तक जितने दर्वाजे थे सभों को कुन्दन ने अपनी ताली से बन्द कर दिया, ताले के अलावे उस दर्वाजे में दूसरा एक खटका और भी था उसे भी कुन्दन ने

रामभोली० । काम बांट दीजिए ।

महारानी० । (धनपति की तरफ देख के) नानक के कब्जे से किताब निकाल लेना तुम्हारा काम और (रामभोली की तरफ देख के) किशोरी को गिरफ्तार कर लाना तुम्हारा काम ।

बाबाजी० । मगर दो बातों का ध्यान रखना नहीं तो जीती न बचोगी !

दोनों० । वह क्या ?

बाबाजी० । एक तो कुंअर इन्द्रजीतसिंह या आनन्दसिंह को हाथ न लगाना, दूसरे ऐसे काम करना जिसमें नानक को तुम दोनों का पता न लगे, नहीं तो वह बिना जान लिए कभी न छोड़ेगा और तुम लोगों के किए कुछ न होगा ! (रामभोली की तरफ देख के) यह न समझना कि अब वह तुम्हारा मुलाहिजा करेगा, अब उसे असल हाल मालूम हो गया, हम लोगों को जड़ बुनियाद से खोद कर फेंक देने का उद्योग करेगा ।

महारानी० । ठीक है, इसमें कोई शक नहीं । मगर ये दोनों चालाक हैं, अपने को बचावेंगी । (दोनों की तरफ देख कर) खैर तुम लोग जाओ, देखो ईश्वर क्या करता है । खूब होशियार और अपने को बचाए रहना ।

दोनों० । कोई हर्ज नहीं !

नौवां बयान

अब हम रोहतासगढ़ की तरफ चलते हैं और तहखाने में बेबस पड़ी हुई बेचारी किशोरी और कुंअर आनन्दसिंह इत्यादि की सुध लेते हैं ।

जिस समय कुंअर आनन्दसिंह भैरोसिंह और तारासिंह तहखाने के अन्दर गिरफ्तार हो गए और राजा दिग्विजयसिंह के सामने लाये गये तो राजा के आदमियों ने उन तीनों का परिचय दिया जिसे सुन राजा हैरान रह गया और सोचने लगा कि ये तीनों यहां क्योंकर आ पहुंचे । किशोरी भी उसी जगह खड़ी थी । जब उसने सुना कि ये लोग फलाने हैं तो वह घबरा गई, उसे विश्वास हो गया कि अब इनकी जान नहीं बचती । इस समय वह मन ही मन में ईश्वर से प्रार्थना करने लगी कि जिस तरह हो सके इनकी जान बचाए, इनके बदले में मेरी जान जाय तो कोई हर्ज नहीं परन्तु मैं अपनी आंखों से इन्हें मरते नहीं देखा चाहती, इसमें कोई शक नहीं कि ये मुझी को छुड़ाने आये थे नहीं तो इन्हें क्या मतलब था कि इतना कष्ट उठाते ।

जितने आदमी तहखाने के अन्दर मौजूद थे सभी जानते थे कि इस समय

तहखाने के अन्दर कुंअर आनन्दसिंह का मददगार कोई भी नहीं है परन्तु हमारे पाठक महाशय जानते हैं कि पण्डित जगन्नाथ ज्योतिषी जो इस समय दारोगा बने यहां मौजूद हैं कुंअर आनन्दसिंह की मदद जरूर करेंगे, मगर एक आदमी के किए होता ही क्या है ? तो भी ज्योतिषीजी ने हिम्मत न हारी और वह राजा से बातचीत करने लगे। ज्योतिषीजी जानते थे कि मेरे अकेले के किए ऐसे मौके पर कुछ नहीं हो सकता और वहां की किताब पढ़ने से उन्हें यह भी मालूम हो गया था कि इस तहखाने के कायदे के मुताबिक ये जरूर मारे जायेंगे, फिर भी ज्योतिषीजी को इनके बचने की उम्मीद कुछ कुछ जरूर थी क्योंकि पण्डित बद्रीनाथ कह गये थे कि 'आज इस तहखाने में कुंअर आनन्दसिंह आवेंगे और उनके थोड़ी ही देर बाद कुछ आदमियों को लेकर हम भी आवेंगे'। अब ज्योतिषीजी सिवाय इसके और कुछ नहीं कर सकते थे कि राजा को बातों में लगा कर देर करें जिसमें पण्डित बद्रीनाथ वगैरह आ जायं और आखिर उन्होंने ऐसा ही किया। ज्योतिषिजी अर्थात् दारोगा साहब राजा के सामने गये और बोले—

दारोगा०। मुझे इस बात की बड़ी खुशी है कि आप से आप कुंअर आनन्दसिंह हम लोगों के कब्जे में आ गये।

राजा०। (सिर से पैर तक ज्योतिषीजी को अच्छी तरह देख कर) ताज्जुब है कि आप ऐसा कहते हैं! मालूम होता है कि आज आपकी अक्ल चरने चली गई है! छी:!!

दारोगा०। (घबड़ा कर और हाथ जोड़ कर) सो क्या महाराज!

राजा०। (रन्ज होकर) फिर भी आप पूछते हैं सो क्या? आप ही कहिये आनन्दसिंह आप से आप यहां आ फंसे तो आप क्यों खुश हुए?

दारोगा०। मैं यह सोच कर खुश हुआ कि जब इनकी गिरफ्तारी का हाल राजा बीरेन्द्रसिंह सुनेंगे तो जरूर कहला भेजेंगे कि आनन्दसिंह को छोड़ दीजिए, इसके बदले में हम कुंअर कल्याणसिंह को छोड़ देंगे।

राजा०। अब मुझे मालूम हो गया कि तुम्हारी अक्ल सचमुच चरने गई है या तुम वह दारोगा नहीं हो कोई दूसरे हो।

दारोगा०। (कांप कर) शायद आप इसलिये कहते हों कि मैंने जो कुछ अर्ज किया इस तहखाने के कायदे के खिलाफ किया।

राजा०। हां, अब तुम राह पर आये! बेशक ऐसा ही है। मुझे इनके यहां आ फंसने का बड़ा रंज है। अब मैं अपनी और अपने लड़के की जिन्दगी से भी नाउम्मीद हो गया। बेशक अब यह रोहतासगढ़ उजाड़ हो गया। मैं किसी तरह कायदे

के खिलाफ नहीं कर सकता, चाहे जो हो आनन्दसिंह को अवश्य मारना पड़ेगा और इसका नतीजा बहुत ही बुरा होगा। मुझे इस बात का भी विश्वास है कि कुंअर आनन्दसिंह पहिलेपहल यहां नहीं आये बल्कि इनके कई ऐयार इसके पहिले भी जरूर यहां आकर सब हाल देख गये होंगे। कई दिनों से यहां के मामले में जो विचित्रता दिखाई पड़ती है यह सब उसी का नतीजा है। सच तो यह है कि इस समय की बातें सुन कर मुझे आप पर भी शक हो गया है। यहां का दारोगा इस तरह आनन्दसिंह के आ फंसने से कभी न कहता कि मैं खुश हूं। वह जरूर समझता कि कायदे के मुताबिक इन्हें मारना पड़ेगा, इसके बदले में कल्याणसिंह मारा जायेगा, और इसके अतिरिक्त बीरेन्द्रसिंह के ऐयार लोग ऐयारी के कायदे को तिलांजलि देकर बेहोशी की दवा के बदले जहर का बर्ताव करेंगे और एक ही सप्ताह में रोहतासगढ़ को चौपट कर डालेंगे। इस तहखाने के दारोगा को जरूर इस बात का रंज होता।

राजा की बातें सुन कर ज्योतिषीजी की आंखें खुल गईं। उन्होंने मन में अपनी भूल कबूल की और गर्दन नीची करके कुछ सोचने लगे। उसी समय राजा ने पुकार कर अपने आदमियों से कहा, "इस नकली दारोगा को भी गिरफ्तार कर लो और अच्छी तरह आजमाओ कि यहां का दारोगा है या बीरेन्द्रसिंह का कोई ऐयार!"

बात की बात में दारोगा साहब का मुश्कें बांध ली गईं और राजा ने दो आदमियों को गरम पानी लाने का हुक्म दिया। नौकरों ने यह समझ कर कि यहां पानी गरम करने में देर होगी ऊपर दीवानखाने में हरदम गरम पानी मौजूद रहता है वहां से लाना उत्तम होगा, महाराज से आज्ञा चाही। महाराज ने इसको पसन्द करके ऊपर दीवानखाने से पानी लाने का हुक्म दिया।

दो नौकर गरम पानी लाने के लिए दौड़े मगर तुरन्त लौट आ कर बोले, "ऊपर जाने का रास्ता तो बन्द हो गया।"

महा०। सो क्या! रास्ता कैसे बन्द हो सकता है?

नौकर०। क्या जाने ऐसा क्यों हुआ?

महा०। ऐसा कभी नहीं हो सकता! (ताली दिखा कर) देखो यह ताली मेरे पास मौजूद है, इस ताली के बिना कोई क्योंकर उन दर्वाजों को बन्द का सकता है?

नौकर०। जो हो, मैं कुछ नहीं अर्ज कर सकता, सर्कार खुद चल कर देख लें।

राजा ने स्वयं जाकर देखा तो ऊपर जाने का रास्ता अर्थात् दरवाजा बन्द पाया। ताज्जुब हुआ और सोचने लगा कि दर्वाजा किसने बन्द किया, ताली तो मेरे पास थी! आखिर दर्वाजा खोलने के लिये ताली लगाई मगर ताला न खुला। आज तक

इसी ताली से बराबर इस तहखाने में आने जाने का दर्वाजा खोला जाता था, लेकिन इस समय ताली कुछ काम नहीं करती। यह अनोखी बात जो राजा दिग्विजयसिंह के ध्यान में कभी न आई थी आज यकायक पैदा हो गई। राजा के ताज्जुब का कोई हद न रहा। उस तहखाने में और भी बहुत से दर्वाजे उसी ताली से खुला करते थे। दिग्विजयसिंह ने ताली ठोंक पीट कर एक दूसरे दरवाजे में लगाई, मगर वह भी न खुला। राजा की आंखों में आंसू भर आया और यकायक उसके मुंह से यह आवाज निकली, "अब इस तहखाने की और हम लोगों की उम्र पूरी हो गई।"

राजा दिग्विजयसिंह घबड़ाया हुआ चारो तरफ घूमता और घड़ी घड़ी दर्वाजों में ताली लगाता था। इतने ही में उस काले रंग की भयानक मूर्ति के मुंह में से जिसके सामने एक औरत बलि दी जा चुकी थी एक तरह की आवाज निकलने लगी। यह भी एक नई बात थी। दिग्विजयसिंह और जितने आदमी वहां थे सब डर गये तथा उसी तरफ देखने लगे। कांपता हुआ राजा उस मूर्ति के पास जाकर खड़ा हो गया और गौर से सुनने लगा कि क्या आवाज आती है।

थोड़ी देर तक वह आवाज समझ में न आई, इसके बाद यह सुनाई पड़ा— "तेरी ताली केवल बारह नम्बर की कोठरी को खोल सकेगी। जहां तक जल्दी हो सके किशोरी को उसमें बन्द कर दे नहीं तो सभों की जान मुफ्त में जायगी!"

यह नई अद्भुत और अनोखी बात देख सुन कर राजा का कलेजा दहलने लगा मगर उसकी समझ में कुछ न आया कि यह मूरत क्योंकर बोली, आज तक कभी ऐसी बात नहीं हुई थी। सैकड़ों आदमी इसके सामने बलि पड़ गये लेकिन ऐसी नौबत न आई थी। अब राजा को विश्वास हो गया कि इस मूरत में कोई करामात जरूर है तभी तो बड़े लोगों ने बलि का प्रबन्ध किया है यद्यपि राजा ऐसी बातों पर विश्वास कम रखता था परन्तु आज उसे डर ने दबा लिया, उसने सोच विचार में ज्यादे समय नष्ट न किया और उसी ताली से बारह नम्बर वाली कोठरी खोल कर किशोरी को उसके अन्दर बन्द कर दिया।

राजा दिग्विजयसिंह ने अभी इस काम से छुट्टी न पाई थी कि बहुत से आदमियों को साथ लेकर पण्डित बद्रीनाथ उस तहखाने में आ पहुंचे। कुंअर आनन्दसिंह और तारासिंह को बेबस पाकर झपट पड़े और बहुत जल्द उनके हाथ पैर खोल दिये। महाराज के आदमियों ने इनका मुकाबला किया, पण्डित बद्रीनाथ के साथ जो आदमी आये थे वे लोग भी भिड़ गये। जब आनन्दसिंह भैरोसिंह और तारासिंह छूटे तो लड़ाई गहरी हो गई, इन लोगों के सामने ठहरने वाला कौन था? केवल

चार ऐयार ही उतने लोगों के लिए काफी थे। कई मारे गये, कई जख्मी होकर गिर पड़े, राजा दिग्विजयसिंह गिरफ्तार कर लिया गया, बीरेन्द्रसिंह की तरफ का कोई न मरा। इन सब कामों से छुट्टी पाने बाद किशोरी की खोज की गई।

इस तहखाने में जो कुछ आश्चर्य की बातें हुई थीं सभों ने देखी सुनी थीं। लाली और ज्योतिषीजी ने सब हाल आनन्दसिंह और ऐयार लोगों को बताया और यह भी कहा कि किशोरी बारह नम्बर की कोठरी में बन्द कर दी गई है।

पण्डित बद्रीनाथ ने दिग्विजयसिंह की कमर से ताली निकाल ली और बारह नम्बर की कोठरी खोली मगर किशोरी को उसमें न पाया। चिराग ले कर अच्छी तरह ढूंढ़ा परन्तु किशोरी न दिखाई पड़ी, न मालूम जमीन में समा गई या दीवार खा गई। इस बात का आश्चर्य सभों को हुआ कि कोठरी में से किशोरी कहां गायब हो गई। हां एक कागज का पुर्जा उस कोठरी में जरूर मिला जिसे भैरोसिंह ने उठा लिया और पढ़ कर सभों को सुनाया। यह लिखा था:—

"धनपति रंग मचायो साध्यो काम।
भोली भलि मुड़ि ऐहैं यदि यहि ठाम॥"

इस बरवे का मतलब किसी की समझ में न आया, लेकिन इतना विश्वास हो गया कि अब इस जगह किशोरी का मिलना कठिन है। उधर लाली इस बरवे को सुनते ही खिलखिला कर हंस पड़ी, लेकिन जब लोगों ने हंसने का सबब पूछा तो कुछ जवाब न दिया बल्कि सिर नीचा करके चुप हो रही, जब ऐयारों ने बहुत जोर दिया तो बोला, "मेरे हंसने का कोई खास सबब नहीं है। बड़ी मेहनत करके किशोरी को मैंने यहां से छुड़ाया था। (किशोरी के छुड़ाने के लिये जो जो काम उसने किये थे सब कहने के बाद) मैं सोचे हुए थी कि इस काम के बदले में राजा बीरेन्द्रसिंह से कुछ इनाम पाऊंगी, लेकिन कुछ न हुआ, मेरी मेहनत चौपट हो गई, मेरे देखते ही देखते किशोरी इस कोठरी में बन्द हो गई थीं। जब आप लोगों ने कोठरी खोली तो मुझे उम्मीद थी कि उसे देखूंगी और वह अपनी जुबान से मेरे परिश्रम का हाल कहेगी परन्तु कुछ नहीं। ईश्वर की भी क्या विचित्र गति है, वह क्या करता है सो कुछ समझ में नहीं आता! यही सोच कर मैं हंसी थी और कोई बात नहीं है।"

लाली की बातों का और सभों को चाहे विश्वास हो गया हो लेकिन हमारे ऐयारों के दिल में उसकी बातें न बैठीं। देखा चाहिये अब वे लोग लाली के साथ क्या सलूक करते हैं।

पंडित बद्रीनाथ की राय हुई कि अब इस तहखाने में ठहरना मुनासिब नहीं,

जब यहां की अजायबातों से खुद यहां का राजा परेशान हो गया तो हम लोगों की क्या बात है, यह भी उम्मीद नहीं है कि इस समय किशोरी का पता लगे, अस्तु जहां तक जल्द हो सके यहां से चले चलना ही मुनासिब है।

जितने आदमी मर गये थे उसी तहखाने में गड़हा खोद कर गाड़ दिये गये, वाकी वचे हुए चार पांच आदमियों को राजा दिग्विजयसिंह के सहित कैदियों की तरह साथ लिया और सभों का मुं. चादर से बांध दिया। ज्योतिषीजी ने भी ताली का झव्वा सम्हाला, रोजनामचा हाथ में लिया, और सभों के साथ तहखाने से वाहर हुए। अवकी दफे तहखाने से वाहर निकलते हुए जितने दर्वाजे थे सभों में ज्योतिषीजी ताला लगाते गए जिसमें उसके अन्दर कोई आने न पावे।

तहखाने से वाहर निकलने पर लाली ने कुंअर आनन्दसिंह से कहा, "मुझे अफसोस के साथ कहना पड़ता है कि मेरी मेहनत बर्बाद हो गई और किशोरी से मिलने की आशा न रही। अब यदि आप आज्ञा दें तो मैं अपने घर जाऊं क्योंकि किशोरी ही की तरह मैं भी इस किले में कैद की गई थी।"

आनन्द०। तुम्हारा मकान कहां है?

लाली०। मथुराजी।

भैरो०। (आनन्दसिंह से) इसमें कोई शक नहीं कि लाली का किस्सा भी वहुत वड़ा और दिलचस्प होगा, इन्हें हमारे महाराज के पास अवश्य ले चलना चाहिए।

वद्री०। जरूर ऐसा होना चाहिये, नहीं तो महाराज रंज होंगे।

ऐयारों का मतलब कुंअर आनन्दसिंह समझ गये और इसी जगह से लाली को विदा होने की आज्ञा उन्होंने न दी। लाचार लाली को कुंअर साहव के साथ जाना ही पड़ा और ये लोग बिना किसी तरह की तकलीफ पाए राजा बीरेन्द्रसिंह के लश्कर में पहुंच गये जहां लाली इज्जत के साथ एक खेमे में रक्खी गई।

दसवां बयान

दूसरे दिन संध्या के समय राजा बीरेन्द्रसिंह अपने खेमे में बैठे रोहतासगढ़ के बारे में बातचीत करने लगे। पण्डित बद्रीनाथ भैरोसिंह तारासिंह ज्योतिषीजी कुंअर आनन्दसिंह और तेजसिंह उनके पास बैठे हुए थे। अपने अपने तौर पर सभी ने रोहतासगढ़ के तहखाने का हाल कह सुनाया और अन्त में बीरेन्द्रसिंह से बात-चीत होने लगी।

वीरेन्द्र०। रोहतासगढ़ के बारे में अव क्या करना चाहिये?

तेज० । इसमें तो कोई शक नहीं कि रोहतासगढ़ के मालिक आप हो चुके। जब राजा और दीवान दोनों आपके कब्जे में आ गये तो अब किस बात की कसर रह गई ? हां अब यह सोचना है कि राजा दिग्विजयसिंह के साथ क्या सलूक करना चाहिए ?

बीरेन्द्र० । और किशोरी के लिए क्या बन्दोबस्त करना चाहिए ?

तेज० । जी हां यही दो बातें हैं । किशोरी के बारे में तो मैं अभी कुछ कह नहीं सकता, बाकी राजा दिग्विजयसिंह के बारे में पहिले आपकी राय सुनना चाहता हूं।

बीरेन्द्र० । मेरी राय तो यही है कि यदि वह सच्चे दिल से तावेदारी कबूल करे तो रोहतासगढ़ पर खिराज (मालगुजारी) मुकर्रर करके उसे छोड़ देना चाहिए।

तेज० । मेरी भी यही राय है ।

भैरो० । यदि वह इस समय कबूल करने के बाद पीछे बेईमानी पर कमर बांधे तो ?

तेज० । ऐसी उम्मीद नहीं है । जहां तक मैंने सुना है वह ईमानदार सच्चा और बहादुर जाना गया है, ईश्वर न करे यदि उसकी नीयत कुछ दिन बाद बदल भी जाय तो हमलोगों को इसकी परवाह न करनी चाहिए ।

बीरेन्द्र० । इसका विचार कहां तक किया जायगा ! (तारासिंह की तरफ देख कर) तुम जाओ दिग्विजयसिंह को ले आओ, मगर मेरे सामने हथकड़ी बेड़ी के साथ मत लाना ।

'जो हुक्म' कह कर तारासिंह दिग्विजयसिंह को लाने के लिए चले गये और थोड़ी ही देर में उन्हें अपने साथ लेकर हाजिर हुए, तब तक इधर उधर की बातें होती रहीं । दिग्विजयसिंह ने अदब के साथ राजा बीरेन्द्रसिंह को सलाम किया और हाथ जोड़ कर सामने खड़ा हो गया ।

बीरेन्द्र० । कहिये, अब क्या इरादा है ?

दिग्विजय० । यही इरादा है कि जन्म भर आपके साथ रहूं और तावेदारी करूं।

बीरेन्द्र० । नीयत में किसी तरह का फर्क तो नहीं है ?

दिग्विजय० । आप ऐसे प्रतापी राजा के साथ खुटाई रखने वाला पूरा कम्बख्त है । वह पूरा बेवकूफ है जो किसी तरह पर आपसे जीतने की उम्मीद रक्खे । इसमें कोई शक नहीं कि आपके एक एक ऐयार दस दस राज्य गारत कर देने की सामर्थ्य रखते हैं । मुझे इस रोहतासगढ़ किले की मजबूती पर बड़ा भरोसा था, मगर अब निश्चय हो गया कि वह मेरी भूल थी । आप जिस राज्य को चाहें बिना लड़े फतह कर सकते हैं । मेरी तो अक्ल नहीं काम करती, कुछ समझ में नहीं आता कि क्या

हुआ और आपके ऐयारों ने क्या तमाशा कर दिया। सैकड़ों वर्षों से जिस तहखाने का हाल एक भेद के तौर पर छिपा चला आता था, बल्कि सच तो यह है कि जहां का ठीक ठीक हाल अभी तक मुझे भी मालूम न हुआ उसी तहखाने पर बात की बात में आपके ऐयारों ने कब्जा कर लिया, यह करामात नहीं तो क्या है! बेशक ईश्वर की आप पर कृपा है और यह सब सच्चे दिल से उपासना का प्रताप है। आपसे दुश्मनी रखना अपने हाथ से अपना सिर काटना है।

दिग्विजयसिंह की बात सुन कर राजा बीरेन्द्रसिंह मुस्कुराये और उनकी तरफ देखने लगे। दिग्विजयसिंह ने जिस ढंग से ऊपर लिखी बातें कहीं उसमें सचाई की बू आती थी। बीरेन्द्रसिंह बहुत खुश हुए और दिग्विजयसिंह को अपने पास बैठा कर बोले—

बीरेन्द्र०। सुनो दिग्विजयसिंह, हम तुम्हें छोड़ देते हैं और रोहतासगढ़ की गद्दी पर अपनी तरफ से तुम्हें बैठाते हैं मगर इस शर्त पर कि तुम हमेशे अपने को हमारा मातहत समझो और खिराज की तौर पर कुछ मालगुजारी दिया करो।

दिग्वि०। मैं तो अपने को आपका ताबेदार समझ चुका अब क्या समझूंगा, बाकी रही रोहतासगढ़ की गद्दी, सो मुझे मन्जूर नहीं। इसके लिए आप कोई दूसरा नायब मुकर्रर कीजिए और मुझे अपने साथ रहने का हुक्म दीजिये।

बीरेन्द्र०। तुमसे बढ़ कर और कोई नायब रोहतासगढ़ के लिए मुझे दिखाई नहीं देता।

दिग्वि०। (हाथ जोड़ कर) बस मुझ पर कृपा कीजिये, अब राज्य का जंजाल मैं नहीं उठा सकता।

आधे घण्टे तक यही हुज्जत रही। बीरेन्द्रसिंह अपने हाथ से रोहतासगढ़ की गद्दी पर दिग्विजयसिंह को बैठाया चाहते थे और दिग्विजयसिंह इन्कार करते थे, लेकिन आखिर लाचार होकर दिग्विजयसिंह को बीरेन्द्रसिंह का हुक्म मंजूर करना पड़ा, मगर साथ ही इसके उन्होंने बीरेन्द्रसिंह से इस बात का एकरार करा लिया कि महीने भर तक आपको मेरा मेहमान बनना पड़ेगा और इतने दिनों तक रोहतासगढ़ में रहना पड़ेगा।

बीरेन्द्रसिंह ने इस बात को खुशी से मंजूर किया, क्योंकि रोहतासगढ़ के तहखाने का हाल उन्हें बहुत कुछ मालूम करना था। बीरेन्द्रसिंह और तेजसिंह को विश्वास हो गया था कि वह तहखाना जरूर कोई तिलिस्म है।

राजा दिग्विजयसिंह ने हाथ जोड़ कर तेजसिंह की तरफ देखा और कहा,

"कृपा कर मुझे समझा दीजिए कि आप और आपके मातहत ऐयार लोगों ने रोहतासगढ़ में क्या किया, अभी तक मेरी अक्ल हैरान है ।"

तेजसिंह ने सब हाल खुलासे तौर पर कह सुनाया। दीवान रामानन्द का हाल सुन दिग्विजयसिंह खूब हंसे बल्कि उन्हें अपनी बेवकूफी पर भी हंसी आई और बोले, "आप लोगों से कोई बात दूर नहीं है ।" इसके बाद दीवान रामानन्द भी उसी जगह बुलवाये गये और दिग्विजयसिंह के हवाले किए गये और दिग्विजयसिंह के लड़के कुंअर कल्याणसिंह को लाने के लिए भी कई आदमी चुनारगढ़ रवाना किए गए ।

इन सब कामों से छुट्टी पाकर लाली के बारे में बातचीत होने लगी। तेजसिंह ने दिग्विजयसिंह से पूछा कि लाली कौन है और आपके यहां कब से है ? इसके जवाब में दिग्विजयसिंह ने कहा कि लाली को हम बखूबी नहीं जानते। महीने भर से ज्यादा न हुआ होगा कि चार पांच दिन के आगे पीछे लाली और कुन्दन दो नौजवान औरतें मेरे यहां पहुंचीं। उनकी चाल डाल और पोशाक से मुझे मालूम हुआ कि किसी इज्जतदार घराने की लड़कियां हैं। पूछने पर उन दोनों ने अपने को इज्जतदार घराने की लड़की जाहिर भी किया और कहाकि मैं अपनी मुसीबत के दो तीन महीने आपके यहां काटना चाहती हूं। रहम खा कर मैंने उन दोनों को इज्जत के साथ अपने यहां रक्खा, बस इसके सिवाय और मैं कुछ नहीं जानता ।

तेज० । बेशक इसमें कोई भेद है, वे दोनों साधारण औरतें नहीं हैं।

ज्योतिषी० । एक ताज्जुब की बात मैं सुनाता हूं ।

तेज० । वह क्या ।

ज्योतिषी० । आपको याद होगा कि तहखाने का हाल कहते समय मैंने कहा था कि जब तहखाने में किशोरी और लाली को मैंने देखा तो दोनों का नाम ले कर पुकारा जिससे उन दोनों को आश्चर्य हुआ ।

तेज० । हां हां मुझे याद है, मैं यह पूछने ही वाला था कि लाली को आपने कैसे पहिचाना ?

ज्योतिषी० । बस यही वह ताज्जुब की बात है जो अब मैं आपसे कहता हूं ।

तेज० ।·कहिए, जल्द कहिए ।

ज्योतिषी० । एक दफे रोहतासगढ़ के तहखाने में बैठे बैठे मेरी तबीयत घबराई तो मैं कोठरियों को खोल खोल कर देखने लगा। उस ताली के झब्बे में जो मेरे हाथ लगा था एक ताली सबसे बड़ी है जो तहखाने की सब कोठरियों में लगती है मगर बाकी बहुत सी तालियों का पता मुझे अभी तक नहीं लगा कि कहां की हैं ।

तेज० । खैर तब क्या हुआ ?

ज्योतिषी० । सब कोठरियों में अंधेरा था, चिराग ले जाकर मैं कहां तक देखता, मगर एक कोठरी में दीवार के साथ चमकती हुई कोई चीज दिखाई दी। यद्यपि कोठरी में बहुत अंधेरा था तो भी अच्छी तरह मालूम हो गया कि यह कोई तस्वीर है। उस पर ऐसा मसाला लगा हुआ था कि अंधेरे में भी वह तस्वीर साफ मालूम होती थी, आंख कान नाक बल्कि बाल तक साफ मालूम होते थे। तस्वीर के नीचे 'लाली' ऐसा लिखा हुआ था। मैं बड़ी देर तक ताज्जुब से उस तस्वीर को देखता रहा, आखिर कोठरी बन्द करके अपने ठिकाने चला आया, उसके बाद जब किशोरी के साथ मैंन लाली को देखा तो साफ पहिचान लिया कि वह तस्वीर इसी की है। मैंने तो सोचा था कि लाली उसी जगह की रहने वाली है इसीलिए उसकी तस्वीर वहां पाई गई, मगर इस समय महाराज दिग्विजयसिंह की जुबानी उसका हाल सुन कर ताज्जुब होता है, लाली अगर वहां की रहने वाली नहीं तो उसकी तस्वीर वहां कैसे पहुंची !

दिग्वि० । मैंने अभी तक वह तस्वीर नहीं देखी, ताज्जुब है।

बीरेन्द्र० । अभी क्या जब मैं आपका साथ लेकर अच्छी तरह उस तहखाने की छानबीन करूंगा तो बहुत सी बातें ताज्जुब की दिखाई पड़ेंगी।

दिग्वि० । ईश्वर करे जल्द ऐसा मौका आये, अब तो आपको बहुत जल्द रोहतासगढ़ चलना चाहिए।

बीरेन्द्र० । (तेजसिंह की तरफ देख कर) इन्द्रजीतसिंह के बारे में क्या बन्दोबस्त हो रहा है ?

तेज० । मैं बेफिक्र नहीं हूं, जासूस लोग चारो तरफ भेजे गये हैं ? इस समय तक रोहतासगढ़ की कारंवाई में फंसा हुआ था, अब स्वयं उनकी खोज में जाऊंगा, कुछ पता लगा भी है ?

बीरेन्द्र० । हां ? क्या पता लगा है ?

तेज० । इसका हाल कल कहूंगा आज भर और सब्र कीजिए।

राजा बीरेन्द्रसिंह अपने दोनों लड़कों को बहुत चाहते थे, इन्द्रजीतसिंह के गायब होने का रंज उन्हें बहुत था, मगर वह अपने चित्त के भाव को भी खूब ही छिपाते थे और समय का ध्यान उन्हें बहुत रहता था। तेजसिंह का भरोसा उन्हें बहुत था और उन्हें मानते भी बहुत थे, जिस काम में उन्हें तेजसिंह रोकते थे उसका नाम फिर वह जुबान पर तब तक न लाते थे जब तक तेजसिंह स्वयं उसका

जिक्र न छेड़ते, यही सबब था कि इस समय वे तेजसिंह के सामने इन्द्रजीतसिंह के बारे में कुछ न बोले।

दूसरे दिन महाराज दिग्विजयसिंह सेना सहित तेजसिंह को रोहतासगढ़ किले में ले गये। कुंअर आनन्दसिंह के नाम का डंका बजाया गया। यह मौका ऐसा था कि खुशी के जलसे होते मगर कुंअर इन्द्रजीतसिंह के खयाल से किसी तरह की खुशी न की गई।

राजा दिग्विजयसिंह के बर्ताव और खातिरदारी से राजा बीरेन्द्रसिंह और उनके साथी लोग बहुत प्रसन्न हुए। दूसरे दिन दीवानखाने में थोड़े आदमियों की कमेटी इसलिए की गई कि अब क्या करना चाहिए। इस कुमेटी में केवल नीचे लिखे बहादुर और ऐयार लोग इकट्ठे थे—राजा बीरेन्द्रसिंह, कुंअर आनन्दसिंह, तेजसिंह, देवीसिंह, पण्डित बद्रीनाथ, ज्योतिषीजी, राजा दिग्विजयसिंह और रामानन्द। इनके अतिरिक्त एक और आदमी मुंह पर नकाब डाले मौजूद था जिसे तेजसिंह अपने साथ लाये थे और उसे अपनी जमानत पर कुमेटी में शरीक किया था।

बीरेन्द्र०। (तेजसिंह की तरफ देख कर) इस नकाबपोश आदमी के सामने जिसे तुम अपने साथ लाये हो हम लोग भेद की बातें कर सकते हैं?

तेज०। हां हां, कोई हर्ज की बात नहीं है।

बीरेन्द्र०। अच्छा तो अब हम लोगों को एक तो किशोरी के पता लगाने का, दूसरे यहां के तहखाने में जो बहुत सी बातें जानने और विचारने लायक हैं उनके मालूम करने का, तीसरे इन्द्रजीतसिंह के खोजने का बन्दोबस्त सबसे पहिले करना चाहिये। (तेजसिंह की तरफ देख कर) तुमने कहा था कि इन्द्रजीतसिंह का कुछ हाल मालूम हो चुका है?

तेज०। जी हां, बेशक मैंने कहा था और उसका खुलासा हाल इस समय आपको मालूम हुआ चाहता है, मगर इसके पहले मैं दो चार बातें राजा साहेब से (दिग्विजयसिंह की तरफ इशारा करके) पूछा चाहता हूं जो बहुत जरूरी हैं, इसके बाद अपने मामले में बातचीत करूंगा।

बीरेन्द्र०। कोई हर्ज नहीं।

दिग्वि०। हां हां पूछिये।

तेज०। आपके यहां शेरसिंह* नाम का कोई ऐयार था?

---

* शेरसिंह, कमला का चाचा, जिसका हाल इस सन्तति के तीसरे भाग के तेरहवें बयान में लिखा गया है।

दिग्वि०। हां था, बेचारा बहुत ही नेक इमानदार और मेहनती आदमी था और ऐयारी के फन में पूरा ओस्ताद था, रामानन्द और गोविन्दसिंह उसी के चेले हैं। उसके भाग जाने का मुझे बड़ा ही रंज है। आज के दो तीन दिन पहिले दूसरे तरह का रंज था मगर आज और तरह का अफसोस है।

तेज०। दो तरह के रंज और अफसोस का मतलब मेरी समझ में नहीं आया, कृपा कर साफ साफ कहिये।

दिग्वि०। पहिले उसके भाग जाने का अफसोस क्रोध के साथ था मगर आज इस बात का अफसोस है कि जिन बातों को सोच कर वह भागा था वे बहुत ठीक थीं, उसकी तरफ से मेरा रंज होना अनुचित था, यदि इस समय वह होता तो बड़ी खुशी से आपके काम में मदद करता।

तेज०। उससे आप क्यों रंज हुए थे और वह क्यों भाग गया था?

दिग्वि०। इसका सबब यह था कि जब मैंने किशोरी को अपने कब्जे में कर लिया तो उसने मुझे बहुत कुछ समझाया और कहा कि 'आप ऐसा काम न कीजिए बल्कि किशोरी को राजा बीरेन्द्रसिंह के यहां भेज दीजिये'। यह बात मैंने मंजूर न की बल्कि उससे रंज होकर मैंने इरादा कर लिया कि उसे कैद कर लूं। असल बात यह है कि मुझसे और रणधीरसिंह से दोस्ती थी, शेरसिंह मेरे यहां रहता था और उसका छोटा भाई गदाधरसिंह जिसकी लड़की कमला है, आप उसे जानते होंगे!

तेज०। हां हां, हम सब कोई उसे अच्छी तरह जानते हैं।

दिग्वि०। खैर तो गदाधरसिंह रणधीरसिंह के यहां रहता था। गदाधरसिंह को मरे बहुत दिन हो गये, इसी बीच में मुझसे और रणधीरसिंह से भी कुछ बिगड़ गई, इधर जब मैंने रणधीरसिंह की नतिनी किशोरी को अपने लड़के के साथ व्याहने का बन्दोबस्त किया तो शेरसिंह को बहुत बुरा मालूम हुआ। मेरी तबीयत भी शेरसिंह से फिर गई। मैंने सोचा कि शेरसिंह की भतीजी कमला हमारे यहां से किशोरी को निकाल ले जाने का जरूर उद्योग करेगी और इस काम में अपने चाचा शेरसिंह से मदद लेगी। यह बात मेरे दिल में बैठ गई और मैंने शेरसिंह को कैद करने का विचार किया। उसे मेरा इरादा मालूम हो गया और वह चुपचाप न मालूम कहां भाग गया।

तेज०। अब आप क्या सोचते हैं! उसका कोई कसूर था या नहीं?

दिग्वि०। नहीं नहीं, वह बिल्कुल बेकसूर था बल्कि मेरी ही भूल थी जिसके लिए आज मैं अफसोस करता हूं, ईश्वर करे उसका पता लग जाय तो मैं उससे अपना कसूर माफ कराऊं।

तेज० । आप मुझे कुछ इनाम दें तो मैं शेरसिंह का पता लगा दूं !

दिग्वि० । आप जो मांगेंगे मैं दूंगा और इसके अतिरिक्त आपका भारी अहसान मुझ पर होगा ।

तेज० । बस मैं यही इनाम चाहता हूं कि यदि शेरसिंह को ढूंढ़ कर ले आऊं तो उसे आप हमारे राजा बीरेन्द्रसिंह के हवाले कर दें ! हम उसे अपना साथी बनाना चाहते हैं ।

दिग्वि० । मैं खुशी से इस बात को मन्जूर करता हूं, वादा करने की क्या जरूरत है जब कि मैं स्वयं राजा बीरेन्द्रसिंह का तावेदार हूं ।

इसके बाद तेजसिंह ने उस नकाबपोश की तरफ देखा जो उनके पास बैठा हुआ था और जिसे वह अपने साथ इस कमेटी में लाये थे । नकाबपोश ने अपने मुंह पर से नकाब उतार कर फेंक दिया और यह कहता हुआ राजा दिग्विजयसिंह के पैरों पर गिर पड़ा कि 'आप मेरा कसूर माफ करें' । राजा दिग्विजयसिंह ने शेरसिंह को पहिचाना, बड़ी खुशी से उठा कर गले लगा लिया और कहा, "नहीं नहीं, तुम्हारा कोई कसूर नहीं बल्कि मेरा कसूर है जो मैं तुमसे क्षमा कराया चाहता हूं ।"

शेरसिंह तेजसिंह के पास आ बैठे । तेजसिंह ने कहा, "सुनो शेरसिंह, अब तुम हमारे हो चुके !"

शेर० । बेशक मैं आपका हो चुका हूं, जब आपने महाराज से वचन ले लिया तो अब क्या उज्र हो सकता है ?

राजा बीरेन्द्रसिंह ताज्जुब से ये बातें सुन रहे थे, अन्त में तेजसिंह की तरफ देख कर बोले, "तुम्हारी मुलाकात शेरसिंह से कैसे हुई ?"

तेज० । शेरसिंह ने मुझसे स्वयं मिल कर सब हाल कहा, असल तो यह है कि हमलोगों पर भी शेरसिंह ने भारी अहसान किया है ।

बीरेन्द्र० । वह क्या ?

तेज० । कुंअर इन्द्रजीतसिंह का पता लगाया है और अपने कई आदमी उनकी हिफाजत के लिए तैनात कर चुके हैं, इस बात का भी निश्चय दिला दिया है कि कुंअर इन्द्रजीतसिंह को किसी तरह की तकलीफ न होने पावेगी ।

बीरेन्द्र० । (खुश होकर और शेरसिंह की तरफ देख कर) हां ! कहां पता लगा और किस हालत में है ?

शेर० । यह सब हाल जो कुछ मुझे मालूम था मैं दीवान साहब (तेजसिंह) से कह चुका हूं वह आपसे कह देंगे, आप उसके जानने की जल्दी न करें । मैं इस समय

यहां जिस काम के लिए आया था मेरा वह काम हो चुका अब मैं यहां ठहरना मुनासिब नहीं समझता। आप लोग अपने मतलब की बातचीत करें क्योंकि मदद के लिए मैं बहुत जल्द कुंअर इन्द्रजीतसिंह के पास पहुंचा चाहता हूं। हां यदि आप कृपा करके अपना एक ऐयार मेरे साथ कर दें तो उत्तम हो और काम भी शीघ्र हो जाय।

वीरेन्द्र०। (खुश होकर) अच्छी बात है, आप जाइये और मेरे जिस ऐयार को चाहें लेते जाइये।

शेर०। अगर आप मेरी मर्जी पर छोड़ते हैं तो मैं देवीसिंह को अपने साथ के लिए मांगता हूं।

तेज०। हां आप खुशी से उन्हें ले जायं। (देवीसिंह की तरफ देख कर) आप तैयारी कोजिए।

देवी०। मैं हरदम तैयार ही रहता हूं। (शेरसिंह से) चलिए अब इन लोगों का पीछा छोड़िए।

देवीसिंह को साथ लेकर शेरसिंह रवाना हुए और इधर इन लोगों में विचार होने लगा कि अब क्या करना चाहिए। घण्टे भर में यह निश्चय हुआ कि लाली से कुछ विशेष पूछने की जरूरत नहीं है क्योंकि वह अपना हाल ठीक ठीक कभी न कहेगी, हां उसे हिफाजत में रखना चाहिए और तहखाने को अच्छी तरह देखना और वहां का हाल मालूम करना चाहिए।

ग्यारहवां बयान

अब तो कुन्दन का हाल जरूर ही लिखना पड़ा, पाठक महाशय उसका हाल जानने के लिए उत्कण्ठित हो रहे होंगे। हमने कुन्दन को रोहतासगढ़ महल के उसी बाग में छोड़ा है जिसमें किशोरी रहती थी। कुन्दन इस फिक्र में लगी रहती थी कि किशोरी किसी तरह लाली के कब्जे में न पड़ जाय।

जिस समय किशोरी को ले कर सींध की राह लाली उस घर में उतर गईं जिसमें से तहखाने का रास्ता था और यह हाल कुन्दन को मालूम हुआ तो वह बहुत घबराई। महल भर में इस बात का गुल मचा दिया और सोच में पड़ी कि अब क्या करना चाहिये। हम पहिले लिख आये हैं कि किशोरी और लाली के जाने बाद 'धरो पकड़ो' की आवाज लगाते हुए कई आदमी सेंध की राह उसी मकान में उतर गये जिसमें लाली और किशोरी गई थीं।

उन्हीं लोगों में मिल कर कुन्दन भी एक छोटी सी गठरी कमर के साथ बांध

उस मकान के अन्दर चली गई और यह हाल घबराहट और गुलशोर में किसी को मालूम न हुआ। उस मकान के अन्दर भी बिल्कुल अंधेरा था। लाली ने दूसरी कोठरी में जाकर दर्वाजा वन्द कर लिया इस लिये लाचार होकर पीछा करने वालों को लौटना पड़ा और उन लोगों ने इस बात की इत्तिला महाराज से की, मगर कुन्दन उस मकान से न लौटी वल्कि किसी कोने में छिप रही।

हम पहिले लिख आये हैं और अब भी लिखते हैं कि उस मकान के अन्दर तीन दर्वाजे थे, एक तो वह सदर दर्वाजा था जिसके बाहर पहरा पड़ा करता था, दूसरा खुला पड़ा था, तीसरे दर्वाजे को खोल कर किशोरी को साथ लिए लाली गई थी।

जो दर्वाजा खुला था उसके अन्दर एक दालान था, इसी दालान तक लाली और किशोरी को खोज कर पीछा करने वाले लौट गये थे क्योंकि कहीं आगे जाने का रास्ता उन लोगों को न मिला था। जब वे लोग मकान के बाहर निकल गये तो कुन्दन ने अपनी कमर से गठरी खोली और उसमें से सामान निकाल कर मोम-बत्ती जलाने बाद चारो तरफ देखने लगी।

यह एक छोटा सा दालान था मगर चारो तरफ से बन्द था। इस दालान की दीवारों में तरह तरह की भयानक तस्वीरें बनी हुई थीं मगर कुन्दन ने उन पर कुछ ध्यान न दिया। दालान के बीचोबीच में बित्ते बित्ते भर के ग्यारह डिब्बे लोहे के रक्खे हुए थे और हर एक डिब्बे पर आदमी की खोपड़ी रक्खी हुई थी। कुन्दन उन्हीं डिब्बों को गौर से देखने लगी। ये डिब्बे गोलाकार एक चौकी पर सजाए हुए थे, एक डिब्बे पर आधी खोपड़ी थी और बाकी डिब्बों पर पूरी पूरी। कुन्दन इस बात को देख कर ताज्जुब कर रही थी कि इसमें से एक खोपड़ी जमीन पर क्यों पड़ी हुई है औरों की तरह उसके नीचे डिब्बा नहीं है? कुन्दन ने उस डिब्बे से जिस पर आधी खोपड़ी रक्खी हुई थी गिनना शुरू किया। मालूम हुआ कि सातवें नम्बर की खोपड़ी के नीचे डिब्बा नहीं है। यकायक कुन्दन के मुंह से निकला, "ओफ ओह, बेशक इसके नीचे का डिब्बा लाली ले गई क्योंकि ताली वाला डिब्बा वही था, मगर यह हाल उसे क्योंकर मालूम हुआ?"

कुन्दन ने फिर गिनना शुरू किया और टूटी हुई खोपड़ी से पांचवें नम्बर पर रुक गई, खोपड़ी उठा कर नीचे रख दी और डिब्बे को उठा लिया, तब अच्छी तरह गौर से देख कर जोर से जमीन पर पटका। डिब्बे के चार टुकड़े हो गए, मानों चार जगहों से जोड़ लगाया हुआ हो। उसके अन्दर से एक ताली निकली जिसे देख कुन्दन हंसी और खुश होकर आप ही आप बोली, "देखो तो लाली को मैं कैसा छकाती हूं!"

कुन्दन ने उस ताली से काम लेना शुरू किया। उसी दालान में दीवार के साथ एक आलमारी थी जिसे कुंदन ने उसी ताली से खोला। नीचे उतरने के लिए सीढ़ियां नजर आईं और वह बेखौफ नीचे उतर गई। एक कोठरी में पहुंची जहां एक छोटे सिंहासन के ऊपर हाथ भर लम्बी और इससे कुछ कम चौड़ी तांबे की एक पट्टी रक्खी हुई थी। कुंदन ने उसे उठाकर अच्छी तरह देखा, मालूम हुआ कि कुछ लिखा हुआ है, अक्षर खुदे हुए थे और उन पर किसी तरह का चिकना या तेल मला हुआ था जिसके सबब से पटिया अभी तक जंग लगने से बची हुई थी। कुन्दन ने उस लेख को बड़े गौर से पढ़ा और हंस कर चारो तरफ देखने लगी। उस कोठरी की दीवार में दो तरफ दो दर्वाजे थे और एक पल्ला जमीन में था। उसने एक दर्वाजा खोला, ऊपर चढ़ने के लिए कुछ सीढ़ियां मिलीं, वह बेखौफ ऊपर चढ़ गई और एक ऐसी तंग कोठरी में पहुंची जिसमें चार पांच आदमी से ज्यादे के बैठने की जगह न थी, मगर इस कोठरी के चारो तरफ की दीवार में छोटे छोटे कई छेद थे, जलती हुई बत्ती बुझा कर उन छेदों में से एक छेद में आंख लगा कर कुन्दन ने देखा।

कुन्दन ने अपने को ऐसी जगह पाया जहां से वह भयानक मूर्ति जिसके आगे एक औरत बलि दी जा चुकी थी और जिसका हाल ऊपर लिख आये हैं साफ दिखाई देती थी। थोड़ी देर में कुन्दन ने महाराज दिग्विजयसिंह तहखाने के दारोगा लाली किशोरी और बहुत से आदमियों को वहां देखा। उसके देखते ही देखते एक औरत उस मूरत के सामने बलि दी गई और कुंअर आनन्दसिंह ऐयारों सहित पकड़े गये। इस तहखाने में से किशोरी और कुंअर आनन्दसिंह का जो कुछ हाल हम ऊपर लिख आये हैं वह सब कुन्दन ने देखा था। आखीर में कुन्दन नीचे उतर आई और उस पल्ले को जो जमीन में था उसी ताली से खोल कर तहखाने में उतरने बाद बत्ती बाल कर देखने लगी। छत की तरफ निगाह करने से मालूम हुआ कि वह सिंहासन पर बैठी हुई भयानक मूर्ति जो कि भीतर की तरफ से बिल्कुल (सिंहासन सहित) पोली थी, उसके सिर के ऊपर है।

कुंदन फिर ऊपर आई और दीवार में लगे हुए दूसरे दर्वाजे को खोल कर एक सुरंग में पहुंची। कई कदम जाने बाद एक छोटी खिड़की मिली। उसी ताली से कुंदन ने उस खिड़की को भी खोला। अब वह उस रास्ते में पहुंच गई जो दीवानखाने और तहखाने में आने जाने के लिए था और जिस राह से महाराज आते थे, तहखाने से दीवानखाने में जाने तक जितने दर्वाजे थे सभों को कुन्दन ने अपनी ताली से बन्द कर दिया, ताले के अलावे उस दर्वाजे में एक एक खटका और भी था उसे भी कुन्दन ने

चढ़ा दिया। इस काम से छुट्टी पाने बाद फिर वहाँ पहुँची जहाँ से भयानक मूर्ति और आदमी सब दिखाई दे रहे थे। कुन्दन ने अपनी आँखों से राजा दिग्विजयसिंह की घबड़ाहट देखा जो दर्वाजा बन्द हो जाने से उन्हें हुई थी।

मौका देख कर कुन्दन वहाँ से उतरी और उस तहखाने में जो उस भयानक मूर्ति के नीचे था पहुँची। थोड़ी देर तक कुछ बकने बाद कुन्दन ने ही वे शब्द कहे जो उस भयानक मूर्ति के मुँह से निकले हुए राजा दिग्विजयसिंह या और लोगों ने सुने थे और जिनके मुताबिक किशोरी बारह नम्बर की कोठरी में बंद कर दी गई थी। असल में वे शब्द कुन्दन ही के कहे हुए थे जो सब लोगों ने सुने थे।

कुन्दन वहाँ से निकल कर यह देखने के लिए कि राजा किशोरी को उस कोठरी में बंद करता है या नहीं, फिर उस छत पर पहुँची जहाँ से सब लोग दिखाई पड़ते थे। जब कुन्दन ने देखा कि किशोरी उस कोठरी में बंद कर दी गई तो वह नीचे तहखाने में उतरी। उसी जगह से एक रास्ता था जो उस कोठरी के ठीक नीचे पहुँचता था जिसमें किशोरी बंद की गई थी। वहाँ की छत इतनी नीची थी कि कुन्दन को बैठ कर जाना पड़ा। छत में एक पेंच लगा हुआ था जिसके घुमाने से एक पत्थर की चट्टान हट गई और आँचल से मुँह ढाँपे कुन्दन किशोरी के सामने जा खड़ी हुई।

बेचारी किशोरी तरह तरह की आफतों से आप ही बदहवास हो रही थी, अंधेरे में बत्ती लिए यकायक कुन्दन को निकलते हुए देख घबड़ा गई। उसने घबराहट में कुन्दन को बिल्कुल नहीं पहिचाना बल्कि उसे भूत प्रेत या कोई आसेब समझ कर डर गई और एक चीख मार कर बेहोश हो गई।

कुन्दन ने अपनी कमर से कोई दवा निकाल कर किशोरी को सुँघाई जिससे वह अच्छी तरह बेहोश हो गई, इसके बाद अपनी छोटी गठड़ी में से सामान निकाल कर वह बरवा अर्थात् 'धनपति रंग मचायो साध्यो काम....' इत्यादि लिख कर कोठरी में एक तरफ रख दिया और अपने कमर से एक चादर खोली जो महल से लेती आई थी, उसी में किशोरी की गठरी बाँधी और नीचे घसीट ले गई। जिस तरह पेंच को घुमा कर पत्थर की चट्टान हटाई थी उसी तरह रास्ता बन्द कर दिया।

यह सुरंग कोठरी के नीचे खतम नहीं हुई थी बल्कि दूर तक चली गई थी और आगे से चौड़ी और ऊँची होती गई थी। किशोरी को लिए हुए कुन्दन उस सुरंग में चलने लगी। लगभग सौ कदम जाने बाद एक दर्वाजा मिला जिसे कुन्दन ने उसी ताली से खोला, आगे फिर उसी सुरंग में चलना पड़ा। आधी घड़ी के बाद सुरंग का अन्त हुआ और कुन्दन ने अपने को एक खोह के मुँह पर पाया।

इस जगह पहुँच कर कुन्दन ने सीटी वजाई। थोड़ी देर में इधर उधर से पाँच आदमी आ मौजूद हुए और एक ने वढ़ कर पूछा, "कौन है? धनपतिजी!"

कुन्दन०। हाँ रामा, तुम लोगों को यहाँ बहुत दुःख भोगना और कई दिन तक अटकना पड़ा।

रामा०। जव हमारे मालिक ही इतने दिनों तक अपने को बला में डाले हुए थे जहाँ से जान बचाना मुश्किल था तो फिर हमलोगों की क्या बात है, हम लोग तो खुले मैदान में थे।

कुन्दन०। लो किशोरी तो हाथ लग गई, अव इसे ले चलो और जहाँ तक जल्द हो सके भागो।

वे लोग किशोरी को लेकर वहाँ से रवाना हुए।

पाठक तो समझ हो गये होंगे कि किशोरी धनपति के काबू में पड़ गई। कौन धनपति? वही धनपति जिसे नानक और रामभोली के बयान में आप लोग जान चुके हैं। मेरे इस लिखने से पाठक महाशय चौंकेंगे और उनका ताज्जुब घटेगा नहीं बल्कि बढ़ जायगा, इसके साथ ही साथ पाठकों को नानक की बात कि 'वह किताव भी जो किसी के खून से लिखी गई है....' भी याद आयेगी जिसके सबब सें नानक नें अपनी जान बचाई थी। पाठक इस बात को भी जरूर सोचेंगे कि कुन्दन अगर असल में धनपति थी तो लाली जरूर रामभोली होगी, क्योंकि धनपति को 'किसी के खून से लिखी हुई किताब' का भेद मालूम था और यह भेद रामभोली को भी मालूम था। जव धनपति ने रोहतासगढ़ महल में लाली के सामने उस किताव का जिक्र किया तो लाली काँप गई जिससे मालूम होता है कि वह रामभोली ही होंगी। किसी के खून से लिखी हुई किताव का नाम सुनकर अगर लाली डर गई तो धनपति भी जरूर समझ गई होगी कि यह रामभोली है, फिर धनपति (कुन्दन) लाली से मिल क्यों न गई क्योंकि वे दोनों तो एक ही के तुल्य थीं? ऐसी अवस्था में तो इस बात का शक होता है कि लाली रामभोली न थी। फिर तहखाने में धनपति के लिखे हुए बरवे को सुन कर लाली क्यों हँसी? इत्यादि बातों को सोच कर पाठकों की चिन्ता अवश्य बढ़ेगी, क्या किया जाय लाचारी है।

बारहवाँ बयान

दूसरे दिन दो पहर दिन चढ़े बाद किशोरी की बेहोशी दूर हुई। उसने अपने को एक गहन बन में पेड़ों की झुरमुट में जमीन पर पड़े पाया और अपने पास कुन्दन और

कई आदमियों को देखा। बेचारी किशोरी इन थोड़े ही दिनों में तरह तरह की मुसीबतों में पड़ चुकी थी बल्कि जिस सायत से वह घर से निकली आज तक एक पल के लिए भी सुखी न हुई, मानों सुख तो उसके हिस्से ही में न था। एक मुसीबत से छूटी दूसरी में फँसी, दूसरी से छूटी तीसरी में फँसी। इस समय भी उसने अपने को बुरी अवस्था में पाया। यद्यपि कुन्दन उसके सामने बैठी थी परन्तु उसे उसकी तरफ से किसी तरह पर भलाई की आशा कुछ भी न थी। इसके अतिरिक्त वहाँ और भी कई आदमियों को देख तथा अपने को बेहोशी की अवस्था से चैतन्य होते पा उसे विश्वास हो गया कि कुन्दन ने उसके साथ दगा किया। रात की बातें वह स्वप्न की तरह याद करने लगी और इस समय भी वह इस बात का निश्चय न कर सकी कि उसके साथ कैसा बर्ताव किया जायगा। थोड़ी देर तक वह अपनी मुसीबतों को सोचती और ईश्वर से अपनी मौत माँगती रही। आखिर उस समय उसे कुछ होश आया जब धनपति (कुन्दन) ने उसे पुकार कर कहा, 'किशोरी, तू घबड़ा मत, तेरे साथ कोई बुराई न की जायगी।"

किशोरी०। मेरी समझ में नहीं आता कि तुम क्या कह रही हो। जो कुछ तुमने किया उससे बढ़ कर और बुराई क्या हो सकती है?

धन०। तेरी जान न मारी जायगी बल्कि जहाँ तू रहेगी हर तरह से आराम मिलेगा।

किशोरी०। क्या इन्द्रजीतसिंह भी वहाँ दिखाई देंगे?

धन०। हाँ, अगर तू चाहेगी।

किशोरी०। (चौंक कर) हैं, क्या कहा? अगर मैं चाहूँगी?

धन०। हाँ, यही बात है।

किशोरी। कैसे?

धन०। एक चीठी इन्द्रजीतसिंह के नाम की लिख कर मुझे दे और उसमें जो कुछ मैं कहूँ लिख दे!

किशोरी०। उसमें क्या लिखना पड़ेगा?

धन०। केवल इतना ही लिखना पड़ेगा—"अगर आप मुझे चाहते हैं तो बिना कुछ विचार किए इस आदमी के साथ मेरे पास चले आइये और जो कुछ यह माँगे दे दीजिए, नहीं तो मुझसे मिलने की आशा छोड़िए!"

किशोरी०। (कुछ देर तक सोचने के बाद) मैं समझ गई कि तुम्हारी नीयत क्या है। नहीं, ऐसा कभी नहीं हो सकता, मैं ऐसी चीठी लिख कर प्यारे इन्द्रजीतसिंह को आफत में नहीं फँसा सकती।

घन० । तब तू किसी तरह छूट भी नहीं सकती ।

किशोरी० । जो हो ।

घन० । बल्कि तेरी जान भी चली जायगी ।

किशोरी० । वला से, इन्द्रजीतसिंह के नाम पर मैं जान देने को तैयार हूँ ।

इतना सुनते ही धनपति (कुन्दन) का चेहरा मारे गुस्से के लाल हो गया, अपने साथियों की तरफ देख कर बोली, "अब मैं इसे नहीं छोड़ सकती, लाचार हूँ। इसके हाथ पैर बाँधो और मुझे तलवार दो!" हुक्म पाते ही उसके साथियों ने बड़ी बेरहमी के साथ बेचारी किशोरी के हाथ पैर बाँध दिए और धनपति तलवार लेकर किशोरी का सिर काटने के लिए आगे बढ़ी । उसी समय धनपति के एक साथी ने कहा, "नहीं, इस तरह मारना मुनासिब न होगा, हम लोग बात की बात में सूखी लकड़ियाँ बटोर कर ढेर करते हैं, इसे उसी पर रख के फूँक दो, जल कर भस्म हो जायगी और हवा के झोंकों में इसकी राख का भी पता न लगेगा ।"

इस राय को धनपति ने पसन्द किया और ऐसा ही करने के लिए हुक्म दिया। संगदिल हरामखोरों ने थोड़ी ही देर में जंगल से चुन कर सूखी लकड़ियों का ढेर लगा दिया । हाथ पैर बाँध कर बेबस की हुई किशोरी उसी पर रख दी गई । धनपति के साथियों में से एक ने बटुए से सामान निकाल कर एक छोटा सा मशाल जलाया और उसे धनपत ने अपने हाथ में लिया। मुँह बन्द किए हुए किशोरी यह सब बात देख सुन और सह रही थी । जिस समय धनपति मशाल लिए चिता के पास पहुँची किशोरी ने ऊँचे स्वर में कहा—

"हे अग्निदेव, तुम साक्षी रहना! मैं कुँअर इन्द्रजीतसिंह की मुहब्बत में खुशी खुशी अपनी जान देती हूँ। मैं खूब जानती हूँ कि तुम्हारी आँच प्यारे की जुदाई की आँच से बढ़ कर नहीं है। जान निकलने में मुझे कुछ भी कष्ट न होगा। प्यारे इन्द्रजीत ! देखना मेरे लिए दुःखी न होना, बल्कि मुझे बिलकुल ही भूल जाना !!"

हाय ! प्रेम से भरी हुई बेचारी किशोरी की दिल को टुकड़े टुकड़े कर देने वाली इस बात से भी संगदिलों का दिल नरम न हुआ और हरामजादी कुन्दन ने, नहीं नहीं धनपति ने, चिता में मशाल रख ही दी ।

॥ चौथा भाग समाप्त ॥

१९७७

३२ वाँ संस्करण] [२२०० प्रति

लहरी प्रेस, वाराणसी ।

न् ि

मी स...

ति ने, चिता में मशाल...

॥ चौथा भाग स...

१९७७

२३ वां संस्करण] [२२०० प्रति

लहरी प्रेस, वाराणसी।